माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमाला, पुष्प ४५

जैनशिलालेखसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

संग्रहकर्त्ता

पं० विजयमूर्ति एम० ए० शास्त्राचार्यः

●

प्रकाशिका

माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रम संवत् २००९

मूल्यं पंचरूप्यकम्

—प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी,
मन्त्री, माणिकचन्द्र-जैनग्रन्थमाला
हीराबाग, बम्बई ४

सितम्बर १९५२

—मुद्रक—
लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी
निर्णयसागर प्रेस,
२६-२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई २

प्रस्तावना

जैनशिलालेखसंग्रहका प्रथम भाग आजसे चौबीस वर्ष पूर्व, सन् १९२८ ईस्वीमें प्रकाशित हुआ था। उसके प्राथमिक वक्तव्यमें मैंने यह आशा प्रकट की थी कि यदि पाठकोंने चाहा, और भवितव्य अनुकूल रहा, तो अन्य शिलालेखोंका दूसरा संग्रह शीघ्र ही पाठकोंको भेंट किया जायगा। पाठकोंने चाहा तो खूब, और माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रंथमालाके परम उत्साही मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमीकी प्रेरणा भी रही, किन्तु मैं अपनी अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियोंके कारण इस कार्यको हाथमें न ले सका। तथापि चित्तमें इस कार्यकी आवश्यकता निरन्तर खटकती रही। अपने साहित्यिक सहयोगी डॉ० आदिनाथजी उपाध्येसे भी इस सम्बन्धमें अनेक वार परामर्श किया किन्तु शिलालेखोंका संग्रह करने करानेकी कोई सुविधा न निकल सकी। अतएव, जब कोई दो वर्ष पूर्व श्रद्धेय प्रेमीजीने मुझसे पूछा कि क्या पं० विजयमूर्तिजी एम० ए० (दर्शन, संस्कृत) शास्त्राचार्यद्वारा शिला-लेखसंग्रहका कार्य प्रारम्भ कराया जावे, तब मैंने सहर्ष अपनी सम्मति दे दी। आनन्दकी बात है कि उक्त योजनानुसार जैनशिलालेखसंग्रहका यह द्वितीय भाग छपकर तैयार हो गया और अब पाठकोंके हाथोंमें पहुँच रहा है।

यह बतलानेकी तो अब आवश्यकता नहीं है कि प्राचीन शिलालेखोंका इतिहास-निर्माणके कार्यमें कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है। जबसे जैन शिला-लेखोंका प्रथम भाग प्रकाशित हुआ, तबसे गत चौबीस वर्षोंमें जैनधर्म और साहित्यके इतिहाससम्बन्धी लेखोंमें एक विशेष प्रौढ़ता और प्रामाणिकता दृष्टिगोचर होने लगी। यद्यपि वे शिलालेख उससे पूर्व ही प्रकाशित हो चुके थे, किन्तु वह सामग्री अँग्रेजीमें, पुरातत्त्वविभागके बहुमूल्य और बहुधा अप्राप्य प्रकाशनोंमें निहित होनेके कारण साधारण लेखकों तथा पाठकोंको सुलभ नहीं थी। इसीलिये समस्त प्रकाशित शिलालेखोंका सुलभ संग्रह नितान्त आवश्यक है।

जैनशिलालेखसंग्रह प्रथम भागमें पाँच सौ शिलालेख प्रकाशित किये गये थे। वे सब लेख श्रवणबेल्गुल और उसके आसपासके कुछ स्थानोंके ही थे।

अब प्रस्तुत संग्रहमे गेरीनोद्वारा संकलित जैन प्राचीन लेखोकी सूची (Repertoire D'epigraphie Jaina by A Guerinot) के क्रमानुसार लेख उपस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है। नामोको मोटे टाइपमें छापने तथा लेखोका साराश हिन्दीमे दे देनेकी शैली प्रथम भागके अनुसार यहाँ भी अपनाई गई है । किन्तु खेद है कि प्रत्येक लेखके भीतर पद्योकी सख्याका क्रमसे अंकन नहीं किया गया, जिससे उनके उल्लेख करनेमे कुछ असुविधा हो सकती है।

इन शिलालेखोका इतिहासकी दृष्टिसे मूल्य आँकना आवश्यक है। किन्तु अब यह कार्य उचित रीतिसे तभी निष्पन्न किया जा सकता है जब शेष शिलालेखोके संग्रह भी इसी शैलीसे प्रकाशित हो जावें । अतएव, सग्राहक और प्रकाशकका इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशनके लिये अभिनन्दन करते हुए मैं आशा करता हूँ कि वे अपने इस कार्यको गतिशील बनाये रखेगे और बिना अधिक विलम्बके संग्रहका कार्य पूरा करके लेखको और पाठकोकी दीर्घकालीन पिपासाकी पूर्णत तृप्ति करनेका अनुपम यश प्राप्त करेगे।

नागपुर महाविद्यालय
नागपुर, ६-३-१९५२

हीरालाल जैन

जैन-शिलालेख-संग्रह

द्वितीय भाग

१

दिल्ली (टोपरा)—प्राकृत।

अशोकके सातवें धर्मशासन-लेखका अन्तिम भाग

[लगभग २४२ ईस्वी पूर्व]

[१] धमवढिया च वाढं वढिसति [।] एतायें मे अठाये धंमसावनानि सावापितानि धमानुसाथिनि विविधानि आनपितानि [यथा मे पुलि]सापि बहुने जनसि आयता एते पलियोवदिसति पि पवियलिसंतिपि [।] लजूका पि बहुकेसु पानसतसहसेसु आयता ते पि मे आनपिता[:] हेव च हेव च पलियोवदाथ

[२] जनं धमयुत [।] देवान पिये पियदसि हेव आहा[:] एतमेव मे अनुवेखमाने धमथभानि कटानि[,] धममहामाता कटा[,] धम-[सावने] कटे [।] देवान पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:] मगेसु पि मे निगोहानि लोपापितानि[:] छायोपगानि होसंति पसुमुनिसान[,] अबावडिक्या लोपापिता[,] अढकोसिक्यानि पि मे उदुपानानि

[३] खानापितानि[,] निंसिधिया च कालापिता[;] आपानानि मे बहुकानि तत तत कालापितानि पटीभोगाये पसुमुनिसान [।] ल[हुके चु] एस पटीभोगे नाम [।] विविधायाहि सुखायनाया पुलिमेहिपि लाजी

---

१. ए. कनिंघम, Corpus inscriptionum indicarum, Vol. I, Inscriptions of Asoka, p 115, t

हि ममया च सुखयिते[१] लोके [।] इम चु धंमानुपटीपतीअनुपटी-पजतुति[,] एतद्था मे

[४] एस कटे [।] देवान पिये पियदसि हेव आहा[:] धममहामातापि मे ते वहुविधेसु अठेसु अनुगहिकेसु वियापटा से पवजीतान चेव गिहियान च [.] सव[पास]डेसु पि च वियापटा से [।] संघठसि पि मे कटे इमे वियापटा होहंतिति[,] हेमेव बाभनेसु आजीविकेसु पि मे कटे

[५] इमे वियापटा होहंतिति [।] **निगंठेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहंति[;]** नानापासडेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहंतिति [।] पटिविसठ पटीविसठ तेसु तेसु ते ते महामाता [।] धममहामाता चु मे एतेसु चेव वियापटा सवेसु च अनेसु पासंडेसु [।] देवान पिये पियदसि लाजा हेव आहा[:]

[६] एते च अने च वहुका मुखा दानविसगसि वियापटा से मम चेव देविन च[,] सवसि च मे आलोधनसि ते वहुविधेन आ[का]लेन तानि तानि तुठायतनानि पटी [पादयति] हिद चेव दिसासु च [।] दालकान पि च मे कटे अनान च देविकुमालान इमे दानविसगेसु वियापटा होहंति ति

[७] धमपदानठाये धमानुपटिपतिये [।] एस हि धमापदाने धमपटीपति च या इय दया दाने सचे सोचवे मदवे साधवे च लोकस हेव वढिसतिति [।] देवान पिये [पियद] सि लाजा हेव आहा[:] यानि हि कानि चि ममिया साधवानि कटानि त लोके अनूपटीपने त च अनुविधियति[,] तेन वढिता च

---

१ सुखीयवे Indian Antiquary, Vol XIII, p 310, t.

[८] वढिसंति च मातापितुसु सुसुसाया गुलुसु सुसुसाया वयोमहालकान अनुपटीपतिया बाभनसमनेसु कपनवलाकेसु आव दासभटकेसु संपटीपतिया [।] देवानपिये [पि]यदसि लाजा हेव आहा[:] मुनिसानं चु या इय धमवढि वढिता दुवेहि येव आकालेहि धंमनियमेन च निझतिया च

[९] तत च लहु से धमनियमे[,] निझतिया व भुये[।] धमनियमे च खो एस ये मे इय कटे इमानि च इमानि जातानि अवधियानि[,] अनानि पि चु वहु [कानि] धमनियमानि यानि मे कटानि[।] निझतिया व चु भुये मुनिसान धमवढि वढिता अविहिसाये भुतान

[१०] अनालंभाये पानान[।] से एताये अथाये इय कटे[,] पुतापपोतिके चंदमसुलियिके होतु ति[,] तथा च अनुपटीपजंतु ति[।] हेव हि अनुपटीपजत हिदतपालते आलधे होति[।] **सतविसतिवसाभिसितेन मे इयं धंमलिवि लिखापापिता**ति[।] एत देवानंपिये आहा[:] इय

[११] धमलिवि अन अथि सिलाथभानि वा सिलाफलकानि वा तत कटविया एन एस चिलठितिके सिया।

[यह धर्मशासन-लेख अशोकके द्वारा महास्तम्भोंपर लिखाये गये लेखोंमेंसे अन्तिम है। इसको कोई कोई आठवां धर्मशासन-लेख (Edict) मानते हैं, तो कोई मात्र सातवे धर्मशासन-लेखका ही अन्तिम भाग मानते हैं।

इसमें बताया है कि सम्राट् अशोकने अपने राज्याभिषेकसे २७ वें वर्षमें यह धर्मशासन-लेख लिखाया था। इसमें उसने अपने द्वारा नियोजित धर्ममहामात्योंका उल्लेख किया है। ये धर्ममहामात्य 'संघ' (बौद्धसंघ), आजीवक, ब्राह्मण और निर्ग्रन्थोंकी देखरेख रखनेके लिये

नियुक्त किये गये थे। यहां 'निर्ग्रन्थ' शब्दसे जैनोंका तात्पर्य है। इसपरसे मालूम पडता है कि उस समयके अनेक अग्रेसर धर्मोंमें जैनधर्म भी एक था।]

२

हाथीगुफाका शिलालेख[1]—प्राकृत।

जैन-सम्राट् खारवेलका इतिहास।

[मौर्यकाल १६५ वाँ वर्ष]

[१] नमो अरहतान [।] नमो सवसिधान [।] ऐरेन महाराजेन **महामेघवाहनेन** चेतराजवस-वधनेन पसथसुभलखनेन चतुरंतल थुन-गुनोपहितेन कलिंगाधिपतिना सिरि खारवेलेन।

[२] पन्दरसवसानि सिरि-कडार-सरीर-वता कीडिता कुमारकीडिका [।] ततो लेखरूपगणना-ववहार-विधिविसारदेन सवविजावदातेन नववसानि योवरज पसासित [।] सपुण-चतुवीसति-वसो तदानि वधमानसेसयोवे(=व) नाभिविजयो ततिये

(३) कलिंगराजवसे पुरिसयुगे **महारजा**भिसेचन पापुनाति [।] अभिसितमतो च पधमे वसे वात-विहत-गोपुर-पाकार-निवेसन पटिसखारयति [।] कलिंनगरि [f] ख-बीर इसि-ताल तडाग-पाडियो च बन्धापयति [।] सवुयान-पतिसठपन च

[४] कारयति [।] पनतीसाहि सतसहसेहि पकतियो च रजयति [।] दुतिये च वसे अचितयिता सातकणिं पछिमदिस हय-गज-नर-रध-बहुल दड पथापयति [।] कण्हवेना गताय च सेनाय वितापति[2] **मुसिक-नगरं** [।] ततिये पुन वसे

---

१ जैनहितैषी, भाग १५, अङ्क ५, मार्च १९२१, पृष्ठ १३९–१४५ से उद्धृत। २ वितापित इति वा।

[५] गधव-वेदवुधो दत-नत-गीत-वादितसदसनाहि उसव-समाज-कारापनाहि च कीडापयति नगरिं [।] तथा चवुथे वसे विजाधराधिवास अहत-पुव कलिंगपुवराजनिवेसित.........वितध-मकूटे सविलमढिते च निखित-छत-

[६] भिंगारे हित-रतन-सापतेये सव-रठिक भोजके पादे वदापयति [।] पचमे च दानी वसे नंदराज ति-वससत-ओघाटित तनसुलिय-वाटा पनाडिं नगर पवेस[य]ति [।] सो [पि च वसे] छडम 'भिसितो च राजसुय ['] सन्दसयतो सवकर-वण

[७] अनुगह—अनेकानि सतसहसानि विसजति पोर जानपद[।] सतम च वसं पसासतो वजिरघरवि धुसि ति घरिनी समतुक-पद-पुना-सकुमार[।]............[।] अठमे च वसे महतिसेनाय मह[तभित्ति] गोरधगिरिं

[८] घातापयिता राजगहं उपपीडापयति[।] एतिना च कम पदान-पनादेन सवितसेन-वाहिनी विपमुचितु मधुरा अपयातो येव नरिंदो [नाम]..........[मो?] यछति [विछ] ....पलवभरे

[९] कलपरुखे हय-गज-रथ-सह-यते सव-घरावास-परिवसने स अगिणठिये[।] सवगहन च कारयितु वम्हणान जाति-पतिं परिहार ददाति[।] अरहत...... ...व .. .. न.........गिय

[१०]....[क] [ि] मानेहि रा[ज] संनिवासं महाविजय पासाद कारापयति अठतिसाय सत-सहसेहि[।] दसमे च वसे महधीत' भिसनयो भरधवस-पथान महिजयन ति कारापयति...............[निरितय] उया तान च मणि-रतना[नि] उपलभते ।

[११] ······मडे च पुव-राजनिवेसित—पीथुडगं-द[ल]भ-नगले नेकासयति जनपदभावन च तेरस-वस-सत-केतुभद-तित[1] मरदेह-संघात[।] बारसमे च वसे···· ·····सेहि वितासयति उतरापथराजानो

[१२] ·········मगधान च विपुल भयं जनेतो हथिसु गंगाय पाययति[।] मागध च राजान **वहसतिमितं**[1] पादे वदापति[।] **नंदराज**-नीत च **कालिंग-जिन-संनिवेसं**·········गहरतनान पडिहारेहि **अंगमागध**-वसु च नेयाति [।]

[१३] ·· त जठर-लिखिल-बरानि सिहिरानि नीवेसयति सत-विसिकन परिहारेन[।] अभुतमछरिय च हथि-नावन परीपुर उ [प-]देणह हयहथी-रतना-[मा]निक **पंडराजा** एदानि अनेकानि मुत-मणिरतनानि अहरापयति इध सत-[स] [।]

[१४] ······सिनो वसीकरोति [।] तेरसमे च वसे सुपवत-विज-यिचके कुमारीपवते अरहिते य[ा] प-खिम-व्यसताहि काय्यनिसीदीयाय थापञावकेहि राजभितिनि चिनवतानि वोसासितानि [।] पूजानि कत-उ-वासा **खारवेल-सिरिना** जीवदेव-सिरि-कल्प राखिता [।]

[१५]··· · ····[ता] सु कत समण-सुविहितान (नु[2]) च सातदिसान (नु[2]) ञातान तपसइसिन सघायन (नु[2]) [,] अरहतनिसीदिया समीपे पभारे वराकर-समुथापिताहि अनेक-योजना-हिताहि · · ·· सिलाहि सिंहपथ-रानिसं[2] धुसिय निसयानि

[१६] ··· पटालिकोचतरे च वेडूरियगभे थंभे पतिठापयति [,] पानतरिया सतसहसेहि [।] **मुरिय**-काल वोछिंन (ने[2]) च चोयठि-

१ वहसतिमित्र इति । २ रानिस वा इति हरनन्दनपाण्डेया. ।

अगस-निकंतरिय उपादायति [।] खेमराजा स वढराजा स भिखुराजा धमराजा पसंतो सुनतो अनुभवंतो कलाणानि

[१७]……गुण-विसेस-कुसलो सवपासंडपूजको सव-देवायत-नसंकारकारको [अ]पति-हत-चकि-वाहिनि-वलो चकधुर-गुतचको पवत-चको राजसि-वस-कुल-विनिश्रितो महा-विजयो राजा **खारवेल-सिरि**

अनुवाद—[१] अर्हतोंको नमस्कार। सर्व सिद्धोंको नमस्कार। ऐल-महाराज **महामेघवाहन**, चैत्रराजवंशवर्धन, प्रशस्तशुभलक्षणसम्पन्न, अखिल-देशस्तम्भ, कलिङ्गाधिपति **श्री खारवेलने**

[२] पन्द्रह वर्षतक श्रीसम्पन्न और कडार (गन्दुमी) रंगवाले शरीरसे कुमार-क्रीड़ाएँ कीं। बादमें लेख, रूपगणना, व्यवहार-विधिमें उत्तम योग्यता प्राप्त करके और समस्त विद्याओंमें प्रवीण होकर उसने नौ वर्षोंतक युवराजकी भाँति शासन किया।

जब वह पूरा चौबीस वर्षका हो चुका तब उसने, जिसका शेष यौवन विजयोंसे उत्तरोत्तर वृद्धिंगत हुआ,—तृतीय

[३] कलिंगराजवंशमें, एक पुरुषयुगके लिये महाराज्याभिषेक पाया। अपने अभिषेकके **पहले ही वर्षमें** उसने वातविहत (तूफानके बिगाडे हुए) गोपुर (फाटक), प्राकार (चहारदीवारी) और भवनोंका जीर्णोद्धार कराया; कलिङ्ग नगरीके फव्वारेके कुण्ड, इषितल्ल (?) और तड़ागोके बाँधोको बँधवाया; समस्त उद्यानोंका प्रतिसंस्थापन कराया और पैंतीस लक्ष प्रजाको सन्तुष्ट किया।

[४] **दूसरे वर्षमें, सातकर्णिकी** चिन्ता न करके उसने पश्चिम देशको बहुत-से हाथी, घोडो, मनुष्यों और रथोंकी एक बडी सेना भेजी। कृष्ण-बेण नदीपर सेना पहुँचते ही, उसने उसके द्वारा **मूषिक नगरको** सन्तापित किया। **तीसरे वर्षमें** फिर

[५] उस गन्धर्व-वेदमें निपुणमतिने दंप, नृत्य, गीत, वाद्य, सन्दर्शन, उत्सव और समाजके द्वारा नगरीका मनोरञ्जन किया।

और चौथे वर्षमें, विद्याधर-निवासोंको, जो पहले कभी नष्ट नहीं हुए थे और जो कलिङ्गके पूर्व राजाओंके निर्माण किये हुए थे······उनके मुकुटोंको व्यर्थ करके और उनके लोहेके टोपोंके दो खण्ड करके और उनके छत्र,

[६] और भृंगारों (सुवर्णकलशों) को नष्ट करके तथा गिराकर, और उनके समस्त बहुमूल्य पदार्थों तथा रत्नोंका हरण करके, उसने समस्त राष्ट्रिको और भोजकोंसे अपने चरणोंकी वन्दना कराई।

इसके बाद पाँचवें वर्षमे उसने तनसुलिय मार्गसे नगरीमें उस प्रणाली (नहर) का प्रवेश किया जिसको नन्दराजने तीन सौ वर्ष पहले खुदवाया था।

छठे वर्षमें उसने राजसूय-यज्ञ करके सब करोंको क्षमा कर दिया,

[७] पौर[1] और जानपद (संस्थाओं) पर अनेक शतसहस्र अनुग्रह वितरण किये।

सातवें वर्ष राज्य करते हुए, वज्र घरानेकी धृष्टि (प्राकृत=धिसि) नाम्नी गृहिणीने मातृक पदको पूर्ण करके सुकुमार [१]···(।)

आठवें वर्षमें उसने (खारवेलने) बड़ी दीवारवाले गोरथगिरिपर एक बड़ी सेनाके द्वारा

[८] आक्रमण करके राजगृहको घेर लिया। पराक्रमके कार्योंके इस समाचारके कारण नरेन्द्र [नाम] अपनी घिरी हुई सेनाको छुड़ानेके लिये मथुराको चला गया।

(नवें वर्षमें) उसने दिये······पल्लवयुक्त

[९] कल्पवृक्ष, सारथीसहित हय-गज-रथ और सबको अग्निवेदिका-सहित गृह, आवास और परिवसन। सब दानको ग्रहण कराये जानेके लिये उसने ब्राह्मणोंकी जातिपंक्ति (जातीय संस्थाओं) को भूमि प्रदान की। अर्हत्···· व ···· न··· · गिया (?)

---

१ राजधानीकी संस्थाको 'पौर' और ग्रामोंकी संस्थाको 'जानपद' कहते थे। वर्तमान समयमें हम इन्हें 'म्युनिसिपल' और 'डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड'के नामसे पुकार सकते हैं।

[१०] [क] [ि] मानैः (?) उसने महाविजय-प्रासाद नामक राजसन्निवास, अड़तीस सहस्रकी लागतका बनवाया।

दसवें वर्षमें उसने पवित्र विधानोद्वारा युद्धकी तैयारी करके देश जीतनेकी इच्छासे, भारतवर्ष (उत्तरी भारत) को प्रस्थान किया।... क्लेश (?) से रहित ....उसने आक्रमण किये गये लोगोके मणि और रत्नोको पाया।

[११] (ग्यारहवें वर्षमें) पूर्व राजाओके बनवाये हुए मण्डपमें, जिसके पहिये और जिसकी लकड़ी मोटी, ऊची और विशाल थी, जनपदसे प्रतिष्ठित तेरहवें वर्ष पूर्वमें विद्यमान केतुभद्रकी तिक्त (नीम) काष्ठकी अमर मूर्तिको उसने उत्सवसे निकाला।

बारहवें वर्षमें.........उसने उत्तरापथ (उत्तरी पञ्जाब और सीमान्त प्रदेश) के राजाओंमे त्रास उत्पन्न किया।

[१२] ....और मगधके निवासियोमें विपुल भय उत्पन्न करते हुए उसने अपने हाथियोको गंगा पार कराया और मगधके राजा बृहस्पतिमित्रसे अपने चरणोकी बन्दना कराई ....(वह) कलिंगजिनकी मूर्तिको जिसे नन्दराज ले गया था, घर लौटा लाया और अंग और मगधकी अमूल्य वस्तुओको भी ले आया।

[१३] उसने.........जठरोल्लिखित (जिनके भीतर लेख खुदे हैं) उत्तम शिखर, सौ कारीगरोको भूमि प्रदान करके, बनवाये और यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि वह पाण्डवराजसे हस्ति नावोंमें भरा कर श्रेष्ठ हय, हस्ति, माणिक और बहुतसे मुक्ता और रत्न नजरानेमें लाया।

[१४] उसने.........वशमें किया।

फिर तेरहवें वर्षमें व्रत पूरा होनेपर (खारवेलने) उन याप-ज्ञापकोंको जो पूज्य कुमारी पर्वतपर, जहाँ जिनका चक्र पूर्णरूपसे स्थापित है, समाधियोंपर याप और क्षेमकी क्रियाओमे प्रवृत्त थे; राजभृतियोंको वितरण किया। पूजा और अन्य उपासक कृत्योके क्रमको श्रीजीवदेवकी भाँति खारवेलने प्रचलित रखा।

[१५] सुविहित श्रमणोंके निमित्त शास्त्र-नेत्रके धारकों, ज्ञानियों और तपोबलसे पूर्ण ऋषियोंके लिये (उसके द्वारा) एक संघायन (एकत्र होनेका भवन) बनाया गया। अर्हत्‌की समाधि (निषद्या) के निकट, पहाड़की ढालपर, बहुत योजनोंसे लाये हुए, और सुन्दर खानोंसे निकाले हुए पत्थरोंसे, अपनी सिंहप्रस्थी रानी 'वृष्टी' के निमित्त विश्रामागार—

[१६] और उसने पाटालिकाओंमें रत्न-जटित स्तम्भोंको पचहत्तर लाख 'पणों (मुद्राओं) के व्ययसे प्रतिष्ठापित किया। वह (इस समय) मुरिय कालके १६४ वें वर्षको पूर्ण करता है।

वह क्षेमराज, वर्द्धराज, भिक्षुराज और धर्मराज है और कल्याणको देखता रहा है, सुनता रहा है और अनुभव करता रहा है।

[१७] गुणविशेष-कुशल, सर्व मतोंकी पूजा (सन्मान) करनेवाला, सर्व देवालयोंका संस्कार करानेवाला, जिसके रथ और जिसकी सेनाको कभी कोई रोक न सका, जिसका चक्र (सेना) चक्रधुर (सेना-पति) के द्वारा सुरक्षित रहता है, जिसका चक्र प्रवृत्त है और जो राजर्षिवंश-कुलमें उत्पन्न हुआ है, ऐसा महाविजयी राजा श्रीखारवेल है।

इस शिलालेखकी प्रसिद्ध घटनाओंका तिथिपत्र—

बी. सी. (ईसाके पूर्व)

,, १४६० (लगभग)	... केतुभद्र
,, ...४६० (लगभग)	... कलिंगमें नन्दशासन
,, [२३०	... अशोककी मृत्यु]
,, [२२० (लगभग)	.. कलिंगके तृतीय-राजवंश-का स्थापन]
,, १९७ ...	... खारवेलका जन्म
,, [१८८ ...	... मौर्यवंशका अन्त और पुष्यमित्रका राज्य प्राप्त करना]
,, १८२ ...	... खारवेलका युवराज होना
,, [१८० (लगभग	... सातकर्णि प्रथमका राज्य-प्रारम्भ]

,, १७३ ...	...	खारवेलका राज्याभिषेक
,, १७२ ...	...	मूषिक-नगरपर आक्रमण
,, १६९ ...	...	राष्ट्रिकों और भोजकोंका पराजय
,, १६७ ...	..	राजसूय-यज्ञ
,, १६५ ...	...	मगधपर प्रथम वार आक्रमण
,, १६१ ...	...	उत्तरापथ और मगधपर आक्रमण, पाण्डवराजसे अदेय (नजराने) की प्राप्ति
,, १६० ...	...	शिलालेखकी तिथि

३

वैकुण्ठ (स्वर्गपुरी) गुफा उदयगिरि—प्राकृत।

[लगभग १६५ मौर्यकाल]

अरहन्तपसादन कलिंग····य ·· नान लेनकाडतं रजिनोलस···· हेथिसहसं पनोतसय··· **कलिंग** वेलस अगमहि पिडकाडे[1]

[इस शिलालेखमे अर्हन्तोंकी कृपाको प्राप्त **गुहानिर्माण** (Excavation) बताया गया है। इस लेखका शेषभाग इतना टूटा हुआ है कि वह पढनेमें नहीं आसकता। वैकुण्ठ गुफा, जिसके नामसे यह शिलालेख प्रसिद्ध है, राजा ललाकके द्वारा अर्हन्तो और कलिंगके श्रमणोके लाभ या उपयोगके लिये बनाई गई थी।]

[JASB, VI, p 1074]

४

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका] लेकिन करीव १५० ई० पूर्वका [बूल्हर]-

---

१ पितकड in JASB, vol VI, p. 1074.

समनस माहरखितास आतेवासिस वछीपुत्रस सावकास उतर-दासक[ा] स पासादोतोरनं [॥]

अनुवाद—माहरखित (माघरक्षित) के शिष्य, वछी (वात्सी माता) के पुत्र उतरदासक (उत्तरदासक) श्रावकका (दान) यह मन्दिरका तोरन(ण) है।

[El, II, n° XIV, n° 1]

५

मथुरा—प्राकृत।

[महाक्षत्रप शोडाशके ४२ वे (?) वर्षका]

१. नम अरहतो वर्धमानस।

२. स्व[ा]मिस महक्षत्रपस शोडासस सवत्सरे ४० (?) २ हेमतमासे २ दिवसे ९ हरितिपुत्रस पालस भयाये समसाविकाये[1]

३. कोछिये अमोहिनिये सहा पुत्रेहि पालघोपेन पोठघोपेन धनघोपेन आयवती प्रतियापिता प्राय-[भ]-

४ आर्यवती अरहतपुजाये [॥]

अनुवाद—अर्हत् वर्धमानको नमस्कार हो। स्वामी महाक्षत्रप शोडासके ४२ (?) वें वर्षकी शीतऋतुके दूसरे महीनेके नौवें दिन, हरिति (हरिती या हारिती माता) के पुत्र पालकी स्त्री, तथा श्रमणोकी श्राविका, कोछि (कौत्सी) अमोहिनि (अमोहिनी) के द्वारा अपने पुत्रों पालघोप, पोठघोप, (प्रोष्ठघोष) और धनघोपके साथ आयवती (आर्यवती) की स्थापना की गई थी।

[El, II, n° XIV, n° 2]

६

पभोसा (अलाहाबादके पास)—संस्कृत।

[द्वितीय या प्रथम ईसवी पूर्व (फ्यूरर)]

---

१ पढ़ो 'समनसाविकाये'।

१. राज्ञो गोपालीपुत्रस

२. वहसतिमित्रस

३. मातुलेन गोपालीया[1]

४. वैहिदरीपुत्रेन [आसा]

५. **आसाढसेनेन** लेनं

६. कारितं [उदाकस][2] दस–

७. मे सवछरे कश्शपीयानं अरह–

८. [तां] न ` – ा – ि – – – ो [॥]

अनुवाद—गोपालीके पुत्र राजा वहसतिमित्र (बृहस्पतिमित्र) के मामा, तथा गोपाली वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र **आसाढसेनने** कश्यपीय अरहतोंके ·· दसवे वर्षमे एक गुफाका निर्माण कराया।

[EI, II, p. 242]

७

पभोसा (प्रभात)—प्राकृत।

[द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई. पू.]

१. अधियछात्रा राञो शोनकायनपुत्रस्य वगपालस्य

२. पुत्रस्य राञो तेवणीपुत्रस्य भागवतस्य पुत्रेण

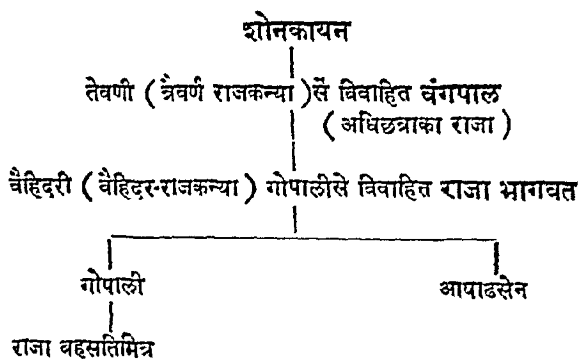
३. वैहिदरीपुत्रेण **आषाढसेनेन** कारितं [॥]

अनुवाद—अधिछत्राके राजा शोनकायन (शौनकायन) के पुत्र राजा वंगपालके पुत्र (और) तेवणी (अर्थात् त्रैवर्ण-राजकन्या) के पुत्र राजा भागवतके पुत्र (तथा) वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र **आषाढसेनने** बनवाई।

[नोट—शुङ्गकालके अक्षरोसे मिलने-जुलनेके कारण दोनों शिलालेखोका काल विश्वासके साथ **द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई० पूर्व** निश्चित किया

१ सभवत 'गोपालिया'। २ सभी अक्षर सशयापन्न है।

जा सकता है। खास ऐतिहासिक चीज जो यहां अङ्कित करनेकी है वह अधिछत्राके प्राचीन राजाओंकी वंशावलि है। अधिछत्रा किसी समय प्रतापी उत्तर पाञ्चालके राजाओंकी राजधानी थी। वंशावली इस प्रकार है.—



वहसतिमित्र कहांका राजा था और उसके पिताका नाम क्या था, यह नहीं बताया गया है। लेकिन, ए० फ्यूरर की सम्मतिमें हम उसे कौशाम्बीका राजा मान सकते हैं, क्योंकि वह (कौशाम्बी) प्रभास (पभोसा) के निकट है तथा बहुत-से उसके (वहसतिमित्रके) सिक्के कौशाम्बीमें मिले हैं।

[EI, II, n° XIX, n° 2 (p 243)]

८

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

१. नमो आरहतो वधमानस दण्डाये गणिका-

२ ये लेणशोभिकाये धितु शमणसाविकाये

३. नादाये गणिकाये वासये आरहता देविकुला

४. आयगसभा प्रपा शीलापटा पतिठापित निगमा-

५. ना अरहतायतने स [हे]ा मातरे भगिनिये धितरे पुत्रेण

६. सविन च परिजनेन अरहनपुजाये ।

अनुवाद—अर्हत् वर्धमानको नमस्कार हो । श्रमणोंकी उपासिका (श्राविका) गणिका नादा, गणिका दन्दाकी बेटी वासा, लेणशोभिकाने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये व्यापरियोंके अर्हत्मन्दिरसे अपनी माँ, अपनी बहिन, अपनी पुत्री, अपने लड़केके साथ और अपने सारे परिजनोंके साथ मिलकर एक वेदी, एक पूजागृह, एक कुण्ड और पाषाणासन बनवाये ।

[I. A., XXXIII, p 152-153.]

९

मथुरा—प्राकृत ।

(कालनिर्देश नहीं दिया है, किन्तु जे. एफ. फ्लीटके अनुसार लगभग १४-१३ ई० पूर्वका होना चाहिये)

१. [न] मो अरहतो वर्धमानस्य गोतिपुत्रस पोठयशक-

२. कालवाळस

३. [भार्याये] कोशिकिये शिमित्राये[1] अयागपटो प्रि [प्रतिष्ठापितो]

अनुवाद—वर्धमान अर्हन्तको नमस्कार हो । गोतिपुत्र (गौतीपुत्र) की स्त्री कौशिककुलोद्भूत शिवमित्राने एक अयागपट स्थापित किया । गोतिपुत्र पोठय और शक लोगोंके लिये काला सर्प (कालवाल) था ।

[El, I, n° XLIV, n° 33]

१०

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका सम्भवतः १४-१३ ई० पूर्व]

१. मा अरहतपूजा[ये]

२. गोतीपुत्रस इंद्रपा[ल]....

1 इसकी जगह 'शिवमित्राये' पढ़ना चाहिये (J. F Fleet)।

अनुवाद—गोती (गौंती माता) के पुत्र इन्द्रपाल (इन्द्रपाल) के··· ··· अर्हन्तोंकी पूजाके लिये··········प्रतिमा······

[El, II, n° XIV, n° 9.]

११

गिरनार:—संस्कृत।

[विक्रमसंवत् ५८]

हुमदके पवित्र स्थानके आङ्गनमें वृक्षके नीचे एक चौकोर चबूतरा है। उसके किनारेपर निम्नलिखित लिखा हुआ है.—

स० ५८ वर्षे चैत्र वदी २
सोमे धारागञ्झे
प० नेमिचन्दशिष्य
पंचाणचंदमूर्ति

अनुवाद—संवत ५८ के वर्षमें, सोमवार, चैत्र वदी २ को, धारागञ्छमें नेमिचन्द्रके शिष्य पंचाणचंदकी मूर्ति।

[ASI, XVI, p 357, n° 20]

१२

मथुरा—प्राकृत।

(विना कालनिर्देशका)

१. भदतजयसेनस्य आतेवासिनीये
२. धामघोषाये दानो पासादो [॥]

अनुवाद—भदन्त जयसेनकी शिष्या धमघोषा (धर्मघोषा) के दानस्वरूप यह मन्दिर है।"

[El, II, n° XIV, n° 4]

१३

मथुरा—प्राकृत।

भगवा नेमेसो भग- -

अनुवाद—"भगवान नेमेस (नैगमेष), भगवान ··

[El, II, n° XIV, n° 6]

१४

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

१. मा अर्हंतान[1] श्रमणश्राविका[ये]

२.....लहस्तिनीये तोरण प्रति [ष्ठापि][2]

३. सह माता पितिहि सह

सश्रू-शशुरेण

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार। अपने माता पिता और सास-ससुरके साथ साधुओंकी एक शिष्या...लहस्तिनी (वलहस्तिनी), के हुक्मसे एक तोरण खड़ा किया गया।

[ऐसा मालूम पड़ता है कि उस समय माता-पिता और सास-ससुरके साथ कोई धार्मिक कार्य करनेसे, उनको भी पुण्यप्राप्तिमें साझीदार समझा जाता था।]

[EI, I, XLIII, n° 17]

१५

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

१. अ. नमो अरहतान फगुयशस

२. अ. ननकस भयाये शिवयशा—

३. अ. — —[— —]——]—काये

१. ब. आयागपटो कारितो

२. ब. अरहतपुजाये [।।]

1 'नमो अरहतानं' पढ़ना चाहिये। 2. 'प्रतिष्ठापित' पढो। सभवतः पहली और दूसरी पंक्तिके अन्तमें और अधिक अक्षर टूटे हुए मालूम पडते है।

अनुवाद—अर्हन्तोको नमस्कार! फगुयश (फल्गुयशस्) नर्तककी पत्नी शिवयशा (शिवयशस्) के द्वारा अर्हन्तोकी पूजाके लिये एक आयागपट बनवाया गया।

[El, II, n° XIV, n° 5]

१६

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

नमो अरहतो महाविरस। माथुरक-लवाडस[सा]-भयाये-त्र····ताये [आयागपटो] [॥]

अनुवाद—महावीर अर्हत्को नमस्कार। मथुरानिवासी-लवाड (?) की पत्नी—ि ताके [दानस्वरूप] यह आयागपट है।

[El, II, n° XIV, n° 8]

१७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्कवाल ?] वर्ष ४

अ सिद्ध स ४ ग्रि १ दि २० वारणातो गणातो अर्य्यहाट्ट-
कियातो कुलतो वजणगरित [ो शा] — —

व पुश्यमित्रस्य शिशिनि सथिसहाये शिशिनि सिहमित्रस्य
सढचरि — — —

स दाति सहा ग्रहचेटेन ग्रहदासेन — —

अनुवाद—सिद्धि हो। चतुर्थ वर्षके ग्रीष्म ऋतुके १ ले महीनेके २० वे दिन, वारणगण, अर्य हाट्टकिय (आर्य हाट्टकीय) कुल, वजणगरी (वज्रनगरी) शाखाके — — — पुष्यमित्रकी शिष्या, साथिसिहा (षष्ठिसिंहा) की शिष्या, सिहमित्र (सिहमित्र) की सढचरी (श्राद्धचरी) ··।

[El, II, n° XIV, n° 11]

१८

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[हुविष्ककाल ?] वर्ष ५

स्य व ५ गृ ४ दि ५ कोट्टिया ....

त [ो] शाखात [ो] वाचकस्य अर्य्य ...

अनुवाद— ..के ५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके चौथे महीनेके ५ वे दिन, ...कोट्टिय (गण)... ..शाखाके वाचक अर्य्य...(आर्य)...

[EI, II, n° XIV, n° 12]

१९

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क स० ५]

अ. १.... [१] दे [व] पुत्रस्य क[नि]ष्कस्य स ५ हे १ दि १ एतस्य पूर्व्वे [ा] य कोट्टियातो गणातो ब्रह्मदासिका [तो]

२. [कु]लातो [उ]चेनागरितो शाखातो सेथि–ह–स्य ि– ि– ि– सेनस्य सहचरिखुडाये दे [व]—

व. १. पालस्य धि [त] ..

२. वधमानस्य प्रति[मा] ॥

अनुवाद—देवपुत्र कनिष्कके ५ वें वर्षकी हेमन्त ऋतुके १ ले महीनेके १ ले दिन, कोट्टियगण, ब्रह्मदासिका कुल और उच्चनागरी शाखाकी खुदा (क्षुद्रा) ने वर्धमानकी प्रतिमा समर्पित की । यह क्षुद्रा श्रेष्ठी ' ... सेनकी पत्नी और देव .... पालकी पुत्री थी ।

[EI, I, XLIII, n° 1]

---

१ 'सिद्धं' की पूर्ति करो ।

२०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[?] वर्ष ५

अ १. सिद्ध[म्] स ५ हे १ दि १० २ अस्य[ां] पूर्व्वा[ं] ये क्रोट्टि[यातो]।

२. [ग] णातो ब्रह्मदासिकातो उच[ा] ना (क) रितो [शाखातो]

ब १. श्र[ि] गृहातो स[—भोगातो··· ··· ·········।

२. · ··स निड(?)

स १ · ि वोधिलामे ए वासुदेवा पुवि ·· ··· ·· ·· ·····

२.·· सर्व-सत्[त्वा] न[म्] ह[ि]त—सुख[ा] ये।

अनुवाद—सिद्धि हो। वर्ष ५, हेमन्तका पहिला महिना, १२ वाँ दिन। इस दिन कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक (कुल), उचेनाकरी (उच्चानागरी) शाखा, (श्रीगृह) सम्भोग ···········के·············(प्रार्थना पर)····· सब जीवोंके हित और सुखके लिये ······ ।

[IA, XXXIII, p. 36-37, n° 5]

२१

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[?] वर्ष ५

······ तो पतिव······ब्रह्मजाति··स ५ हे ४ दि २० अस्य पूर्व्वाये कु महिलनस्य शिष्य अर्य्यगरिकतो

[यह शिलालेख अर्य्य गरिकके किसी दानका उल्लेख करता है। गरिक महिलनके शिष्य थे। यह दान सं० ५ के वर्षमें, शीतऋतुके चौथे महीनेके २० वें दिन किया गया।]

[A Cunningham, Reports III, p 31 n° 3]

२२

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका]

अ. १. सिद्ध को[ट्टि] यतो गणतो उचेन—

२. गरितो शखतो ब्रम्हा(ह्मा)दासिअतो

३. कुलतो शिरिग्रिहतो संभोकतो

४. अय्य जेष्टहस्तिस्य शिष्यो अ [र्य्यमि] [हि] लो]

ब. १. तस्य शिष्य [ो] अर्य्यक्षेर

२. [को] वाचको तस्य निर्वत—

३. न वर [ण] हस्ति [स्य]

स. १. [च] देवियच धित जय-

२. देवस्य वधु मोषिनिये

३. वधु कुठस्य कसुथस्य

द. १. धम्रप [ति] ह स्थिरए

२. दन शव्रदोभद्रिक

३ सर्व्रसत्वन हितसुखये

[EI, II, n° XIV, n° 37]

अनुवाद—कोट्टिय गण, उच्चेनगरी (उच्चनागरी) शाखा, (और) ब्रह्मदासिअ (ब्रह्मदासिक) कुल, शिरिग्रह संभोगके अय्य जेष्टहस्ति (ज्येष्ठहस्तिन्) के शिष्य अर्य्य मिहिल (आर्य मिहिर) थे; उनके शिष्य वाचक अर्य्य क्षेरक (आर्य क्षैरक ?) थे; उनके कहनेसे वरणहस्ती और देवी, दोनोंकी पुत्री, जयदेवकी बहू तथा मोषिनीकी बहू, कुठ कसुथकी धर्मपत्नी स्थिराके दानमे, सर्व जीवोंके कल्याण और सुखके लिये, सर्वतोभद्रिका प्रतिमा दी गई ।

२३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

अ. १ सिद्धम् ॥ कोट्टियातो गणातो ब्रह्मदासिकात[ो] कुलातो
२ उ[चे]नागरितो शाखातो—रिनातो स[भ] ो[गातो] अ [र्य्य]-

ब. १. जेष्टहस्ति[स्य] शि[ष्यो] अर्य्यमहलो अर्य्यजेष्ट[हस्तिस]
[शिशो] अर्य्य[गा]ढक [ो] [त] स्य शिशिनि [अर्य्य-]
२. शामये निर्वतना। उ[स] 'प्रतिमा वर्मये धीतु [गुल्हा]
ये जयदासस्य कुटुविनिये दान

अनुवाद—सफलता प्राप्त हो। अर्य्य (आर्य) ज्येष्ठहस्तिके शिष्य अर्य्य महल थे। वे कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखा और ·· रिन संभोगके थे। ज्येष्ठहस्तिके एक और शिष्य आर्य गाढक थे। उनकी शिष्या शामाके कहनेसे गुल्हाने, जो कि वर्माकी पुत्री और जयदासकी पत्नी थी, एक ऋषभदेवकी प्रतिमा समर्पित की।

[EI, 1, XLIII, n° 14]

२४

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क सं० ७]

१ [सिद्धम् ॥] महाराजस्य राजातिरास्य देवपुत्रस्य पाहि-
कणिष्कस्य स० ७ हे १ दि १० ५ एतस्य पूर्व्वाया अर्य्यो-
देहिकियातो
२. गणातो अर्य्यनागभुतिकियातो कुलातो गणिस्य अर्य्यबुद्ध-
[सि]रिस्य शिष्यो वाचको अर्य्यस[न्धि]कस्य भगिनि अर्य्यजया
अर्य्यगोष्ट

अनुवाद—सफलता हो। महाराज, राजाधिराज, देवपुत्र, शाहि कनिष्कके ७ वें वर्षसे, हेमन्तऋतुके पहले महीनेके १५ वें दिन (अमावस्या) (Lunar day) अय्यौदेहिकीय (आर्य उद्देहिकीय) गण और अय्य-नागभुतिकिय (आर्य नागभूतिकीय) कुलके गणी अय्य बुद्धिशिरि (आर्य बुद्धश्री)के शिष्य वाचक अय्य (सन्धि) ककी भगिनी अय्य जया (आर्य जया) अय्य गोष्ठ······

[EI, I, XLIII, n° 19]

२५

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क वर्ष ९···]

१. सिद्ध महाराजस्य **कनिष्कस्य** संवत्सरे नवमे मासे प्रथ १ दिवसे ५ अस्य पूर्व्वाये **कोट्टियातो** गणातो

२. · धव··· ढिस · न वुद · भ जिमित त्रिकद

[यह महत्त्वपूर्ण लेख नववें संवत्, पहले महीने (ऋतुका नाम लुप्त है) पाँचवें दिनका है। यह महाराज कनिष्कके राज्यकाल (ईस्वी पूर्व ४८) का है।]

[A Cunningham, Reports, III, p 31, n° 4]

२६

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्कका १५ वाँ वर्ष]

अ. १.··· ··[1] स १० ५ गृ ३ दि १ अस्या पूर्व्वे [।] य

ब. १.······ **हिकातो**[2] कुलातो अर्य्य**जयभूति** ·

स. १. स्य शिशीनिनं अर्य्य**सङ्गमिकये** शिशीनि[3]

द. १. अर्य्य**वसुलये** [निर्वर्त्त] न

१ 'सिद्धं' की पूर्त्ति करो। २ 'मेहिकातो' पढ़ो। ३ 'शिशीनिन' पढ़ो।

अ. २. · ·लस्य धी [तु]· ि· · धु[१] वेणि

ब. २ ·श्रेष्ठि [स्य] धर्मपतिये भट्टि[से]नस्य

स. २. [मातु] कुमरमितयो[२] दन भगवतो [प्र] ··

द २ मा सव्वतोभद्रिका [॥]

अनुवाद—[सफलता हो।] १५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीनेके पहले दिन, भगवानकी एक सर्वतोभद्रिका प्रतिमाको कुमरमिता (कुमारमित्रा) ने [मेहिक] कुलके अर्य्यजयभूतिकी शिष्या अर्य्य सङ्गमिकाकी शिष्या अर्य्य वसुलाके आदेशसे समर्पित की। कुमारमित्रा···लकी पुत्री,·· की वहू (वधू), श्रेष्ठी वेणीकी धर्मपत्नी और भट्टिसेनकी माँ थी।

[El, 1, n° XLIII, No 2]

२७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क?] वर्ष १८

अ. स १० ८ गृ ४ दि ३ [अस्या पु]–[य] [या] तो गण [तो]

व सभोगातो वच्छलियातो कुलातो गणि

द १ वासि जयस्य–तु मासिगिये [?] दान सर्व्वत[ो]भ–[द्र]

२. – [सर्वस] त्रा [न] सुखाय भवतु।

अनुवाद—वर्ष १८ ग्रीष्मऋतुका ४ था महीना, तीसरे दिनके अवसर पर, [कोट्टि] य गण,···संभोग, वच्छलिय (वात्सलीय) कुलके गणि··· के आदेशसे जयकी (माता) मासिगिका दान एक सर्वतोभद्र [प्रतिमा] के रूपमें किया गया।

[El, II, n° XIV, n°.13]

---

१ 'वधु' पढो। २ इसे 'कुमारमितये' पढ़ना चाहिये।

२८

मथुरा—प्राकृत-भग्न।

[हुविष्क ?] वर्ष १८

अ.····प १० [८] व २ दि. १० १

ब. धितु मि [तशि] रिये भगवती अरिष्टणेमिस्य [वेवर्त] ?

अनुवाद—वर्ष १८, वर्षाऋतुका २ रा महीना, ११ वां दिन, इस दिन ·की पुत्री मितशिरि (? मित्रश्री) के दानके रूपमे भगवान अरिष्टणेमि (अरिष्टनेमि) की···[की प्रतिष्ठा)······

[EI, II, XIV, n° 14]

२९

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क सं. १९]

अ. १. सिद्धम्। सं १० ९ व ४ दि १० अस्या पु····

२. र्व्वाय वाचकस्य अर्य्यब्ल ··

३. दिनस्य शिष्यो [वाच] को अर्यमा ···

४. तृदिनः तस्य [नि] र्व्वर्त्त [न]।

ब. १ [कोट्टियातो गणातो ठानियातो

२. [कुलातो श्रीगृहातो सभोगातो]

३. [अर्यवेरिशाखातो सु] चि····

स. [ल] स्य धर्म्यपत्निये ले···

द. दान भगवतो स [न्ति] ·······[प्र] तिमा

अ. ५ नाश·········तर्न

ब. ४.····। [नृ] मो अरत्ततान सर्व्वलोकुत्त [मानं]

अनुवाद—सिद्धि हो । १९ वें वर्षकी वर्षाऋतुके चौथे महीनेमें, वाचक अर्य्य बलदिन (बलदत्त) के शिष्य वाचक अर्य्य मातृदिनके आदेशसे भगवान शान्तिनाथकी प्रतिमा ले · की तरफसे अर्पित की गई। यह अर्पण करनेवाली स्त्री सुचिल (शुचिल) की धर्मपत्नी थी और वह कोट्टिय गण, ठानीय कुल, श्रीगृह सम्भोग तथा अर्य्य वेरि (आर्य-वज्र) शाखाकी थी। सर्व लोकोमें उत्तम ऐसे अर्हतोको नमस्कार हो।

[EI, 1, n° XLIII, n° 3]

३०

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क वर्ष २०]

अ १ सिद्ध स [२०] गृमा—दि १० ५ कोट्टियातो गणतो [ठ] णियातो कुलतो वेरितो शखतो शिरिकातो

व १. [सभो]गातो वाचकस्य अर्य्यसघसिहस्य निर्व्वर्त्तना दातिलस्य ·· मति—

२ लस्य कुठुविणिये जयवालस्य देवदासस्य नागदिनस्य च नागदिनय च मातु

स १ श्राविकाये दि—

२ [ना] ये दान ॥

३ वर्द्धमानप्र—

४ तिम।

अनुवाद—सिद्धि हो । २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके १५ वें दिन, कोट्टियगण, ठानीय कुल, वेरि (वज्री) शाखा और शिरिक सम्भोगके वाचक अर्य्य सघसिह (आर्य सङ्घसिंह) के आदेशसे श्राविका दीना (दिन्ना) की तरफसे वर्धमानकी प्रतिमा [अर्पित की गई] । यह

दिन्ना दातिल [की पुत्री], मातिलकी पत्नी और जयपाल, देवदास, नागदिन (नागदत्त) तथा नागदिना (नागदत्ता) की माँ थी।

[EI, 1, p° XLIV, n° 28]

३१

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क सं० २०]

अ. १. [सिद्ध स २० गृ ३] दि [१०] ७ [एत]स्य पूर्व्वाय कोट्टिय[ा] तो गणातो ब्रह्मदासियातो कुलातो उचे [नागरितो शा] खातो [श्री] गृह [ा] तो सभोगातो [बृहतव]ाचक च गणिन च ज [-मित्र] स्य....[1]

२. अर्य्य [ओ] घस्य शिष्यगणिस्य [अ] र्य्यपालस्य श्र [द्धच] रो [वाच]कस्य अर्य्य[दत्त]स्य शिष्यो वाचको अर्य्य-सीहा [न] स्य निव्वर्त्तणा [ग्वो] हमि [त]स्य मानिकरस्य [गी]-जयभ[ट्टि] धीतु दात्य—

व १ [लो] हवाणियस्स याधर · वधू [ह] ग्गु [देव]स्य धर्म्मपत्नियेे मित्राये [दान]···· [सर्व्व] स [त्वान] हि [तसु] खाये काक [तेय]·······क्ष—

२.—वाज···· ि · ो·· ·· रज···· · ·····।

अनुवाद—सिद्धि हो। हुविष्कके २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके तीसरे महीनेके १७ वें दिन, वाचक अर्य्य सीह (सिंह)—जो वाचक दत्तके शिष्य थे, और जो कोट्टियगण, ब्रह्मदासीय कुल, उच्चनागरी शाखा तथा श्रीगृह

१ 'शिष्य' पढ़ो।

नभोगके थे—की आज्ञासे सब सत्त्वोंके सुख और कल्याणके लिये, मित्रा-की तरफसे · समर्पित की गई । यह मित्रा हग्गु देव (फल्गुदेव) की धर्मपत्नी, लोहेका व्यापार करनेवाले वाधरकी वहू खोट्टमित्रके मानि-कर·· जयभट्टिकी पुत्री·· ······ । अर्य्यदत्त गणी अर्य्यपालके श्राद्धचर थे । अर्य्यपाल अर्य्य ओघके शिष्य थे और अर्य्य ओघ महावाचक गणी जय-मित्रके शिष्य थे ।

[EI, 1 n° XLIII, n° 1]

३२

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[बिना कालनिर्देशका है, पूर्ववर्ती शिलालेखसे ही मिलता-जुलता होनेसे इसका भी समय हुविष्क स. २० है]

वाचकस्य दत्तशिष्यस्य सीहस्य नि········

[EI, 1, p 383, n° 60]

३३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क सं. २२]

१. सिद्ध सव २० · ·२ ग्रि १ दि स्य पुर्व्वाय वाचकस्य अर्य्य-मात्रिदिनस्य णि · [1]

२. सत्तवाट्टिनिये धर्म्मसोमाये दान ॥ नमो अरहतान

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो । [हुविष्कके] २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके पहले महीनेके · दिन, वाचक अर्य्य-मात्रिदिन (आर्य-मातृदत्त) के आदेशसे यह धर्म्मसोमाका दान है । धर्मसोमा एक सार्थवाहकी स्त्री थी । अर्हन्तोंको नमस्कार हो ।

[EI, 1, n° XLIV, n° 29]

---

१ 'निर्वर्तना' ।

३४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क सं. २२]

[सि] द्ध सं २० (?) [२] ग्रि २ दि ७ वधमानस्य प्रतिमा वारणातो गणातो पेतिवामि[क]...

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो। २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके दूसरे महीनेके ७ वें दिन, वारणा गण, पेतिवामिक [कुल] की तरफसे वर्धमानकी प्रतिमा [प्रतिष्ठापित की गई]।

[EI, 1, n° XLIII, n° 20]

३५

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष २५]

अ. १. सवत्सरे पचत्रिशे हेमतम [से] त्रितिये दिवसे वीशे अस्मि क्षुणे

ब. १. कोट्टियतो गणतो ब्र[ह्म]दासिकतो कुलतो उचेनागरितो शाखातो अयवलत्रतस्य शिषो सधि

२. स्य शिषिनि ग्रहां ———ि... —वतन [ना] दिअ [रि] त जभ[क] स्य वधु जयभट्टस्य कुटूविनीय रयगिनिये [वु]सुय [॥]

अनुवाद—२५ वें वर्षकी शीतऋतुके तीसरे महीनेके १२ वें दिनके समय रयगिनिने जो नान्दिगिरि (?) के जभककी वहू थी, एक वुसुय[1] अर्हा——की आज्ञासे समर्पित की। रयगिनि जयभट्टकी पत्नी थी। अर्हा——सधिकी शिष्या थी। सधि अर्य्य वलत्रत (वलत्रात) के शिष्य थे। यह वलत्रात कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल (और) उच्चनागरी शाखाके थे।

[EI, 1, XLIII, n° 5]

---

१ यह एक प्रकारकी या तो प्रतिमा है या कोई दान है।

३६

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका, सभवत. हुविष्कके २५ वे वर्षका]

१ उचेनगरितो शखतो अर्य्यवलत्रतस्य शिसिणि अर्य्यब्रह्म --

२. अर्य्यवलत्रतस्य शिष्यो अर्य्यसन्धिस्य परिग्रहे नवहस्तिस्य धिता ग्रहसेनस्य वधु ....

३. शिवसेनस्य देवसेनस्य शिवदेवस्य च भ्रात्रिन मातु जायये प्रतीमा प्र

४ [मा] नस्य सर्व्वसत्वान हितसुखय ॥

अनुवाद—अर्य्य ब्रह्म (आर्य ब्रह्म) [और] अर्य्य वलत्रत (आर्य वल-त्रात) के शिष्य अर्य्य सन्धि (आर्य सन्धि) के ग्रहणके लिये उचेनगरि (उच्चनागरी) शाखाके अर्य्य वलत्रत (आर्य वलत्रात) की शिष्या, जयाने सब जीवोके कल्याण और सुखके लिये वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की। यह जया नवहस्तीकी पुत्री, ग्रहसेनकी बहू तथा शिवसेन, देवसेन और शिवदेव इन तीन भाइयोकी मॉ थी।

[El, 11, n° XIV, n° 34]

३७

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष २९]

अ महाराज ष्कस स. २० ९ हे २ दि ३० अम क्षुणे भगवतो वर्धमानस प्रति [मा] प्रतिष्ठापिता ग्रहह[थ]स्य धितर सुखिताये बोधिनदि [ये]

व. कुटुविनिये वारणे गणे पुश्यमित्रीये कुले गणिस अर्य [दत्तस्य शिष्यस्य] गह [प्र] कि [त्र] स निर्वर्त [ना] अर[ह] तपुजाये ।

अनुवाद—महाराज . . क के २९ वें वर्षकी शीतऋतुके, दूसरे महीनेके तीसवें दिन, एक विवाहिता वोधिनदि (वोधिनन्दि ?) की आज्ञासे भगवान वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की गई । वोधिनदि ग्रहहथि (ग्रहहस्ती) की प्यारी लडकी थी। यह प्रतिष्ठा ग्रहप्रकिव (?) की प्रेरणासे हुई । यह ग्रहप्रकिव आर्य दत्तके जो वारण गण और पुश्यमित्रीय (पुष्यमित्रीय) कुलके थे, शिष्य थे ।

[EI, I, n° XLIII, n° 6]

३८

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[संभवत: हुविष्क वर्ष २९]

अ. १. एकुनती [ग] व. १. अ [र] [ह] तो स. १.....

२. वा— — २. [ह] रवल २ प्रतिस— —

द १. स्ध म-र- स्य देव [पु] त्रस्य [हु] क्षस्य

२. [वा] मि [क] नगदतस्य शिषो मि [ग क] ो स— —

[इस खण्ड-लेखका ठीक ठीक अनुवाद नहीं दिया जा सकता । इतना निश्चित है कि द. १. २ पंक्तियाँ हमें महाराज देवपुत्र हुक्ष (हुष्क या हुविष्क) और एक भिक्षु नगदत्त (नागदत्त) का नाम बताती है । यह भी हो सकता है कि यह लेख द. १ से शुरू हुआ हो, क्योंकि उस पंक्तिमे 'स्ध', 'सिद्ध' का स्थानीय मालूम पड़ता है, तथा उससे राजाका भी नाम है । इसकी धारा अ. १ हो सकती है । २९ वा वर्ष हुविष्कके राज्यमें आयेगा ।

[EI, II, n° XIV, n° 26]

३९

मथुरा—संस्कृत—भग्न ।

[काल लुप्त-संभवत. हुविष्कका २९ वा वर्ष]

.... [व] पुत्रस्य हुविष्कस्य स ....[1]

---

१ 'देवपुत्रस्य' और 'सवत्सरे' पढो ।

अनुवाद— देवपुत्र हुविष्कके •• •• वर्षमें •••

[El 11, n° XIV n° 25]

४०

मथुरा—प्राकृत ।

[वर्ष ३१ हुविष्ककाल]

अ-स ३० १ व १ दि १० अस्म क्षुणे

व १ यातो गणतो [अ]र्य्य वेरितो शाखतो [ठा] णियातो कुलातो वह [तो] । कुटुम्बिणिये [ग्र] ह

२ [अर्य]–दासस्य निवर्तना बुद्धिस्य धितु देविलस्य शिरिये दाण ।

[ऊपरके शिलालेखका ठीक क्रम, जो बूल्हरकी सम्मतिसे, इस तरह है.—]

[कोट्टि]यातो गण [तो] अर्य्यवेरितो शाखतो [ठा]णियातो कुलातो वह [तो] (?) [गणिस्य] अर्य [गो] दासस्य निवर्तना बुद्धिस्य धितु देविलस्य कुटुम्बिणिये ग्रहशिरिये दाण ॥

अनुवाद—३१ वें वर्षकी वर्षाऋतुके पहले महीनेके १० वें दिन, बुद्धिकी पुत्री (तथा) देविलकी पत्नी गृहशिरि (गृहश्री)ने, कोट्टिय गण, अर्य्य वेरि (आर्य वज्री) शाखा, ठाणिय (स्थानीय) कुलके [गणी] आर्य गोदासके आदेशसे दान किया ।

[El, II, n° XIV, n° 15]

४१

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क काल] वर्ष ३२

अ. १. सिद्धम्। सव [त्स] रे ३० २ हेमन्तमासे ४ दिवसे २ चारणातो गणा·· ·यातो [कु] ०ि[1]

२. ·· ······················ ··············

ब. १. –णि अर्यनन्दिकस्य निर्व्वर्त्तना जितामित्रय[रितु] नन्दिस्य धीतु बुद्धिस्य कुटुम्बिनिये प्रा—[2]

तारिकस्य–नी ि – प्य मातु गन्धिकस्य अरहन्तप्रतिमा सर्व्वतोभद्रिका।

अनुवाद—सिद्धि हो। ३२ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके दूसरे दिन, रितुनन्दि (ऋतुनन्दि) की पुत्री, बुद्धिकी पत्नी तथा गंधिककी माँ ···जितामित्राने, वारण गण ··य कुल ··अर्य-नन्दिक (आर्यनन्दिक) के आदेशसे एक अर्हन्तकी सर्वतोभद्रिका प्रतिमाकी प्रतिष्ठापना की।

[EI, II, n° XIV, n° 16]

४२

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ३५]

अ. १. [सिद्ध]। स ३० [५] व ३ दि १० अस्य [ा] पूर्व्वाया कोट्टियातो गणतो [स्थानि] या [तो] कु—

ब. १. वइरातो श [ा] ख [ा]तो शिरिकातो भ[भो]कातो अर्य्य-चलदिनस्य शिशिनि कुमरमि[त]

---

१ सभवत 'गणातो हट्टियातो' पढ़ो। २ सभवत 'प्रातारिकस्य' पढ़ना चाहिये।

२ तस्य पुत्रो कुम[ा]रभटि गधिको तस ···न प्रतिमा वर्धमा-
नस्य सगितमखित [वो] धित

स. १ अ [र्य्ये]

२. कुमार-

३. मित्रा-

४ ये-

द १ र्व्वं

२ [त] न [।।]

साराश—आर्य बलदिन (बलदत्त) की शिष्या कुमरमित्रा (कुमार-मित्रा) थी। वह कोट्टिय गण, स्थानीय कुल, वइरा शाखा (तथा) शिरिक सभोक (संभोग) की थी। उसका पुत्र कुमारभटि गन्धिक (तेल, इत्रका व्यापार करनेवाला) था। उसने तीक्ष्ण, उज्वल, प्रबुद्ध कुमार-मित्राके आदेशसे वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की।

[EI, 1, n° XLIII, n° 7]

४३

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क संवत् ३९—हस्तिस्तम्भ]

१ महाराजस्य देवपुत्रस्य हुविष्कस्य सं० ३९

२. हे ३ दि० ११ एतय पुर्व्वये नन्दि विशाल

३ प्रतिष्ठपितो सिवदास श्रेष्ठिपुत्रेण श्रेष्ठिना

४. अर्य्येन रुद्रदासेन अरहतन पुजाये

अनुवाद—देवपुत्र महाराज हुविष्कके राज्यमें, सं० ३९ की शीतऋतुके तीसरे महीनेके ११ वे दिन, यह विशाल नन्दी शिवदास श्रेष्ठीके पुत्र आर्य श्रेष्ठी रुद्रदासने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये बनवाया (१८ ई० पूर्व)।

[A Cunningham, Reports, III, p 32–33, n° 9]

४४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ४०]

अ. १.—४०—हे—दि १०

व. १. ए [त] स्य पू [र्व्वा] य वरणतो ग [ण]-

स. १. तो आर्य्य हटिकियतो कुलतो

द. १ वजनगरित[ो] श [ा] ख[ा] त [ो] शि [रि] यत [ो]

अ. २ —— [ग] तो [द] तिस्य शिशिनिये

व. २. महन [न्दि] स्य सढचरिये

स. २ वल [वर्म्म] ये [नन्द] ये च शिशिनिये

द. २ अ [कक] ये [निर्व्वर्त्तना]......

अ. ३.—[स्य] धीतु ग्रमि [क] जयदेवस्य वधूये

व. ३ ...मिको जयनागस्य धर्म्मपत्निये सिहदता [ये]

स. ३....[लथभ][1] दन ="

अनुवाद—[सिद्धि हो।] ४० वें [वर्षमें] शीत ऋतुके......महीनेके दसवें दिन, सिहदता (सिंहदत्ता) ने एक पाषाण-स्तम्भकी स्थापना की। यह सिंहदत्ता ग्रामिक जयनागकी धर्मपत्नी, जयदेव ग्रामिक (गाँवका मुखिया) की बहू (तथा) ... की पुत्री थी। इस पाषाणस्तम्भकी स्थापना वारण गण, आर्य-हाटीकीय कुल, वज्रनागरी शाखा तथा शिरिय संभोगकी अकका (?) के आदेशसे हुई थी। यह अकका नन्दा और वलवर्माकी शिष्या, महनन्दि (महानन्दि) की श्राद्धचरी तथा दति (दत्ती) की शिष्या थी।

[EI, 1, n° XLIII, n° 1]

---

१ पढो 'शिलाथभो'।

४५

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४४]

अ मू—नमशर [स] नममहरजस्य हुविक्षस्य सव [त्स] रे ४० ४ हनगृ [स्य] मस ३ दिविस २ ए [त]–

व. [स्या] पूर्वय [ं] ··· गणे अर्यचेटिये कुले हरीनमालकटिय [श]

ाख ······ ·च्चक [स्य] हगिनदिअ शिसो ग ··· नागसेणस्य नि ····

अनुवाद—स्वस्ति । नमः । प्रतापी (?) महाराज हुविष्कके ४४ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीनेके द्वितीय दिवस, [वारण] गण, अर्य्य चेटिय (आर्य-चेटिक) कुल, हरीतमालकढि (हरीतमालगढी) शाखाके वाचक हगिनदि (भगनन्दि ?) के शिष्य आर्य्य नागसेनके आदेशसे—

[EI, 1, n° XLIII, n° 9]

४६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४५]

१. सिद्धम् स ४० ५ व [३] दि १० [७] एतस्य पूर्व्व[ा]य- ········ ये बुद्धिस्य वधुये धर्म्मवृद्धिस्य—

अनुवाद—सिद्धि हो । ४५ वें वर्षकी वर्षाऋतुके तीसरे (?) (महीने) के १७ वें दिन, धर्म्मवृद्धिकी ··· · बुद्धिकी बहूने······ · · ··· · ···

[EI, 1, n° XLIII, n° 10]

४७

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ४७]

१. स ४० ७ गृ २ दि २० एतस्य पुर्वय वरणे गणे पेतिवमि- के कुले वाचकस्य ओहनदिस्य शिसस्य सेनस्य निवतना सवकस्य

२. पुषस्य वधुये गिह···[कुटिविनि]···[पुष] दिन [स्य] [मातु] ···· र्ये

अनुवाद—४७ वे वर्ष की ग्रीष्मऋतुके २ रे महीनेके २० वें दिन, वरण (वारण) गण, पेतिवमिक (प्रैतिवर्मिक) कुलके वाचक और ओह-नदि (ओघनन्दि) के शिष्य सेनकी प्रार्थनापर पुष (पुष्य) श्रावककी बहू, गिहकी गृहिणी, पुषदिन (पुष्पदत्त) की माँ,····· की तरफसे [यह समर्पित किया गया]।

[El, 1, n° XLIV, n° 30]

४८

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[काल लुप्त, संभवत· वर्ष ४७]

१. सिद्धम्। महाराजस्य राजातिराजस्य · ··

२. ओहनन्दिस्य शिष्येण से न ··· ·· ि–[1]

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज, राजातिराज ·····ओहनन्दि (ओघ-नन्दि) के शिष्य सेनने·········

[El, II n XIV, n° 27]

४९

मथुरा—संस्कृत।

[हुविष्क वर्ष ४७]

दान देविलस्य दधिकर्णदेविकुलकस्य स ४० ७ गृ० ४ दिवसे २९

अनुवाद—४७ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके चौथे महीनेके २९ वे दिन, दधिकर्ण मन्दिर (या चैत्यालय) के पुजारी (या माली) देविलका दान।

[IA, XXXIII, p 102–103, n° 13]

---

१ 'सेनेन' पढ़ो।

५०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क वर्ष ४८]

१. महाराजस्य हुविष्कस्य स ४० ८ हे ४ दि ५

२. ब्रमदासिये कुल [ ] उ [च] ो नागरिय शाखाया धर····

अनुवाद—महाराज हुविष्कके राज्यमें, ४८ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके ५ वें दिन, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखाके धर ······

[IA, XXXIII, p 103, n° 14]

५१

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्ककाल वर्ष ५०]

१ पण ५० हेमतमासे प···

२ आर्य्यचेरस्य

३ ये युधदिनस्य

४ धित

५. पूपबुधिस्य

[इस खण्ड-शिलालेखका पूरा अनुवाद सभव नहीं है। काल ५० वाँ वर्ष और शीतऋतुका पहला या पाँचवा महीना है।]

[EI, II, n° XIV, n° 17]

५२

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्कका ५० वा वर्ष]

१ – – ५० (?) हे २ दि १ अस्य पुर्व्वय वरणतो गणतो अय्यभिस्त कुलतो [स] –

२. खतो शिरिग्रहतो सभोगतो वहवो वचक च गणिनो च समदि [अ]

३.····वस्य दिनरस्य शिशिनि अय्य जिनदसि पणति-धरितय शिशिनि अ

४. घकरवपणतिहरमसोपवसिनि चुचुस्य धित रज्यवसुस्यधर्म...[१]

५. [द] विलस्य मतु विष्णु[भ]वस्य पिढमहिक विजय-शिरिये दन वध········[२]

६. · ····· ···· ·· · ··

अनुवाद—५० वां वर्ष, शीतऋतुका दूसरा महीना, पहला दिन, इस दिन, वरण (वारण) गण, अय्यभिस्त (?) कुल, सं [कासिया] शाखा, शिरिग्रह (श्रीगृह) संभोगके महावाचक तथा गणि समदि 'व दिनर की शिष्या अय्य-जिनदसि (आर्य जिनदासी) की आज्ञाको माननेवाली... अय्य घकरव (?) की आज्ञाको धारण करनेवाली विजयशिरि [विजयश्रीने] दानमें वध [मान] अर्थात् वर्धमान की प्रतिमा······। यह विजयश्री चुचुकी पुत्री, रज्यवसु (राज्यवसु) की धर्मपत्नी, देविलकी माँ (और) विष्णुभवकी नानी थी और इसने एक महीनेका उपवास किया था।

[El, II, n° XIV, n° 36]

५३

रामनगर—प्राकृत।

[काल? वर्ष ५०]

वर्ष	राजा	स्थान	कहाँ	विशेषता
५०	—	रामनगर (अहिच्छत्र)	A' S N-W-P-O, Annual report 1891-1892, p 3	दूसरा महीना, शीतऋतु, पहला दिन; ब्राह्मी लिपि

[JRAS, 1903, p 7-14, n° 40]

---

१ 'धर्मपत्नी' पढ़ो। २ 'वधमान प्रतिमा' या शायद 'प्रतिमा'।

५४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ५२]

१. सिद्ध सवत्सर द्वापना ५० २ हेमन्त [मा]\ स प्रथ–दिवस पचवीश २० ५ अस्म क्षुणे क[ो]ट्टिया तो गणात[ो]

२ वेरातो शखतो स्थानिकियातो कुलात[ों] श्रीगृहतो सभोगातो वाचकस्यार्य्यघस्तुहस्तिस्य

३ शिष्यो गणिस्यार्य्यमंगुहस्तिस्य पढचरो वाचको अर्य्यदिवितस्य निर्व्वर्तना शूरस्य श्रम-

४. णकपुत्रस्य गोट्टिकस्य लोहिकाकारकस्य दान सर्व्वसत्वान हितसुखायास्तु।

अनुवाद—सिद्धि हो। ५२ वें वर्षके शीतऋतुके पहले महीनेके २५ वे दिन, कोट्टिय गण, वेरा (वज्रा) शाखा, स्थानिकिय कुल (तथा) श्रीगृह संभोगके वाचक आर्य्य घस्तुहस्तिके शिष्य और गणी आर्य मङ्गुहस्तिके श्राद्धचर ऐसे वाचक अर्य्यदिवितके आदेशसे श्रमणकके पुत्र, शूर लुहार गोट्टिकने दान दिया।

[El, II, n° XIV, n° 18]

५५

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ५४]

१.—धम्।सव ५० ४ हेमतमासे चतुर्थे ४ दिवसे १० अ–

२. स्य पुर्व्वाया कोट्टियातो [ग] णातो स्थानि [य]ातो कुलातो

३. वैरातो शाखातो श्रीगृह [ा] तो सभोगातो वाचकस्यार्य्य-

४ [ह] स्तहस्तिस्य शिष्यो गणिस्य अर्य्यमाघहस्तिस्य श्रद्धचरो वाचकस्य अ-

५ र्य्यदेवस्य निर्व्वर्त्तने गोवस्य सीहपुत्रस्य लोहिककारुकस्य दान

६. सर्व्वसत्त्वाना हितसुखा एकसरस्वती प्रतीष्ठाविता अवतले रङ्गान[र्त्तन] ो

७. मे [॥]

अनुवाद—सिद्धि हो। ५४ वे वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके (शुक्ल-पक्षके) १० वें दिन, वाचक आर्यदेवकी प्रेरणासे सीहके पुत्र गोव लुहारके दानरूपमें एक सरस्वतीकी (प्रतिमा) प्रतिष्ठापित की गई। आर्य्य देव कोट्टियगण, स्थानिय कुल, वैरा शाखा तथा श्रीगृहसंभोगके वाचक आर्य्य हस्तहस्तिके शिष्य गणि आर्य्य माघहस्तिके श्राद्धचर थे। अवतलमें मेरा रङ्गशालीय नृत्य (?)।

[EI, 1, n° XLIII, n° 21]

५६

मथुरा—प्राकृत।
[हुविष्क वर्ष ६०]

अ. सिद्धम्। म [हा] रा [ज] स्य र[ाजा] तिराजस्य देवपुत्रस्य हुवष्कस्य स ४० (६०?) हेमन्तमासे ४ दि० १० एतस्या पूर्व्वाया कोट्टिये गणे स्थानिकीये कुले अय्य[वेरि] याण शाखाया वाचकस्यार्य्यवृद्धहस्ति [स्य]

व शिष्यस्य गणिस्य आर्य्यख[र्ण]स्य पुय्यम[न] ‥ ‥‥[स्य] ‥‥[व] तकस्य [क]—सकस्य कुटुम्बिनीये दत्ताये—नधर्म्मो[1] महा-भोगताय प्रीयताम्भगवानृषभश्री ।

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज, राजातिराज, देवपुत्र हुविष्कके ६० वे वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके १० वे दिन, कोट्टियगण, स्थानिकीय कुल (तथा) अर्य्य वेरियो (आर्य-वज्रके अनुयायियो) की शाखाके वाचक आर्य वृद्धहस्तिके शिष्य, गणि आर्य्य खर्णके आदेशसे ‥वतके निवासी

---

१ 'दानधर्मो' पढो।

पसककी पत्नी दत्ताने महाभोगता (महासुख)के लिये यह दानधर्म किया। भगवान् ऋषभदेव प्रसन्न होवें।

[EI, I, n° XLIII, n° 8]

५७

मथुरा—प्राकृत।

[हु० सवत् ६२]

वाचकस्य अर्य-ककसघस्तस्य शिष्या आतपिको ग्रहबलस्य निर्वतन •

अनुवाद—वाचक आर्य ककसघस्त (कर्कशघर्षित)के शिष्य आतपिक ग्रहबलके आदेशसे।

इस शिलालेखसे मालूम पड़ता है कि किसी मुनिके आदेशसे जैन श्राविका वैहिकाने एक प्रतिमाका दान किया।

[IA, XXXIII, p. 105-106, n° 19]

५८

मथुरा—प्राकृत।

[हु० वर्ष ६२]

१. सिद्ध। स ६० २ व २ दि ५ एतस्य पुवय वाचकस्य आयकर्कुहस्थ [स]

२ वारणगणियस शिषो ग्रहबलो आतपिको तस निवर्तना।

अनुवाद—सिद्धि हो। वर्ष ६२, वर्षाऋतुका २ रा महीना, दिन ५, इस दिन, वारणगणके वाचक आय-कर्कुहस्थ (आर्य कर्कशघर्षित) के शिष्य आतपिक ग्रहबल थे। उनकी प्रेरणासे ••••••

[EI, II, n° XIV, n° 19]

५९

मथुरा—प्राकृत।

[ ] वर्ष ७९

अ. १. स ७० ९–वं ४ दि २० एतस्या पुर्व्वाय कोट्टिये गणे वइराया शाखाया • •

२. को अयवृधहस्ति अरहतो णन्दि [आ] वर्तस प्रतिम निर्वर्तयति ।

३. ···· ·भार्य्यये श्राविकाये [दिनाये] दानं प्रतिमा वोद्वे थुपे देवनिर्मिते प्र··· ···[1]

अनुवाद—वर्ष ७९, वर्षाऋतुका चौथा महीना, २० वा दिन, इस दिन, कोट्टियगण (तथा) वइरा (वज्रा) शाखा के वाचक अय-वृधहस्ति (आर्य वृद्धहस्ति) ने दीना [दत्ता] श्राविकाको, जो··· की भार्या थी, एक अर्हत् णन्दिआवर्त्त (नन्द्यावर्त्त)[2] की प्रतिमाके निर्माणके लिए कहा । दीनाकी यह प्रतिमा देवनिर्मित वोद्व स्तूपपर प्रतिष्ठित हुई ।

[El, II, n° XIV, n° 20]

६०

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[हुविष्क वर्ष ८०]

१. [सिध] महरजस्य स ८० हण व १ दि १२ एतस पूर्व्वाया · ···

२. धितु संघनधि [स्य] वधुये वलस्य ····

अनुवाद—[स्वस्ति।] महाराज वासुदेवके ८० वें वर्षमें, वर्षाऋतुके १ ले महीनेके १२ वें दिन,·········की पुत्री, सघनधि (?) की वहू, वलकी ······· ······(अपूर्ण).

[El, n° XLIII, n° 24]

६१

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[ ] वर्ष ८१

१. स ८० १ व १ दि ६ एतस्य पुवाय [अ] यिकाजीवाये अते-

२. वासिकिनिये दताये निवतना । [ग्र) हशिरिये···· ·

---

१ 'प्रतिष्ठापिता' । २ नन्द्यावर्त्त जिसका चिह्न है ऐसे १८ वें तीर्थङ्कर अर्हनाथ भगवान्की प्रतिमा ।

अनुवाद—वर्ष ८१, वर्षाऋतुका १ ला महीना, ६ ठा दिन, इस दिन, अयिका-जीवा (आर्यिकाजीवा) की शिष्या दत्ताकी प्रार्थनापर ग्रहशिरि (ग्रहश्री) · ।

[EI, II, n° XIV, n° 21]

६२

मथुरा—प्राकृत ।

[वासुदेव] वर्ष ८३

१ सिद्ध महाराजस्य **वासुदेवस्य** स ८० ३ गृ २ दि १० ६ एतस्य पूर्व्वये **सेनस्य**

२ [धि] तु **दत्तस्य** वधुये **व्य ···च** स्य गन्धिकस्य कुटुम्बिनिये **जिनदासिय** प्रतिमा ध [र्मेढ]न

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज वासुदेवके राज्यमे ८३ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १६ वें दिन, सेनकी पुत्री, दत्तकी बहू , गन्धिक (तेल, इत्र बेचनेवाले) व्य–च···की पत्नी जिनदासीके पवित्रदानसे एक प्रतिमा ·· ·· ।

[1A, XXXIII, p 107, n° 21]

६३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ८६]

१ स ८० ६ हे १ दि १० २ **दसस्य** धितु **प्रयस्य** कुटुबिनिये

२ ·· [**कु**] तो कुलतो **अयस** [**ङ्ग**] **मि** [**क**] य शिशिनिय अयवसुल [ये] नि [व] तने [॥]

अनुवाद—८६ वें वर्षकी शीतऋतुके पहले महीनेके १२वें दिन, दस (दास) की पुत्री, प्रय (प्रिय) की पत्नी ··· · का दान अर्पित किया गया । यह दान [मेहि] क कुलकी अर्य सङ्गमिकाकी शिष्या अर्य वसुलाके कहनेसे हुआ ।

[EI, I, n° XLIII, n° 12]

६४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ८७]

[सं ८० ७ ?] ग्रि १ दि [२० ?] अ [स्मि] क्षुणे उच्चेनागरस्यार्य्यकुमारनन्दिशिष्यस्य मित्रस्य...... .....

अनुवाद—८७ (?) वें वर्षमें ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके २० (?) वें दिन, उच्चनागरके, कुमारनन्दीके शिष्य, मित्रके... ..

[EI, 1, n° XLIII, n° 13]

६५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[वासुदेव] वर्ष ८७

१. सिद्ध। महाराजस्य राजातिराजस्य शाहिर्=वासुदेवस्य

२. स ८० ७ हे २ दि ३० एतस्या पुर्वाया ....

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज राजातिराज शाहि वासुदेवके ८७ वें वर्षकी शीतऋतुके २ रे महीनेके तीसवें दिन, ..."

[IA, XXXIII, p 108, n° 22]

६६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[सं० ९०]

१. सव [९० व] ... ... ' '' .... टुवनिए दिनस्य वधूय

२. को ... तो ग [णा] नो प—व [ह]–[क] ते कुलानो मझमानो शाखा [नो] ...सनिकय भतिवलाए मिनि

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है। इसमें खास कामकी चीज मझमा शाखा और प्-वह्-क कुलका उल्लेख है। प्-वहक कुल जैन परम्पराका प्रश्नवाहनक या पण्हवाहणय कुल है। वर्ष (सं) ९० है]

[EI, 11, n° XIV, n° 22]

६७

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[वर्ष ९३]

अ नमो अर्हतो महाविरस्य स० ९० ३ [व]

व १. शिष्यस्य ग [णि] स्य [न] न्दिये [नि] र्वर्त्तना देवस्य हैरण्यकस्य धितु ·

२ ··· [ि]- [भ] - वतो वर्द्धमानप्रतिमा प्रति ···· ·· पुजा [ये] [॥]

अनुवाद—अर्हत् महाविर (महावीर) को नमस्कार हो। वर्ष ९३, वर्षाऋतुका (महीना), · के शिष्य गणी नन्दीके आदेशसे [अर्हत् की] पूजाके लिये, हैरण्यक (सुनार) देवकी पुत्री · ने भगवान् वर्द्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कराई।

[El, II, n° XIV, n° 23]

६८

मथुरा—प्राकृत।

[वर्ष ९५]

१ [ि] सद्ध स ९० ५ [?] ग्रि २ दि १० ८ कोट्टि [य] ।तो गणातो ठानियातो कुलातो वइर [ा तो शा] खातो अर्य्य अरहं····

२ शिशिनि धाम [था] ये निर्वर्तन [ा] ग्रहदतस्य धि [तु] धनहथि

अनुवाद—सिद्धि हो। ९५ वे (?) वर्षके ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १८ वें दिन, धामथाके आदेशसे ग्रहदत्तकी पुत्री, धनहथि (धनहस्ती) की पत्नी का [दान किया गया]। धामथा कोट्टियगण, ठानिय कुल, वइरा शाखाके अर्य्य अरह [दिन्न] की शिष्या थी।

[El, 1, n° XLIII, n° 22]

६९

मथुरा—प्राकृत।

[वासुदेव सं० ९८]

१. सिद्ध [म्] ॥ नमो अरहतो महावीरस्य दे·······रस्य । राज वासुदेवस्य संवत्सरे ९० ८ वर्ष-मासे ४ दिवसे १०१ एतस्या

२. पुर्वाये अर्य्य-देहिकियातो ग [णातो] परिधा [ा] सिकातो कुलातो पेतपुत्रिकातो शाखातो गणिस्य अर्य्य-देवदत्तस्य न

३. र्य्य—क्षेमस्य

४. प्रकगिरिण

५. किहदिये प्रज

६.·· ·तस्य प्रवरकस्य धितु वरुणस्य गन्धिकस्य वधूये मित्रस ··· ·········· दत्त गा [?]

७. ये····भगवतो महा [वीर] स्य ।

अनुवाद—सिद्धि हो। महावीर अर्हत्को नमस्कार हो। राजा वासुदेवके ९८ वे वर्षकी वर्षाऋतुके चतुर्थ महीनेके ११ वे दिन, अर्य्य देहिकिय (देहिकीय) गण, परिधासिक कुल, प्रेतपुत्रिका (पैतापुत्रिका ?) शाखाके गणि आर्य देवदत्तके [आदेशसे] प्रवरककी पुत्री, गन्धिक वरुणकी बहू, मित्रस , आर्य-क्षेमाका ·· [दान] · · भगवान् महावीरको नमस्कार हो।

[1A, XXXIII, p 108–109, n° 23]

७०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[सं.] वर्ष ९८

स. ९० ८ हे १ दि ५ अस्म क्षुणे को [ो]ट्टियात[ो] गणातो उचनग·· ·· [१]

---

१ 'उचनगरितो शाखातो'।

अनुवाद—वर्ष ९८ की शीतऋतुके १ ले महीनेके ५ वें दिन, कोट्टिय गण, उच्चनगरी (उच्चानागरी) [शाखा] · ·· ·

[EI, II, n° XIV, n° 24]

७१

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

१. नमो अरहतान सिहकस वानिकस पुत्रेण कोशिकिपुत्रेण

२. सिहनादिकेन आयागपटो प्रतिथापितो आरहतपुजाये [।।]

अनुवाद—अर्हन्तोको नमस्कार हो। वानिक सिहक (सिहक) के पुत्र तथा किसी कोशिकी (कौशिकी माँ) के पुत्र सिहनादिक (सिंहनन्दिक ?) के द्वारा एक आयागपटकी प्रतिष्ठा अर्हन्तोकी पूजाके लिये की गई।

[EI, II, n° XIV, n° 30]

७२

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

नमो अरहताना शिवघो [पक]स भरि [या] ···ना····ना ···

अनुवाद—अर्हन्तोको नमस्कार। शिवघोषककी . भार्या

[EI, II, n° XIV, n° 31]

७३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

प. १. नमो अरहतान [मल] ··णस धितु भद्रयशस वधुये भद्रनदिस भयाये

२. अ [चला]ये आ[या]गपटो प्रतियापितो अरहतपुजाये।

व दुकस वायकस सिसिनिए सादिताए नि ...

अनुवाद—भगवान् वृषभ (उसभ) को नमस्कार हो। वारण गण, नाडिक कुल तथा...... ...के वाचक .. दुककी शिष्या सादिताके आदेशसे.. ....

[EI, II, n° XIV, n° 28]

८३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

स्थ [ा]निकिये कुले गनिस्य उग्गहिनिय शिषो वाचको घोपको आर्हतो पर्श्वस्य प्रतिमा

अनुवाद—"स्थानिकिय (कीय) कुलके गणि (गणिन्) उग्गहिनिके शिष्य वाचक घोषकने एक अर्हत् पार्श्वकी प्रतिमा...

[EI, II, n° XIV, n° 29]

८४

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

अ. वर्धमानपटिमा वजरनद्यस्य धिता वाधिशिव...

१.–ि– स्य– कुटीविनि दिनाये दाति वडिम [शि] ये ...

२ ....

अनुवाद–"वजरनद्य (वज्रनन्दिन्) की पुत्री, वाधिशिव (वृद्धिशिव?) की बहू, ि ... की पत्नी दिना (दत्ता) के दानके रूपमे एक वर्धमानकी प्रतिमा ... ... वडिमशिके... ..

[EI, II, n° XIV, n° 33]

८५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

अ. तिये निर्वर्तना

ब. १. नो गखनो शिरिकनो सभोकनो अर्थ्य

३. .... कनस्य मतु हि [त्त]........

२. [ि—धराये निवतना शिवद [त]

[EI, II, n° XIV, n° 35]

[नोट—'निर्वर्तना' और 'निवतना' इन दो शब्दोंके एक ही शिलालेखमें आ जानेसे एक ही शिलालेखके दो खण्ड मालूम पड़ते हैं और वे सम्बद्ध अर्थको व्यक्त नहीं करते हैं।]

८६

मथुरा—प्राकृत।

(विना कालनिर्देशका)

१.................ये मोगलिपुतस पुफकस भयाये

२. असाये पसादो

अनुवाद—किसी मोगली (माँ माङ्गलीविशेष) के पुत्र, पुफक (पुष्पक) की पत्नी असा (अश्वा ?) का दान।

[IA, XXXIII, p 151, n° 28]

८७

राजगिरि—संस्कृत।

[ ]

T. Bloch के आर्कीओलोजिकल सर्वे, बङ्गाल सर्किल, वार्षिक रिपोर्ट १९०२, पृ० १६, विश्लेपणमें इस शिलालेखका उल्लेख है। मूलका पता नहीं है।

[AS, Bengal circle, Annual report 1902, p. 16, a]

८८

मथुरा—संस्कृत—भग्न।

[सं० २९९]

१. नमस्-सर्वसिद्धाना अरहन्ताना। महाराजस्य राजातिराजस्य सवच्छरशते द [ ] [तिये नव (?) -नवत्यधिके।]

२. २०० ९० ९ (?) हेमन्तमासे २ दिवसे १ आरहातो महावीरस्य प्रातिमा

३. स्य ओखारिकाये भितु उझतिकाये च ओखाये श्राविका भगिनिय [ ]··· ·

४ ··· शरिकस्य शिवदिनास्य च एतै आराहातायतनाने स्थापित [।] ······ · ··

५. ···· देवकुल च।

अनुवाद-सब सिद्धो और अर्हन्तोको नमस्कार हो। महाराज और राजातिराजके (९९ से अधिक) दूसरी शताब्दिमें, २९९ (?), शीतऋतुके दूसरे महीनेके पहले दिन—भगवान महावीरकी प्रतिमा अर्हन्मन्दिरमें ··· के द्वारा तथा · की पुत्री, ओखरिकाकी उज्झतिका द्वारा, · ·श्राविका भगिनी ओखाके द्वारा, तथा शिरिक और शिवदिन्ना इनके द्वारा स्थापित की गई · साथमें एक जिनमन्दिर भी।

[G. Buhler, J R A S, 1896, p 578-581]

८९

मथुरा—सस्कृत – भग्न

[गुप्तकाल? वर्ष ५७]

संवत्सरे सप्तपञ्चाश ५० ७ हेमन्धत्रिती····[1]

—से [दि] वसे त्रयोदशे अ-पूर्व्वाया ···

---

१ 'हेमन्त' और 'तृतीय' या 'तृतीये' पढो।

अनुवाद—५७ वें वर्ष, शीतऋतुकी तीसरे महीनेके १३ वें दिन, इसदिन·· ······

[EI, II, n° XIV, n° 38]

९०

नोणमङ्गल—संस्कृत

गुप्तकालसे पहिले, संभवतः ३७० ई० का

[नोणमंगलमें ताम्र-पट्टिकाओंपर]

[१ ब] स्वस्ति नमस् सर्वज्ञाय ॥ जित भगवता गत-घन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्-जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-जवज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारिगण-विदारण-रणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्**कोङ्गुणिवर्म-धर्म-महाधिराजस्य** पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनय-विहित-वृत्तस्य

[२ अ] सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्कवि-काञ्चन-निकषोपल-भूतस्य विशेषतोऽप्यनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्यजनस्य **दत्तक-सूत्र-वृत्ति-प्रणेतुः श्रीमन्माधववर्म-धर्म-महाधिराजस्य** पुत्रस्य पितृ-पैतामह-गुणयुक्तस्य अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादित-यशस समद-द्विर-दतुरगारोहणातिशयोत्पन्न-कर्म्मणः श्रीमद् **हरिवर्म्म-महाधिराजस्य** पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्या

[२ ब] तस्य श्रीम**द्विष्णुगोप-महाधिराजस्य** पुत्रेण पितुरन्वागत-गुण-युक्तेन त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहराज (ज)पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेन व्यायामो-द्वृत्त-पीन-कठिनभुजद्वयेन स्व-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-क्रीत-राज्येन क्षुत्-

क्षामोष्ठ-पिसिताशनप्रीतिकर-निसिन-धारासिना श्रीमता **माधववर्म्म-महाधिराजेन** आत्मनःश्रेयसे प्रवर्द्धमानविपुलैश्वर्य्ये त्रयोदशे सवत्सरे फाल्गुने मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्या श्रीमद्-वीर-देव-शासनाम्बराबभासन-सहस्रकरस्य आचार्य्य**वीर-देवस्य** –

[३ अ] निज-कृतान्तपर-राद्धान्त-प्रवीणस्य उपदेशनात्, **मुदुकोत्तूर**-विषये **पेब्बोलल्**-ग्रामे अर्हदायतनाय मूलसंघानुष्ठिताय महा-तटाकस्य अधस्तात् द्वादश-खण्डुकावापमात्र-क्षेत्र च तोट्ट-क्षेत्र च पट्टु-क्षेत्र च **कुमारपुर**-ग्रामश्च एतत्सर्व स-सर्व्व-परिहार-क्रमेणाद्भिर्द्दत्त. योऽस्य लोभात् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-सयुक्तो भवति अपि चात्र मनुगीता[ ] श्लोका[.]

स्व-दत्ता पर-दत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्ठि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्त्तते ॥

(अन्य हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमे गगकुलके राजाओकी परम्परा—कोङ्गणिवर्मा, माधववर्मा, हरिवर्मा, विष्णुगोप और माधववर्मा—देकर यह बताया है कि अन्तिम राजाने अपने राज्यके १३ वें वर्षमे, फाल्गुनसुदी पचमीको, आचार्य वीरदेवकी सम्मतिसे, मुदुकोत्तूर-देशके पेब्बोवल् गावमे मूलसंघद्वारा प्रतिष्ठापित जिनालयमे (उक्त) भूमि और कुमारपुर गाव दानमे दिये।]

[EC, X, Malur tl, n° 73]

९१

उदयगिरि (साची के निकट)-सस्कृत ।

[गुप्तकाल १०६= ई. सं० ४२६]

Corrected transcript of the facsimile

[१] नमः सिद्धेभ्य.[॥]

श्रीसंयुताना गुणतोयधीनाम्
गुप्तान्वयाना नृपसत्तमानाम् [।]

[२] राज्ये कुलस्याभिविवर्द्धमाने
षड्भिर्य्युते वर्षशतेऽथ मासे [।।] १.
सुकार्त्तिके वहुलदिनेऽथ पञ्चमे

[३] गुहामुखे स्फुटविकटोत्कटामिमा [।]
जितद्विषो जिनवरपार्श्वसंज्ञिकाम्
जिनाकृती शमदमवान

[४] चीकरत् [।।] २ आचार्य-भद्रान्वयभूपणस्य
शिष्यो ह्यसावार्य्यकुलोद्गतस्य [।]
आचार्य-गोश

[५]र्म्म मुनेस्सुतस्तु पद्मावत [स्या]श्वपतेर्भटस्य [।।] ३.
परैरजेयस्य रिपुघ्नमानिनम्
स सङ्घ

[६] लस्येत्यभिविश्रुतो भुवि [।] स्वसञ्ज्ञया शंकरनामशब्दितो
विधानयुक्त यतिमार्गमास्थितः [।।] ४
स उत्तराणा सदृशे गुरूणा
उदग्दिशादेशवरे प्रसूतः [।]

[८] क्षयाय कर्म्मारिगणस्य धीमान्
यदत्र पुण्य तदपाससर्ज्ज [।।] ५

[इस शिलालेखमें शम-दमवाले किसी व्यक्तिके द्वारा पार्श्वनाथ जिनेन्द्रकी प्रतिमाकी कार्तिक वदी पञ्चमीके दिन स्थापनाकी बात है। यह प्रतिमा किसी गुफाके द्वारपर खडी की गई थी। इस प्रतिमाकी स्थापना करने वाला या उसको खडा करनेवाला आचार्य गोशर्माका शिष्य था। ये गोशर्मा आचार्य भद्रके वंशमें हुए थे, इनकी परम्परा आर्यकुलकी थी और अश्वपति योद्धाके लडके थे। ये अश्वपति सङ्घल (या सिंहल) के नामसे प्रसिद्ध थे और इन्होंने जिनदीक्षा लेनेके बाद अपना नाम शंकर रक्खा था।]

[इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्द ११, पृ० ३१०]

९२

मथुरा—संस्कृत।

[गुप्तकाल, वर्ष ११३]

१ सिद्धम् । परमभट्टारकमाहाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तस्य विजयराज्यसं [१०० १०] ३ क······न्तमा ··[दि]—स २० अस्या ५ [पूर्व्वाया] कोट्टिया गणा-

२ द्विद्याधरी [तो] शाखातो दतिलाचार्य्यप्रज्ञपिनाये शामाढ्याये भट्टिभवस्य धीतु ग्रहमित्रपालि [त] प्रा [ता] रिकस्य कुटुम्बिनीये प्रतिमा प्रतिष्ठापिता।

अनुवाद—सिद्धि हो। परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तके विजयराज्यके ११३ वें वर्षमें, [शीतऋतु महीने] कार्तिकके २० वे दिन, कोट्टियगण (तथा) विद्याधरी शाखाके दतिलाचार्य (दत्तिलाचार्य) की आज्ञासे शामाढ्य (श्यामाढ्य) ने एक प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाई। श्यामाढ्य भट्टिभवकी बेटी (और) ग्रहमित्रपालित प्रातारिक (घाटी या नाविक) की पत्नी थी।

[EI, II, n° XIV, n° 39]

१३

कहाऊँ—संस्कृत

[गुप्तकाल १४१ वां वर्ष=४६१ ई. स]

सिद्धम् ।

[१] यस्योपस्थानभूमिर्नृपतिशतशिरःपातवातावधूता
[२] गुप्तानां वंशजस्य प्रविसृतयशसस्तस्य सर्व्वोत्तमर्द्धेः
[३] राज्ये शक्रोपमस्य क्षितिपशतपतेः **स्कन्दगुप्तस्य** शान्ते
[४] वर्षे त्रिंशद्दशैकोत्तरकशततमे ज्येष्ठमासि प्रपन्ने ॥ १ ॥
[५] ख्यातेऽस्मिन् ग्रामरत्ने **ककुभ** इति जनैस्साधुसंसर्गपूते
[६] पुत्रो यस्सोमिलस्य प्रचुरगुणनिधेर्भट्टिसोमो महात्मा
[७] तत्सूनूरुद्रसोम[:] पृथुलमतियशा व्याघ्र इत्यन्यसंज्ञो
[८] मद्रस्तस्यात्मजोऽभूद् द्विजगुरुयतिषु प्रायशः प्रीतिमान् यः ॥
[९] पुण्यस्कन्धं स चक्रे जगदिदमखिलं संसरद्वीक्ष्य भीतो
[१०] श्रेयोऽर्थं भूतभूत्यै पथि नियमवतामर्हतामादिकर्तॄन्
[११] पञ्चेन्द्रान्स्थापयित्वा धरणिधरमयान् सन्निखातस्ततोऽयम्
[१२] शैलस्तम्भः सुचारुर्गिरिवरशिखराग्रोपमः कीर्त्तिकर्त्ता ॥ २ ॥

[इस शिलालेखमें, जो कि गुप्तकालके १४१ वें वर्षका है, बताया गया है कि किसी मद्र नामके व्यक्तिने, जिसकी कि वंशावली यहां उसके प्रपितामह सोमिल तक गिनाई है, अर्हन्तों (तीर्थंकरों)में मुख्य समझे जाने वाले, अर्थात् आदिनाथ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्व, और महावीर, इन पांचोंकी प्रतिमाओंकी स्थापना करके इस स्तम्भको खड़ा किया। लेखकी ११ वीं पंक्तिके 'पञ्चेन्द्रान' से इन्हीं पांच तीर्थङ्करोंसे मतलब है।]

[इण्डियन एण्टिक्वेरी, जिल्द १०, पृ० १२५—१२६]

९४

नोणमंगल—संस्कृत तथा कन्नड़।

[गुप्तकालसे पहिले, सम्भवत ४२५ (?) ई० ल०]

[नोणमगल (लक्कूर परगना) में, ध्वस्त जैन वस्तिके ताम्र-पत्रो पर[1]]

(१ ब) स्वस्ति जिन भगवता गतघन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज् **जाह्नवेय**-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-जव-ज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारि-गण-विदारण-रणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनस-गोत्रस्य श्रीमत्**कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्म-महाधिराज**स्य पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनयविहित-वृत्तस्य सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्-कवि-काञ्चन-निकषो

[२ अ] पल-भूतस्य विशेषतोऽप्यनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्य-जनस्य दत्तक-सूत्र-वृत्ति-प्रणेतु श्रीमन्**माधववर्म्म**-धर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितृ-पैतामह-गुण-युक्तस्य अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादित-यशस समद-द्विरद-तुरगारोहणातिशयोत्पन्न-कर्म्मण धनुरभियोगस-म्पद्-विशेषस्य श्रीमद्-**हरिवर्म्म**-महाधिराजस्य पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्यातस्य श्रीम**द्विष्णुगोप**-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वा

[२ ब] गत-गुण-युक्तस्य त्र्यम्बक-चरणाम्भोरुह-रज -पवित्रीकृतोत्तमाङ्गस्य व्यायामोद्वृत्त-पीन-कठिन-भुज-द्वयस्य स्वभुजबल-परा-

---

[1] ये ताम्रपत्र जर्मानमें मिले हैं।

क्रम-क्रयक्रीत-राज्यस्य चिर-प्रनष्ट-देव-भोग-ब्रह्मदेय-नैक-सहस्र-विसर्गो-प्रयण-कारिण. क्षुत्-आमोष्ट-पिसिताशन-प्रीतिकर-निशित-धारासे' कलि-युग-बलावमग्न-धर्म्मोद्धरण-नित्य-सन्नद्धस्य श्रीमतो **माधववर्म्म**-धर्म्म-महा-धिराजस्य पुत्रेण जननी-देवताङ्क-पर्य्यङ्क-तले-समधिगत-राज्य-विभव-विलासेन निज-प्रभावाशु-चक्रवालाखण्डित-शत्रु-नृपति-मण्डलेनाखण्ड

[२ अ] ल-विडम्बि-शौर्य्य-वीर्य्य-यशो-धाम-भूतेन गज-धुरि-हय-पृष्ठ कार्म्मुके चाद्वितीयेन ललना-नयन-भ्रमरावली-नित्यकृतानुयात्रेण प्रजा-परिपालन-कृत-परिकर-बन्धेन किं बहुना इदङ्कलि-युधिष्ठिरेण-श्रीमता **कोङ्गुणिवर्म्म**-धर्म्म-महाधिराजेन आत्मन श्रेयसे प्रवर्द्धमान-विपुलैश्वर्य्य प्रथमसंवत्सरे फाल्गुन-मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्या सो(खो)पाध्यायस्य परमार्हतस्य **विजयकीर्तेः** सकलदिङ्मण्डलव्यापिकीर्तेरुपदेशत' **चन्द्रनन्द्या**चार्य्य-प्रमुखेन मूल-संघेनानुष्ठिताय **उरनूरार्हतायत**

[३ब] **नाय कोरिकुन्द**-विषये **वेन्नैलकरनि**ग्रामः **पेरूरेवानि-अडि गल**र्हदायतनाय शुल्क-बहिश्शुल्कपर्पणेषु पादश्च देव-भोगक्रमेणाद्भिर्दत्त योऽस्य लोभाद् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-संयुक्तो भवति अपि चात्र मनुगीता' श्लोका

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्त्तते
भूमि-दानात् परं दानं न भूतं न भविष्यति ।
तस्यैव

[४ अ] हरणात् पापं न भूतं न भविष्यति ॥

(दो हमेशाके श्लोक) महाराज-मुखाज्ञाप्त्या **मारिषेण** त्वट्टकारेण लिखितेय ताम्र-पट्टिका

[EC, X, Mālur tl, n° 72.]

अनुवाद—कोङ्गणिवर्म्म धर्म्म-महाधिराज जाह्नवी (या गंग)-कुलके निर्मल आकाशमे चमकनेवाले सूर्य थे; वे काण्वायनसगोत्रके थे।

इनके पुत्र **माधववर्मधर्ममहाधिराज** थे, जो एक 'दत्तकसूत्र-वृत्ति' के प्रणेता थे।

इनके पुत्र **हरिवर्मा**-महाधिराज थे।

इनके पुत्र **विष्णुगोप**-महाधिराज थे।

इनके पुत्र **माधववर्म**-धर्म महाधिराज थे, जो कलियुगकी कीचड़में फसे हुए धर्मरूपी बैलको निकालनेमे हमेशा सन्नद्ध रहते थे।

इनके पुत्र कोङ्गणिवर्म-धर्म्म-महाधिराजने जो कि कलियुगी युधिष्ठिर कहलाते थे, अपने कल्याणकेलिये, अपने बढ़ते हुए राज्यके प्रथम वर्षकी फाल्गुन सुदी पञ्चमीको, अपने उपाध्याय परमार्हत (भक्तजैन) विजयकीर्तिकी सम्मतिसे, मूलसंघके चन्द्रनन्दि इत्यादिके द्वारा प्रतिष्ठापित उरनूर के जैन मन्दिरको कोरिकुन्द-देशसेका वेन्नेल्करनि गाँव दिया था, और पेरूर एवानि-अडिगल्के जिनमन्दिरमे बाहरकी चुङ्गीके कार्षापण[1] (या धन) का चतुर्थ भाग दिया था।

हमेशाके शापात्मक (imprecatory) श्लोक। महाराज अपने मुँहसे जैसा बोलते जाते थे, मारिषेण त्वट्टकार वैसा ही इन ताम्र-पट्टिकाओं-पर खोदता जाता था।

---

१ ८० रत्तीके तौलके ताम्बेके सिक्के, जो प्राचीनतम देशी मुद्राके थे। (डा० बूल्हरकी Grundriss, मे रैपसनका 'Indian Coins' नामका लेख देखो।)

९५

मर्करा—संस्कृत तथा कन्नड।

[शक ३८८=४६६ ई.]

अविनीत कोङ्गणिका मर्करा-पत्र

(मर्कराके खजानेमेंसे प्राप्त ताम्रपत्रोंके ऊपर)

(१ ब) स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनाभेन पद्मा(द्म)नाभेन श्रीमद्‌जाह्नवीय[कु]लामलव्योमावभासनभास्कर. स्वखड्गैकप्रहारखण्डित-महाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारणो(रुणा)रिगणविदारणोपलब्धव्र(व्र)-णविभूषणविभूषित **काण्वायन**सगोत्रस्य(?) श्रीमान् **कोङ्गणि**महाधिराज ॥ तत्पुत्र पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविने(न)यविहितवृत्त. सम्या(म्य)क्प्र-जापालना(न)मात्राधिगतराज्यात्प्र(त्यप्र)योजन विद्वत्कविकाञ्चननिक-षोपलभूतो नीतिशास्त्रस्यवक्तृप्रयोक्तृकुशलस्य(?) दत्तकसूत्रवृत्ति.(त्ते) प्रणेता(ता) श्रीमान्**माधव**महाधिराज ॥ तत्पुत्र पितृपैतामहा(ह)गुणयुक्तो व(ऽ)नेकचातुर्दन्तयुद्ध(द्धा)वाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयश श्रीमद् **हरि-वर्म्म**महाधिराज ॥ तत्पुत्र ॥ द्विजगुरुदेवता.(ता)पूजनपरो नारायण-चरणानुद्ध(ध्या)न श्रीमद्**विष्णुगोप**म

(२ अ) हाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ त्रियम्भ(त्र्यम्ब)कचरणाम्भोरुहरा-जा (रज.)पवित्रीकृतोत्तमाङ्ग स्वभुजबलपराक्रमक्रियाकृतराज्य कलियुगबल-पङ्कावसन्नवृषोद्धरणनित्यसन्नद्ध श्रीमान्**माधव**महाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ श्रीमद्**कदम्ब**कुलगगनगभस्तिमालिन **कृष्णवर्म्म**महाधिराजस्य प्रिया(य) भागिनेयो विद्याविनय(या)तिस(श)यपरिपूरितान्तरात्म(त्मा) निरवग्रहप्रधा-(य)नसौर्य्य विद्वत्सु प्रथमगण्य श्रीमान् **कोङ्गणि**महाधिराज **अविनीत**ना-मवेय दत्तस्य **देसिग**-गण **कोण्डकुन्दा**न्वय**गुणचन्द्र**भटारशिष्यस्य **अभ**-

वदणेगुप्पे नामका सुन्दर गाँव दानमें प्राप्तकर अकालवर्ष पृथवी-वल्लभके मन्त्रीने शकसंवत्सर ३८८ के माघ महीनेकी शुक्ल पञ्चमी, सोमवारको स्वातिनक्षत्रके समय इसे भेट किया । यह गाँव पूनाडु छः हजारके एडेनाडु सत्तरके मध्यमे अवस्थित है। साथमे १२ 'कण्डुग' प्रत्येक छः आश्रित गावोमेसे, तथा पोगरिगेल्ले और पिरिकेरेंमे से भी दिया ।]

९६

हल्सी (जिला बेलगाँव)—सस्कृत ।

[ई० पाँचवी शताब्दिका (फ्लीट)]

प्रथम पत्र ।

[१] नमः ॥ जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्र[थि]त [परम] कारुणिक

[२] त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ परम–

[३] श्रीविजयपलाशिकाया प्रजासाधारणा [शा] नाम् ॥

दूसरा पत्र, पहला ओर ।

[४] कदम्बाना युवराज श्रीकाकुस्थवर्म्मा स्ववैजयिके अशीतितमे

[५] सवत्सरे भगवतामर्हताम् सर्व्वभूतशरण्यानाम् त्रैलोक्य-निस्तार-

[६] काणाम् खेटग्रामे वदोवरक्षेत्र [म्] श्रुतकीर्तिसेनापतये ॥

दूसरा पत्र, दूसरी ओर ।

[७] आत्मनस्तारणार्त्थे दत्तवा [न्] [॥] तद्यो [हि] न (ना) स्ति स्ववश्यः [प] रवश्यो वा

[८] स पञ्चमहापातकसयुक्तो भवती (ति) [।] यो भिरक्षती (ति) तस्य सत्पर्व्व (सर्व्व, या सत्य सर्व्व) गु-

[९] णपुण्यावाप्ति· [||] अपि चोक्तम् [|] बहुभिर्व्वसुधा दत्ता ||[1]

[१०] [रा] जभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य य[दा]भू]मि. तस्य तस्य तदा फलम् [||]

[११] स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धरा षष्टिवर्षसहस्र(स्रा) णी (णि)

[१२] नरके पच्यते तु सः || नमो नम· [||] ऋषभाय नम· ||

[इस लेखमें कदम्ब 'युवराज' काकुस्थ (काकुत्स्थ)वर्मांके द्वारा श्रुतकीर्त्ति सेनापतिको दिये गये एक क्षेत्र-दानका उल्लेख है। यह दान खेटग्राम नामक गाँवमें किया गया था।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० २२-२४, नं० २०]

९७

देवगिरि (जिला धारवाड़)—संस्कृत।

—[?]—

सिद्धम् जयत्यर्हस्त्रिलोकेश सर्वभूतहिते रत ,
रागाद्यरिहरोनन्तोनन्तज्ञानदृगीश्वर

स्वस्ति **विजयवैजयन्त्यां** स्वामिमहासेनमातृगणानुद्ध्याताभिषिक्ताना **मानव्य**सगोत्राणा **हारिती**पुत्राण(णा) अङ्गिरसा प्रतिकृतस्वाध्यायचर्च्चकाना सद्धर्म्मसदम्बाना **कदम्बाना** अनेकजन्मान्तरोपार्जितविपुलपुण्यस्कन्ध. आहवार्जितपरमरुचिरदृढसत्त्व[2] विशुद्धान्वयप्रकृत्यानेकपुरुषपरपरागते जगत्प्रदीपभूते महत्यदितोदिते काकुस्थान्वये श्री**शान्तिवर्म्म**तनयः

---

१ यह पूर्ण विरामका चिह्न फजूल है। २ इन पत्रोंमें यह खास बात है कि जहाँ द्वित्वाक्षरोंका इतना अधिक प्रयोग किया गया है वहाँ 'सत्व' और 'तत्व'में 'त' अक्षर द्वित्व नहीं किया गया।

श्रीमृगेश्वरवर्मा आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौषसंवत्सरे कार्तिकमासे बहुले पक्षे दशम्यां तिथौ उत्तराभाद्रपदे नक्षत्रे **बृहत्परलूरे** (?) त्रिदशमुकुटपरिघृष्टचारुचरणेभ्यः परमार्हद्देवेभ्यः समार्जनोपलेपनाभ्यर्च्चनभग्नसंस्कारमहिमार्त्थं ग्रामापरदिग्विभागसीमाभ्यन्तरे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्त्तनं कृष्णभूमिक्षेत्रं चत्वारि क्षेत्रन्निवर्त्तनं च चैत्यालयस्य बहिः,[१] एकं निवर्त्तनं पुष्पार्थं देवकुलस्याङ्गनञ्च एकनिवर्त्तनमेव सर्वपरिहारयुक्तं दत्तवान् महाराजः। लोभादधर्माद्वा योस्याभिहर्त्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिरक्षिता स तत्पुण्यफलभाग्भवति। उक्तञ्च--

[२]बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां।
षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥
अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्भुक्तं सद्भिश्च परिपालितम्।
एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥
स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यार्थपालनं।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥

परमधार्म्मिकेण **दामकीर्ति**भोजकेन लिखितेयं पट्टिका इति सिद्धिरस्तु ॥

[इं० एं०, जिल्द ७, पृ० ३५-३७, नं ३६]

[यह पत्र श्रीशान्तिवर्माके पुत्र महाराज श्री 'मृगेश्वरवर्मा' की तरफसे लिखा गया है, जिसे पत्रमें काकुस्था(स्थ्या)न्वयी प्रकट किया है, और इससे ये कदम्बराजा, भारतके सुप्रसिद्ध वंशोंकी दृष्टिसे, सूर्यवंशी अथवा इक्ष्वाकु-

१ व्याकरणकी दृष्टिसे यह वाक्य विलकुल शुद्ध नहीं मालूम होता। २ यह पद्य मिस्टर फ्लीटके शिलालेख नं० ५ में मनुका ठहराया गया है। आमतौरपर यह व्यासका माना जाता है।

वंशी थे, ऐसा मालूम होता है। यह पत्र उक्त मृगेश्वरवर्माके राज्यके तीसरे वर्ष, पौषं (?) नामके संवत्सरमें, कार्त्तिक कृष्णा दशमीको, जबकि उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र था, लिखा गया है। इसके द्वारा अभिषेक, उपलेपन, पूजन, भग्नसंस्कार (मरम्मत) और महिमा (प्रभावना) इन कामोंके लिये कुछ भूमि, जिसका परिमाण दिया है, अरहन्तदेवके निमित्त दान की गयी है। भूमिकी तफसीलमें एक निवर्तनभूमि खालिस पुष्पोंके लिये निर्दिष्ट की गई है। ग्रामका नाम कुछ स्पष्ट नहीं हुआ, 'बृहत्परलूरे' ऐसा पाठ पढ़ा जाता है। अन्तमें लिखा है कि जो कोई लोभ या अधर्मसे इस दानका अपहरण करेगा वह पंचमहापापोंसे युक्त होगा और जो इसकी रक्षा करेगा वह इस दानके पुण्य-फलका भागी होगा। साथ ही इसके समर्थनमें चार श्लोक भी 'उक्त' च रूपसे दिये हैं, जिनमेंसे एक श्लोकमें यह बतलाया है कि जो अपनी या दूसरेकी दान की हुई भूमिका अपहरण करता है वह साठ हजार वर्ष तक नरकमें पकाया जाता है, अर्थात् कष्ट भोगता है। और दूसरेमें यह सूचित किया है कि स्वयं दान देना आसान है परतु अन्यके दानार्थका पालन करना कठिन है, अत. दानकी अपेक्षा दानका अनुपालन श्रेष्ठ है। इन 'उक्तं च' श्लोकोंके बाद इस पत्रके लेखकका नाम 'दामकीर्ति भोजक' दिया है और उसे परम धार्मिक प्रकट किया है। इस पत्रके शुरूमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक एक सुन्दर पद्य भी दिया हुआ है जो दूसरे पत्रोंके शुरूमें नहीं है, परंतु तीसरे पत्रके बिल्कुल अन्तमें जरासे परिवर्तनके साथ जरूर पाया जाता है।]

९८

देवगिरि (जिला-धारवाड़)—संस्कृत

—[१]—

सिद्धम्॥ विजयवैजयन्त्याम् स्वामिमहासेनमातृगणानुद्ध्याताभिषि-

---

१ साठ संवत्सरोंमें इस नामका कोई संवत्सर नहीं है। सम्भव है कि यह किसी संवत्सरका पर्याय नाम हो या उस समय दूसरे नामोंके भी संवत्सर प्रचलित हों। २ यह और आगेके लेख न० ९८ और १०५ जैनहितैषी, भाग १४, अङ्क ७-८, पृ० २२८-२२९ से उद्धृत किये है।

त्तस्य **मानव्य**सगोत्रस्य **हारिती**पुत्रस्य प्रतिकृतचर्च्चापारस्य विबुधप्रति-
विम्बाना **कदम्बाना** धर्ममहाराजस्य **श्रीविजयशिवमृगेशवर्म्मणः**
विजयायुरारोग्यैश्वर्यप्रवर्द्धनकर **संव्वत्सरः चतुर्थः** वर्षापक्ष' अष्टम'
तिथि पौर्णमासी अनयानुपूर्व्या अनेकजन्मान्तरोपार्ज्जितविपुलपुण्यस्कध'
सुविशुद्धपितृमातृवश. उभयलोकप्रियहितकरानेकशास्त्रार्थतत्वविज्ञानवि-
वेच्च (?) ने विनिविष्टविशालोदारमतिः हस्त्यश्वारोहणप्रहरणादिषु व्याया-
मिकीषु भूमिषु यथावत्कृतश्रम' दक्षो दक्षिण नयविनयकुशलः अनेकाह-
वार्ज्जितपरमदृढसत्व उदात्तबुद्धिधैर्यवीर्य्यत्यागसम्पन्न सुमहति सम-
रसङ्कटे स्वभुजबलपराक्रमावाप्तविपुलैश्वर्य सम्यक्प्रजापालनपर. स्वजन-
कुमुदवनप्रबोधनशशाङ्क देवद्विजगुरुसाधुजनेभ्य गोभूमिहिरण्यशयना-
च्छादनान्नादिअनेकविधदाननित्य विद्वत्सुहृत्स्वजनसामान्योपभुज्यमान-
महाविभव आदिकालराजवृत्तानुसारी धर्ममहाराजे' कदम्बाना श्रीविजय-
शिवमृगेशवर्म्मा **कालवङ्ग**ग्राम त्रिधा विभज्य दत्तवान् । अत्र पूर्वमर्ह-
च्छालापरमपुष्कलस्थाननिवासिभ्य भगवदर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताभ्य एको
भाग, द्वितीयोर्हत्प्रोक्तसद्धर्म्मकरणपरस्य **श्वेतपटमहाश्रमणसंघो**पभोगाय,
तृतीयो **निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघो**पभोगायेति । अत्र देवभाग धान्यदेव-
पूजाबलिचरुदेवकर्मकरभग्नक्रियाप्रवर्त्तनाद्यर्थोपभोगाय । एतदेव न्यायलब्ध
देवभोगसमयेन[2] योभिरक्षति स तत्फलभाग्भवति, यो विनाशयेत् स पञ्च-
महापातकसयुक्तो भवति । उक्तञ्च-बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरा-
दिभि यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल । **नरवर**सेनापतिना
लिखित ।

[इ० ए०, जिल्द ७, पृ० ३७-३८, नं० ३७]

१ इन प्रतिलिपियोंमें विसर्ग उस चिह्नके स्थानमें लिखा गया है जो कण्ठ्यवर्गों (Gutturals) से पहले विसर्गकी जगह प्रयुक्त हुआ है। २ 'देवभाग समयेन' शुद्ध पाठ मालूम पड़ता है।

[यह दानपत्र कदम्बोंके धर्ममहाराज 'श्रीविजयशिवमृगेश वर्मा' की तरफसे लिखा गया है और इसके लेखक हैं 'नरवर' नामके सेनापति। लिखे जानेका समय चतुर्थसंवत्सर, वर्षा (ऋतु) का आठवां पक्ष और पौर्णमासी तिथि है। इस पत्रके द्वारा 'कालवङ्ग' नामके ग्रामको तीन भागोंमें विभाजित करके इस तरहपर बाँट दिया है कि पहला एक भाग तो अर्हच्छाला परम-पुष्कल स्थाननिवासी भगवान् अर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताके लिये, दूसरा भाग अर्हत्प्रोक्त सद्धर्माचरणमें तत्पर श्वेताम्बरमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये और तीसरा भाग निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये। साथ ही, देवभागके सम्बन्धमें यह विधान किया है कि वह धान्य, देवपूजा, बलि, चरु, देवकर्म, कर, भग्नक्रिया प्रवर्तनादि अर्थोपभोगके लिये है, और यह सब न्यायलब्ध है। अन्तमें इस दानके अभिरक्षकको वही दानके फलका भागी और विनाशकको पंच महापापोंसे युक्त होना बतलाया है, जैसाकि नं० ९७ के दानपत्रमें उल्लेखित है। परन्तु यहाँ उन चार 'उक्तं च' श्लोकोंमेंसे सिर्फ पहलेका एक श्लोक दिया है जिसका यह अर्थ होता है कि, इस पृथ्वीको सगरादि बहुतसे राजाओंने भोगा है, जिस समय जिस-जिसकी भूमि होती है उस समय उसी-उसीको फल लगता है।

इस पत्रमें 'चतुर्थ' संवत्सरके उल्लेखसे यद्यपि ऐसा भ्रम होता है कि यह दानपत्र भी उन्हीं मृगेश्वरवर्माका है जिनका उल्लेख पहले नम्बरके पत्र (शि० ले० नं. ९७) में है अर्थात् जिन्होंने पूर्वका (नं० ९७) दान-पत्र लिखाया था और जो उनके राज्यके तीसरे वर्षमें लिखा गया था, परंतु यह भ्रम ठीक नहीं है। कारण कि एक तो 'श्रीमृगेश्वरवर्मा' और 'श्रीवि-जयशिवमृगेशवर्मा' इन दोनो नामोंमें परस्पर बहुत बड़ा अन्तर है; दूसरे, पूर्वके पत्रमें 'आत्मन. राज्यस्य तृतीये वर्षे पौष सवत्सरे' इत्यादि पदोंके द्वारा जैसा स्पष्ट उल्लेख किया गया है वैसा इस पत्रमें नही है; इस पत्रके समय-निर्देशका ढग बिलकुल उससे विलक्षण है। 'संवत्सर चतुर्थ., वर्षा पक्षः अष्टम', तिथि पौर्णमासी,' इस कथनमें 'चतुर्थ' शब्द संभवत ६० संवत्सरोंमेंसे चौथे नम्बरके 'प्रमोद' नामक संवत्सरका द्योतक मालूम होता है, तीसरे, पूर्वपत्रमें दातारने बड़े गौरवके साथ अनेक विशेषणोंसे युक्त जो अपने 'काकुस्थान्वय' का उल्लेख किया है और साथ ही अपने पिताका नाम

भी दिया है, वे दोनो बातें इस पत्रमें नहीं हैं जिनके, एक ही दाता होनेकी हालतमें, छोड़ दिये जानेकी कोई वजह मालूम नहीं होती; चौथे, इस पत्रमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक मंगलाचरण भी नहीं है, जैसाकि प्रथम पत्रमें पाया जाता है; इन सब बातोंसे ये दोनो पत्र एक ही राजाके मालूम नहीं होते।

इस पत्र न. ९८ से श्रीविजयशिवमृगेशवर्माके जो विशेषण दिये हैं उनसे यह भी पता चलता है कि, यह राजा उभयलोककी दृष्टिसे प्रिय और हितकर ऐसे अनेक शास्त्रोंके अर्थ तथा तत्त्वविज्ञानके विवेचनमें बड़ा ही उदारमति था, नय-विनयमे कुशल था और ऊँचे दर्जेके बुद्धि, धैर्य, वीर्य, तथा त्यागसे युक्त था। इसने व्यायामकी भूमियोंमें यथावत् परिश्रम किया था और अपने भुजबल तथा पराक्रमसे किसी बड़े भारी संग्राममें विपुल ऐश्वर्यकी प्राप्ति की थी; यह देव, द्विज, गुरु और साधुजनोंको नित्य ही गौ, भूमि, हिरण्य, शयन (शय्या), आच्छादन (वस्त्र) और अन्नादि अनेक प्रकारका दान दिया करता था; इसका महाविभव विद्वानों, सुहृदों और स्वजनोंके द्वारा सामान्यरूपसे उपभुक्त होता था; और यह आदिकालके राजा (संभवत· भरतचक्रवर्ती) के वृत्तानुसारी धर्मका महाराज था। दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनो ही सम्प्रदायोंके जैनसाधुओंको यह राजा समानदृष्टिसे देखता था, यह बात इस दानपत्रसे बहुत ही स्पष्ट है।]

९९

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्र×प्रथितपरमकारुणिक.
त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य [।१।]
कदम्बकुलसत्केतोः हेतो× पुण्यैकसम्पदाम्
श्रीकाकुस्थनरेन्द्रस्य सूनुर्भानुरिवापर. [।२।]

श्रीशान्तिवरवर्म्मेति राजा राजीवलोचनः
खलेन वनिताकृष्टा येन लक्ष्मीर्द्विपद्गृहात् [।।]
तत्प्रियज्येष्ठतनयः श्रीमृगेशनराधिपः ।
लोकैकधर्मविजयी द्विजसामन्तपूजितः [।।]
मत्वा दानं दरिद्राणां महाफलमितीव यः
स्वयं भयदरिद्रोऽपि शत्रुभ्योऽदान्महाभयम्[१] [।।]
तुङ्गगङ्गकुलोत्सादी पल्लवप्रलयानलः
स्वार्यके नृपतौ भक्त्या कारयित्वा जिनालयम् [।।]

श्रीविजयपलाशिकायां यापनि(नी)यनिर्ग्रन्थकूर्च्चकानां स्ववैजयिके अष्टमे वैशाखे संवत्सरे कार्त्तिकपौर्णमास्याम् । मातृसरित आरभ्य आ इङ्गिणीसङ्गमात् राजमानेन त्रयस्त्रिंश्(ड्)गन्निवर्त्तनं । श्रीविजयवैजयन्तीनिवासी दत्तवान् भगवद्भ्योर्हद्भ्यः [।]तत्राज्ञाप्ति । दामकीर्त्तिभोजकः जियन्तश्चायुक्तकः सर्व्वस्यानुष्ठाता इति [।।]

अपि च—उक्तम् [।]

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् [।।]
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिवर्षसहस्राणि कुम्भीपाके स पच्यते [।।]

सिद्धिरस्तु ।

[यह दानपत्र शान्तिवर्माके ज्येष्ठ पुत्र राजा मृगेशवर्माका है । उन्होने

---

१ हमारी रायमें यह पाठ 'ऽदान्महाभयम्' ऐसा होना चाहिये । २ यह और आगे का १०३ वाँ शिलालेख (ताम्रपत्र) 'अनेकान्त', वर्ष ७, किरण १-२, पृष्ठ ८-९ से लिया है ।

स्वर्गगत राजा (शान्तिवर्मा) की भक्तिसे पलाशिका नामक नगरमें जिनालय निर्माण कराके अपनी विजयके आठवें वर्षमें यापनीयों, निर्ग्रन्थो और कूर्चकोंके लिये भूमि दान किया है । यहाँ कूर्चक सम्प्रदाय दिगम्बर सम्प्रदायका ही एक भेद मालूम पड़ता है[1] ।

[इ० ए०, जिल्द ६, पृ० २४-२५]

१००

हल्सी—संस्कृत ।

—[१]—

प्रथम पत्र

[१] जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्र× प्रथितपरमकारुणिकः त्रैलोक्या

[२] श्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानु-

[३] ध्याताना मानव्यसगोत्राणा हारितीपुत्राणा प्रतिकृतस्वाध्याय च [र्च्चा]-

दूसरा पत्र, पहिली ओर ।

[४] पारगाणाम् स्वकृतपुण्यफलोपभोक्तृणाम् स्वबाहुवीर्य्योपार्ज्जि-

[५] तैश्वर्यभोगभागिनाम् सद्धर्म्मसदम्बाना कदम्बानाम् ॥ काकुस्थ-

[६] वर्म्मनृपलब्धमहाप्रसाद समुक्तवाञ्छुतनिधिश्श्रुतकीर्त्तिभोजः

दूसरा पत्र, दूसरी ओर ।

[७] ग्राम पुरा नृपु वर×पुरुपुण्यभागी खेटाह्वक यजनदानदयो-

[८] पपन्नः ॥ तस्मिन्स्वर्य्याते शान्तिवर्म्मावनीश मात्रे धर्म्मार्थ दत्तवान् दा-

[९] मकीर्त्ति. भूमौ विख्यातस्तत्सुतश्श्रीमृगेशः पित्रानुज्ञात धार्म्मिको दान-

---

१ देखो अनेकान्त, वर्ष ७, किरण १-२, पृष्ठ ७-८, मे श्री प. नाथूरामजी प्रेमीका 'कूर्चकोंका सम्प्रदाय' नामक लेख ।

तीसरा पत्र; पहली ओर ।

[१०] मेव ॥ श्रीदामकीर्त्तेरुरुपुण्यकीर्त्तेः सद्धर्म्ममार्गस्थितशुद्ध-
बुद्धेः ज्याया-

[११] न्सुतो धर्म्मपरो यशस्वी विशुद्धबुद्ध्या (द्धय) श्च्युतो गुणाढ्य.
आचार्य्यैर्बन्धु-

[१२] षेणाह्वै निमित्तज्ञानपारगै स्थापितो भुवि यद्वश श्रीकीर्त्ति-

[१३] कुलवृद्धये [॥] तत्प्रसादेन लब्धश्री दानपूजाक्रियोद्यत' गुरु-

तीसरा पत्र; दूसरी ओर ।

[१४] भक्तो विनीतात्मा परात्महितकाम्यया ॥ जयकीर्त्तिप्रतीहारऽ
प्रसादान्नृप-

[१५] ते **रवेः** पुण्यार्त्थं स्वपितुर्म्मात्रे दत्तवान् **पुरुखेटकं** ॥ जिने-
न्द्रमहिमा

[१६] कार्य्या प्रतिसवत्सर क्रमात् अष्टाहकृतमर्य्यादा कार्त्तिक्या-
न्तद्धना-

[१७] गमात् वार्षिकाश्चतुरो मासान् **यापनीयास्तपस्विन'**
भु[ञ्जीरस्तु]

चतुर्थ पत्र; पहली ओर ।

[१८] यथान्याय्य महिमाशेषवस्तुकम् [॥] **कुमारदत्त**प्रमुखा
हि सूरयः

[१९] अनेकशास्त्रागमखिन्नबुद्धयः जगत्यतीतास्सुतपोधनान्विताः
गणो

[२०] स्य तेषा भवति प्रमाणतः ॥ धर्म्मेप्सुभिर्ज्जानपदैस्सनागरै

[२१] जिनेन्द्रपूजा सतत प्रणेया इति स्थिर्ति स्थापितवान् **रवीशः**
पला [शिका]

चतुर्थ पत्र; दूसरी ओर।

[२२] या नगरे विशाले ॥ स्थित्यानया पूर्व्वनृपानुजुष्टया यत्ताम्र-पत्रेषु नि-

[२३] वद्धमादौ धर्म्माप्रमत्तेन नृपेण रक्ष्य संसारदोष प्रविचार्य्य

[२४] बुद्ध्या [॥] वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य

[२५] यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत

पञ्चम पत्र

[२६] वसुन्धरा षष्टि वर्षसहस्राणि नरके पच्यते भृशम् ॥ अद्भि-र्दत्त त्रिभि-

[२७] र्भुक्त सद्भिश्च[1] परिपालितम् एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्व्वराज-कृतानि च [॥]

[२८] यस्मिञ्जिनेन्द्रपूजा प्रवर्त्तते तत्र तत्र देशपरिवृद्धि.

[२९] नगराणा निर्भयता तद्देशस्वामिनाश्चोर्जा ॥ नमो नमः [॥]

[ई० ए० जिल्द ६, पृ० २५-२७, न. २२]

[यह लेख जैनधर्मका 'अष्टाह्निका' नामका उत्सव मनानेके लिये रवि-वर्म्मा और अन्य लोगो द्वारा दिये गये दानो और हुक्मोका उल्लेख करता है। इसमे कदम्बोके राजा काकुस्थ (काकुत्स्थ) वर्मा का, उसके बाद शान्तिवर्मा, तत्पश्चात् श्री मृगेश (वर्मा) का और अन्तमे रविवर्माके दान-का वर्णन है। जिस गांव का दान दिया गया उसका नाम है पुरुखेटक।

---

१ मि० राइस इसको 'षड्भिश्च प्रतिपालितम्' पढते है और उसका अर्थ 'छः पीढियोंतक जानेवाला' दान करते हैं।

१०१

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

प्रथम पत्र।

[१] जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारु-

[२] णिकः त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥

[३] **श्रीविष्णुवर्म्म**प्रभृतीन्नरेन्द्रान् निहत्य जित्वा पृथिवीं सम[स्ता]

[४] उत्साद्य **काञ्चीश्वर**चण्डदण्डम् **पलाशिका**या समवस्थितस्सः[॥]

द्वितीय पत्र, पहली ओर।

[५] **रवि कदम्बोरु** कुलाम्बरस्य गुणांशुभिर्व्याप्य जगत्सम[स्त]

[६] मानेन चत्त्वारि निवर्त्तनानि ददौ जिनेन्द्राय महीम् महेन्द्रः [॥]

[७] संप्राप्य मातुश्चरणप्रसाद धर्म्मैकमूर्त्तेरपि **दामकीर्त्तेः**

[८] तत्पुण्यवृद्ध्यर्थमभून्निमित्तम् **श्रीकीर्त्ति**नामा तु च तत्कनिष्ठ·[॥]

दूसरा पत्र, दूसरी ओर।

[९] रागात्प्रमादादथवापि लोभात् यस्तानि हिंस्यादिह भूमि-

[१०] पाल· आसप्तम तस्य कुल कदाचित् नापैति कृत्स्नान्निरया-
न्निमग्नम् [॥]

[११] तान्येव यो रक्षति पुण्यकाङ्क्ष स्ववशजो वा परवशजो वा

[१२] स मोदमानस्सुरसुन्दरीभि· चिर सदा क्रीडति नाकपृष्ठे [॥]

तीसरा पत्र।

[१३] अपि चोक्त **मनुना** [।] बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरा-
दिभिः

[१४] यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[१५] स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्

[१६] षष्टिवर्षसहस्राणि निरये स विपच्यते ॥

[इस लेखमें रविवर्माके द्वारा जिनेन्द्रदेवके लिये दिये गये एक भूमि-दानका उल्लेख है। दान की गई भूमि नापमें ४ निवर्तन थी, दामकीर्ति, जो कि धर्ममूर्ति थे, की माताके चरणोका प्रसाद पाकरके ही यह राजा दानमें प्रवृत्त हुआ। दामकीर्ति के छोटे भाईका नाम श्रीकीर्त्ति था। रविवर्मा पलाशिकामें रहते थे। इन्होंने श्रीविष्णुवर्मा(संभवत. 'विष्णुगोप' या 'विष्णुगोपवर्मा' नामका पल्लव राजा) और दूसरे अन्य राजाओका वध किया था, समस्त पृथ्वीको जीता था और काञ्चीश्वरके चण्डदण्डका उत्सादन (निर्मूलन) किया था।]

[इ० ए०, जिल्द ६, पृ० २९-३०, न० २४]

१०२

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

प्रथम पत्र।

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः

त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥

श्रीमत्काकुस्थराजप्रियहिततनयश्शान्तिवर्म्मावनीश

तस्यैव ज्येष्ठसूनुः प्रथितपृथुयशा **श्रीमृगेशो** नरेशः ॥ (।)

दूसरा पत्र, पहली ओर।

तत्पुत्रो दीप्ततेजा **रविनृपतिरभूत्सत्त्वधैर्य्यार्जितश्रीः**

तद्भ्राता **भानुवर्म्मा** स्वपरहितकरो भाति भूप(.) कनीयान् ॥

तेनेय वसुधा दत्ता जिनेभ्यो भूतिमिच्छता।

पौर्ण्णमासीष्वनुच्छिन्न स्नपनार्थं हि सर्व्वदा ॥

पलाशिकायाम् कर्दमपट्यां राजमानेन

१०३

हल्सी—संस्कृत।

—[१]—

सिद्धम् ॥ स्वस्ति स्वामिमहासेनमातृगणानुध्याताभिषिक्तानाम् 'मानव्य'-सगोत्राणाम् हारितीपुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्च्चिकानाम् कदम्बा(म्बा)नाम्महाराजः श्रीहरिवर्म्मा

बहुभवकृतैः पुण्यै राजश्रिय निरुपद्रवाम्
प्रकृतिषु हित प्राप्तो व्याप्तो जगद्यशसाखिलम्
श्रुतजलनिधि विद्यावृद्धप्रदिष्टपथि स्थित.
स्ववलकुलिशाघातोच्छिन्नद्विपद्वसुधाधर [॥]

स्वराज्यसवत्सरे चतुर्थे फाल्गुणशुक्लत्रयोदश्याम् उच्चशृङ्गयाम् सर्व्वजनमनोह्लादवचनकर्म्मणा सपितृव्येण शिवरथनामधेयेनोपदिष्टः पलाशिकायाम् भारद्वाज-सगोत्रसिंहसेनापतिसुतेन मृगेशेन कारितस्यार्हदायतनस्य प्रतिवर्षमाष्टाह्निकमहामहसततच (?) रूपलेपन-क्रियार्त्थं तदवशिष्ट सर्व्वसंघभोजनायेति सुदि (?) छि कुन्दूरविषये वसुन्तवाटकं सर्व्वपरिहारसयुतं कूर्चकानाम् वारिषेणाचार्यसङ्घ-हस्ते चन्द्रक्षान्तं प्रमुख कृत्वा दत्तवान् [॥] य एव न्यायतोभिरक्षति स तत्पुण्यफलभाग्भवति [।] यश्चैन रागद्वेषलोभमोहैरपहरति स निकृष्टतमा गतिमवाप्नोति [॥] उक्तञ्च—

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु स [॥]
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् [॥] इति

वर्धतां वर्धमानार्हच्छासनं सयमासनम्

येनाद्यापि जगज्जीवपापपुञ्जप्रभंजनम् [॥] नमोर्हते वर्धमानाय [॥]

[यह दानपत्र कदम्ब राजवंशके महाराजा हरिवर्माका है। उन्होंने अपने राज्यके चौथे वर्षमें शिवरथ नामके पितृव्यके उपदेशसे, सिंहसेनापतिके पुत्र मृगेशद्वारा निर्मापित जैनमन्दिरकी अष्टाह्निका-पूजाके लिये और सर्वसंघके भोजनके लिए 'वसुन्तवाटक' नामक गाँव कूर्चकोंके वारिषेणाचार्यसंघके हाथमें चन्द्रक्षान्तको प्रमुख बनाकर प्रदान किया। यह और ९९ वां दान-पत्र दोनों, ताम्रपत्रोंपर हैं। नम्बर ९९ वें के दान-पत्रमें यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चक इन तीन सम्प्रदायोंके नाम हैं और इसमें सिर्फ कूर्चक सम्प्रदायका। इससे मालूम होता है कि इस सम्प्रदायमें 'वारिषेणाचार्यसंघ' नामका एक संघ था, जिसके प्रधान चन्द्रक्षान्त (मुनि) थे।]

[इ० ए०, जिल्द ६, पृ० ३०-३१]

१०४

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

प्रथमपत्र।

सिद्धम् ॥ स्वस्ति ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानुध्यानाभिषिक्तानाम् मानव्यसगोत्राणा[न्] हारितीपुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चापाराणाम् कदम्बानाम् महाराजश्रीरविवर्म्मणः स्वभुजबलपराक्रमावाप्त(?) निरवद्यविपुलराज्यश्रियः विद्वन्मतिसुवर्णनिकषभूतस्य कामाद्यरिगण-

दूसरा पत्र; पहली ओर।

त्यागाभिव्यञ्जितेन्द्रियजयस्य न्यायोपार्जितार्थ [स] हितसाधुज [न]-स्य क्षितितलप्रततविमलयशसः प्रियतनय पूर्व्वसुचरितोपचितविपुल-पुण्यसम्पादितशरीरबुद्धिसत्व' सर्व्वप्रजाहृदयकुमुदचन्द्रमा' महाराज-श्रीहरिवर्म्मा स्वराज्यसंवत्सरे पञ्चमे पलाशिकाधिष्ठाने अहरिष्टि-समाह्वयः

दूसरा पत्र, दूसरी ओर।

श्रमणसङ्घान्वयवस्तुन **धर्म्मनन्द्याचार्य्या**धिष्ठितप्रामाण्यस्य चैत्या-लयस्य पूजासंस्कारनिमित्तम् साधुजनोपयोगार्थञ्च **सेन्द्रकाणां** कुलल-लामभूतस्य **भानुशक्ति**राजस्य विज्ञापनया **मरदे** ग्रामं दत्तवान् [॥] य एतल्लोभाद्वै कदाचिदपहरेत् स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति यश्चा-भिरक्षति स तत्पुण्यफलम्

तीसरा पत्र।

अवाप्नोतीति [॥] उक्तञ्च ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु स ॥
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादि [भिः]
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
ये सेतूनभिरक्षन्ति भैग्नान् संस्थापयन्ति च ।
द्विगुण पूर्व्वकर्तृभ्य. तत्फल समुदाहृतम् [॥]

[इस लेखमें अपने राज्यके पाँचवें वर्षमें सेन्द्रकके कुलके भानु-शक्ति राजाकी प्रार्थनापर हरिवर्म्माने 'मरदे' नामका गाँव दानमें दिया था, इस बातका उल्लेख है। यह हरिवर्मा रविवर्माका प्रियपुत्र है। यह दान राजधानी पलाशिकामें किया गया। इस दानका निमित्त वह चैत्यालय था जो कि 'अहरिष्टि' नामके श्रमणसङ्घकी सम्पत्ति थी और जिसपर आचार्य धर्मनन्दिकी आज्ञा चलती थी; उस चैत्यालयके पूजा इत्यादिके प्रबंधके लिये तथा साधुजनोंके उपयोगके लिये ही यह दान किया गया।]

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० ३१-३२.]

१०८

देवगिरि—संस्कृत।

—[?]—

विजय**त्रिपर्व्वते** स्वामिमहासेनमातृगणानुध्याताभिषिक्तस्य **मानव्य**-सगोत्रस्य प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चापारगस्य आदिकालराजर्षिबिम्बाना आश्रितजनाम्बाना **कदम्बाना** धर्ममहाराजस्य अश्वमेधयाजिनः समरार्जितविपुलैश्वर्यस्य सामन्तराजविशेषरत्नसुनागजिनाकम्पदायानुभूतस्य (?) शरदमलनभस्युदितशशिसदृशैकातपत्रस्य धर्ममहाराजस्य **श्रीकृष्णवर्म्मणः** प्रियतनयो **देववर्म्मयु**वराजः स्वपुण्यफलामिकाक्षया त्रिलोकभूतहितदेशिनः धर्मप्रवर्त्तनस्य अर्हतः भगवतः चैत्यालयस्य भग्नसंस्कारार्चनमहिमार्थ **यापनीय [स] ङ्घेभ्यः** सिद्धकेदारे राजमानेन (?) द्वादश निवर्त्तनानि क्षेत्रं दत्तवान् योस्य अपहर्त्ता स पचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिरक्षिता स पुण्यफलमश्नुते (।) उक्त च—बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तथा (?) फल॥ अद्भिर्दत्त त्रिभिर्युक्त सद्भिश्च परिपालित। एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्वराजकृतानि च॥

स्व दातु सुमहच्छक्य दु (?)ःख (म) न्यार्थपालन॰।
दान वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम्॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धरा।
षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः॥
श्रीकृष्णनृपपुत्रेण कदम्बकुलकेतुना।
रणप्रियेण **देवेन** दत्ता भूमिस्त्रि**पर्व्वते**॥
दयामृतसुखास्वादपूतपुण्यगुणेप्सुना।
देववर्म्मैकवीरेण दत्ता जैनाय भूरियम्॥

जयत्यर्हंस्त्रिलोकेश' सर्व्वभूतहितकरः ।
रागाद्यरिहरोनन्तोनन्तज्ञानदगीश्वरः ॥

[इ० ए०, जिल्द ७, पृ० ३३-३५, न. ३५]

[यह दानपत्र कदम्बोंके धर्ममहाराज श्रीकृष्णवर्माके प्रियपुत्र 'देववर्मा' नामके युवराजकी तरफसे लिखा गया है और इसके द्वारा 'त्रिपर्वत' के ऊपरका कुछ क्षेत्र अर्हन्त भगवानके चैत्यालयकी मरम्मत, पूजा और महिमाके लिये 'यापनीय' संघको दान किया गया है।

पत्रके अन्तमें इस दानको अपहरण करनेवाले और रक्षा करनेवालेके वास्ते वही कसम दिलाई है अथवा वही विधान किया है जैसा कि ९७ नम्बरके दानपत्रके सम्बन्धमें पहले बतलाया गया है। वही चारों 'उक्तं च' पद्य भी कुछ क्रमभंगके साथ दिये हुए हैं और उनके बाद दो पद्योंमें इस दानका फिरसे खुलासा दिया है, जिसमें देववर्माको रणप्रिय, दयामृतसुखास्वादनसे पवित्र, पुण्यगुणोंका इच्छुक और एकवीर प्रकट किया है। अन्तमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक प्रायः वही पद्य है जो ९७ नम्बरके दानपत्रके शुरूमें दिया है। इस पत्रमें श्रीकृष्णवर्माको 'अश्वमेघ' यज्ञका कर्ता और शरद् ऋतुके निर्मल आकाशमें उदित हुए चन्द्रमाके समान एक छत्रका धारक, अर्थात् एकछत्र पृथ्वीका राज्य करनेवाला लिखा है।]

पूर्वके न० ९७,९८ व इस दानपत्रपरसे निम्नलिखित ऐतिहासिक व्यक्तियोंका पता चलता है.—

१ स्वामिमहासेन—गुरु।
२ हारिती—मुख्य और प्रसिद्ध पुरुष।
३ शान्तिवर्मा—राजा।
४ मृगेश्वरवर्मा—राजा।
५ विजयशिवमृगेशवर्मा—महाराजा।
६ कृष्णवर्मा—महाराजा।
७ देववर्मा—युवराज।
८ दामकीर्ति—भोजक।
९ नरवर—सेनापति।

१०६

अल्तेम (जिला कोल्हापुर)—संस्कृत ।

[शक ४११=४८८ ई०]

पहला पत्र ।

स्वस्ति ॥ जयत्यनन्तसंसारपारावारैकसेतव·
महावीरार्हतः पूताश्चरणाम्बुजरेणव. ॥

श्रीमना विश्व-विश्वम्भराभिसंस्तूयमान**मानव्य**सगोत्राणा **हारीति-**पुत्राणा सप्तलोकमातृभिस्सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानां कार्त्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-कल्याणपरम्पराणा भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलाञ्छनेक्षणक्षण-वशीकृताशेषमहीभृताना (भृताम्) **चालुक्यानां** कुलमलकरिष्णो ॥ स्वभुजोपार्जितवसुन्धरस्य निजयशश्श्रवणमात्रेणैवावनतराजकस्य कीर्त्तिप-ताकावभासितदिगन्तरालस्य **जयसिंहस्य राजसिंहस्य** (?) सूनुस्सूनृत-वागनवरतदानार्द्रीकृतकरस्सुरगज इव प्रशमनिवित्तपोनिधिरिव दृप्तवैरिपु प्राप्तरणरागो **रणरागो**ऽभवत् [॥] तस्य चात्मजे श्वमेधनाव (०मेधाव) भृत (थ)-स्नानपवित्रीकृतगात्रे प्रणतपरनृपतिमकुटतटघटितहटन्मणिगण-किरणवार्द्धाराधौतचारुचरणकमलयुगले चित्रकण्ठाभिधानतुरङ्गमकण्ठीरवे-णोत्सारितारातिस्तम्भेरममण्डले वर्णाश्रमसर्व्वधर्म्मपरिपालनपरे गङ्गासेतु(?) मध्यवर्त्तिदेशाधीश्वरे शक्तित्रयप्रवर्द्धितप्राज्यसाम्राज्ये गङ्गायमुनापालि-

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

ध्वजढक्कादिपञ्चमहाशब्दचिह्ने करदीकृत**चोल-चेर-केरल-सिंहल-कलिंग**भूपाले दण्डित**पाण्ड्या**दिमण्डि (ण्ड) लिके अप्रतिशासने **'सत्याश्रय'-श्री-पुलके**श्यभिधानपृथिवीवल्लभमहाराजाधिराजे पृथिवीमे-कातपत्रं शासति सति [॥] राजा **इन्द्रनीलसैन्द्रक**वंशशशाङ्कायमानः

प्रचण्डदोर्दण्डमण्डितमण्डलाग्रो **गोण्ड**नामासीत् [॥] अय-नय-विनयसम्पन्नस्तनयोऽस्य समररसरसिक**स्सिवारा**ख्यया ख्यात· [॥] पुत्रोऽस्य भूता (तो) धात्रीतिलकायमान· पराक्रमाक्रान्तवैरिनिकुरुम्बः अत्रार्य्यवीर्यसमन्वितः कार्य्याकार्य्यनिपुणः हनूमानिव रामस्याभिरामस्य तस्य भृत्यस्सत्यसन्धो धार्मिक**स्सामियार**स्समभूत् [॥] स तत्प्रसादसमासादित**कुहुण्डी**विषयस्त परिपा[ल] य (यन्) तदन्तर्भूता**लक्क**माभिधाननगर्य्यांग्रामसप्तशतराजधान्यामशेषविषयविशेषकायमानाया शालिव्रीहीक्षुवणचणकप्रियङ्गुवरकोटारकश्यामाकगोधूमाद्यनेकधान्यसमृद्धाया तद्देशविलासिनीमुखकमलमिव विराजमानाया धनधान्यपरिपूर्णकूपीवलप्रायायाम् ॥

ऐन्द्या दिशि महेन्द्राभः प्रासाद प्रवरम्महत् जिनेन्द्रा—

दूसरा पत्र, दूसरी ओर ।

यतन भक्त्याकारयत् सुमनोहरम् ॥
प्रोत्तुग-प्रासाद त्रिभुवनतिलकं जिनालय प्रवर
नानास्तम्भसमुद्धृतविराजमान चिरं जगति ॥

शकनृपाब्देष्वेकादशोत्तरेषु चतुष्षष्टेषु व्यतीतेषु **विभव**संवत्सरे प्रवर्त्तमाने ॥ कृते च जिनालये ।

वैशाखोदितपूर्णपुण्यदिवसे राहो (हौ) विधौ (धोः) मण्डल
श्लेष्टेन्दोर्थिकमजनादुपगत स्नेहाद् गृहं भूभुजम्
श्रीसत्याश्रयमाश्रय गुणवता विज्ञापयामास स
तज्जैनालयपूजनोचितनुतक्षेत्राय धर्मप्रियः ॥
आयुर्जन्मवतामिद ननु तदि (डि) त् सन्ध्येन्द्रा(न्द्र)चापोपम
ज्ञात्वा धर्म्मम (ध) नार्जन बुधजनैर्म्मार्त्य (र्त्यैः) फल मन्यते

१ सभवत शुद्ध पाठ 'श्लिष्टेऽन्वार्थिकमजनाद्' होना चाहिये ।

इत्येव प्रविबोध्य सभ्यजनता **सत्याश्रयो** वल्लभो
भक्त्या तज्जिनमन्दिरोपमक्रिये क्षेत्र ददौ शासनम् ॥
वैशाखपौर्ण्णमास्या राहौ विधुमण्डल प्रविष्टवति
सत्याश्रयनृपतिस्त्रि**भुवनतिलकाय** दत्तवान् क्षेत्रम् ॥
कनकोपलसम्भूतवृक्षमूलगुण (णा) न्वये
भूतस्समग्रराद्धान्तास्स**िद्धनन्दि**मुनीश्वरः ॥
तस्यासीत् प्रथमश्शिष्यो देवताविनुतक्रम.
शिष्यैः पञ्चशतैर्युक्त–

तीसरा पत्र, पहिली ओर।

श्चितकाचार्य्य-सञ्ज्ञितः ॥
श्रीमत्**काकोपला**म्नाये ख्यातकीर्त्तिर्बहुश्रुत.
लक्ष्मीवान्**नागदेव्या**ख्य**श्चितकाचार्य्य**दीक्षित. ॥
नागदेवगुरोश्शिष्य प्रभूतगुणवारिधिः
समस्तशास्त्रसम्बोधि (धी) **जिननन्दिः** प्रकीर्त्तितः ॥
श्रीमद्विविधराजेन्द्रप्रस्फुरन्मकुटालिभिः
निघृष्टचरणाब्जाय प्रभवे जननन्दिने ॥

जिननन्द्याचार्य्यसूर्य्याय दुश्चरतपोविशेषनिकषोपलभूताय समधिसर्व्वशास्त्राय नगराशतलभोगाश्च प्रददौ [॥] तत्र तलभोगसीमान्याह [।] चैत्यालयाद् वायव्या दिशि तटाक तटो ऋजुसूत्रक्रमेण पश्चिमाभिमुख गत्वा पथ तस्य मध्ये निखातपाषाण तस्माद् दक्षिणाभिमुखमनुपथ गत्वा प्रवाह तस्य (स्य) मध्ये निखातपाषाण पूर्वाभिमुख गत्वा तिन्त्रिणीकवृक्ष यावत् तस्मादुत्तराभिमुख गत्वा पूर्व्वोक्त-तटाक। [1] यावत्

---

१ इस पूर्णविराम की यहाँ कोई जरूरत नहीं है। 'पूर्व्वोक्त-तटाक यावत्' ऐसा सम्बन्ध है।

स्थितं एतन्नगरनिवेशक्षेत्रम् [॥] तत्र तलभोगक्षेत्रसीमान्याह [।] नगरस्य दक्षिणस्या दिशि सेतुबन्धात् प्रभृत्यनुजलवाहल पूर्व्वाभिमुख गत्वा यावदांञ्छिकक्षेत्र तत्पश्चिमसीम्नि निखातपाषाण यावत्तस्मादनुसीमोत्तराभिमुख गत्वा यावच्छमीवल्मीक तस्मात्पुनः पूर्व्वाभिमुखं गत्वा यावत् स्थलगिरि तस्मात्पुनरनुगिर्य्युत्तराभिमुख गत्वा यावद्गिरेरुच्चप्रदेश तस्मात् पश्चिमाभिमुख गत्वा यावद्गिरि तस्मात् पश्चिमाभिमुख गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्माद्दक्षिणाभिमुख गत्वा यावत्सेतुबन्धन (न) स्थित राजमनेन पञ्चाशद् सदुत्तरनिवर्त्तनशत तलभोगक्षेत्र चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥ **नरिन्दक**नामग्रामे नैर्ऋत्या दिशि नरिन्दक-सामरिवाद (ड) ग्रामपथि मध्यवर्त्तिसिंगतेगतटाकाद् ऋजुसूत्रक्रमेण नरिन्दकग्रामपथ यावत्तावत्स्थित चत्वारिंशत् नि (र्व्व) वर्त्तन क्षेत्र दक्षिणदिशि राजमानेन ॥ **किणयिगे**नामग्रामे पूर्व्वस्या दिशि अशीतिनिवर्त्तन क्षेत्रं राजमानेन पिशाचाराम नैर्ऋत्या दिशि यावच्छमीझाटवल्मीक तस्मात् पूर्व्वाभिमुख गत्वा यावत्पथ तस्माद्दक्षिणाभिमुख गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात् पश्चिमाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावच्छमीस्थल तस्मादुत्तराभिमुख गत्वा यावच्छमी-झाटवल्मीक स्थित चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥ **पन्तिगणगे** नामग्रामे

चतुर्थ पत्र, पहिली ओर ।

नैर्ऋत्या दिशि मान्यस्य क्षेत्र उत्तरस्या दिशि चत्वारिंशन्निवर्त्तन क्षेत्र राजमानेन पश्चिमस्या दिशि स्थलगिरि तस्मादनुसीम पूर्व्वाभिमुख गत्वा यावच्छमीवल्मीकं तस्माद्दक्षिणाभिमुख गत्वा **कोमरञ्जे**-ग्राम-सीम तस्मात्पूर्व्वाभिमुखमनुसीम गत्वा यावज्जलवाहल तस्मादुत्तराभिमुखमनुवाहल गत्वा यावच्छमीझाटवल्मीक तस्मात्पश्चिमाभिमुख गत्वा यावत्तटाकोत्तरकोडि (टि) तस्माद्दक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावत्तावत्स्थित चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥

मंगलीनामग्रामपश्चिमदिशि राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्त्तन क्षेत्र तस्य सीमान्याह स्थलगिरेः पश्चिमाभिमुखमनुपथ गत्वा याव**द्रूविक**ग्रामसीम तस्मादुत्तराभिमुखमनुसीम गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात्पूर्व्वाभिमुख-मनुस्थलगिरि गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्माद्दक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा स्थित चतुस्सीमाव (वि) रुद्धम् ॥ **करण्डिगे** नाम ग्रामे प—

चतुर्थ पत्र; दूसरी ओर।

श्चिमस्या दिशि **चन्दवुर-पन्दङ्गवल्लि**नामग्राममार्गमध्ये अश्वत्थतटाकाद् वायव्या दिशि राजमानेन पञ्चविंशतिनिवर्तन क्षेत्रम् ॥ **दावनवल्लि**नामग्रामे पश्चिमस्या दिशि **अलक्तकनगरकुम्बयिज**नामग्राम-मार्गमध्ये विम्बालयपिशाचारामातपश्चिमे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ पुनरपि तस्मिन्नेव ग्रामे दक्षिणस्या दिशि हिङ्गुटीतटाकादुत्तरस-मीपस्थ राजमानेन शत नि (शत-नि) वर्तन क्षेत्रम् ॥ **नन्दिणिगे**नाम ग्रामे पूर्व्वस्या दिशि **बरबुलिक**सीम **श्रीपुर**मार्गमध्ये राजमानेन चत्वारिं-शन्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ **सिरिपत्ति**नामग्रामे पश्चिमस्या दिशि **श्रीपुर**मार्गतो दक्षिणतो राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ **अर्जुनवाद (ड)** नामग्रामे पश्चिमस्या दिशि श्रीपुरमार्ग्गतो उत्तरतो राजमानेन पञ्चाश-न्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ ग्रामनामान्याह ॥ **कुम्बयिज**-द्वादशस्यो (स्या) न्तः **रूविको** नाम

पाँचवाँ पत्र।

ग्रामः प्रथमः ॥ **सामरिवादो (डो)** नाम ग्राम' द्वितीय. ॥ वटमाले द्वादशस्यान्तः **लहिवादो (डो)** नाम ग्रामः तृतीय ॥ श्रीपुरद्वाद-शस्य मध्ये **पेह्लिदको** नाम ग्रामः चतुर्थः ॥ इत्येते चत्वारो ग्रामा. चतु-स्सीमाव (वि) रुद्धक्षेत्रः (त्रा.) सोदङ्गा. स (सो) परिकरा. अचाटभटप्रवेश्याः

[॥] तदागामिभिरस्मद्वंश्यैरन्यैश्च राजभिरायुरैश्वर्य्यादीना विलसितमचिरांशुचञ्चलमवगच्छद्भिराचन्द्रार्कधराण्र्णवस्थितिसमकाल यशश्चिचीशुभिः स्वदत्तिनिर्व्विशेष परिपालनीयमुक्त च मन्वादिभिः ॥

बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि-
र्यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ।
स्व दातु सुमहच्छक्य दु.खमन्यस्य पालन
दान वा पालन श्रेयो श्रेयो दानस्य पालनम् ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते कृमिः ॥

[इ ए, ७, पृ० २०९-२१७, न. ४४]

[इस दानपत्रमें पुलिकेशीकी वंशावलि उसके पितामह (बाबा) जयसिंह और उसके पिता रणराग से लेकर दी हुई है। ऊपर विरुदावलिमें यह वाक्यावली आती है, 'जयसिंहस्य राजसिंहस्य सूनु.···रणरागोऽभवत्°—जिससे सर वाल्टर इलियटने सन्देहास्पदरूपसे यह फलितार्थ निकाला है कि 'राजसिंह' जयसिंहका दूसरा नाम था। पर यदि 'राजसिंह' यह व्यक्तिवाचक नाम हो भी, तो इससे जयसिंहकी उपाधिका ही पता लगेगा, जयसिंहके दूसरे नामका नहीं।

तत्पश्चात् दानपत्रमें उसके (जयसिंहके) एक सामन्त सामियारका उल्लेख है जो रुन्द्रनील-सैन्द्रक वंशका है। यह सामियार कुहुण्डी जिलेका शासक था। इसके बाद यह वर्णन है कि सामियारने अलक्तकनगरमें, जो कि उस जिलेके ७०० गावोंके समूहोंमें एक प्रधान नगर था, एक जैनमन्दिर बनवाया, और राजाज्ञा लेकर, विभव संवत्सरमें जब कि शकवर्ष ४११ व्यतीत हो चुका था वैशाख महीने की पूर्णिमाके दिन चन्द्रग्रहणके अवसरपर कुछ जमीन और गाँव मन्दिरको दिये।]

१०७

आडूर [जिला धारवाड]; संस्कृत तथा कन्नड–भग्न ।

—[?]—

पूर्ववर्ती चालुक्य **कीर्त्तिवर्म्मा प्रथम**का शिलालेख

[१] ··· ····जयत्यनेकधा विश्व विवृण्वन्नंशुमानिव
···· ····श्री—**वर्द्धमान**देवे····· · · ·

[२]·· · · ···न् (?) यप-दुः-प्रवाधनः [॥]
प्रभास (?) नि भुवं भूयो ······ · · · ·· ·····

[३] ········ ··प्रताप-क्षत · · ि ·ि········ ··· दान
··· ·····. ·········· ······· ·····

[४]···········कु (?) र (?)-तेजसा **वैजय**
············र········· ·· ····

[५]··············त्पाशभृद्विषमो यमः चित्त वा मानस सत्य स्थित
······· ····[॥] तेनेष (?)··········

[६]····**गामुण्ड**-निर्म्मापितजिनालयदानशालादिसंवृद्ध्यै विज्ञप्तेन
यशस्विना [।] पञ्चविं–

[७] शति-सख्यान-निवर्त्तन-कृत-प्रमं क्षेत्र राजमानेन दत्त
त्वहितरक्षण [।] [वि]–

[८] श्राव्य साक्षिणः कृत्वा उन्छोरिन्द-प्रधानकानन्यैरपि च
राजन्यै रक्षणीय स·· ·······[॥]

[९] उक्तं च [।] स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठाय(ा)म् [जाय]–

शूरे विदुषि च विभजन्दान मानं च युगपदेकत्र ।
अविहितयाथातथ्यो जयति च **सत्याश्रयः**[१] सुचिरम् ॥ ३ ॥
पृथिवीवल्लभशब्दो येषामन्वर्थता चिर जातः ।
तद्वंशे (श्ये) षु जिगीषुषु तेषु वहुष्वप्यतीतेषु ॥ ४ ॥
नानाहेतिशताभिघातपतितभ्रान्ताश्वपत्तिद्विपे
नृत्यद्भीमकबन्धखड्गकिरणज्वालासहस्रे रणे ।
लक्ष्मीर्भावितचापलादिव कृता शौर्येण येनात्मसा-
द्राजासीज्जयसिंहवल्लभ इति ख्यातश्चुलुक्यान्वयः ॥ ५ ॥
तदात्मजोऽभूद्रणरागनामा दिव्यानुभावो जगदेकनाथः ।
अमानुषत्व किल यस्य लोकः सुप्तस्य जानाति वपुःप्रकर्षात् ॥६॥
तस्याभवत्तनूजः **पुलकेशी** यः श्रितेन्दुकान्तिरपि ।
श्रीवल्लभोऽप्ययासीद्वातापिपुरीवधूवरताम् ॥ ७ ॥
यत्त्रिवर्गपदवीमल क्षितौ नानुगन्तुमधुनापि राजकम् ।
भूश्च येन हयमेधयाजिना प्रापितावभृथमज्जना बभौ ॥ ८ ॥
नलमौर्यकदम्बकालरात्रिस्तनयस्तस्य बभूव **कीर्तिवर्मा** ।
परदारविवृत्तचित्तवृत्तेरपि धीर्यस्य रिपुश्रियानुकृष्टा ॥ ९ ॥
रणपराक्रमलब्धजयश्रिया सपदि येन विरुग्णमशेषतः ।
नृपतिगन्धगजेन महौजसा पृथुकदम्बकदम्बकदम्बकम् ॥१०॥
तस्मिन्सुरेश्वरविभूतिगताभिलाषे
राजाभवत्तदनुजः किल **मङ्गलीशः** ।
यः पूर्वपश्चिमसमुद्रतटोषिताश्वः
सेनारजःपटविनिर्मितदिग्वितानः ॥ ११ ॥

१ 'सत्याश्रय' यह पुलकेशीका नामान्तर है ।

स्फुरन्मयूखैरसिदीपिका शतैर्व्युदस्य मातङ्गतमिस्रसंचयम् ।
अवाप्तवान् यो रणरङ्गमन्दिरे **कलच्चुरि**श्रीललनापरिग्रहम् ॥ १२ ॥

पुनरपि च जिघृक्षो. सैन्यमाक्रान्तसाल
रुचिरबहुपताक **रेवती**द्वीपमाशु ।
सपदि महदुदन्वत्तोयसंक्रान्तबिम्ब
वरुणबलमिवाभूदागत यस्य वाचा ॥ १३ ॥

तस्याग्रजस्य तनये नहुषानुभावे
लक्ष्म्या किलाभिलषिते **पुलकेशि**नाम्नि ।
सासूयमात्मनि भवन्तमत. पितृव्यं
ज्ञात्वापरुद्धचरितव्यवसायबुद्धौ ॥ १४ ॥

स यदुपचितमन्त्रोत्साहशक्तिप्रयोग-
क्षपितबलविशेषो **मङ्गलीशः** समन्तात् ।
स्वतनयगतराज्यारम्भयत्नेन सार्धं
निजमतनु च राज्य जीवित चोज्झति स्म ॥ १५ ॥

तावत्तच्छत्रभगे जगदखिलमरात्यन्धकारोपरुद्ध
यस्यासह्यप्रतापद्युतिततिभिरिवाक्रान्तमासीत्प्रभातम् ।
नृत्यद्विद्युत्पताकैः प्रजविनि मरुति क्षुण्णपर्यन्तभागै-
र्गर्जद्भिर्वारिवाहैरलिकुलमलिन व्योम या(जा)त कदा वा ॥ १६ ॥

लब्ध्वा काल भुवमुपगते जेतुमाप्यायिकाख्ये
गोविन्दे च द्विरदनिकरैरुत्तराम्भोधिरथ्याः ।
यस्यानीकैर्युधि भयरसज्ञत्वमेक. प्रयात-
स्तत्रावाप्त फलमुपकृतस्यापरेणापि सद्य. ॥ १७ ॥

वरदातुङ्गतरङ्गरङ्गविलसद्धंसानदीमेखला
वनवासीमवमृद्नतः सुरपुरप्रस्पर्धिनी संपदा ।
महता यस्य बलार्णवेन परितः सञ्छादितोर्वीतल
स्थलदुर्गं जलदुर्गतामिव गतं तत्तत्क्षणे पश्यताम् ॥१८

गङ्गाम्बु पीत्वा व्यसनानि सप्त हित्वा पुरोपार्जितसम्पदोऽपि ।
यस्यानुभावोपनताः सदासन्नासन्नसेवामृतपानशौण्डा ॥ १९ ॥

कोङ्कणेषु यदादिष्टचण्डदण्डाम्बुवीचिभिः ।
उदस्तास्तरसा मौर्यपल्वलाम्बुसमृद्धयः ॥ २० ॥

अपरजलधेर्लक्ष्मीं यस्मिन्पुरीं पुरभित्प्रभे
मदगजघटाकारैर्नावां शतैरवमृद्नति ।
जलदपटलानीकाकीर्णं नवोत्पलमेचक
जलनिधिरिव व्योम व्योम्नः समोऽभवदम्बुधिः ॥ २१ ॥

प्रतापोपनता यस्य लाटमालवगूर्जराः ।
दण्डोपनतसामन्तचर्या वर्या इवाभवन् ॥ २२ ॥

अपरिमितविभूतिस्फीतसामन्तसेना-
मुकुटमणिमयूखाक्रान्तपादारविन्दः ।
युधि पतितगजेन्द्रानीकबीभत्सभूतो
भयविगलितहर्षो येन चाकारि हर्षः ॥ २३ ॥

भुवमुरुभिरनीकैः शासतो यस्य रेवा
विविधपुलिनशोभावन्ध्यविन्ध्योपकण्ठा ।
अधिकतरमराजत्स्वेन तेजोमहिम्ना
शिखरिभिरिभवर्ज्या वर्ष्मणा स्पर्धयेव ॥ २४ ॥

विधिवदुपचिताभिः शक्तिभिः शक्रकल्प-
स्तिसृभिरपि गुणौघैः स्वैश्च माहाकुलाद्यैः ।
अनमदधिपतित्व यो **महाराष्ट्रकाणां**
नवनवतिसहस्रग्रामभाजा त्रयाणाम् ॥ २५ ॥

गृहिणा स्वगुणैस्त्रिवर्गतुङ्गा विहितान्यक्षितिपालमानभङ्गाः ।
अभवन्नुपजातभीतिलिङ्गा यदनीकेन स**कोसलाः कलिङ्गाः** ॥२६॥

पिष्ट पिष्टपुरं येन जात दुर्गमदुर्गमम् ।
चित्र यस्य कलेर्वृत्त जात दुर्गमदुर्गमम् ॥ २७ ॥

संनद्धवारणघटास्थगितान्तराल
नानायुधक्षतनरक्षतजाङ्गरागम् ।
आसीज्जल यदवमर्दितमभ्रगर्भा-
कौणालमम्बरमिवोर्जितसान्ध्यरागम् ॥ २८ ॥

उद्धूतामलचामरध्वजशतच्छत्रान्धकारैर्बलै॰
शौर्योत्साहरसोद्धतारिमथनैर्मौलादिभि॰ पड्विधैः ।
आक्रान्तात्मबलोन्नर्ति बलरजःसञ्छन्न**काञ्चीपुरः**
प्राकारान्तरितप्रतापमकरोद्यः **पल्लवानां** पतिम् ॥२९॥

कावेरी द्रुतशफरीविलोलनेत्रा **चोला**ना सपदि जयोद्यतस्तस्य (?) ।
प्रश्च्योतन्मदगजसेतुरुद्धनीरा सस्पर्श परिहरति स्म रत्नराशेः ॥३०॥

चोलकेरलपाण्ड्याना योऽभूत्तत्र महर्द्धये ।
पल्लवानीकनीहारतुहिनेतरदीधितिः ॥ ३१ ॥

उत्साहप्रभुमन्त्रशक्तिसहिते यस्मिन्समन्ताद्दिशो
जित्वा भूमिपतीन्विसृज्य महितानाराध्य देवद्विजान् ।

वातापीं नगरीं प्रविश्य नगरीमेकामिवोर्वीमिमा
चञ्चन्नीरधिनीरनीलपरिखा **सत्याश्रये** शासति ॥ ३२ ॥

त्रिंशत्सु त्रिसहस्रेषु भारतादाहवादितः ।
सप्ताब्दशतयुक्तेषु श (ग) तेष्वब्देषु पञ्चसु (३७३५) ॥३३ ॥
पञ्चाशत्सु कलौ काले **षट्सु पञ्चशतासु** च (६५६) ।
समासु समतीतासु **शकाना**मपि भूभुजाम् ॥ ३४ ॥

तस्याम्बुधित्रयनिवारितशासनस्य
सत्याश्रयस्य परमाप्तवता प्रसादम् ।
शैलं जिनेन्द्रभवनं भवनं महिम्ना
निर्मापितं मतिमता **रविकीर्तिने**दम् ॥ ३५ ॥

प्रशस्तेर्वसतेश्चास्या जिनस्य त्रिजगद्गुरोः ।
कर्ता कारयिता चापि **रविकीर्तिः** कृती स्वयम् ॥३६॥

येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म ।
स विजयतां **रविकीर्तिः** कविताश्रित**कालिदासभारवि**कीर्तिः ३७

[प्राचीनलेखमाला, प्रथमभाग, ले० १६, पृ० ६८-७२, से उद्धृत]

[यह शिलालेख बीजापुर (पूर्वका कलाद्गी) ज़िलेके हुङ्गुण्ड तालुकाके ऐहोळेके मेगुटि नामके प्राचीन मन्दिरकी पूर्वकी तरफकी दीवालपर है। लेखमें कुल १९ पक्तियाँ हैं, जिनमेंसे १८ वी पक्ति पूर्ण और १९ वीं छोटी पक्ति बादमें किसीकी जोडी हुई है और जिनमें महत्त्व-पूर्ण कोई बात नहीं है।

समूचा शिलालेख किसी रविकीर्त्तिका बनाया हुआ है। वे (रविकीर्त्ति) चालुक्य पुलकेशी सत्याश्रय (अर्थात् पश्चिमी चालुक्य पुलकेशी द्वितीय) के राज्यमें थे। यह राजा उनका संरक्षक या पोषक था। इन्होने शिलालेखवाले जिनालयमें जिनेन्द्रकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा की। प्रतिष्ठाके समय यह लेख उत्कीर्ण करवाया गया था जिसमें सामान्यरूपसे चालुक्य वंशकी, और विशेषतः पुलकेशी द्वितीय (रविकीर्तिके आश्रयदाता) के

पराक्रमोकी प्रशस्ति है। इस लेखमें आये हुए ऐतिहासिक तथ्योका पूरा विवरण प्रो० भाण्डारकर और डा० फ्लीटने दिया है[1]।

इस लेख (या काव्य) का मुख्य भाग १७-३२ श्लोकोका है। इनको रविकीर्त्ति के आशयानुसार, रघुवशके (चौथे सर्गके) रघुदिग्विजयके समान, 'पुलकेशी सत्याश्रय दिग्विजय' कहा जा सकता है। इस काव्य (कविता) की रचनामें रविकीर्त्तिका कालिदासके रघुवशका तथा भारविके किरातार्जुनीयका गहरा अध्ययन स्पष्ट काम कर रहा है; इसलिए उन्हींके शब्दोंमें उनका यह कथन कि 'स विजयतां रविकीर्त्ति कविताश्रित-कालिदासभारवि-कीर्ति.' सचमुचमें ठीक है।

श्लोक २२ में बताया गया है कि पुलकेशीका प्रताप इतना तेज था कि लाट, मालव और गूर्जर लोग अपने-आप ही उनकी शरण आते थे, बलपूर्वक नहीं।]

[इ० ए०, जिल्द ५, पृ० ६७-७१]

१०९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

—[१]—

जयत्यतिशयजिनैर्भासुरस्सुरवन्दितः।
श्रीमाञ्जिनपतिस्सृष्टेरादेः कर्त्ता दयोदयः॥

देहहिसरि (इह हि स्वस्ति)॥

चालुक्यपृथ्वीवल्लभकुलतिलकेषु बहुष्वतीतेषु **रणपराक्रमाङ्क**महाराजो भवत्तद्राजतनयः राजितनयो विवर्द्धितैश्वर्यश्चतुस्समुद्रान्तख्याततुरङ्गेभपदातिसेनासमूह. **एरेय्य**नामधेयः श्रीमान्॥

---

१ देखो प्रो० भाण्डारकरकी Early History of the Dekkan, 2nd ed , especially p. 51, और डॉ० फ्लीटकी Dynasties of the Kanarese Districts, 2nd ed. especially p 349 ff.

अपि च ॥

शासतीमा समुद्रान्ता वसुधा वसुधाधिपे ।
सत्याश्रयमहाराजे राजत्सत्यसमन्विते ॥

भुजगेन्द्रान्वयसेन्द्रावनीन्द्रसन्ततौ अनेकनृपसंत्तेमेश्वतीतेषु तत्कुल-गगनचन्द्रमा बहुसमरविजयलब्धपताकावभासितदिगन्तरालवलयः **विजयशक्ति**र्न्नाम नृपतिर्ब्बभूव [।।] तत्सूनुरुदिततरुणदिवाकरकरसम-प्रभः सौ (शौ)र्य्य-धैर्य्य-सत्त्व-गुणोपपन्नः सामन्तवृ(वृ)न्दमौलि-मालवलीटचरणः **कुन्दशक्ति**[1]र्न्नाम राजाभूत् तस्य प्रियतनयः ।। अद्वि-तीयपुरुषकारसम्पन्नः । धर्म्मार्थकामप्रधानः अनेकरणविजयवीरपताका-ग्रहणोद्धतकीर्त्तिः [।।] तेन **दुर्ग्गशक्ति**नामधेयेन **शङ्खजिनेन्द्र**चैत्यनित्य-पूजार्थं पुण्याभिवृद्धये च **पुलिगेरे**-नामनगरस्योत्तरपार्श्वे पञ्चाशन्नि-वर्त्तनपरिमाणक्षेत्रं दत्तम् ।। तस्य सीमा समाख्यायते [।] पूर्व्वतः **किन्न-रीक्षेत्रम्** । पावकदिशि **ज्येष्ठलिङ्ग**भूमिः । दक्षिणतः **घटिकाक्षेत्रम्** । नैर्ऋत्या दिशि **दं (? पं)-डीस (श)** श्रेष्ठिभूमिः । पश्चिमतः **रामे-श्वर**क्षेत्रम् वायव्या **होनेश्वर**क्षेत्रम् । उत्तरतः **सिन्देश्वर**क्षेत्र ई (ऐ) शान्या दिशि **भट्टारी**क्षेत्रम् । तद्दक्षिणतः पूर्व्वोक्त**किन्नरी**क्षेत्रम् ।।

देवस्व विष लोके न विष नं (²) विषमुच्यते ।
विषमेकाकिन हन्ति देवस्व पुत्र-पौत्रिकम् ।।

[यह लेख, जिसमे उस बडे शिलालेख (नं. १४९) का दूसरा भाग (पंक्तियाँ ५१-६१) निहित है, 'सेन्द्र' कुलका लेख है ।

१ यहाँ 'क' की जगह 'म' भी हो सकता है और तब 'मन्दशक्ति' पढा जायगा । २ यह 'न' अतिरिक्त है और भूलसे जुड गया है ।

इसका प्रारम्भ 'रणपराक्रमाङ्क' नामके एक चालुक्य राजा और उसके पुत्र एरेय्यके उल्लेखसे हुआ है। लेकिन ये दोनो नाम पश्चिमी या पूर्वी चालुक्योंमेंसे किसीकी भी वंशावलीमें अभीतक नहीं मिले हैं। रणपराक्रमाङ्क शायद 'रणराग'के लिये उल्लेखित हुआ है, जो जयसिंह प्रथमका पुत्र और पुलिकेशी प्रथमका पिता था। जयसिंह प्रथमका जो दक्षिणके इस वंशके प्रथम पुरुष हैं, वर्णन कभी कभी आता है।

इसके अनन्तर 'सत्याश्रय' नामके एक राजाका उल्लेख आता है। परन्तु उससे यह पता नहीं चलता कि इस उपाधि (सत्याश्रय) को धारण करनेवाले किस पश्चिमी चालुक्य राजासे मतलब है।

इसके बाद, सत्याश्रयके समकालवर्तीके तौरपर, 'दुर्गशक्ति' राजाका उल्लेख आता है। यह राजा 'भुजगेन्द्र' अर्थात् नागवंशके अन्वयसे सम्बन्ध रखनेवाले सेन्द्र राजाओंके वंशका था। यह विजयशक्तिके पुत्र कुन्दशक्तिका पुत्र था।

इसमें दुर्गशक्तिके द्वारा शङ्खजिनेन्द्र नामके चैत्यके लिये दिये गये भूमिदानका कथन है। यह भूमिदान पुलिगेरे नगरमें किया गया था।

लेखका काल नहीं दिया गया है। यह संभवत प्राचीनतर कालका मालूम पडता है, जो यहाँ सिर्फ पूर्वकालके लेखके निश्चय या सुरक्षाके लिये ही दुहराया गया है।]

[इ० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, न० ३८ (पंक्तियाँ ५१-६१)]

११०

[यह लेख श्रवण-बेल्गोलाका संस्कृत और कन्नडमें है। इसे 'जैन शिलालेख-संग्रह प्रथम भाग' में देखना चाहिये।]

[L. Rice, EC, II, sr-Bel ins no 24]

१११

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६०८=ई० सन् ६८७]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखितसंग्रहकी पहली जिल्दमें पृष्ठ २२ पर दिये गये ८७ पंक्तिवाले एक लेखका चौथा भाग है और पंक्ति ६९

वींसे शुरू होता है। उस समस्त लेखका सिर्फ कुछ भाग ही उस पुस्तकमे पाषाण-लेखपरसे लिया गया है, पूरा लेख नहीं। इसलिये उस लेखका यहाँ देना मुश्किल होनेसे सिर्फ उसकी विगत यहाँ दी जाती है।

उस विशाल लेखकी ६९ वीं पंक्तिसे एक दूसरा पश्चिमी चालुक्य शिलालेख शुरू हो जाता है। इस लेखकी ६९ से ८२ तककी पक्तियाँ यद्यपि अस्पष्ट है, फिर भी अति सुरक्षित हैं; उसके नीचेकी पाँच पक्तियोंका भी कुछ निशानोसे पता चल जाता है, यद्यपि अक्षर इतने घिसे हुए हैं कि पढनेमें नहीं आते। इसमे पो(पु)लिकेशीवल्लभसे लेकर विनयादित्य-सत्याश्रय तककी वंशावली है और मूलसङ्घ अन्वयकी देवगण शाखाके किसी आचार्यको, उसके द्वारा दिये गये, दानका उल्लेख है। यह दान ६०८ शक वर्षके बीतनेपर जब उसके राज्यका पाँचवाँ या सातवाँ वर्ष चालू था और जब उसकी विजयका कैम्प (विजयस्कन्धावार) रक्तपुर नगरमें लगा हुआ था, माघ महीनेकी पूर्णमासीको दिया गया था। यह काल ७७-७८ पक्तियोंमें यों दिया हुआ है—अष्टोत्तर-षट्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यपञ्चम (? सप्तम)-संवत्सरे श्री रक्तपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे माघमासे पौर्णमास्याम्। यहाँ वार (दिन) नहीं दिया हुआ है।]

[इ० ए० ७, पृ० ११२, नं० ३९, चतुर्थभाग]

११२

श्रवणबेलगोला (बिना कालका)-कन्नड।

(देखो "जैन शिलालेख संग्रह प्रथम भाग"।)

११३

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६५१=ई० सन् ७२९]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखित संग्रह (Elliot's Ms. Collection) की पहली जिल्दमें पृष्ठ २२ पर ८७ पक्तिके एक बड़े लेखमें दिया हुआ है। उसमेंसे पंक्ति २८ से शुरू होकर पंक्ति ५३ तक

पश्चिमी चालुक्योका शिलालेख है। इसमे पो (पु) लिकेशीवल्लभ, अर्थात् पुलिकेशी प्रथमसे लेकर विजयादित्य सत्याश्रय तककी वंशावली दी हुई है तथा यह भी उल्लेखित है कि अपने राज्यके चौतीसवें वर्षमें जब कि शक संवत्के ६५१ वर्ष व्यतीत हो चुके थे फाल्गुनकी पूर्णिमाके दिन, जब कि उसका विजय स्कन्धावार रक्तपुर नगरमे था, पुलिकर नगरकी दक्षिण सीमापर बसे हुए कर्दम गॉवका दान अपने पिताके पुरोहित उदयदेव पण्डितको, जिन्हें 'निरवद्यपण्डित' भी कहते थे, दिया। ये श्रीपूज्यपादके शिष्य थे तथा मूलसंघ अन्वयकी देवगण शाखाके थे। यह दान पुलिकर नगरमे शङ्ख-जिनेन्द्रके मन्दिरके हितार्थ दिया गया था। कालनिर्देश पंक्ति ४२–४४ में यो दिया हुआ है —एकपञ्चाशदुत्तरषट्छतेपु शकवर्षेष्वतीतेपु प्रवर्त्तमान-विजयराज्यसंवत्सरे चतुस्त्रिंशे वर्त्तमाने श्री-रक्तपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे फाल्गुनमासे पौर्ण्णमास्याम्। वार (दिन) इसमे नहीं दिया हुआ है।]

[इं० ए०, ७, पृ० ११२, नं० ३९ (द्वितीय भाग)]

११४

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६५६=७३४ ई०]

स्वस्ति [॥]

जयत्याविःकृतं विष्णोर्व्वाराह क्षोभिताण्णर्वं।
दक्षिणोन्नतदंष्ट्राग्रविश्रान्तभुवन वपुः ॥

श्रीमता सकलभुवनसंस्तूयमानमानव्यसगोत्राणा हारीति-पुत्राणा सप्तलोकमातृभिः सप्तमातृभिरभिवर्द्धिताना कार्त्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-कल्याणपरम्पराणा भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलाञ्छनेक्षणव-शीकृताशेषमहीभृता चालुक्यानां कुलमलङ्करिष्णोरश्वमेधावभृथस्नानप-वित्रीकृतगात्रस्य श्रीपोलिकेशीवल्लभमहाराजस्य – प्रियसूनुः श्रीकी-र्त्तिवर्म्मपृथ्वीवल्लभमहाराजस्तस्यात्मजस्य सत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहा-

राजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियतनयः (यस्य) प्रभावकुलिशदलितपाण्ड्य-**चोल-केरल-कदम्ब**प्रभृतिभूभृदुदग्रविभ्रमस्य नित्यावनत**काञ्ची**पतिमु-कुटचुम्बितपादाम्बुजस्य **विक्रमादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहा-राजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियसूनु (नो.) सकलोत्तरापथनाथमथनोपा-र्जितपालिध्वजादिसमस्तपारमैश्वर्यचिह्नस्य **विनयादित्यसत्याश्रय**श्रीपृ-थ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारकस्य प्रियात्मज. साहसरस-रसिकः पराङ्मुखीकृतशत्रुमण्डलस्सकलपारमैश्वर्यव्यक्तिहेतुपालिध्वजाद्युज्व (ज्व)लराज्यचिह्नो **विजयादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधि-'राज(जः) [।।] [तत्-]प्रियसूनोः प्रतिदिनप्रवर्द्धमानया(यौ)वनो (नस्य) रिपुमण्डलाक्रान्तिराज्याभ्युदयः (यस्य) कस्तूरीकिशोरविक्रमैकरसो (सस्य) **विक्रमादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वर-भट्टारकस्य विजयस्कन्धावारे **रक्तपुर**मधिवसति **षट्पञ्चाशदुत्तरषट्च्छ-तेषु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यसंवत्सरे द्वितीये वर्त्तमाने माघपौर्णमास्यां मूलसंघान्वयदेवगणो**दितः (ताय) परमतप(पः)श्रुतमूर्त्तिविशे(शो)क**रामदेवाचार्य्य**शिष्यो (ष्याय) विजितविपक्षवादि**जयदेवपण्डिता**न्तेवासी (सिने) समुपगतैकवादि-त्वादि**श्रीविजयदेवपण्डिताचार्य्याय** जिनपूजाभिवृद्धयर्त्थं वाहु-वलिश्रेष्ठिविज्ञापनेन **पुलिकर**नगरस्य **शङ्खतीर्त्थवसते**र्म्मण्डनमण्डित तस्य **धवलजिनालयस्य** जीर्णोद्धारण कृत्वा खण्डस्फुटितनवसंस्कार-वलिनिमित्तं दानशीलादिप्रवर्त्तनार्त्थं नगरादुत्तरस्या दिशि गव्यूतिप्रमाण-व्यवस्थित **कर्प्पटि**तटाकाद्दक्षिणस्या दिशि राजमानेन शतार्द्धनिवर्त्तन-प्रमाणक्षेत्र सर्व्ववाधापरिहारं दत्तम् [।।] तस्य सीमा समाख्यायते । पूर्व्वदिशि तत्साधितकिन्नरपाषाणाद्दक्षिणस्यामागाया धवलपाषाणपार्श्व-

शम्य· । पश्चिमस्या दिशि **श्वेतपाषाणा**देकशमी उत्तरस्या दिशि **आनीलपाषाणात्** प्राक्प्रकाशिततटाकात् पूर्व्वस्या दिशि **अरुणपाषाणात्** पूर्व्वोक्तव्यक्त**किन्नरपाषाण**संगता सीमा ॥

स्व दातु सुमहच्छक्य दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दानात्पालनाच्चेति (दान वा पालन चेति) दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
न विष विषमित्याहुः देवस्व विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्व पुत्र-पौत्रिकम् ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते कृमिः ॥

प्रथ्यताम् जिनशासनम् [॥]

[इ० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, नं० ३८ (पक्तियाँ ६१-८२)]

[यह लेख उस बडे लेख (न. ११९) का तीसरा व अन्तिम भाग (पक्तियाँ ६१-८२ तक) है। यह पश्चिमी चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीय-का लेख है। यह उसके राज्यके द्वितीय वर्षका है जब कि शक वर्ष ६५६ (७३४-५ ई०) व्यतीत हो चुका था, और फलत पूर्व किसी लेख (शिला-लेख या ताम्रपत्र) से यहाँ निश्चय या सुरक्षाके लिये दुहराया गया है। यह लेख उसकी छावनी 'रक्तपुर' से निकाला गया है। 'रक्तपुर' आज-कलका कौन-सा स्थान है, यह नहीं कहा जा सकता।

इसमें 'पुलिकर'—पूर्वके दो शिलालेखोका 'पुलिगेरे'—शहरकी 'शङ्ख-तीर्थवसति' तथा 'धवलजिनालय' नामके एक दूसरे मन्दिरकी सजावट तथा मरम्मतका उल्लेख है और कहा गया है कि 'जिन' की पूजाके प्रबन्धके लिये कुछ भूमिदान किया गया।

यह लेख अपने वशावली-परिचायक भागमे पश्चिमी चालुक्योके शिला-लेखोसे मिलता है। इसमे दो आगेकी पीढ़ियोका—विजयादित्य और विक्र-मादित्य द्वितीयका, जो विनयादित्यके क्रमश पुत्र और पौत्र हैं,—भी उल्लेख है।]

११५

पञ्चपाण्डवमलै—(आर्कटके निकट)-तामिल

—[?]—

१ नन्दिप्पोत्तरश[ं] कु अय् [म्] वदावदु नाग[ण]न्दि-
गुर [वइ]

२. [इरु] क पोन्जियय [क्] किय[ा]र् पडिम कोट्टुविट्टा [न्]

३. पु[ग]ळालैमंग[ल]त्तु मरुत्तुवर् मगन् नारण-

४. न् [।।]

अनुवाद—नन्दिप्पोत्तरशर्के ५ वें (वर्ष) में,—पुगळालैमङ्गलके मरुत्तुवरके पुत्र नारणन् (नारायण) ने नागणन्दि (नागनन्दि) गुरुकी मूर्तिके साथ-साथ पोन्जियक्कियार्की मूर्ति खुदवाई ।

[EI, IV, no 14, A]

११६

अनहिलवाड-पाटन—संस्कृत ।

(सवत् ८०२= ई० स० ७४५)

यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है ।

[J Burgess and H Cousens, Antiquity of North Gujerat (A SI, XXXII)]

११७

श्रवणबेलगोला (विना कालका)—संस्कृत ।

[देखो "जैन शिलालेख-सग्रह प्रथम भाग" ।]

११८

नन्दी (गोपीनाथ पर्वत)—सस्कृत ।

विना कालनिर्देशका [=संभवत ७५० ई० (लु० राइस)

[नन्दीमे, गोपीनाथ पहाडीके ऊपर गोपालस्वामी मन्दिरके पासकी चट्टानपर]

स्वस्ति श्रीमत् जित भगवता जिनवर-वृषभेण वृषभेण पुरा कलि-अवसर्पिण्या द्वापरे युगे लोक-स्थितिरक्षार्त्थं काङ्क्षित-मनुष्य-जन्मना पुरुषोत्तमेन सूर्य्य-वंश-व्योम-सूर्य्येण महारथेन दाशरथिना **राम-स्वामिना** प्रतिष्ठापिताय भगवतोर्हत. परमेष्ठिनः सर्व्वज्ञस्य चैत्य-भवनाय पश्चात् पाण्डवजनन्या **को(कु)न्तिदेव्या** पुनर्न्नवीकृत-सत्काराय भूमिदेव्या-स्तिलकायमानाय स्वर्गापवर्ग-पदयोस्सोपान-पदवीभूताय धराधर-धरणेन्द्रस्य फणा-मणि-लीलानुकारिणे धराधरवराय जिनेन्द्र-चैत्य-सान्निध्यात् पावनाय परम-तीर्त्थाय तपश्चरण-परायण-महर्षि-गणाध्यासित-कन्दराय **श्रीकुन्दाख्याय** (यहाँ बन्द हो जाता है)

[वृषभ-देवको नमस्कार करनेके बाद,—

प्राचीन समयमें, कलि-अवसर्प्पिणीके द्वापर-युगमें, सूर्यवंशके गगनमे सूर्यके समान, दशरथके पुत्र महारथ राम-स्वामी (रामचन्द्रजी)के द्वारा अर्हन्त परमेष्ठीका यह चैत्य-भवन प्रतिष्ठापित किया गया। बादमें, पाण्डवोंकी माता कुन्तीने इसे फिरसे नया बनवा दिया।

भूमिदेवीको तिलकके समान, स्वर्ग और अपवर्ग दोनोंके लिये सीढ़ी, सब पर्वतोंमें उत्तम, जिनेन्द्र-चैत्य (बिम्ब)के सान्निध्यसे पवित्रीकृत, परमतीर्थ, जिसमें जगह जगह तपश्चरण-परायण महर्षिगणोंके लिये कन्दराएँ (गुफायें) बनी हुई हैं, ऐसा 'श्रीकुन्द' नाम पर्वत (यहाँ लेख खतम हो जाता है।[1])

[EC, X, Chik-ballapur tl, no 29]

११९

बेलवत्ते—कन्नड़।

बिना काल–निर्देशका (संभवत लगभग ७५० ई०)

[बेलवत्ते–मैसूर तालुकेमें, बसवेश्वर मन्दिरके पश्चिमकी ओर]

नेरेयर्दि एर्देनु मुने········ळियु प्रभिन्न-वाग्वि विळोरु गुर्रि····

---

१ प्रारम्भके शब्द 'स्वस्ति' को यहाँ अन्तमे लगा देनेसे यह लेख सभाव्य-रूपसे पूर्ण समझा जा सकता है, क्योंकि 'स्वस्ति'के योगमे चतुर्थी विभक्ति होती है, जो यहाँ है।

दु एल्दु दवे तम्म क्षेमकिरदळ्ळि-मेच्चिर ताळ्वदु परत्रे यपुदेवदेरू महा-प्रभु-**गोवपय्यन्** इन्त् इळ्दपु समाधियोळे मुडिपि नाळ्दिदनितमरेन्द्र-भोगम ॥ पदेदोम् **श्री-पुरुपय्यल्** आम्मु-मोदलोळ् कल्नाडन् अन्दो वळेक् एदेयोळ् अक्कुडु भूतिमृतुगानो दोत धाण धीक्षे सळे पडेदे‥· पितृ-कळत्र-मित्र-जनभ काव्यान्य ताव्दु अप्पोडी-नुडियल् वेल्कुमे पेम्पन् ओप्प गुणते तोळमिकिळ्द गोपय्यनम् ॥

[महाप्रभु गोवपय्यको श्रीपुरुषकी तरफसे भूमि-दान मिला था और वे (गो प.) समाधिमरणपूर्वक मरे थे ।]

[EC, III, Mysore tl, no 6]

१२०

देवलापुर—कन्नड ।

विना कालनिर्देशका (सभवतः लगभग ७५० ई०)

[देवलापुर (कृष्णहळ्ळि तालुका), मारीगुडीके पूर्वमे]

स्वस्ति **श्रीपुरुष**-महा ‥‥पृथुवी-राज्यकेये **अरट्टि** ‥ रम्मगन्दिर् **सिंगं** दीक्षे बीळादु **अरट्टि-तीरु कुडलूरद** गोट्टे **मडिओडे**-यम्बर् आळ्विकय

(पृष्ठभागपर)

नोकज-ओडे आगदीकड · · कोट्ट नेल तेनेन्वक काळ्वेर्कु साक्षी कुडळ पोड्डुलरु एळ्मडियरु एळिरियरु मद्दुगरु कागव्वरु साक्षि आग कोट्टदु आळ् आळ् किडिगिदोन वारणासिया शासिर-कविले शासिर-पार्वर् कोन्द कोले आक्का कोडिगिदोतु ‥‥कडुवेडिळोनुडि तेन्ने‥· ळिद् स्वचोतु · अरट्टिग तळर कुडलूर् आव्वत्ति

[जिस समय इस पृथ्वीपर श्री-पुरुष महाराज राज्य कर रहे थे,—अरट्टि······के पुत्र सिंगम् के (जिन) दीक्षा लेनेके बाद, (उसकी मा) अरट्टितिने कुडलूर् किलेके मडि-ओडेके द्वारा शासित प्रदेशमे भूमिदान किया।]

[EC, III, Mysore tl, no 25]

१२१

देवरहल्लि—संस्कृत तथा कन्नड।

शक सं० ६९८=७७६ ई०

[देवरहल्लि (देवलापुर प्रदेश)में, पटेल कृष्णरयके ताम्रपत्रोंपर]

(Ib) स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्नवेयकुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितः काण्वायन-सगोत्र. श्रीमत्**कोङ्गणिवर्म्मधर्म्ममहाधिराजः** तस्य पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनयविहितवृत्तिः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चननिकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलो **दत्तकसूत्रवृत्तेः** प्रणेता श्रीमान् **माधवमहाधिराजः** तत्पुत्रः पितृपैतामहगुणयुक्तोऽनेकचातुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशः श्रीमद्**हरिवर्म्ममहाधिराजः** तस्य पुत्रो द्विजगुरुदेवतापूजनपरो (IIa) नारायणचरणानुध्यातः श्रीमान् **विष्णुगोपमहाधिराजः** तत्पुत्रः त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमाङ्गः स्वभुजबलपराक्रमक्रयक्रीतराज्यः कलियुगबलपङ्कावसन्नधर्म्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धः श्रीमान् **माधवमहाधिराजः** तत्पुत्रः श्रीमत्कदम्बकुलगगनगभस्तिमालिनः **कृष्णवर्म्ममहाधिराजस्य** प्रियभागिनेयो विद्याविनयातिशयपरिपूरितान्तरात्मा निरवग्रहप्रधानशौर्यो विद्वस्तु [?] (विद्वत्सु) प्रथमगण्यः श्रीमान्

कोङ्गणिमहाधिराजः अविनीतनामा तत्पुत्रो विजृम्भमाणशक्तित्रयः **अन्दरि-आलत्तूर्-प्पोरुळरे-पेह्ननगरा**द्यनेकसमरमुखमखहुतप्रहृतशूर-पुरुषपशूपहारविघसविहस्तीकृतकृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयपञ्चदश-सर्ग- (IIb) टीकाकारो **दुर्व्विनीत**नामधेयः तस्य पुत्रो दुर्द्दा-न्तविमर्द्दविमृदितविश्वम्भराधिपमौलिमालामकरन्दपुञ्जपिञ्जरीक्रियमाणचरण-युगलनलिनो **मुष्कर**नामधेयः तस्य पुत्रश्चतुर्द्दशविद्यास्थानाधिगत-विमलमतिः विशेषतोऽनवशेषस्य नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो रिपुति-मिरनिकरनिराकरणोदयभास्करः **श्रीविक्रम**प्रथितनामधेयः तस्य पुत्रः अनेकसमरसम्पादितविजृम्भितद्विरदरदनकुलिशाघात-व्रणसरूढ़भास्वद्वि-जयलक्षणलक्षीकृतविशालवक्षस्थल, समधिगतसकलशास्त्रार्थतत्त्वस्समा-राधितत्रिवर्गो निरवद्यचरितर् प्रतिदिनमभिवर्द्धमानप्रभावो **भूविक्रम**-नामधेयः

अपि च—

नानाहेतिप्रहारप्रविघटितभटोरष्कवाटोत्थितास्रग्-
धारास्वाद-प्र(IIIa) मत्तद्विपशतचरणक्षोदसम्मर्द्दभीमे ।
सग्रामे **पल्लवेन्द्रं** नरपतिमजयद्यो **विळन्दा**-भिधाने
राज-श्रीवल्लभाख्यस्समरशतजयावाप्तलक्ष्मीविलासः ॥

तस्यानुजो नतनरेन्द्रकिरीटकोटि-
रत्नार्कदीधितिविराजितपादपद्मः ।
लक्ष्म्या स्वयम्वृतपतिर्**न्नवकाम**नामा
शिष्टप्रियोऽरिगणदारणगीतकीर्त्तिः ॥

तस्य **कोङ्गणिमहाराजस्य शिवमारा**परनामधेयस्य पौत्रः सम-वनतसमस्तसामन्तमुकुटतटघटितबहलरत्नविलसदमरधनुष्खण्डमण्डितच-

रणनखमण्डलो नारायण[चरण]निहितभक्तिः शूरपुरुषतुरगनरवारणघटार्सं-घट्टदारुणसमरशिरसि निहितात्मकोपो भीमकोपः प्रकटरतिसमयसमनु-वर्त्तनचतुरयुवतिजनलोकधूर्त्तोऽलोकधूर्त्तः सुदुर्द्धरानेकयुद्धमूर्धलब्धविजय-सम्पद हितगजघ (IIIb) टाकेसरी राजकेसरी । अपि च ।

यो गङ्गान्वयनिर्म्मलाम्बरतलव्याभासनप्रोल्लसन-
मार्त्तण्डोऽरिभयङ्करः शुभकरस्सन्मार्गरक्षाकरः ।
सौराज्य समुपेत्य राज्यसमिनौ राजन् गुणैरुत्तमै-
राज-श्रीपुरुषश्चिरं विजयते राजन्य-चूडामणिः ॥
कामो रामासु चापे दशरथतनयो विक्रमे जामदग्न्यः
प्राज्यैश्वर्ये बलारिर्व्विहुमहसि रविस्स्व-प्रभुत्वे धनेशः ।
भूयो विख्यातशक्तिस्स्फुटनरमखिल प्राणभाज विधाता
धात्रा सृष्टः प्रजाना पित(पति)रिति कवयो य प्रशसन्ति नित्य ॥

तेन प्रतिदिनप्रवृत्तमहादानजनितपुण्याहघोषमुखरितमन्दिरोदरेण **श्रीपुरुष**प्रथमनामधेयेन **पृथुवीकोङ्गणिमहाराजेन अष्टानवत्युत्तरे-[षु] षट्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेष्वात्मनः प्रवर्द्धमानविजयैश्वर्य्ये संवत्सरे पञ्चाशत्तमे प्रवर्त्तमाने मान्यपुर**मधिव-(IVa)सति विजयस्कन्धावारे श्रीमूल-मूलगणाभिनन्दित**नन्दिसङ्घान्वये एरेगित्तू-**र्न्नाम्नि गणे **पुलिकल्गच्छे** स्वच्छतरगुणकिर[ण]प्रततिप्रह्लादितसकललोकः चन्द्र इवापरः **चन्द्रनन्दी**नाम गुरुरासीत् तस्य शिष्यस्समस्तविबुधलो-कपरिरक्षणक्षमात्मशक्तिः परमेश्वरलालनीयमहिमा कुमारवद्वितीयः **कुमार-ण(न)न्दी** नाम मुनिपतिरभवत् तस्यान्तेवासी समधिगतसकलतत्त्वार्थ-समर्थितबुधसार्थसम्पत्सम्पादितकीर्त्तिः **कीर्त्त(र्त्ति)नन्द्याचार्यो** नाम महामुनिस्समजनि तस्य प्रियशिष्यः शिष्यजनकमलाकरप्रबोधनकः

मिथ्याज्ञानसन्ततसन्तमससन्तानान्तकसद्धर्म्मव्योमात्रभासनभास्करः **विमलचन्द्राचार्य**स्ससुदपादि तस्य (IV b) महर्षेर्द्धम्मोपदेशनया श्रीमद्बाणकुलकलः सर्व्वतपमहानन्दीप्रवाहः महादण्डमण्डलाग्रखण्डितारिमण्डलद्रुमपण्डो दुण्डुप्रथमनामधेयो **नीर्गुन्द**युवराजो जज्ञे तस्य प्रियात्मजः आत्मजनितनयविशेषनिःशेषीकृतरिपुलोकः लोकहितमधुरमनोहरचरितः चरितार्थत्रिकरणप्रवृत्तिः **परमगूळ**प्रथमनामधेयश्री**पृथुवीनीर्गुन्दराजो**ऽजायत पल्लवाधिराजप्रियात्मजाया सगरकुलतिलकात् **मरुवर्म्मणो** जाता **कुन्दाच्चि**नामधेया भर्तृभवन आबभूव भार्य्या तया सततप्रवर्त्तितधर्म्मकार्य्यया निर्म्मिताय **श्रीपुरो**त्तरदिशमलङ्कुर्व्वते **लोकतिलक**नाम्न **जिनभवनाय** खण्डस्फुटितनवसंस्कारदेवपूजादानधर्म्मप्रवर्त्तनार्थं तस्यैव पृ(Va)**थिवीनीर्गुन्दराज**स्य विज्ञापनया महाराजाधिराजपरमेश्वरश्री**जसहितदेवेन** नीर्गुन्दविषयान्तर्पाति **पोन्नळ्ळि**नामग्रामस्सर्व्वपरिहारोपेतो दत्तः तस्य सीमान्तराणि पूर्व्वस्या दिशि नोलिबेळदा बेळगल्-मोरीदि पूर्व्वदक्षिणस्या दिशि पण्यङ्गेरी दक्षिणस्या दिशि बेळगल्लिगेरेया ओळगेरेया पल्लदा कूडल् दक्षिणपश्चिमायान्दिशि जैदरा केय्या बेळगल्-मोरॆडु पश्चिमायान्दिशि पोङ्केवि तालुवायराकेरी पश्चिमोत्तरस्या दिशि पुणुसेया गोट्टेगाला कल्कुप्पे उत्तरस्या दिशि सामगेरेया पोल्लदा पेर्म्मुरिक्कु उत्तरपूर्व्वस्या दिशि कळम्बेत्ति-गट्टु इमान्यन्यानि क्षेत्रान्तराणि दत्तानि दुण्डुसमुद्रदा वयल्लुळ् किरुदारीमेगे **पदिर्कण्डुगं** मण्ण **पळेया एरेनल्लूरा** ऊर्प्पाळु ओर्कण्डुग **श्रीवुरदा दु** (Vb) **ण्डुगामुण्डरा** तोण्टदा पडुवायोन्दुतोण्ट श्रीवुरदा वयलुळ् कर्म्मगॆट्टिनल्लि इर्कण्डुग कळनि पेर्गेरेया केळगे आरुगण्डुगमेरे पुलिगेरेया कोयिलगोडा एडे इर्प्पत्तुगण्डुग व्वेडे आद्रुवु श्रीवुरदा बडगण पडुवण कोणुळ्ळण् **देवङ्गेरि** मदमने ओन्द

मूवत्ता-ओन्दु मनेय मनेनाणमस्य दानसाक्षिणः अष्टादश प्रकृतयः ॥ (VIa) अस्य दानस्य साक्षिणः षण्णवतिसहस्रविषयप्रकृतयः योऽस्यापहर्त्ता लोभात् मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्म्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो भवति यो रक्षति स पुण्यभाग्भवति अपि चात्र मनु-गीताः श्लोकाः

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते कृमिः ॥
स्व दातुं सुमहच्छक्य दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दान वा पालन वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥
देवस्व तु विष घोरं न विष विषमुच्यते ।
विषमेकाकिन हन्ति देवस्व पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्व्वकलाधारभूतचित्रकलाभिज्ञेन **विश्वकर्म्माचार्य्येणेद** शासन लिखित चतुष्कण्डुकव्रीहिबीजावापमात्रं द्विकण्डुककङ्कक्षेत्र तदपि ब्रह्मदेयमिव रक्षणीयम् ॥

[इस लेखमें सर्वप्रथम गङ्गनरेशोंकी राजपरम्परा बताई गई है। वह निम्न भाँति थी.—

१ काण्वायनसगोत्रीय कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज ।
इनके पुत्र—
२ माधव-महाधिराज, ये दत्तकसूत्र-वृत्ति (टीका)के प्रणेता थे ।
इनके पुत्र—
३ हरिवर्म्म-महाधिराज ।
इनके पुत्र—
४ विष्णुगोप-महाधिराज ।
इनके पुत्र—

हृत-बलावलो-तप. ..यश्च अमृतमयो भृत्याना सुखमयो मित्राणा सुधामयो रामाणामुत्साहमयः प्रजाना विनयमयो गुरूणा नयमूल्ल (६ अ) लद्-वृत्तीना अग्रणी रसिकाना स्रष्टा काव्य-रचनाना उपदेष्टा नयाना द्रष्टा स्वामि-कार्य्याणा विद्वेष्टा कृत-दोषाणा यष्टा महा-मखाना परिमार्ष्टा पापाना प्रष्टा निर्म्माण-हेतूना परिकृष्टा श्रितागमाम् ।

अपि च ।

उदन्वानिव गाम्भीर्य्ये विवस्वानिव तेजसि ।
शशलक्ष्मेव लावण्ये नभस्वानिव यो बले ॥
मनोभूरिव सौरूप्ये मघवानिव सम्पदि ।
सुरमन्त्रीव शास्त्रार्थे उशनेव च यो नये ॥
ग्रामे पुरे नदी-तीरे गिरौ द्वीपे सरोऽन्तिके ।
प्रावर्त्तयत् स्व-कीर्त्याभा योऽनेका वसतिं प्रभुः ॥
स **मान्यनगरे** श्रीमान् **श्रीविजयो**ऽकार [य] च्छुभम् ।
जिनेन्द्र-भवन तुङ्ग निर्म्मल स्व-महस्-समम् ॥

तस्य च प्रसाधिताशेष-सामन्त-चन्द्रस्य श्री-**मारसिंह**स्यानुज्ञया **श्रीविजयो** महानुभावः **किपु-बेक्कूर**-ग्राममादाय **मान्यपुर**-विनिर्म्मिताय भगवदर्हदायतनाय अदादिति तस्य च ग्रामस्य (यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है) ।

अपि च ।

आसीद(त्)-**तोरणाचार्य्यः** कोण्डकुन्दान्वयोद्भवः
स तै [द] द्विषये धीमान् **शाल्मली**ग्राममाश्रित. ॥
निराकृततमोऽरातिः स्थापयन् सत्पथे जनान् ।
स्वतेजोद्द्योतित-क्षोणिः चण्डार्च्चिरिव यो बभौ ॥

तस्याभूत् **पुष्पनन्दी**ति शिष्यो विद्वान् गणाग्रणीः ।
तच्छिष्यश्च **प्रभाचन्द्रः** तस्येय वसति. कृता ॥

(३ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है)

इदप **शक-वर्षं एळनूरा पत्तोम्भत्तु वर्षमुं मूरु तिङ्गळुमाषाढ-शुक्ल-पक्षदा पञ्चमियुमुत्तराभाद्रपतेमुं सोमवारमुं** शासन निर्मित । अस्य दानस्य साक्षिणः **पण्णवति-सहस्र**-विषय-प्रकृतय· योऽस्यापहर्त्ता लोभान्मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो भवति यो रक्षति स पुण्यवान् भवति

अपि चात्र मनु-गीताः श्लोका.

स्वदत्तां पर-दत्ता वा यो हरेत वसुंधराम् ।
(७ अ) षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठा [या जा] यते कृमि. ।
स्व दातु सुमहच्छक्य दु खमन्यस्य पालनम् ।
दान वा पालन वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि ।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥
ब्रह्मस्व तु विष घोर न विप विपमुच्यते ।
विषमेकाकिन हन्ति देव-स्व पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्व्व-कलाधारभूत-चित्र-कलाभिज्ञेय-**विश्वकर्म्माचार्य्येणेद** शासन लिखित चतुष्कण्डुक-व्रीहि-वीजावाप-क्षेत्रं द्वि-कण्डुक-कङ्गु-क्षेत्र तदपि देव-भोगमिति रक्षणीयम् ॥

[जाह्नवी (गङ्ग)-कुलके स्वच्छ आकाशमें चमकते हुए सूर्य; काण्वा-यन-सगोत्रके

(१) श्रीमत्-कोङ्गणिवर्म-धर्म-महाधिराज थे ।
(२) उनके पुत्र श्रीमान् माधव-महाधिराज थे ।

(३) उनके पुत्र श्रीमद् हरिवर्म-महाधिराज थे।

(४) ,, ,, श्रीमान् विष्णुगोप-महाधिराज थे।

(५) ,, ,, ,, माधव-महाधिराज थे।

(६) उनके पुत्र, जो कदम्ब-कुलवंशीय कृष्णवर्म्म-महाधिराजकी प्रिय बहिनके पुत्र थे, अविनीत नामके श्रीमान् कोङ्गणि महाधिराज थे।

(७) उनके पुत्र दुर्विनीत थे। इन्होने अन्दरि, आलत्तूर्, पोरुलरे, पेळ्नगर और दूसरे स्थानोके युद्धोको जीता था। इन्होने किरातार्ज्जुनीय के १५ सर्गोंपर टीका की थी।

(८) इनके पुत्र मुष्कर थे।

(९) उनके पुत्र श्रीविक्रम थे, ये चौदहो विद्याओंसे पारङ्गत थे।

(१०) उनके पुत्र भूविक्रम थे। इन्होने विळन्दकी भयानक लडाईमें राजा पल्लवेन्द्रको जीता था, और सौ लड़ाइयोंसे विजय लाभ करनेसे इनको 'राजश्रीवल्लभ' भी कहते थे।

(११) उनका छोटा भाई नव-काम था।

(१२) शिवमार-कोङ्गणि महाराजका नाती श्रीपुरुष था, उन्हें पृथिवी-कोङ्गणि महाधिराज भी कहते थे।

(१३) उनके पुत्र, प्रसिद्ध गगवंशके स्वच्छ आकाशके सूर्य, कोङ्गणि-महाराजाधिराज परमेश्वर श्री-शिवमार-देव थे। इनकी बहुत-सी प्रशसाका वर्णन है।

(१४) उनके पुत्र, मारसिंह थे।

जब वे अखण्ड गङ्ग-मण्डलपर राज्य कर रहे थे,-उनका एक श्रीविजय नामका सेनापति था। उसकी प्रशंसा। उसने मान्य-नगरमें एक शुभ, विशाल जिनमन्दिर बनवाया। उसे श्रीमारसिहसे किपु-वेङ्कूरु गाँव मिला था, वह उसने इसी अर्हत्-मन्दिरको भेंट कर दिया। इस गाँवकी सीमायें।

शाल्मली गाँवमें रहनेवाले, कोण्डकुन्दान्वयके तोरणाचार्य्य थे। उनके शिष्य पद्मनन्दि थे। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र थे, जिन्होने अपना आवास यहीं बना लिया था। जडियके तालाबोकी नीचेकी जो जमीनें उनको दी गई थीं उनकी विगत। यह शासन (लेख) शक वर्ष ७१९ के ३ महीने बाद, आषाढ़ शुक्ला पञ्चमी, उत्तरभाद्रपद, सोमवारको लिकला था।

इस दानके साक्षी—९६००० के विद्यमान अफसर (अधिकारी गण)। वे ही आपात्मक श्लोक।

विश्वकर्म्माचार्य्यने इस शासनको लिखा था। प्रभाचन्द्र देवको दी गई भूमिकी विगत।]

[EC, IX, Nelamangala, tl, n° 60]

१२३

मन्ने—संस्कृत।

शक ७२४=८०२ ई०

[मन्नेमें, शानभोग नरहरियप्पके अधिकारके ताम्रपत्रोंपर]

(१ ब) स वोऽव्याद् वेधसा धाम यन्नाभि-कमल कृतम्।
हरश्च यस्य कान्तेन्दु-कलया कमलङ्कृतम् ॥
भूयोऽभवद् बृहदुरुस्थल-राजमान-
श्री-कौस्तुभायत-करैरुपगूढ-कण्ठः।
सत्यान्वितो विपुल-बाहु-विनिर्जितारि-
चक्रोऽप्यकृष्ण-चरितो भुवि **कृष्ण-राजः** ॥
पक्ष-च्छेद-भयाश्रिताखिळ-महा-भूभृत्-कुल-भ्राजितात्
दुर्ल्लङ्घ्यादपरैरनेक-विपुल-भ्राजिष्णु-रत्नान्वितात्।
यश्चालुक्यकुलादनून-विबुधा[...]श्रया [द्] वारिधेः
लक्ष्मीं मन्दरवत् स-लीलमचिरादाकृष्टवान् **वल्लभः** ॥
तस्याभूत् तनयः प्रता [प]-विसरैराक्रान्त-दिङ्-मण्डलश्
चण्डांशोरसदृशोऽप्य-चण्ड-करतःप्रह्लादित-क्ष्माधरो।
धोरो धैर्य्य-धनो विपक्ष-वनिता-वक्त्राम्बुज-श्री-हरो
हारीकृत्य यशो यदीयमनिशं दिङ्-नायिकाभिर्धृतम् ॥

ज्येष्ठोल्लवन-जातयाप्यमलया लक्ष्म्या समेतोऽपि सन्
योऽभून्निर्म्मल-मण्डल-स्थिति-युतो दोपाकरो न क्वचित् ।
कर्णाधः-कृत-दान-सन्तति- (२ अ) भृतो यस्यान्य-दानाधिकम्
दानं वीक्ष्य सु-लज्जिता इव दिशा प्रान्ते स्थिता दिग्-गजाः ॥
अन्यैर्न्न जातु विजित गुरु-शक्ति-सार
आक्रान्त-भूतलमनन्य-समान-मानम् ।
येनेह वद्धमवलोक्य चिराय **गङ्गान्**
दूरे स्व-निग्रह-भियेव कलिः प्रयातः ॥
एकत्रात्म-वलेन वारिनिधिनाप्यन्यत्र रुध्वा धनान्
निष्कृष्टासि-भटोद्धतेन विहरद्-ग्राहातिभीमेन च ।
मातङ्गान् मद-वारिनिर्झर-मुच. प्राप्यानतात् **पल्लवात्**
तच्चित्र मद-लेशमप्यनुदिन यस्स्पृष्टवान् न क्वचित् ॥
हेला-स्वीकृत-**गौड**-राज्य-कमलान् चान्तःप्रविश्याचिराद्
उन्मार्गे मरु-मध्यम-प्रतिवलैर्यो **वत्सराजं** वलैः ।
गौडीय शरदिन्दु-पाद-धवल-च्छत्र-द्वय केवलम्
तस्मादाहृत-तद्-यशोऽपि ककुभा प्रान्ते स्थित तत्-क्षणात् ॥
लब्ध-प्रतिष्ठमचिराय कलिं सुदूरम्
उत्सार्य्य शुद्ध-चरितैर्धरणी-तलस्य ।
कृत्वा पुनः कृत-युग-श्रियमप्यशेपम्
चित्र कथ **निरुपमः** कलि-वल्लभोऽभूत् ॥
प्राभू-(२ ब)द् धर्म-परात् ततो निरुपमादिन्दुर्य्यथा वारिधेः
शुद्धात्मा परमेश्वरोन्नत-शिरस्-ससक्त-पादस्तया ।
पद्मानन्दकर. प्रताप-सहितो नित्योदयस्सोन्नतेः
पूर्व्वाद्रेरिव भानुमानभिमतो **गोविन्दराजः** सताम् ॥

यस्मिन् सर्व्व-गुणाश्रये क्षितिपतौ श्री-राष्ट्रकूटान्वयो
जाते यादव-वंशवन्मधुरिपावासीद् अलङ्घ्य· परै· ।
दृष्टा सावधयः कृतास्तु-सदृशाः दानेन येनोद्धृता.
मुक्ताहार-विभूषिता· स्फुटमिति प्रत्यर्थिनोऽप्यर्थिन. ॥
यस्याकारमनानुप त्रिभुवन-व्यापत्ति-रक्षोचितम्
कृष्णस्येव निरीक्ष्य यच्छति पद यद्याधिपत्य भुव. ।
आस्ता तात तवेयमप्रतिहता दत्ता त्वया कण्ठिका
किन्त्वाज्ञेव मया धृतेति पितर युक्त स तत्राभ्यधात् ॥
तस्मिन् स्वर्ग-विभूषणाय जनने याते यशश्शेषताम्
एकीभूय समुद्यतान् वसुमती-संहारमाधित्सया ।
वि-च्छायान् सहसा व्यधत्त नृपतीनेकोऽपि यो द्वादश
ख्यातानप्यधिक-प्रताप-विसरैस्संवर्त्त (३ अ) कोल्कानिव ॥
येनात्यन्त-दयालुनोग्र-निगल-क्लेशादपास्याननम्
स्व देश गमिनोऽपि दर्प्प-विसरद् य. प्रा [ ]कूल्ये स्थितः ।
लीला-भ्रू-कुटिले ललाट-फलके यावच्च नालक्ष्यते
विक्षेपेण विजित्य तावदचिरादावद्ध-गङ्गः पुन. ॥
सन्धायासि शिलीमुखान् स्व-समयात् वाणासनस्योपरि
प्राप्त वर्द्धित-बन्धु-जीव-विभव पद्माभिवृद्ध्यान्वितम् ।
सर्व्वं क्षेत्रमुदीक्ष्य य शरद्-ऋतु पर्ज्जन्यवद् गूर्ज्जरो
नष्ट क्वापि भयात् तथापि समय स्वप्नेऽप्यपश्यन् ···॥
यत्पादानति-मात्र क-शरणानालोक्य लक्ष्मी-प्रिया
दूरान् मालव-नायको नय-परो यत्रानिवद्धाञ्जलि ।
यो विद्वान् वलिना सहाल्प-बलवान् स्पर्द्धां न धत्ते पराम्
नीतेस्सूतिरसौ यदात्म-परयोराधिक्य-सम्वेदनम् ॥

विन्ध्याद्रेः कटके निविष्ट-कटकः श्रुत्वा चरैर्य्यन्निजैः
स्व देश समुपागतः ध्रुवमिव ज्ञात्वा धिया प्रेरितः ।
माराशर्व्व-महीपतिर्भृतमगादप्राप्त-पूर्व्वां (३ ब) परैर्
व्यस्येच्छामनुकूल[....]धनैः पाद-प्रणामैरपि ॥
नीत्वा श्रीभवने घनाघन-घन-व्याप्ता परं प्रावृषम्
तस्मादागतवान् सम निज-बलैरा-तुङ्गभद्रा-तटम् ।
तत्रस्थः स्व-करागत प्रकृतिमिर्न्निश्शेषमाकृष्टवान्
विक्षेपैरपि चित्रमानत-रिपुर् जग्राह त **पल्लवात्** ॥
लेखाहार-मुखोदितार्द्ध-वचसा यत्रा.... **वेङ्गीश्वरो**
नित्यं किङ्करवद् व्यधादविरत 'र्म्म स्वमात्मेच्छया ।
बाह्यालि-वृत्तिरस्य येन रचिता व्योमावलग्ना रुचम्
चित्र मौक्तिक-मालिकामिव धृताम्मूर्द्ध् [न्] इ स्व-तारा-गणैः ॥
सन्त्रासात् पर-चक्र-राजकमगात् तच्छुद्ध-सेवा-विधि-
व्याबद्धाञ्जलि-शोभितेन शरण मूर्ध्ना यदङ्घ्रि-द्वयम् ।
यधादत्त परार्द्ध्य-भूपण-गणैर्न्नालङ्कृत तत् तथा
मा भैश्विरिति सत्य-पालित-यशस्-स्थित्या यथा तद्गिरा ॥
तेनेदमनिल-विद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसारम् ।
क्षिति-दानमपरपुण्य प्रवर्त्तित देव-भोगाय ॥

स (४ अ) च परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्रीमद्-**धारा-वर्षदेव**-पादानुध्यात-परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-पृथिवी-वल्लभ प्रभूतवर्ष-श्रीमत्-**गोविन्दराजदेवः** ।

भ्राताभूत् तस्य शक्ति-त्रय-नमित-भुवः **शौचकम्भाभिधानो**
ज्येष्ठस्त्यागाभिमान-प्रभृति-गुण-गणाधः-कृतादि-क्षितीशः ।
राजा राजारि-लोकास्थिर-तिमिर-घटा-पाटने शुद्ध-वृत्तः
स श्रीमान् दिक्षु कीर्त्तिश्शशिविशद-रुचिस्स्थापिता येन भूयः ॥

तेन शौच-कम्भ-देवेन **रणावलोका**पर-नाम्ना राजाधिराज-परमेश्वर-श्री**प्रभूतवर्षा**नुज्ञानुमतेन

कोण्डकुन्दान्वयोदारो **गणो**ऽभूत् भुवन-स्तुत ।
तदैदत्-विषय-विख्यात **शाल्मली**-ग्राममावसन् ॥
आसीत् [....]ता(तो)रणाचार्य्यस्तप.-फल-परिग्रहः ।
तत्रोपशम-सम्भूत-भावनापास्तकल्मषः ॥
पण्डित. **पुष्पणन्दी**ति बभूव भुवि विश्रुत. ।
अन्तेवासी मुनेस्तस्य स-कलश्चन्द्रमा इव ॥
प्रतिदिवस-भवद्-वृद्धि-निरस्त-दोषो व्यपेत-हृदय-मल· ।
परिभूत-चन्द्र-बिम्बस् तच्छिष्योऽभूत् **प्रभाचन्द्रः** ॥

(४ ब) तस्य धर्म्मोपदेश-परितुष्ट-हृदयतया च सत्येन धर्म्म-तनयः स्फुरत्प्रतापेन पद्मिनी-बन्धु दानेन सुर-द्विरद जयतितरा यश्श्रियो भर्त्ता

विविशुरुग्गुणा रिपूणाम् ।
हृदयान्यपि यस्य सत्य-शौर्य्याद्या. ॥
तेषामुरस्थल-स्थित-
कमलामाक्रष्टुमि [व] रम्यम् ॥

तस्य विष्णोरिव बलि-प्रताप-निर्व्वापणोद्यत-पराक्रमस्य पराक्रम-बलो-कस्य प्रताप-निरन्तरतयाक्रान्त ( ) समस्त-सुभट-लोकस्य केसरिण इव विक्रमैकर [स] स्य **श्री-वप्पय्य**-इति-सु-गृहीत-नाम्नः कुमारस्य वीर-श्री-लतारोहण-कल्पवृक्षायमानभुजदण्ड-दण्डितारातेः प्रियात्मजस्य विज्ञा-पना कर्ण्णोपजात-कुतूहलतया च । राजाधिराज-परमेश्वर-श्री-**निरुपमदेव प्रभूतवर्ष**-प्रसादोपलब्ध-महा-सामन्ताधिपत्यालङ्कृत-महानुभावेन भगवद-र्ह[द्]-भटारक-चरण-परिचरण-प्रणत-पवित्रितोत्तमाङ्गेन महा-विजय-विक्षे-

धापति-श्री-**श्रीविजयराजेन** निर्म्मापिता-(५ अ) य जिन-भवनाय **मान्यपुरी**पश्चिम-दिगङ्गना-ललाम-भूताय **चतुर्व्विंशत्युत्तरेषु सप्त-शतेषु शक-वर्षेषु समतीतेष्वात्मनः प्रवर्द्धमान-विज [य] संवत्सरे मान्यपुर**मधिवसति विजयस्कन्धावारे सोम-ग्रहणे पुष्य-नक्षत्रे शु [भ] लग्ने वार-विलासिनी-विरचित-नृत्त-गीत-वा(वा)द्य-बलि-विलेपन-देव-पूजा-नव-कर्म्म-प्रवर्त्तनार्थं **एदेदिण्डे-विषय**-मध्य-वर्त्ति-**पेर्व्वडियूर्**-नाम ग्राम सर्व्व-बाध-परिहार उदक-पूर्व्वं दत्तः तस्य सीमान्तर (यहाँ सीमायें आती है) **पादरि-ऊरुळ्** पत्तु-भागढोळेन्दु-भाग देवर्गे कोट्टत्तु

(हमेशाके ये ही अन्तिम श्लोक)।

[विष्णुसे रक्षाकी कामना।

पृथ्वीपर कृष्ण-राज विद्यमान थे। उनके धोर नामका एक पुत्र था। उसीके दूसरे नाम कलि-वल्लभ, वत्सराज, निरुपम थे।

गुणी निरुपमसे गोविन्दराज उत्पन्न हुआ। जब यह राजा हुआ तो राष्ट्र-कूट-वंश दूसरे लोगो (वंशो) की प्रतियोगितासे ऊपर उठ गया। उसने गंगको बन्धनसे छुडाया था, लेकिन अपने घमण्डी स्वभावके कारण शीघ्र ही पुन बाँध लिया गया। उसकी बहुत-सी प्रशंसा। उसके पराक्रमोंका वर्णन। उसने देव-भोग (मन्दिरके लिये दान) रूपसे भूमिदान किया। उसके बडे भाईका नाम शौच-कम्भ था। इसी शौच-कम्भका दूसरा नाम रणावलोक था।

इस-विषय (देश) मे प्रसिद्ध शाल्मली नामक गाँवमें कोण्डकुन्दान्वयके उदारगणसे तोरणाचार्य्य हुए। पुष्पनन्दि-पण्डित उनके शिष्य थे। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र थे। उनके एक वप्पय्य नामके भक्त श्रावक थे। उनका पुत्र शत्रुओंका दण्ड देनेवाला था। अपने प्रिय पुत्रकी प्रार्थना सुनकर उन्होंने, मान्यपुरके पश्चिममें जो जिनमन्दिर खडा हुआ था उसके लिये, उसके शासक श्रीविजय-राजकी कृपासे शक सं० ७२४ के बीतने पर, अपने ही विजय-वर्षमें, मान्यपुरमे पडे हुए अपने विजयी कैम्प (स्कन्धा-

वार) में एदेदिण्डे-विषयका पेव्वँडियूर नामका गाँव, सर्व करोसे मुक्त करके, जलधारापूर्वक दानमें दिया। इस गाँवकी सीमायें । पदरियूरमें १/१० भाग दानमें दिया गया। वे ही शापात्मक श्लोक।]

[NC, IX, Nelamangala tl n° 61]

१२४

कडव—संस्कृत तथा कन्नड।

(सन्देहास्पद)

[शक ७३५=८१२ ई०]

राष्ट्रकूटवंशोद्भव द्वितीय प्रभूतवर्ष महीपतिका दानपत्र।

१ ॐ स्वस्ति [॥] विस्तृत-विशद-यशो-वितान-विशदीकृताशाचक्र-वाल करवाल-प्रवालावतंस-विराजित-जयलक्ष्मी-समालिं-

२ गित-दक्ष-दक्षिणा-भूरि-भुजार्गल. गलित-सार-शौर्य्य-रस-विसर-विसखलीकृतोग्रा-

३ रि-वर्ग्ग. वर्ग्ग-त्रय-वर्ग्गणैक-निपुणोऽचलाभार-चार्व्वी-विशेष-निर्ज्जितोर्व्वी-मण्डलोत्सवोत्पादनपर.

४ पर-भूपाल-मौलि-माला-लीढाङ्घ्रि-द्वन्द्वारविन्दो **गोविंदराजः** ॥ तस्य-सू—

५ नु. सुतरुण-भावोदय-दया-दान-दीनेतर-गुण-गण-समर्प्पित-बन्धु-जन सक—

६ ल-कलागम-जलधि-कलशयोनि **मनु**दर्शितमार्ग्गानुगामी **राष्ट्र-कूट**-कुला—

७ मल-गगन-मृगलाञ्छन. बुधजन-मुख-कमलांशुमाली मनोह—

८ र-गुण-गणालङ्कार-भार **कक्कराज**-नामधेय. [॥] तस्य पुत्रः स्व-वंशानेक-नृ—

९ प-सघात-परम्पराभ्युदय-कारण. परम-ऋषि-ब्राह्मण-भक्ति-

नात्पर्य—

१० कुशलः समस्त-गुण-गणाधिव्वोनो[1] विख्यात-सर्व्व-लोक-निरुपम-स्थिर-भाव-नि(वि)जिता—

११ रि-मण्डल. यस्यैममासीत् ॥ जित्वा भूपारि-वर्गान्नय-कुशल-तया येन रा—

१२ ज्य कृत य· कष्टे मन्वादिमार्गे स्तुत-धवल-यशा न कचिद् यागपूर्व्वः[2] [।] सग्रामे यस्य गेपा

१३ स्व-भुज-कर-वल-प्रापिता या जयश्रीर्यस्मिञ्जाते स्ववशोभ्युदय-धवलता यातवान्नर्कतेजः [॥ १] अ—

१४ **सावन्दिराज**-नामधेयः [॥] तस्य पुत्रः स्व-कुल-ललामायमानो मानधनो दीनाना—

दूसरा पत्र; पहली बाजू.

१५ थ-जनाह्लादनकर-दान-निरत-मनोवृत्ति हिमकर इव सुखकर-करः कुलाचल-समु—

१६ दाय इव सुधाधार-गुण-निपुण हिमशैल-कूट-तट-स्थापित यशस्तम्भलिखिता—

१७ नेक-विक्रम-गुणः [।] अघ-संघात-विनाशक-सुरापगा यस्य सयशो विशद [।] गायन्तीव तरङ्ग-प्रभव—

१८ रवैर्व्वहति जन-महिता ॥ [२] असौ **वैरमेघ**-नामधेयः [॥] तस्य पितृव्यः हृदय-पद्मा—

---

१ 'गणाधिध्वानो' इति राइसमहोदय । २ 'यातपूर्व्वे' पाठ ठीक मालूम पडता है ।

१९ सनस्थ-परमेश्वर-शिरश्शशिरकर- [कर-]निकर-निराकृत-तमो-
वृत्तिः सविशेषस्य जगत्रय—

२० सारोच्चयेनेव विरचितस्य चतुर्थ-लोकोदय-समानस्य कृतयुग-
शतैरिव निर्म्मि—

२१ तस्य यस्य यशस' पुञ्जमिव विराजमानः[१] ॥ प्रदग्ध-कालागरु—

२२ धूप-धूमै' प्रवर्द्धमानोपचयाः पयोदा. [।] यस्याजिर स्वच्छ-
सुगन्ध-तोयैः

२३ सिञ्चन्ति सिद्धोदित-कूट-भागाः ॥ [३] न चेदृश प्राप्यमिति
प्रलोभात् भवोद्भवो भावि- [यु] गा—

२४ वतारे [।] अवैमि यस्य स्थितये स्वय तत् कल्पान्तर नैव च
भाव्यतीति ॥ [४] तारा-ग—

२५ णेषून्नत-कूट-कोटि-तटार्प्पितासूज्ज्वल-दीपिकासु [।] मोमुह्यते
रात्रि-विभेदभा-

२६ वः निशात्ययः पौरजनैर्न्निशाया ॥ [५] आधारभूताहमिद
व्यतीत्य मा वर्द्धते

२७ चायमतिप्रसङ्ग [।] यस्यावकाशात्र्थमितीव पृथ्वी पृथ्वीव
भूतेति च मे वि—

२८ तर्क' ॥ [६] विचित्र-पताका-सहस्र-सञ्छादित उपरि परिच-
रण-भयात् लोकै—

२९ क-चूडामणिना मणि-कुट्टिम-संक्रान्त-प्रतिबिम्ब-व्याजेन स्वयमव-
तीर्य्य

---

१ 'पुञ्ज इव विराजमान' ऐसा पढ़ना चाहिये ।

दूसरा पत्र, दूसरी बाजू

३० परमेश्वर-भक्ति-युक्तेन नमस्क्रियमाणमिव विराजमान प्रहत-पुष्कर-मन्द्र-निनादा—

३१ कर्ण्णनोदितानुरागै' प्रावृडारम्भ-काल-जनितोत्सवारम्भैः मयूरैः प्रारब्ध-वृत्त-नृ—

३२ त्तान्त धूम-त्वेला-लीला-गत-विलासिनी-जनाना कर-तल-किसलय-रस-भाव-सद्भाव-प्रक—

३३ टन-कुशल-शशिवदनाङ्गना-नर्त्तनाहूत-पौर-युवति-जन-चिन्ता-न्तर समस्त-सिद्धान्त-साग—

३४ र-पारग-मुनि-शत-सङ्कुल देवकुलमासीत् **कृष्णेश्वर**नाम स्व-नामधेयाङ्कित असा—

३५ **वकालवर्ष** इति विख्यात [॥] तस्य सूनुः आनत-नृप-मकुट-मणि-गण-किरण-जाल-रञ्जित—

३६ पद-युगल-नख-मयूख-प्रभा-भासित-सिंहासनोपान्त कान्ताजन-कटक-खचि—

३७ त-पद्मराग-दीधिति-विसर-शुम्भत्-कुसुम्भ-रस-रञ्जित-निज-धवल-वीज्यमान-चारु-चा—

३८ मर-निचय-विख्यात-प्राज्य-राज्याभिषेकान्तैरकैश्वर्य्य-सुख-समनुभ-वस्थि—

३९ तिः निज-तुरङ्गैक-विजयानीत-राजलक्ष्मी-सनाथो महीनाथो यः कल्पाङ्घ्रिपः ससेव[१]

---

१ 'सत्यमेव' ऐसा शुद्ध पाठ मालूम पडता है।

४० चिन्तामणिरिति भुव य वदन्त्यर्थिनः । नित्य प्रीत्या प्राप्तार्थ-
सम्पदसौ **प्रभूतवर्ष** इति वि-

४१ ख्यातो भूपचक्रचूडामणिः [।।] तस्यानुजः **धारावर्ष-श्री-पृथ्वी-**
वल्लभ-महाराजाधि-

४२ **राजपरमेश्वरः** खण्डितारि-मण्डलासि-भासित-दोर्दण्ड[1] पुण्डरीक[1]
इव बलिरिपु-मर्दना-

४३ क्रान्त-सकल-भुवनतल सुकृतानेक-राज्य-भार-भारोद्वहन-समर्थः
हिमशैल-वि-

४४ शालोर स्थलेन राजलक्ष्मी-विहरण-मणि-कुट्टिमेन चतुराङ्गनालिं-
गन-तुङ्ग-कुच-

तीसरा पत्र; पहली बाजू

४५ सग-सुखोद्रेकोदित-रोमाञ्च-योजितेन स्व-भुजासि-धारा-दलित-
समस्त-[2] गलित-मुक्ताफल-वि-

४६ सर-विराजितारि-बल-हस्ति-हस्तास्फालन-दन्त-कोटि-घट्टित-घनी-
कृतेन विराजमान त्रिपुर-

४७ हर-वृषभ-ककुदाकारोन्नत-विकटास-तट-निकट-दोधूयमान-चारु-
चामर-चयः फेन-पिण्ड-

४८ पाण्डुर-प्रभावोदितच्छविना वृत्तेनापि चतुराकारेण सितातपत्रे-
णाच्छादित-समस्त-दिग्-विव-

४९ [3]रो रिपुजनहृदयविदारणदारुणेन सकलभूतलाधिपत्यलक्ष्मीली-

---

१ 'पुण्डरीकाक्ष' पढो । २ 'दलितमस्त' पढो । ३ आगे ४९ वीं पंक्तिसे प्राचीन लेखमाला, प्रथम भाग, लेख ११ परसे लिया है ।

लामुत्पादयता प्रहतपटहढक्कागम्भीरध्वानेन घनाघनगर्जनानुकारिणा अस्याचितो विनोदनिर्गम. (?) स्वकीया साञ्चलता (?) परनृपचेतोवृत्तिपु दातुमिवोच्चैराविलोलप्रकटितराज्यचिह्न (?) तुरङ्गमखरखुरोत्थितपांशुपटलमसृणितजलदसञ्चयानेकमत्तद्विपकरटतटगलितदानधाराप्रतानप्रशमितमहीपराग. ।

यस्य श्री चपलोदया खुरतरङ्गालीसमास्फालना-
निर्भिन्नद्विपयानपात्रगतयो ये सञ्चलच्चेतसः । (?)
तस्मिन्नेव समेत्य सारविभवं सत्यज्य राज्य रणे
भग्ना मोहवशात् स्वय खलु दिशामन्त भजन्तेऽरय ॥
इद कियद्भूतलमत्र सम्यक् स्थातु महत्सकटमित्युदग्रम् ।
खस्यावकाशं न करोति यस्य यशो दिशा भित्तिविभेदनानि ॥

अनवरतदानधारावर्षागमेन तृप्तजनतायाः **धारावर्ष** इति जगति विख्यातः सर्वलोकवल्लभतया **वल्लभ** इति । तस्यात्मजो निजभुजबलसमानीतपरनृपलक्ष्मीकरधृतधवलातपत्रनालप्रतिकूलरिपुकुलचरणनिबद्धखलखलायमानधवलशृङ्खलारवबधिरीकृतपर्यन्तजनो निरुपमगुणगणाकर्णनसमाह्लादितमनसा साधुजनेन सदा संगीयमानशशिविशदयशोराशिराशावष्टब्धजनमन परिकल्पनत्रिगुणीकृतस्वकीयानुष्ठानो निष्ठितकर्तव्य **प्रभूतवर्ष-श्रीपृथ्वीवल्लभराजाधिराजपरमेश्वरस्य** प्रवर्धमानश्रीराज्यविजयसवत्सरेषु वदत्सु[1] । चारु**चालुक्या**न्वयगगनतलहरिणलाञ्छनायमान**श्रीबलवर्म**नरेन्द्रस्य सूनु स्वविक्रमावजितसकलरिपुनृपशिर शेखरार्चितचरणयुगलो **यशोवर्म**नामधेयो राजा व्यराजत । तस्य पुत्रः 'सुपुत्रः कुलदीपक' इति पुराणवचनमवितथमिह कुर्वन्नतितरा धीराजमानो

१ 'वहत्सु' पाठ मालूम पडता है ।

मनोजात इव मानिनीजनमनस्थलीय. (?) रणचतुरश्चतुरजनाश्रय श्रीसमालिङ्गितविशालवक्षस्थलो नितरामशोभत । असौ महात्मा

कमलोचितसङ्कुजान्तर**श्रीविमलादित्य** इति प्रतीतनामा ।
कमनीयवपुर्विलासिनीना भ्रमदक्षिभ्रमरालिवक्रपद्म ॥

य प्रचण्डतरकरवालदलितरिपुनृपकरिघटाकुम्भमुक्तमुक्ताफलविकीर्णितरुचिरक्ताब्धिकान्तिरुचिरपरीननिजकलत्रकण्ठ' शितिकण्ठ इव महितमहिमामोद्यमानरुचिरकीर्तिरशेपगङ्गमण्डलाधिराज **श्रीचाकिराजस्य** भागिनेय भुवि प्रकाशत[1] यस्मिन् **कुनुन्गिल**नामदेशमयश.पराङ्मुखा[2] **मनुमार्गेण** पालयति सति **श्रीयापनीयनन्दिसंघपुंनागवृक्षमूलगणे** [3]**श्रीकित्याचार्यान्वये** वहुष्वाचार्येष्वतिक्रान्तेषु व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दितचरण**कूविलाचार्य्या**णामासीत् (?) तस्यान्तेवासी समुपनतजनपरिश्रमाहार स्वदानसंतर्पितसमस्तविद्वज्जनो जनितमहोदय **विजयकीर्ति**नाममुनिप्रभुरभूत् ।

अर्ककीर्तिरिति ख्यातिमातन्वन्मुनिसत्तम' ।
तस्य शिष्यत्वमायातो नायातो वशमेनसाम् ॥

तस्मै मुनिवराय तस्य **विमलादित्यस्य** शणेश्वर (?)पीडापनोदाय **मयूरखण्डि**मधिवसति विजयस्कन्धावारे **चाकिराजे**न विज्ञापितो वल्लभेन्द्र. **इडिगूर्**विषयमध्यवर्तिन **जालमङ्गल**नामधेयग्राम **शकनृपसंवत्सरेषु शरशिखिमुनिषु (७३५) व्यतीतेषु ज्येष्ठमासशुक्लपक्षदशम्यां पुष्यनक्षत्रे चन्द्रवारे मान्यपुर**वरापरदिग्विभागालकारभूत**शिलाग्रामा**जनेन्द्र[4]भवनाय दत्तवान् तस्य **पूर्वदक्षिणापरोत्तरा**दिग्विभागेषु स्वस्तिमङ्गल-

---

१ 'प्रकाशते यस्मिन्' यह पाठ मालूम पड़ता है । २ 'पराङ्मुखे' यह अपेक्षित है । ३ 'श्रीकीर्त्याचार्य' जान पड़ता है । ४ 'जिनेन्द्र' ऐसा पाठ मालूम पड़ता है ।

वेल्लिन्द-गुडुनूरुत्तरिपाल इति प्रसिद्धा ग्रामाः एव चतुर्णां ग्रामाणा मध्ये व्यवस्थितस्य जालमङ्गलस्याय चतुरावधिक्रमः[1] पुनस्तस्य सीमा-विभाग ईशानत' मुकूडलदक्षिणदिग्विभागमवलोक्य एल्तगकोडल-मूडग-केल-बन्दु इर्प्पेय-कोपदे-पल्लद्-ओलगण उलिअलरिये कोटेयालि-बेलने सयकने-बन्दु पोल पुणसे एव कीले अन्ते पोयिए विदिरुगेरे मुकू-डल् तत पश्चिमत. पुलिपदिय तेङ्कण पेरु ओल्वेये पेरुविलिक्के एल-गल-करण्डलो मुकूडल् अन्ते सय्कने पोगि नाय्मणिगेरेय ताय्गण्डि मुकूडल् तत उत्तरत. वल्लगेरेय पडुव गजगोड पळम्बे पुणुसेये आने-दलो गेरेए पुल्पडिये एलगल्ले पुलिगारद गेरे मुकूडल् तत. पूर्वतः निडु विळिड्के '' दविन पुल्पडिये कञ्चगार गल्ले पोल एल्ले पुणुसये वट्टपु-णुसये वेळने वन्दु ईशानद मुकूडलोल् कूडि निन्दत्तू । राचमल्लगाम-ण्डनु शीरनु गङ्गगासुण्डनु मारेयनु वेल्गेरेय् ओडेयोरु मोदवागे-एल्पडि-म्बरु कुनुन्गिल्-अयसाबेरु साक्षियागे कोट्टत्तू । नमः ।

अद्भिर्दत्त त्रिभिर्भुक्त षड्भिश्च परिपालितम् ।
एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥
स्व दातु सुमहच्छक्य दु खमन्यस्य पालनम् ।
दान वा पालन वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुधराम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते कृमि' ॥
देवस्व[हि] विप घोर कालकूटसमप्रभम् ।
विषमेकाकिन हन्ति देवस्व पुत्रपौत्रकम् ॥

(इण्डियन् एण्टिक्वेरी १२।१३-१६)
[एपिग्राफिका इण्डिका, ४।३४०-३४५]

---

१ 'चतुरवधिक्रम' यह पाठ मालूम पड़ता है ।

[इस शिलालेखमें बताया है कि राजा प्रभूतवर्ष (गोविन्द तृतीय) ने जब कि वे मयूरखण्डीके अपने विजयी विश्रामस्थलपर ठहरे हुए थे, चाकिराजकी प्रार्थनापर शक सं० ७३५ में जालमङ्गल नामका गाँव जैन मुनि अर्ककीर्तिको भेंट दिया। यह भेंट शिलाग्राममें स्थित जिनेन्द्रभवनके लिये दी गई थी। कारण यह था कि कुनुन्गिल जिलेके शासक विमलादित्यको उन्होंने (अर्ककीर्ति मुनिने) शनैश्चर (?)की पीड़ासे उन्मुक्त किया था।

इस लेखमें पं० १–६४ तकमें राष्ट्रकूट राजाओंकी प्रशंसामात्र है। इसमें उनकी वंशावली इस प्रकार दी हुई है:—

लेखप्रस्तुत नाम	ऐतिहासिक नाम
(१) गोविन्द	=गोविन्द प्रथम
(२) कक्क	=कर्क प्रथम
(३) इन्द्र	=इन्द्र द्वितीय
(४) वैरमेघ	=दन्तिदुर्ग या दन्तिवर्म्मन् द्वि०
(५) अकालवर्ष [वैरमेघका चाचा (पितृव्य)]	=कृष्ण प्रथम
(६) प्रभूतवर्ष	=गोविन्द द्वितीय
(७) धारावर्ष श्री पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय नाम—वल्लभ=ध्रुव (प्रभूत वर्षका छोटा भाई)	
(८) प्रभूतवर्ष श्रीपृथ्वीवल्लभ [महा] राजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय नाम वल्लभेन्द्र	=गोविन्द तृतीय

३४ वीं पंक्तिमें कहा गया है कि अकालवर्षने अपने ही नामसे 'कण्णेश्वर' नामक मन्दिर बनवाया था। पंक्ति २९–३० से ऐसा मालूम पडता है कि यह मन्दिर शिवके लिये अर्पण किया गया था। पं० ८१ में बताया

गया है कि दानके समय गोविन्द-तृतीय मयूरखण्डीके अपने विजय-स्कन्धावार (पड़ाव) में ठहरे हुए थे।

पक्ति ६५-७५ से विमलादित्यकी वशावलीका उल्लेख हुआ है। उनके पिता राजा यशोवर्मा थे और उनके बाबा नरेन्द्र बलवर्मा थे। चालुक्योसे इस कुलका संबध था; लेकिन वर्तमानमें चालुक्यवंशी राजाओमें इन नामोके राजा नहीं मिलते हैं, इसलिए प्रो० भाण्डारकरने उन्हे एक स्वतन्त्र शाखाका माना है। विमलादित्य कुनुन्गिल् देश (जिले) का राजा था। विमलादित्यको चाकिराजकी बहिनका पुत्र बताया गया है। चाकिराजको गङ्गो (अशेष-गङ्गमण्डलाधिराज) के समूचे प्रान्तका शासक कहा गया है। इसीकी प्रार्थनापर दान किया गया था।

पक्ति ७५-८० से दानपात्रका विशेष वर्णन है। उनका नाम अर्ककीर्ति था, ये कूविल आचार्यके शिष्य विजयकीर्तिके शिष्य थे। यह मुनि श्री यापनीय नन्दिसघके पुनागवृक्षमूलगणके श्रीकीर्त्याचार्यके अन्वय (परम्परा) के थे। इनका एक विशेषण 'व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दितचरण' है।

लेखके अन्तिम भागका सार ऊपर दे दिया गया है। लेखके अन्तिम भागमें कुछ साक्षियोके नाम भी दिये गये है जिनके सामने यह दान किया गया था। अन्तके चार वे ही साधारण शापात्मक श्लोक है।]

१२५

नौसारी—संस्कृत।

[शक ७४३=८२१ ईस्वी]

यह शिलालेख सम्भवत. श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

[H. H Dhruva, Zeitschr d deut morg Gesell, XL, p 321, n° VII, a]

१२६

कांगड़ा—संस्कृत।

[लौकिक वर्ष ?]=८५४ ई० ? (बूल्हर)

श्वेताम्बर सम्प्रदायका।

[EI, I, n° XVIII (p 120), t & tr]

१२७

कोन्नूर (जिला धारवाड)—संस्कृत ।

[शक सं० ७८२=८६० ई०]

श्रिय' प्रियस्संगतविश्वरूपस्सुदर्शनच्छिन्नपरावलेपः ।
दिश्यादनन्तः प्रणतामरेन्द्रः श्रियं ममाद्यः परमां **जिनेन्द्रः** ॥ १ ॥
अनन्तभोगस्थितिरत्र पातु व. प्रतापशीलप्रभवोदयाचलः ।
सु-राष्ट्रकूटोर्जितवंशपूर्व्वजस्स **वीर-नारायण** एव यो विभु. ॥ २ ॥
नदीयभूपायतयादवान्वये क्रमेण वार्द्धाविव रत्नसञ्चयः ।
बभूव **गोविन्द**महीपतिर्भुवः प्रसाधनो **पृच्छकराज**-नन्दन. ॥ ३ ॥
इन्द्रावनीपालसुतेन धारिणी प्रसारिता येन पृथु-प्रभाविना ।
महौजसा वैरितमो निराकृत प्रतापशीलेन स **कर्क्कर**-प्रभुः ॥ ४ ॥
ततोऽभवद्दन्तिघटाभिमर्द्दनो हिमाचलाद्दुर्जित-सेतु-सीमत. ।
खलीकृतोद्वृत्तमहीपमण्डल' कुलाग्रणीः यो भुवि **दन्तिदुर्ग्ग**-राट् ॥ ५ ॥
स्वयम्वरीभूतरणाङ्गणे ततस्स निर्व्यपेक्ष **शुभतुङ्गवल्लभः** ।
चकर्ष **चालुक्य**कुलश्रिय बलाद्विलोल-पालिध्वज-माल-भारिणीं ॥ ६ ॥
जयोच्चसिंहासनचामरोर्जितस्सितातपत्रो प्रतिपक्ष राज्य(ज)हा ।
अकालवर्षोर्जितभूपनामको बभूव राजर्षिरशेषपुण्यतः ॥ ७ ॥
नतः **प्रभूतवर्षो**ऽभूद्धारावर्षसुतश्शरैः ।
धारावर्षायित येन सग्रामभुवि भूभुजा ॥ ८ ॥ तस्य सुतः—

यज्जन्मकाले देवेन्द्रैरादिष्ट वृषभो भुव ।
भोक्तेति हिमवत्सेतु-पर्य्यन्ताम्बुधिमेखलाम् ॥ ९ ॥
ततः **प्रभूतवर्षस्सन्** स्वयम्पूर्णमनोरथः ।
जगत्तुङ्गस्सुमेरुर्वा भूभृतामुपरि स्थितः ॥ १० ॥

बन्धूना वन्धुराणामुचितनिजकुले पूर्वजाना प्रजाना
जाताना **वल्लभानां** भुवनभरितसत्कीर्त्तिमूर्त्ति-स्थिताना ।
त्रातु कीर्त्ति स-लोक कलिकलुषमथो हन्तमन्तो[1] रिपूणा
श्रीमान् सिंहासनस्थो भवनवनिमतो[2]ऽ**मोघवर्षः** प्रशास्ति ॥ ११

यस्याज्ञा परचक्रिणः स्रजमिवाजस्र शिरोभिर्व्वह-
न्त्यादिग्दन्तिघटावलीमुखपटैः कीर्त्तिप्रतानस्स तैः ।
यत्रस्थः स्वकरप्रतापमहिमा कस्याप्यदूरस्थित'
तेजःक्रान्तसमस्तभूभृदिव एवासौ न कस्योपरि ॥ १२ ॥

चतुस्समुद्रपर्य्यन्त (?) स्वमुद्र यत्प्रसाधित ।
भग्ना समस्तभूपालमुद्रा गरुडमुद्रया ॥ १३ ॥

राजेन्द्रास्ते वन्दनीयास्तु पूर्व्वे, येषा धर्म्म पालनीयोऽस्मदीयै ।
ध्वस्ता दुष्टा वर्त्तमानास्सधर्म्मा' प्रार्थ्या ये ते भाविनः पार्थिवेन्द्राः ॥१४॥

भुक्तं कश्चिद्विक्रमेणापरेभ्यो
दत्त चान्यैस्त्यक्तमेवापरैर्य्यत् ।
कास्थानित्ये तत्र राज्ये महद्भि
कीर्त्या (र्त्यै ?) धर्म्म. केवल पालनीयः ॥ १५ ॥

तेनेदमनिलविद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसार ।
क्षितिदानपरमपुण्यः प्रवर्त्तितो देवदायोऽयम् ॥ १६ ॥

स एव परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-**जगत्तुङ्गदेव**-पादानुध्यान(त)परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-पृथ्वीवल्लभ-श्रीम**दमोघवर्ष**-श्रीवल्लभनरेन्द्रदेवः सर्व्वानेव यथासम्बध्यमानकान्-राष्ट्रविषय-

---

1 'हन्तु' पढो । 2 'भवनमिदमतो' या 'भवनमनमितो' ।

पति-ग्रामकूटायुक्तक-नियुक्ताधिकारिकमहत्तरादीन् समादिशत्यस्तु वस्सविदित यथा ॥

विक्रमविलासनिलयो मुकुल-कुले पूर्व्वबन्धुभिर्म्मान्यै·
एरकोटिनामधेयः प्रविकसितोऽभूत्प्रसूनसमः ॥ १७ ॥
आविरासीत्प्रभुस्तस्मात् प्रसूनात्फलसन्निभ. ।
नाम्ना **धोरः** कुलाधारः **कोलनूरा**धिपस्स्वयम् ॥ १८ ॥
सुतोऽस्य विजयाङ्कायामभूद्भुवनमानित· ।
प्रचण्डमण्डलातङ्को **वङ्केशः से(चे)ल्लकेतनः** ॥ १९ ॥
मदीयो विततज्योतिर्णिण(न्नि)शितोऽसिर्व्वापरैः ॥
उन्मूलितद्विपद्वृक्षमूलो मौलबलप्रभु ॥ २० ॥
मत्प्रदेशेन संलब्ध-**वनवासी**-पुरस्सरान् ।
ग्रामान् त्रिंशत्सहस्राणि भुनक्त्यविरतोदय. ॥ २१ ॥
महाप्रतापादुच्छेदमुदयच्छन् मदिच्छया ।
मूलादुच्छेत्तुमुत्तुङ्ग **गङ्गवाडी**-ऋटाटवीम् ॥ २२ ॥
नन्त्रातरेऽस्मत्सावमन्तैर्म्मात्सर्याहितमानसै- ।
रुपेक्षितोऽपि कोपोद्यत्साहसैकसख· स्वयम् ॥ २३ ॥
ध्वस्तरिपुनीतिमार्ग्गो रणविक्रममेकबुद्धिमभिनीय ।
स मदीयहृदयसगतमवन्ध्यकोपत्वमावहति ॥ २४ ॥ येन—
तत्-**केदला**भिधान दुर्ग्ग वप्रार्ग्गलादिदुर्ल्लङ्घ्य ।
मौल-बलाधिष्ठितमपि सद्य. प्रोल्लङ्घ्य हेलयाग्राहि ॥ २५ ॥
जनपदमद कृत्वा हस्ते विधूय विरोधिन
तलवनपुराधीश कृत्वा श्रुत रणविक्रमम् ।
मदरिविजयी भर्तुः श्लाघ्यस्समन्वितसगरः
समरसमये विद्विट्-चक्रैरविक्रृतविक्रमः ॥ २६ ॥

कावेरीं गुरुपूरदुर्ग्गमतमामुल्लङ्घ्य सिंहक्रमात्
प्रत्यग्र-स्फुरित-प्रताप-दहन-प्रोद्यच्छिखाश्रेणिभिः ।
निर्द्दह्यैकपदेन सप्तपदकान्विद्विट्टुनोच्छेदिना
येनाकम्पि जगत्प्रकम्पनपटोर्वैराज्यमप्यूर्जितम् ॥ २७ ॥
तत्रान्तरे मदन्तिकमन्तर्व्भेदेन जातसक्षोभे ।
प्रत्यागन्तव्यमिति त्वयेति मद्वचनमात्रेण ॥ २८ ॥
अप्राप्ते **वल्लभेन्द्रो** मयि जयति यदा विद्विप स्यान्तदाहं
सन्यस्ताशेपसङ्गो मुनिरथ विधिना विद्विप स्याज्जयश्री' ।
तत्राप्युद्दामधूमध्वजविततशिखासूत्पतामि प्रतापा-
दित्यारूढप्रतिज्ञ कतिपयदिवसै प्रापदस्मत्समीपम् ॥ २९ ॥
मासत्रयस्य मध्ये यदि भोजयितु न शक्यते स्वामी ।
क्षीर विजित्य शत्रु तथापि वह्निं विशाम्येव ॥ ३० ॥
इत्युक्त्वा क्रमविक्रमोच्छिखशिखीज्ज्वालावलीढ (ढ)त्र(त्र) जे
धूमश्याम [लि] ते तिरोहिततनौ प्राय परप्रेषिते ।
ये ते मत्तनये स्थितान्यनृपतीन्निर्जित्य यो जित्वरो
वन्दीकृत्य रिपून्निहित्य च तदा तीर्ण्णप्रतिज्ञोऽभवत् ॥ ३१ ॥
आविष्कृतकोपशिखानिर्दग्धारीन्धनो विनाप्यनिलात् ।
अज्वालितोऽपि यस्य प्रतापवह्निर्मुहुर्ज्वलति ॥ ३२ ॥
यस्य च कृपाण-[वारिणि]रुधिराकुलिता द्विपा महालक्ष्मी ।
मज्जत्युन्मज्जति तु स्वाधिपते. कुङ्कुमा(? भा)क्त्वेव ॥ ३३ ॥
हुत्वा येन रिपु विरोधिरुधिरप्राज्याज्यधाराहुति-
व्रात-प्रस्फुरित-प्रताप-दहने विद्विष्टशान्तेश्चिन ।
विप्रेणेव रणाध्वरे सुविहित-श्री-मन्त्रशक्त्यार्ज्जित
कल्पान्तस्थिरवीरशासनमिद **मद्वीरनारायणात्** ॥ ३४ ॥

तेनैवम्भूतेन वङ्केयाभिधानेन मदिष्टभृत्येन प्रार्थित· सन् तत्प्रार्थनया मान्यखेटराजधान्यामवस्थितेन मया [मा]तापित्रोरात्मनश्चैहिकामुत्रिकपुण्ययशोभिवृद्धये कोलनूरे तद्वङ्केयनिर्म्मापित-जिनायतन-परिपालननियुक्ताय

श्रीमूलसङ्घ-देशीयगण-पुस्तकगच्छत ।
जातस्त्रैकालयोगीशः क्षीराब्धेरिव कौस्तुभ ॥ ३५ ॥
तच्चारित्रवधूप(पु)त्र श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वरः ।
सैद्धान्तिकाग्रणीस्तस्मै वङ्केयो[यामदान्मु]दा ॥ ३६ ॥

तद्वसतिसम्बन्धिनवकर्म्मोत्तरभाविखण्डस्फुटित-सम्मार्जनोपलेपनपरिपालनादिधर्म्मोपयोगिकर्म्मकरणनिमित्त मञ्जन्तिय-सप्ततिग्राम-भुक्त्यन्तर्गत तलेयूरनामग्राम. तस्य चाघात (ट.) तत्कोलनूरात् पूर्व्वत. चेन्दनूरु दक्षिणत सासवेवाडु तत्पश्चिमत पडिलगेरी उत्तरत कीलवाडः एवमयं चतुराघाटनोपलक्षित सोद्रङ्गस्स-परिकर सदण्डदशापराधस्सम्भृतोपात्तप्रत्यय[1] सोत्पद्यमानविष्टिति (क)· सधान्यहिरण्यादेय. द्वादशपुष्पवाट· पञ्चाशदुत्तरशतहस्तविस्तार पञ्चशतहस्तप्रमाणायाम गृहाणामाघाटस्समुदित प्रवेश्यस्सर्व्वराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीयः आचन्द्रार्क्कार्णव-क्षिति-सरित्-पर्व्वत-समकालीन पुत्रपौत्रान्वयक्रमेण प्रतिपाल्य. पूर्व्वप्रदत्त-देवब्रह्मदायरहितोऽभ्य(भ्य)न्तरसि [द्] ध्द्या भूमिच्छिद्रन्यायेन शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु द्वा(त्र्य)शीत्यधिकेषु तदभ्यधिक-समनन्तर-प्रवर्त्तमान-त्रयो[2]शीतितम-विक्रमसंवत्सरान्तर्गताश्वयुजपौर्णमास्यां सर्व्वग्रासि-सोमग्रहणे

---

१ 'सम्भृतोपात्तप्रत्यायम्' शब्द है। २ 'त्र्यशीतितम' पढना चाहिये।

महापर्व्वणि बलिपक्षवैश्वदेवाग्निहोत्रातिथिसन्तर्पणाद्धारोदकातिसर्गेण प्रतिपादितः ॥ तथात्रैव **तत्कोलनूर**तद्भुक्तिमध्यवृत्त्यवरवाडि **वेण्डनूरु मुदुगुण्डि कित्तवोले सुळ्ळ मुस दधरे माविनूरु मत्तिकट्टे नीलगुन्दगे तालिखेड वेळ्ळेरु संगम पिरिसिङ्गि मुत्तलगेरी काकेयनूरु बेहेरु आल्लगु [पार्व्व] नगेरी होसंजलगु इन्दुगलु नेरिलगे हगनूरु उनलगरु इन्दगेरी मुनिवल्ली कोट्टसे ओड्डिङ्गे सि [किम-ब्रि ?] गिरि [पि] डलु** नामधेयेष्वेतेषु **कोलनूरात** तद्भुक्तिवर्त्तिषु त्रिंशत्स्वपि ग्रामेष्वेकैकग्रामे द्वादश निवर्त्तनानि भूमे प्रतिपादितानि [॥] अतोऽस्योचितया देवदायदायस्थित्या भुञ्जतो भोजयतः कृषत. कर्पयतः प्रतिदिशतो वा न कैश्चिदल्पापि परिपन्थना कार्या तथागामिभद्रनृपतिभिरस्मद्वश्यैरन्यैर्व्वा सामान्य भूमिदानफलमवेत्य विद्युल्लोलान्यैश्वर्याणि तृणाग्रलग्नजलबिन्दुचञ्चल च जीवितमाकलय्य स्वदायनिर्व्विशेषोऽस्मदायोऽनुमन्तव्य प्रतिपालयितव्यश्च ।

यस्त्वज्ञानतिमिरपटलावृतमतिराच्छिद्यमानक वानुमोदेत स पञ्चभिर्म्महापातकैस्सोपपातकैश्च सयुक्तः स्यादित्युक्त भगवता **वेदव्यासेन** ॥

पष्टिव्वर्षसहस्राणि स्वर्ग्गे तिष्ठति भूमिद. ।
आच्छेत्ता चानुमन्ता च तामेव नरके वसेत् ॥ ३७ ॥

विन्ध्याटवीष्वतोयासु शुष्ककोटरवासिन. ।
कृष्णसर्प्पा हि जायन्ते भूमिदान हरन्ति ये ॥ ३८ ॥

अग्नेरपत्य प्रथम सुवर्ण्णं भूर्वैष्णवी सूर्य्यसुतश्च गावः ।
लोकत्रयन्तेन भवेद्धि दत्त यः काञ्चन गा च मही च दद्यात् ३९॥

---

१ 'आघाटे' ऐसा पढ़ो ।

बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ ४० ॥

स्वदत्ता परदत्ता वा यत्नाद्रक्ष्ये[1] नराधिप ।
महीं महीमता श्रेष्ठ दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥ ४१ ॥

इति कमलदलाम्बुबिन्दुलोल
श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवित च ।
अतिविमलमनोभिरामकै-
र्नहि पुरुषै परकीर्त्तयो विलोप्या ॥ ४२ ॥

लिखितञ्चैतद् वालभकायस्थवंशजातेन धर्म्माधिकरणस्थेन भोगिकव-**रसराजेन श्रीहर्ष**सूनुना ग्रामपट्टलाधिकृतलेखकरणहस्ति-**नाग-वर्म्म-पृथ्वीराम**-भृत्येन ॥

बङ्केयराजमुख्यो **गणपति**नामा महत्तर प्राज्ञ ।
राज्ञ. समीपवर्त्ती तेनेदमनुष्ठित सर्व्वम् ॥ ४३ ॥

मिथ्याभावभवातिदर्प्पपरतद्दु शासनोच्छेदक
प्राज्ञाज्ञावशवर्त्तमानजनतासन्सौख्यसम्पादकम् ।
नानारूपविशिष्टवस्तुपरमस्याद्वादलक्ष्मीपद
जेजीयाज्जिनराजशासनमिद स्वाचारसारप्रदम् ॥ ४४ ॥

सिद्धान्तामृतवार्द्धितारकपतिस्तर्क्काम्बुजाहर्प्पति
शब्दोद्यानवनामृतैकसरणिर्य्योगीन्द्रचूडामणि ।
त्रैविद्यापरसार्थनामविभव प्रोद्भूतचेतोभव
जीयादन्यमतावनीभृदशनि. श्री**मेघचन्द्रो** मुनि. ॥ ४५ ॥

---

१ 'रक्ष नराधिप' पढो ।

इदे हसीवृन्दमींटल्वगेदपुट्टचकोरीचय
चञ्चुविन्द कर्दुकल् साहप्पुडीग जडेयोल् इरिसलेन्दिर्दप
सेज्जेगीरल् पदेदप्प कृष्णनेम्बन्तेसेदु विमलमत्कन्दलीकन्दकान्त
पुदिदत्ती मेघचन्द्रव्रतितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाश ॥ ४६ ॥

वैदग्ध्यश्रीवधूटीपतिरखिलगुणालङ्कृतिर्मेघचन्द्र-
त्रैविद्यस्यात्मजातो मदनमहिभृतो भेदने वज्रपात'
सिद्धान्तव्यूहचूडामणिरनुपमचिन्तामणिर्भूजनाना
योऽभूत्सौजन्यरुन्द्रश्रियमवति महो वीरनन्दीमुनीन्द्र ॥४७॥

य शब्दत्त(?)-नभस्थली-दिनमणि काव्यज्ञचूडामणि-
र्यस्तर्कस्थितिकौमुदीहिमकरस्तूर्यत्रयाब्जाकर ।
यस्सिद्धान्तविचारसारधिपणो रत्नत्रयीभूषण
स्थेयादुद्धतवादिभूभृदशनि' श्रीवीरनन्दीमुनिः ॥ ४८ ॥

यन्मूर्त्तिर्जगता जनस्य नयने कर्पूरधूरायते
यद्वृत्तिर्व्विदुषा ततेश्श्रवणयोर्म्माणिक्यभूपायते ।
यत्कीर्त्ति ककुभा श्रिय कचभरे मल्लीलतान्तायते
जेजीयाद्भुवि वीरनन्दिमुनिप. सैद्धान्तचक्राधिप ॥ ४९ ॥

श्रीकोन्दकुन्दान्वयाम्बरद्युमणि विद्वज्जनशिरोमणि समस्तानवद्यविद्या विलासिनीविलासमूर्त्ति श्रीवीरनन्दिसै[द्धा]न्तिक-चक्रवर्तिगळु श्रीमन्महा स्थान कोळनूर महाप्रभु हुलियमरसनु मूरुपुरपञ्चमठस्थानङ्गळु ताम्र शासनम नोडि वरेयिसिमेनल्का शासनदोळन्तिर्दुदन्ती शीलशासनम वरे-यिसिदरु [।।] मङ्गलमहाश्री श्री श्री नमो··· · · [।।]

[जिस पाषाणपर यह लेख है वह कोन्नूरके परमेश्वरके मन्दिरकी दीवालमे लगा हुआ है ।

इस शिलालेखपरसे	दूसरे ताम्रपत्रोंपरसे
१ यादव वंशसे, पृच्छकराजका पुत्र गोविन्द	गोविन्दराज प्रथम
२ राजा इन्द्रका पुत्र कर्कर	उसका पुत्र कक्कराज या कर्कराज
	उसका पुत्र इन्द्रराज
३ उसका पुत्र दन्तिदुर्ग	उसका पुत्र दन्तिदुर्ग
४ शुभतुगवल्लभ—अकालवर्ष	शुभतुग-अकालवर्ष (कृष्णराज प्रथम, जो कि कर्कराजका पुत्र है)
५ धारावर्षका पुत्र प्रभूतवर्ष	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष (गोविन्दराज द्वि०)
६ उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुग	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुग (गोविन्द)
७ अमोघवर्ष	उसका पुत्र अमोघवर्ष]

[EI, VI, n° 4 (1st part)]

१२८

देवगढ (मध्यप्रान्त)—संस्कृत ।

[विक्रम सं० ९१९ तथा शक स० ७८४=८६२ ई०]

१ [ओं ?] [॥] परमभट्टार [क]-मह [ा] राजाधिराज-परमेश्वरश्री-भो-
२ जदेव-महीप्रवर्द्धमान-कल्याणविजयराज्ये
३ तत्प्रदत्त-पञ्चमहाशब्द-महासामन्त-श्री-[वि] ष्ण [ु]-
४ [र] म-परिभुज्यमां [क]^१ लुअच्छगिरे श्री-शान्त्यायत [न]-
५ [स] निधे श्री-कमलदेवाचार्य-शिष्येण श्री-देवेन कारा-
६ [पि] त इद स्तम्भं ॥ संवत् ९१९ अस्व (श्व) युज-शुक्ल-
७ पक्ष-चतुर्दश्यां बृ (बृ) हस्पति-दिनेन उत्तरभाद्रप-

१ 'माने' या 'मानके'। २ 'कारितोऽय स्तम्भ' यह शुद्ध रूप पढना चाहिये ।

८ दा-नक्षत्रे[1] इद स्तम्भ समाप्तमिति ॥०॥ बाजुआ-
९ गगाकेन गोष्टिक-भूतेन[2] इद स्तम्भ घटितमिति ॥०॥
१० [श]ककाल-[ब्द]-सप्तशतानि चतुराशीत्यधिकानि ७८४ [॥]

[इस लेखमें उल्लेख यह है कि परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीभोजदेवके राज्यमें जब लुअच्छगिरिपर (देवगढका ही एक नाम मालूम पडता है—[एफ० कीलहॉर्न]) महासामन्त विष्णुरमका शासन था, तब जिस स्तम्भपर यह लेख खुदा हुआ है वह आचार्य कमलदेवके शिष्य श्रीदेवके द्वारा श्री शान्तिनाथ मन्दिरके पास बनवाया गया था और यह विक्रम सं० ९१९ के आश्विन सुदी १४, बृहस्पतिवारके दिन उत्तर भाद्रपदा नक्षत्रके योगमें बनकर तैयार हुआ था। बनानेवालेका नाम गोष्ठिक[3] वाजुआगगाक था। इसके अतिरिक्त, अन्तिम पंक्ति शक संवत्, अक्षरो और अङ्क दोनोंसे, ७८४ का निर्देश करती है।]

[EI, IV, n° 44, A]

१२९

वड्नगर—संस्कृत।

[सं० ९३२=८७५ ई०]

१ नर प्रसिद्धम् श्री * * * क राज्ये यदु-कुल म्ल कु *
२ क्ल्यत्रयिविग्घनो तलक्षेत्र भिर्व्विभावित अह्नोदेः श्री *
३ दिग्व्हागो धनपतेः ककुभि निर्पि मार्ग्गः अस्य मुदद्धन् *
४ मिमस्य शशाङ्क तपनस्थितेः उमनेय नवहट्टक।

१ '०त्रेऽय स्तम्भ- समाप्त इति' ऐसा पढो। २ '-भूतेनाय स्तम्भो घटित इति' पढो। ३ प्रो० बूल्हरकी रायमे 'गोष्ठिक' लोग धर्मदानोंका प्रबंध करनेवाली समितिके सदस्य थे, जिनको आजकलकी भाषामें 'ट्रस्टी' कह सकते हैं।

५ स्यम् स ९३३ वैशाखो सुदि १४ ।।[†]

[पथारिसे दक्षिणकी ओर करीब ३ मीलपर ज्ञाननाथ पर्वतकी तलहटीमें एक झीलके किनारे बारो या बडनगरके ध्वसावशेष सुन्दर रीतिसे अवस्थित है। वहाँपर एक 'गडर-मर' नामका मन्दिर है, जो कि किसी गडरियेका बनवाया हुआ था।

इस गडरमर मन्दिरकी पश्चिम दिशासे छोटे-छोटे जैन मन्दिरोका एक समूह है। उसके चतुष्कोण प्राङ्गणके बाहर एक चतुष्कोण छोटे पत्थरपर उक्त शिलालेख मिला था।]

[A Cunningham, Reports, X, p 74]

१३०

सौंदत्ति—संस्कृत तथा कन्नड।

[शक ७९७=८७५ ई०]

लेख

द्वादशग्रामाधिष्ठानस्य **सुगन्धवर्त्ति**सम(सम्य)ग्धिनि ।। ग्रामे **मूळगुन्दा**ख्ये । **सीवटे** पद्ध निवर्त्तन । देवस्य (ख) चि(गु)खे दत्त । नमश्य (स्य) **कन्न**भूभुजा ।। तस्य दक्षिणे भागे । तिन्तिणीवृक्षयोर्द्वयो. । मध्ये या स्थिता भूमिद्व (र्द) त्ता श्री**कन्न**भूभुजा । **सुगन्धवर्त्तिय** सीमेयिन्द पदु (डु) वल् पिरियकोल्ल् मत्तर् ६ ।।

श्रीमतपरमगम्भीरस्याद्वादामोघलाछन [।] जीयात्त्रै(त्रै)लोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ।। श्रीमन्**मैळाप**तीर्थस्य गणे **कारेय**नामनि [।] बभूवोग्रतपोयुक्तः मूलभट्टारको गणी ।। तच्छिष्यो गुणवान्सूरिः

---

† दुर्भाग्यसे यह लेख दोनों ओर (प्रारम्भ और अन्तमे) अधूरा ही है, इसलिये कनिंघम साहब इधर-उधर कुछ शब्दोंकी पूर्तिके बजाय इसके पूर्णरूपसे समझनेमे असफल रहे है। अतएव इसका विशेष साराश भी नही दिया जा सका।

गुणकीर्त्तिमुनीश्वर॰ [।] तस्याथार्सी (सीदिं)**द्रकीर्ति**स्वामी काममदापहः ॥ तच्छात्रः **पृथ्वीरामः** लक्ष्मीरामविराजित: [।] सत्परत्नप्ररोहाद्रिः (मे)चडस्याग्रनन्दनः ॥ श्रीकृ**ष्णराज**देवस्य लक्ष्मीलक्षितवक्षसः [।] नम्रभूपालवृन्दस्य पादाम्बुर्ह(रुह)सेवक ॥ यस्य वालप्रतापाग्निज्वालानिकरशोपितरससमुद्री (द्र) त्पासुहृद्दर्प्परसो निश्शेपको यथा । यस्य राजन्वती भूमिर्जितानन्दकरैः करै॰ [।] राज्ञो यो धीमतो नीतिमार्गी दुर्ग्गभयकर. ॥ यस्य सक्रीडते कीर्तिहसी लोकसरोवरे [।] यद्वाल्य प्रश्र(स्र)न जात प्रणतारातिभूपते॰ ॥ **सप्तस(श)त्या नवत्या च समायुक्त (क्ते) स (पु) सप्तपु** [।] स(श)ककालेश्व (ष्व) तीतेपु **मन्मथा**ह्वयवत्सरे ॥ ग्रामे **सुगन्धवर्त्ता**ख्ये तेन भूपेन कारित [।] जिनेन्द्रभवनं दत्त तस्याष्टदशनिवर्त्तन ॥ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ (भ) महाराजाधिराज (ज) परमेश्वर (र) परमभट्टारक **राष्ट्रकूट**कुलतिलकं श्रीमत्कृ**ष्णराजदेव**विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतार वर सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्दमहासामन्त वीरलक्ष्मीकान्त विरोधिसामन्तनगेवज्रदण्ड विद्वज्जनकमलमार्त्तण्ड सुभटचूडामणि भृत्यचिन्तामणि श्रीमन्महासामन्तेन **पृथ्वीरामेण** (न) स्वकारितजिनेन्द्रभवनाय चतुर्पु स्थलेषु स्थितमष्टादशनिवर्तन सर्व्वनमश्य (स्य) दत्त ॥ पृथ्वीरामेण (न) यद्दत्त निवर्त्तन कार्त्तवीर्येण भूय. स्वगुरवे दत्त सर्ववादा (धा) विवर्जित ॥ सूर्योपरागसक्रान्तौ (तौ) **कार्तवीर्य**प्रकान्तया । श्रीभागला(ला)विकादेव्या नमश्य (स्य) कृतमजसा ॥

[सौंदत्तिमे जिसका पुराना नाम सुगन्धवर्ती है, एक छोटे जिनमन्दिरकी बाईं ओर दीवालमें जडे हुए पापाण-शिलापरसे यह लेख लिया गया है। लेखमे अनेक विशेष दान है। यह बहुत-कुछ राजाओंकी वशावलीका

हाल भी बताता है। हम देखते हैं कि रट्टोंमें प्रथम जिसने कि प्रमुख अधिकारी होनेका पद पाया था मेरडका पुत्र पृथ्वीराम था। उसको यह प्रमुख अधिपति होनेका पद राष्ट्रकूट राजा कृष्णकी अधीनतामें मिला था। इससे पहिले वह पूज्य ऋषि मैलापतीर्थके कारेय गणमें सिर्फ एक धार्मिक विद्यार्थी था। इस शिलालेखमें कृष्णराजदेवकी उपाधियाँ चालुक्य राजाओंके समान ही हैं तथा चक्रवर्तीकी उपाधिया हैं, और हम यह भी देखते हैं कि शक ७९८ में[1], जो मन्मथ संवत्सर था सुगन्धवर्त्तिसे उसने एक जिनमन्दिर बनवाया, और इसके लिये १८ 'निवर्तन' भूमि दी। किन्तु यह लेख किसी उत्तरवर्ती समयसे खोदा गया होगा, क्योंकि प्रथम चार पंक्तियोंमे राजा कन्नके जो कि पृथ्वीरामके ५ या ६ पीढी आगे हुआ है, एक दानका उल्लेख आता है। यह दान सुगन्धवर्तिके मुलुगुन्दके 'सीवट' मे किया गया था।

लेखका वंशावलीका भाग लेख नं० २३७ की 'रट्टवंशोद्भव ख्यातो' पंक्तिसे शुरू होता है। प्रथम नाम नन्नका आया है। उसका पुत्र कार्त्तवीर्य था जो चालुक्य राजा आहवमल्ल या सोमेश्वरदेव प्रथमके अधीन था। सोमेश्वरदेव प्रथमका काल सर डब्ल्यू इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९६२ (ई० १०४०-१) से लेकर शक ९९१ (ई० १०६९-७०) दिया है और इसी लेखसे यह पता चलता है कि कार्त्तवीर्यने ही कुहुण्डी (जो कि उत्तरवर्ती लेखोका 'कुण्डी तीन हजार' है) की सीमाये निर्धारित की थीं। इसके बाद तीन पीढी बीतनेपर चौथी पीढीमे कार्त्तवीर्य द्वितीयका नाम आता है। यह चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लदेव, पेर्माडिदेव या विक्रमादित्य द्वितीय था।]

[JB, X, p 194-198, ins n° 2, 1st part]

१३१

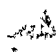
विलियूर—कन्नड।

[शक ८०९=८८७ ई०]

भद्रमस्तु जिनशासनाय (।) शक-नृपातीता (त) काल-संवत्सरगळे-

---

१ मूल लेखमें, "शक कालके ७९७ वर्ष व्यतीत होने पर" है।



न्तुनूरोम्बत्तनेय वर्ष 'प्रवर्त्तिसुत्तिरे स्वस्ति **सत्यवाक्यकोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज** कुवलाल-पुरवरेश्वर नन्दगिरि-नाथ श्रीमत्-**पेर्म्मनडिय** राज्याभिषेक गेय्द पडि नेण्टनेय वर्षदन्दु पा (फा) ल्गुण-मासद श्री-पञ्चमे यन्दु **शिवणन्दि**-सिद्धान्तद-भटारर शिष्यर् स्सर्व्व (वे) **णन्दि**-देवर्गे **पेण्णे-गडङ्गद सत्यवाक्य-जिनालय**के पेङ्गोरें-गरेय **बिळियूर्**-प्पन्निर्प्पळ्ळियुम सर्व्व-पाद-परिहार पेर्म्मनडि कोट्टो तोम् भट्टरु-सासिर्व्वरु अय्-सामन्तरु वेङ्गोरेंगरेय एलपडिम्बरु एन्तोक्लु इदके साक्षी मले-सासिर्व्वरु अय्मुर्व्वरुम (अयनूर्व्वरु) अय्-दामरिगरु इदके कापु इदनळ्ळिदो वारणासियुम सासिर्व्वर्प्पोर्व्वरुम सासिर कविले युम-नळ्ळिदोम् पञ्चमहापातकनकु **सेदोज**न लिखित्त '(त) **बेळियूर** ऐम्बङ्गु-गद्याण पोन्नू एण्टु-नूरु-वट्टमु तेरुवोम् ।

[यह दान शकवर्ष ८०९ के चालू रहते हुए फाल्गुन महीनेके पाँचवें दिन, जिस वर्ष पेर्म्मनडिके राज्याभिषेकका १८ वा वर्ष चालू था, उन्होने शिवनन्दि सिद्धान्त- भट्टारके शिष्य सर्व्वनन्दि-देवको पेङ्गोरेंगरेके अन्तर्गत बिलियूरके १२ छोटे गाँव, हमेशाके लिये लगान वगैर. से मुक्त करके, दिये । यह दान पेन्ने कडङ्गके सत्यवाक्य जिनचैत्यालयके लिये दिया गया था । ऐसा दीखता है कि 'सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज' पेर्म्मनडि-की ही उपाधि या विरुद है । ये दोनो एक ही व्यक्ति है, अलग-अलग नहीं । ये कुवलाल-पुरके प्रभु तथा नन्दगिरिके नाथ थे ।

आगे लेखमे साक्षियो तथा सरक्षकोका परिचय है । इस दानको भङ्ग करनेवालेको अमुक-अमुक पापका भागी बताया है । यह लेख सेदोजका लिखा हुआ है ।

बिलियूर की आमदनी ८० गद्याण सोना और ८०० (नाप) तन्दुल (चावल) की है ।]

[EC, 1, coorg ins, n° 2]

१३२

हुम्मच—कन्नड।

शक ८१९=८९७ ई०

[हुम्मचसे गुड्डद बस्तिकी बाहरी दीवालपर]

स्वस्त्यनवद्य-दर्शन महोग्र-कुल-तिलक नय-प्रताप-सम्पन्न पर-चक्र-गण्ड गोण्ड बल्लात कार्म्मुक-राम श्रीमत्-**तोलापुरुष-विक्रमादित्यशान्तरं** शक-वर्ष येण्टनूर् यिप्पत्तनेय वर्ष प्रवर्त्तिसुत्तिरे श्रीमत्-कोण्डकुन्दान्वयद **मोनि-सिद्धान्तद-च (भ) टारर्गे** कल्ल बसदिय माडिसियदके पोम्बुळ्चद (यहाँ दानकी विशेष चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव आते हैं)।

इष्टनोर्व्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम् ।
दुष्टनोर्व्वनदर फलव तवे तिम्बवम् ।
सिष्टिमेले परमात्मने वन्द्. . ।
कष्टव् .विढिरन्ते कुल-क्षय मागुगुम् ॥

[स्वस्ति। जिनका दर्शन (मत) अनवद्य (निर्दोष) है, महोग्र-कुल-तिलक, न्याय करनेमें प्रसिद्ध, विदेशी राज्योंके शूरवीरोंको पकडनेमें चतुर, धनुषको पकडनेवाले रामकी तरह दिखनेवाले, तोलापुरुष विक्रमादित्य-शान्तरने, (उक्त मितिको), कोण्डकुन्दान्वयके मोनि-सिद्धान्त-भट्टारके लिये एक पाषाणकी बसदि बनवाई, और इसके लिये (उक्त) दान किये। शापात्मक श्लोक।]

[*EC*, VIII, Nagar tl, n° 60]

१३३

वल्लीमलै (जिला नार्थ आर्कट)—कन्नड।

[बिना काल-निर्देशका]

१ स्वस्ति श्री [:] [॥] **शिवमार**-आत्मजा (ज)-वरना प्रवर-श्रीपुरुषनाम–

२ नातन ननय । भुवनीश रणविक्रमनवन मक (ग) न् रा–

३ जमल्लन् अमलिनचरितन् [॥ १] कण्डु गिर [ि] वरमना भूम–

४ डलपति राजमल्लन् अभयनुदारम् [।] पण्डितजन–

५ प्रिय केय्–कोण्डान् कोण्डन्ते वसतियम्माडि–

६ सिदान ॥ [२]

अनुवाद—(श्लोक १) शिवमारके पुत्रोंमें सबसे अच्छा पुत्र श्रीपुरुष नामका (राजपुत्र) था। उसका पुत्र लोकप्रभु रणविक्रम हुआ। उसका पुत्र अमलचरित राजमल्ल हुआ।

(श्लोक २) इसको सबसे अच्छा पर्वत समझकर, भूमण्डलपति, अभय एवं उदार तथा पण्डितजनप्रिय राजमल्लने इसे अपने अधिकारमें कर लिया, और तत्पश्चात् इसपर एक वसति (मन्दिर) बनवाई।

[EI, IV, n° 15, A]

१३४

चल्लीमलै—कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका]

(यह लेख दाहिनी तरफसे पहली प्रतिमाके नीचेका है)

१ स्वस्तिश्री [।।] बालचन्द्र-भटारर

२ शिष्यर् अज्जनन्दि-भटारर्

३ माडिसिद प्रतिमे गोवर्धन्

४ भटाररेन्दोडमवरे [।।]

अनुवाद—यह प्रतिमा भट्टारक बालचन्द्रके शिष्य भट्टारक अज्जनन्दि (आर्यनन्दि) के द्वारा बनवाई गई; और प्रतिमा 'गोवर्धन भट्टारक' की है।

[EI, IV, n° 15, D]

१३५

वल्लीमलै—कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका]

ब—यह लेख बाईं तरफसे दूसरी प्रतिमाके नीचेका है।

श्री [॥] अज्जनन्दि-भटारर् प्र [ति] म [ं] म [ा] ड [ि] दा [र्] [॥]

अनुवाद—स्वस्ति। भट्टारक या भटार अज्जनन्दि (आर्यनन्दि) ने (इस) प्रतिमाको बनाया।

[EI, IV, n° 15, B]

१३६

वल्लीमलै—कन्नड।

[बिना काल-निर्देशका]

१ स्वस्ति श्री [॥] बाणरायर

२ गुरुगळप्प भवणन्दि-भ—

३ टारर शिष्यरप्प देवसेन—

४ भटारर प्रतिमा [॥]

अनुवाद—स्वस्ति श्री। यह प्रतिमा भट्टारक देवसेनकी है। ये देवसेन बाणरायके गुरु भट्टारक भवणन्दि (भवनन्दि) के शिष्य है।

[EI IV, n° 15 C]

१३७

मूलगुण्ड (जिला धारवाड); संस्कृत।

शक ८२४=९०२ ई०

लेख

श्रीमते महते शान्त्यै श्रेयसे विश्ववेदिने [।] नमश्चन्द्रप्रभाख्याय जैनशासनवृद्धये [॥] शकनृपकालेष्टशते चतुरुत्तरविंशदु (त्यु)

त्तरे संप्रगते **दुन्दुभिनामनि** वर्षे प्रवर्त्तमाने [।] जनानुरागोत्कर्षे श्रीकृष्णवल्लभनृपे पाति मही विततयशसि सकला तस्मात् पालयति महाश्रीमति विनयाम्बुधिनाम्नी धवळविषय सर्वे [।] तस्मिन् **मुळगुन्दा**-ख्ये नगरे वरवैश्यजातिजात (त.) ख्यात **चन्द्रार्य्यस्**तत्पुत्र-**श्चिकार्य्यो** चीकर (रत) जिनोन्नतभवन तत्तनयो **नागार्य्यो** नाम्ना [।।] तस्यानुजो नयागमकुशल **अरसार्य्यो** दानादिप्रोद्युक्तस-म्यक्त्वसक्तचित्तव्यक्त· [।।] तेन दर्शनाभरणभूषितेन पितृकारितजिनाल-याय चन्दिकवाटे शेनान्वयानुगाय नरनरपतियतिपति**पूज्यपादकुमार-शे(से)नाचार्य**मी (मे) **खवीरशे** (से) नमुनिपतिशिष्य**कनकशे** (से) नसूरिमुख्याय **कन्दवर्ममाळक्षेत्रे** ए (ऐ) (छे) कमणिव-कनकुळार्य्ये (? य्ये) (र्य्ये) क···बम्मानाहस्तात्सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्रं द्रव्यसिन्दु (धु) ना गृहीत्वा नगरमहाजनविदेशे दत्त [।।] तज्जिना-लयाय त्रिशतषष्टिनगरै चतुर्भिः श्रेष्ठिभि. **पिळ्ळग** (छे) **क्षेत्रे** सह-स्रावल्लीमात्रक्षेत्र दत्त [।।] तज्जिनभवनाय विंशतिमहाजनानुमताद्बेळ्ळ-चिकुलब्राह्मणैश्च **नन्कन्दवर्म्ममालक्षेत्रे** सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्र दत्त [।।] एवं त्रीण्यपि नागवल्लिक्षेत्राणि सर्वाबाधा

[यह शिलालेख जिस पत्थरके टुकडेपर है वह धारवाड जिलेके डम्बळ-तालुकाके मूलगुण्डकी दीवालमें लगा हुआ है। इस टुकड़ेका शेष अश अभीतक नहीं मिला है। मगर सौभाग्यसे इसी बचे हुए टुकड़ेमें लेखका महत्त्वपूर्ण भाग आ जाता है। लुप्त भागमें सिर्फ थोडे-से अन्तिम वे ही श्लोक हैं जिनमें लेखके रक्षण और मिटानेपर क्रमशः अनुग्रह (पुण्य) और शापका वर्णन मिलता है । लेख पुराने टाइपके प्राचीन कनड़ीके अक्षरोंमे खुदा हुआ है। ये प्राचीन कनड़ीके अक्षर गुफा-वर्णमाला (Cave-alphabets) से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं।

यह लेख धारवाड जिलेके मूलगुण्डमें वैश्य जातिके चन्द्रार्यके पुत्र चीकार्यके द्वारा एक जैनमन्दिरके निर्माणका तथा उस मन्दिरको तरफसे कुछ भूमिदानका उल्लेख करता है। यह निर्माण और दान दुन्दुभि संवत्सर शक ८२५ में† किया गया था। उस समय राजा कृष्णवल्लभ राज्य कर रहे थे। लेखगत 'धवल' जिलेसे देशके किस भागसे मतलब है, यह स्पष्ट नहीं है। यद्यपि यह लेख लघु है, पर महत्त्वपूर्ण है। इसमें सन्देह नहीं है कि इस लेखका 'राजा कृष्णवल्लभ' वही है जो राष्ट्रकूट या रट्ट कुलके राजा कृष्णराजदेव हैं और जो इसी पुस्तकके शिलालेख नं० १३० के अनुसार शक ७९८में राज्य कर रहे थे। बादके अन्य शिलालेखोंमें इन्हें ही रट्टवंशका प्रथम राजा कहा गया है।

पूर्ववर्ती चालुक्य राजाओंके उत्तराधिकार और कालके विषयमें बहुतसे सन्देह उत्पन्न होते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि उनमेंसे तीन चालुक्य राजा राष्ट्रकूट युवराजोंके साथ बहुत ही सीधे और घातक संघर्षमें आये हैं। वे तीन राजा जयसिंह प्रथम, तैलप प्रथम और तैलप द्वितीय थे। राष्ट्रकूटवंश और चालुक्यवंशके पूर्ववर्ती राजाओंकी वंशावली यदि काल-सहित संग्रह की जाय तो वह इस विषयमें बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।]

[JB, X, p 190-191, ins n° 1]

१३८

क्यातनहल्लि—कन्नड।

[विना काल-निर्देशका (संभवत. लगभग ९०० ई०)]

भद्रमस्तु जिनशासनायानवरत · दखिलसुरासुरनरपतिमौलि-माला · णारविन्द-युगल शरवळ-श्रीराज्य-युवराज [रप्प भद्र] बाहु-चन्द्रगुप्त-मुनिपति-चरण-मुद्राङ्कित-विशाळशि मान-जगल्ल-ता(ला)मायितश्रीकल्वप्पु-तीर्त्त-सनाथ-बेल्गोळ-निवासि- · · श्रवण-सङ्घ-स्याद्वादाधारभूतरप्प श्रीमत्स्वस्ति सत्यवाक्यकोङ्गणि-[व]-र्म्म-

---

† मूलमें "शक राजाके कालमें ८२४ वर्ष व्यतीत होनेपर" ऐसा पाठ है।

वरेदोम् **नागवर्म्म** देवारके कोट्ट केय् ग अवुतवूरगँ कालान्तरदोळ् मोह-सन्दोम् पञ्च-महा-पातकनक्कु

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।

(बाजूमें) ई-कल्ल **सन्दिगर** कुळि···**मुद्दन्** निरिसिदोम्···· **वेलेयम्मन** मगम्

[जब प्रजापति संवत्सर शक वर्ष ८३४ में, महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक कन्नर-देवका राज्य प्रवर्धमान था,—जिस समय कालिक देव-रसर्-अन्वयके महासामन्त कलिविट्टरस वनवासि १२००० का शासन कर रहे थे,—नागरखण्ड सत्तरके 'नाळ-गावुण्ड' के पदको धारण करने-वाले सत्तरस नागार्जुनके मर जानेपर राजाने जक्कियब्बेको आवुतवूर और नागरखण्ड-सत्तर दे दिया। जक्कियब्बेने भी जक्कलिमें मन्दिरके लिये ४ मत्तल चावलकी भूमि दी। एक बीमारीके समय उसने शक, सं० ८४० में, बहु-धान्य वर्षमे, पूर्ण श्रद्धासे वसदिमें आकर समाधिमरण ले लिया।]

१४१

गिरनार—संस्कृत-भग्न।

(काल लुप्त)

[यह लेख नेमिनाथ मन्दिरके दक्षिण तरफके प्रवेशद्वारके पासके प्राङ्गणके पश्चिम दिशाकी तरफके एक छोटे मन्दिरकी दीवालपर है। पाषाण टूटा हुआ है।]

॥ स्वस्ति श्रीधृति

॥ नमः श्री**नेमिनाथाय** ज

॥ वर्षे फाल्गुन शुदि ५ गुरौ श्री

॥ तिलकमहाराज श्री**महीपाल**

॥ **वयरसिंह**भार्या **फाउ**सुतसा

॥ सुतसा० **साईआ** सा० **मेलामेला**

॥-जसुतारूडीगांगीप्रभृती
॥ नाथप्रासादा कारिता प्रतिष्ट
॥ ··· द्रसूरि तत्पट्टे श्रीमुनिसिंह
॥ ···· · ·····कल्याणत्रय

अनुवादः—स्वस्ति श्री श्रति··· · ······श्री नेमिनाथको नमस्कार... ...वर्ष......फाल्गुन सुदी ५, बृहस्पतिवार, श्री ·· · ·····श्रीमहीपाल, महाराज और·········· के तिलक.. . .फाऊ नामकी वयरसिंहकी भार्या, उसका पुत्र माननीय ····· उसके पुत्र माननीय साईआ और मेलामेला········ · उसकी पुत्रियाँ रूडी, गागी इत्यादि। इन सबने एक नेमिनाथका मन्दिर बनवाया —जिसकी प्रतिष्ठा . . ..द्रसूरिके पट्टपर विराजमान श्रीमुनिसिंहने की ·· ····· ·····कल्याणत्रय ·।

[ASI, XVI, p 353-354, n° 11

१४२

सूदी (जिला-धारवाड़) संस्कृत और कन्नड़ ।

शक सं ८६०=९३८ ई०

लेख

पहला ताम्रपत्र

१ श्रीर्व्विभाति सुवि (धी)र्म्यस्य निरवद्य [।] निरत् (य्) अया तस्मै नमोऽर्हते

२ लोक-हित-धर्म्मोपदेशिने ॥ जित [-] भगवता [गत]-घनग-[ग]नाभे-

३ न पद्मनाभेन [॥] श्रीमज्जाह्नवीय-कुला[म]ल-व्योमावभासन-भास्करः ॥

४ स्व-खड्गैक-प्रहार-खण्डित-महा-शीलास्तम्भ-लब्ध-बल-पराक्रमो दारुणा–
५ रि-गण-विदारणोपलब्ध-ब्र (व्र)ण-विभूषण-भूषितः क[ा]ण्वा-
६ यन-सगोत्र [:] श्रीमत्-**कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म**महाराजाधिराज' [।।]
७ तत्पुत्रः । पितुरन्वागत-गुण-युक्तो । विद्या-विनय-विहित-वृत्तिः
८ सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्रा-वि(धि)गत-राज्य-प्रयोजनो विद्वत्-क-वि-का–
९ ञ्चन-निकषोपळ-भूतो नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृ-कुशलो दत्तक-
१० सूत्र-वृत्ते(:)-प्रणेता श्रीमन्**माधव**महाधिराजः ।(।।) ओं तत्पुत्र[:] पितृ-पैता-
११ महगुणयुक्तोऽनेक-चा(च)तु[ ] दन्[त]अ-युद्ध[ा]वाप्त-चतु-

द्वितीय ताम्रपत्र, दूसरी बाजू

१२ रुदधि-सलीलाश्वादित्यशाह श्रीम[ा]न् **हरिवर्म्म**-महाधिराजः [।।]
१३ तत्पुत्रः श्रीमान् **विष्णुगोप** मह[ा]धिराजः [।।] ॐ तत्पुत्र.
१४ स्व-भुज-बळ-पराक्रम-क्रय-क्र[ी]तराज्यः कलियुग-बळ-पङ्काव-
१५ सन्न-धर्म्म-वृषोद्धरण-निते(त्य)सन्नद्धः श्रीमान् **माधव**-महाधिराजः। (।।) ओं
१६ तत्पुत्र[:] श्रीमत्-कदम्ब-कुल-गगन-गभस्तिमालिनः । **कृष(ष्ण)वर्म्म**-स(म)-
१७ हाधिराजस्य प्रिय-भागिनेयो विद्या-विनय-पूरिता-
१८ न्तरात्मा निरवग्रह-प्रधान-शौर्य्यो विद्वत्पु प्रथम-गण्य[:]श्रीमान्

१ 'विद्वत्सु' पढ़ो।

१९ कोङ्गुणिवर्म्म-ध (ध)र्म्ममहाराजाधिराज-पु(प)रमेश्वरः श्रीमद्-अविनीत-प्रथम-

२० नामज (धे) य [॥] तत्पुत्रो विजृम्भमाण-शक्ति-त्रय. अन्द्-रि-आलत्तूर-पुरुळरे-पेर्ण्ण-

२१ गराद्यनेक-समर-मुख-मख-ह(यु)त-प्रहत-शूरपुरुप-पशूप-हार-विघ-

२२ स-विहस्ति(स्ती)कृत-कृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयस्य पञ्चदश-सर्ग-टीकाकार[ः]

दूसरा ताम्रपत्र, दूसरी बाजू

२३ श्रीमद्-[द]ुर्विनीत-प्रथम-नामधेयः [॥] ओ तत्पुत्रो दुर्दान्त-श(वि)मर्द-मृदिते(त)-विश्व[ ]भरा-

२४ रि(धि)प-मो(मौ)लि-माल(ा)-मकरन्द-पु[ ]ज-पि[ ]जरीक्ष (क्रि)-यमाण- चरणयुगल-नलिन श्री [मुष्क]र-

२५ प्रथम-नामधेय' । [॥] ओ तत्पुत्रश्चतुर्दशविद्यास्थानाधिगतेरमल-मतिर्व्विशेपतो [नि] र-

२६ वशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्[तृ]-प्रया (यो) क्तृ-कुशलो रिपु-तिमिर-निकर-सरकरुणोदय-भा-

२७ स्कर श्री-विक्रम-[प्र]थम-नामधेय [॥] ओ तत्पुत्रा(त्रो)ऽनेक-समर-सप्राप्त-विजय-

२८ लक्ष्मी-लक्षित-वक्षस्थल. समधिगत-सकल-शास्त्रार्थ[ः]श्री-भूवि-क्रम-प्रथम-

२९ प्रथम[1] -नामधेय. [॥] ओ तत्पुत्रः स्वकीय-रूपातिशय-विजी-(जि) त-नल-भूपा-

१ इस शब्दकी अनावश्यकरूपसे पुनरावृत्ति हुई है ।

३० कारादिशवमा[र-प्रथम-ना]मध[ ]यः [।।] ओं तत्पुत्रः प्रतिदिन-प्रवर्द्धमान-महादान-जनित-पुण्यो

३१ हलुळ-मुखरित-मन्दरोदराः श्री कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधि-राज-परमेश्वरः

३२ श्रीसु(पु)रुप-प्रथम-नामधेयः।(।।) तत्पुत्रो विमल-ग[ ]गान्वय-नभ[:]स्थलः र(ग)भस्तिमाली श्रीको–

३३ गुणिवर्म्म-दा(ध)र्म्ममहाराजाधिराज-परमेश्वरः श्री श[ ]व–मारदेव-प्रथम-नामधेयः ।

३४ शैगोत्तापरनामा [।।] तस्य कनीयान् श्री-विजयादित्यः। (।।) र (त)त्पुत्रस्समधिगत-राज्य-

३५ लक्ष्मी-प(स)मालिङ्गित-वक्षः सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्मम-हाराजाधिरा-

तृतीय ताम्रपत्र; पहली बाजू

३६ ज-परमेश्वर[:]श्री-राजमल्ल(ल्ल)-प्र[थ]म-नामधेयस्तत्पुत्रः रामति-(? दि)-समर-संहा-

३७ लिप(रि)तोदार-वैरि-वि(वी)रपुरुषो नीतिमार्ग्ग-कोङ्गुणि-वर्म्म-धर्मराजाधिराज-परमेश्वर[:]

३८ श्रीमद्-एळे(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेय:[।।]ओ तत्पुत्रः सामिय-समर-सञ्जनित-विज-

३९ [य]श्रीः श्री-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-श्वर[:] श्री-राजमल्ल-

४० प्रथम-नामधेय. । (॥)ओ तसु(स्य)कनीयान् निर्ल्लोरि(ठि)तं-पल्लवा-
धिपः श्रीम[द]मोघवर्षदेव

४१ पृथ्वीवल्लभ-सुतया[2] श्रीमद्व्बलव्बायाव्हु(या.) प्राणेश्वर[:]
श्रीबूटुग-प्रथम-ना-

४२ मधेयः गुणदुत्तरङ्गः। (॥) ओ तत्पुत्रः । एळे(रे)यप्प-पट्टबन्ध-
परिष्कृत-ल्ला[मो]ज(? वं)-

४३ टेप्पेरुपेञ्जेरु-प्रभृति-युद्ध-प्रबन्ध-प्रकवि (टि) त-पल्लर(व)पराजय[.]
श्री-[नी]त[ि म्]ार्ग-

४४ रंगिणिवर्म्म-र(ध)र्म्ममहाराजाधि(धि)राज-परमेश्वर[ ] श्रीमदेळे
(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेय.

४५ कोमर-वेडेङ्गः ।(॥)ओ तत्पुत्र[:]श्री-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-
महाराजाधिराज-परमेश्वर[ ]

४६ श्रीमन्नरसि[ ]घदेव-प्रथम-नामध[े]य वी(वी)रवेडङ्गः॥ ओं
तत्पुत्रः कोट्टमरद

४७ तोण्णिरग-श्री-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-
श्वर[:] श्री-र[ाजम]ल्ल-

४८ प्रथम-नामधेयः । कच्छेय-गङ्गः । (॥) ॐ त्रि(त्रि) [॥]
तस्यानुजो निजभुजार्जित-सम्पदार्थो

तृतीय ताम्रपत्र; दूसरी बाजू.

४९ भूवल्लभ [-] समुपगम्य ल(ड)हाड़देशे श्री-बद्देग तदनु त-

५० स्य सुता सहैव वाक्कान्यया व्यवहद्दुत्तवि (म)-धीस्त्रिपु-

१ 'निर्ल्लण्ठित' और भी शुद्धरूप होगा। २ 'सुताया' पढ़ो।

५१ र्य्या [।।] अपि च ।। लक्ष्मीमिन्द्रस्य हर्त्तुं गतवति दिवि यद् **वोद्देगाङ्कि** (के)

५२ महीशे ह [ ]त्वा ल [ल् ?] एय-हस्त्यात्करि-तुरग-सितच्छात्रं[1]नि (सिं)-

५३ हासनानि । प्रा[दा]त् **कृष्णाय** राज्ञे क्षित [ि]-पति-गणनाग्र-

५४ ग्रणीर्य्य(:)प्रतापात् राजा श्री-**बूटुगा**ख्यस्समजनि विजि-

५५ ताराति-चक्रः प्रचण्ड. ।। कश्चातः किन्न[2] **नागादळचपुर**-पति·

५६ **कक्कराजो**ऽन्तकस्य **विज्ञा**ख्यो **दन्तिवर्म्मा** युनि (धि) निज-**वनवासी** त्व-

५७ म **राजवर्म्मा** शान्तत्व शान्तदेशो **तुळुवु**-गिरि-पतिर्द्दाम-रिर्द्दर्प-भङ्ग [–]

चतुर्थ ताम्रपत्र, पहिली बाजू

५८ मध्येऽन्त **नागवर्म्मा** भयमतिरभसाद् **गङ्ग-गाङ्गेय**-भू-

५९ पात् ।। **राजादित्य**-नरेश्वर गज-घटाटोपेन सदर्प्पित (म्)

६० जित्वा देशत एव गण्डुगमहा निद्धोव्य[3] **तज्ञापुरीं नाळ्कोटे**-

६१ प्रमुखाद्रि-दुर्ग्ग-निवहान् दग्ध्वा गजेन्द्रान् हयान् **कृष्णा**·

६२ **य** प्रथितन्धन स्वयमदात् श्री-**ग[–]ग-नारायणः** [।।]

६३ आर्य्या ।। एकान्तमत-मदोद्धत-कुवादि-कुम्भीन्द्र-कुम्भ-सम्भेद ।। (।)

६४ नैगम-नयादि-कुलिशैरकरोज्जयदुत्तरङ्ग-नृपः ।। गद्यम् ।।

६५ **सत्यनीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म**-धर्म्ममहाराधिराज-परमेश्वर [.]

---

१ 'सितच्छत्र' पढ़ो । २ सभवत यह पाठ 'किञ्चात किन्नु' रहा होगा । ३ 'निर्द्धाव्य' पढो ।

चतुर्थ ताम्रपत्र, दूसरी वाजू

६६ श्री-बूतुग-प्रथम-नामधेयो **नन्निय-गङ्गः** पण्णवति-
६७ सहस्रमपि **गङ्ग-मण्डल [म्]** प्रतिपाळ्या(य)न् **पुरिकर**-पुरे क्र-
६८ तावस्थान (:) स (श) क-वरि [श]ऀपुं पञ्चुत्तराष्ट[श] तेपु अतिक्रान्तेपु विका-
६९ नि(रि)-संवत्सर-का[ ] त्त[ि] क-नन्दीस्व (श्व)र-सु(शु) क्ल-पक्षः अष्टम्यां आदित्यवारे
७० [स्वक] ीय-प्रियाया. सम्यग्द[ ]शन-विशुद्धतया प्रत्यक्ष-धै-(दै)
७१ वत्या. श्रीमद्दीवलाम्बिकाया. चैत्यालयाय **सुल्धाटवी**-स-
७२ **प्रति-ग्राम-मुख्य-भूतायान्नगर्य्या सून्द्यां** विनिर्मापिता-
७३ य खण्ड-स्पु(स्फु)टित-नवकर्म्मार्त्थं पूजाकरणार्त्थमाहारार्त्थं
७४ च पट् श्रा(श्र)मण्यो जनान् दानसन्मानादिना सन्तर्प्योत्तर-दिशाया

पाँचवाँ ताम्रपत्र

७५ राजमानेन दण्डेन पट्टि-निवर्त्तन श्रीमद्वाडि(? टि)युर्गण-मुख्य-
७६ स्य नागदेव-पण्डिताये[2] स[य]मेव पादो (दौ) प्रक्षाल्व(ल्य) **सून्द्यां** दत्तवान् [॥]
७७ तस्याघट[3] पूर्व्वत. मानसिंग-केय्-दक्षिणतः पन्नसिनभूमिः प-
७८ श्चिमत. के (? को)प्परपोलमुत्तरतः वाल्गेरिय वन्द पल्ल[॥] अरुवण गद्या-
७९ ण-त्रय ग्रामो दीयते[4]ऽशेप-क्रम ग्रामो रक्षति ॥

१ 'वर्षेपु' इति शुद्धपाठ । २ 'पण्डितस्य' पढ़ो । ३ 'आघाटा' पढ़ो । ४ 'ददात्यशेष' पढ़ो ।

८० सामान्योऽयं धर्म्म-सेतु[र्]नृपानां काले-काले पालनीयो भवद्भि-
स्सर्व्वानि-

८१ तान् भाविनः पार्थिवेन्द्रो (न्द्रान्) भूयो-भूयो याचते रामभद्रः ॥
बहुभिर्व्वसु-

८२ धा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि [:] यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य
तस्य तदा फलम् ॥

८३ सुल्वाटवी-सतति-मुख्य-सून्दामचीकर[1]जैन-गृहं प्रसिद्ध पद्-ग्रामणी-

८४ ष्टि-विधान-पूर्वं श्री दीवळ(1)म्बा जगदेकरम्भा । (॥)

ॐ । ॐ । ॐ

[J. F Fleet, EI, III, n° 25, f, S, t et tr]

भावार्थ

[यह शिलालेख अप्रेल, १९९२ ई० मे जे. एफ फ्लीटके देखनेमे आया। उन्होंने ही इसे, सबसे पहले, एपिग्राफिआ इण्डिका, जिल्द ३, मे (पृ० १५८-१८४) छपाया। यह उन्हे सूदीके एक निवासीसे ताम्रपत्रों (Plates) पर मिला।

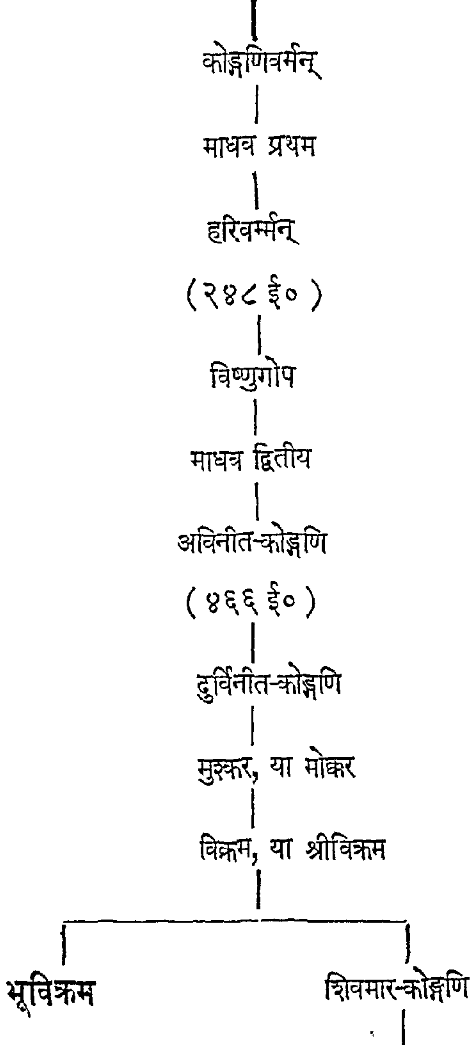
इस शिलालेखमें उस पच्छिमी गंग युवराज बूतुगका उल्लेख है जिसने चोलराजा राजादित्य और राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीयके बीचमें ९४९-५० ई० में या इससे पहले हुए युद्धमे चोल राजा राजादित्यको मार डाला था। इस अभिलेखका उद्देश्य उस जमीनके दानका लेखन है जो उसने अपनी पत्नीद्वारा सून्दी, यानी सूदीमे निर्माण कराये गये जैनमन्दिरको दी थी। उसकी पत्नी का नाम दीवलाम्बा था। यह लेखन (Record) बनावटी है।]

इस लेखपरसे फलित पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती पच्छिमी गंगोकी वंशावली इस प्रकार है —

---

१ 'अचीकरज्जैन' पढ़ो।

पूर्ववर्ती पश्चिमी गंगोंकी वंशावली



(पुत्र)
|
श्रीपुरुष-पृथिवी-कोङ्गणि
(७६२ तथा ७६६-६७ ई०)

उत्तरवर्ती पश्चिमी गंगोंकी वंशावली

भूविक्रम
|
शिमवार
|
श्रीपुरुष—कोङ्गुणिवर्मन्
|
शिवमार सैगोत्त-कोङ्गुणिवर्मन् | विजयादित्य
|
राजमल्ल-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन्
|
एरेगङ्ग-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्मन्
(रामटि या रामदिके युद्धमें विजयी था)
|
राजमल्ल-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन् (सामियके युद्धमें विजयी हुआ था) | गुणदुत्तरङ्ग-बूतुग (पल्लवराजाको लूटकर

अमोघवर्षकी कन्या अब्बलब्बासे विवाह किया)

|

कोमरवेडङ्ग-एरेगङ्ग-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्मन्

(एरेयप्पके, या द्वारा, पट्टबन्धसे उसका ललाट शोभित था; और उसने जन्तेप्परुपेझेरुमे पल्लवोको हराया था)

|

वीरवेडङ्ग-नरसिंघ-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन्

|

कच्छेयगङ्ग—राजमल्ल-नीतिमार्ग-कोङ्गणिवर्मन्

जयदुत्तरंग-गगगागेय-गगनारायण-नन्नियगङ्ग-बूतुग-सत्यनीतिवाक्य-कोङ्गणिवर्मन् (९३८ ई०)

(इसने डहाळ देशके त्रिपुरीमे, बद्देगकी पुत्रीसे विवाह किया था, बद्देग-की मृत्युपर कृष्णके लिये राज्य प्राप्त किया,—ल्लेय (?) के पञ्जेसे इसको निकाला; अळचपुरके ककराजको, वनवासीके विज्ज-दन्तिवर्मन्को, राज-वर्माको, नुळुघुगिरिके दामरिको, तथा नागवर्माको भय उत्पन्न किया; राजादित्यको जीता, तञ्जापुरीको घेरा, और नाळकोटेके पहाडी किलेको जला डाला। इसकी पत्नी दीवळाम्बा थी।)

१४३

मदनूर—(जिला-नेल्लोर) संस्कृत।

शक ८६७=९४५ ई० सन्

प्रथम पत्र।

१ भद्रं स्यात्रिजगन्नुताय सततं श्रीमज्जिनेन्द्रप्रभोरुद्दामाततशासन[ा]-

२ य विलसद्धर्म्मावलवाय च । सामर्थ्यात् खलु यस्य दुष्कालिकृता दोपाश्च मिथ्योद्भवा (।) दु-

३ वृत्तानि च भूतलेन त्रितना शान्तिश्च नित्य क्षिते[:] ॥१॥ स्वस्ति श्रीमता सकलभुवनस-

४ स्तूयमानमानव्यसगोत्राणा हारितिपुत्राणा कौशिकिवरप्रसाद-लब्धरा-

५ ज्यानाम्मातृग[ण]परिपालिताना स्वामिमहासेनपादानुध्यायिनाम् भगव-

६ न्नारायणप्रसादसमासादितवरवराहलाञ्छनेक्षणक्षणवशिकृतारातिमण्ड[ला]-[1]

७ नामश्वमेधावभृथस्नानपवित्रीकृतवपुषाम् चालुक्यानां कुलमल-कारिष्णोस्सत्या[श्र]-

८ यवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्द्धनोष्ट[ा]दशवर्षाणि वेंगि-मण्डलमपालयत् । तदात्म-

प्रथम पत्र, दूसरी ओर ।

९ जो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतम् । तदनुजेन्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्द्धनो नव । तत्सूनुर्म्मंगियुवराज-

१० ४ पचविंशतिन्तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयोदश । तदवरज[:]कोक्कि-लिष्पण्मासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता

११ विष्णुवर्द्धन[स्त]मुच्चाट्य[स]प्तत्रिंशतम् वर्षाणि[।]तत्पुत्रो विज-यादित्यभट्ट[ा]रकोष्टादश । तत्सुतो

---

१ °वशीकृता° पढ़ो ।

१२ विष्णुवर्द्धनष्षट्त्रिंशतम् । नरेन्द्रमृगराजाख्यो मृगराजपराक्रमः[।]विजयादित्य-भूपालश्चत्वारिंशत्समाष्टभिः

१३ [॥२]तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्द्धनोप्यर्द्धवर्षं । त-

१४ त्पुत्रः परचक्ररामापरनामधेय[।]हत्वा भूरिनोडंवराष्ट्रनृपतिमंगिम्महासग-

१५ रे गंगानाश्रितगंगकूटशिखरान्निर्जित्य सङ्[ह]लाधीशं संकिलमुग्रवल्लभयुन यो भ [।]-

१६ यित्वा चतुश्चत्वारिंशतमब्दकाश्च विजयादित्यो ररक्ष क्षितिं । [३] तदनुजस्य लब्ध-

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

१७ यौवराज्यस्य विक्रमादित्यस्य सुतश्चालुक्यभीमस्त्रिंशतं[।] तस्याग्रजो विजयादित्यः

१८ षण्मासान् [।] तदग्रसूनुरम्मराजस्सप्तवर्षाणि । तत्सूनुमाक्रम्य वाल चालुक्यभीममपि-

१९ युद्धमल्लस्य नन्दनस्तालनृपो मासमेकं । नाना-सामन्तवर्गैरधिकबलयुतैर्म्म-

२० त्तमातंगसेनैर्हत्वा त तालराजं विषमरणमुखे सार्द्धमत्युग्रते-

२१ जाः [।] एकाब्द सम्यगम्भोनिधिवलयवृतामन्वरक्षद्धरित्रीं श्रीमाश्चालुक्य-

२२ भीमक्षितिपतितनयो विक्रमादित्यभूपः । [४] पश्चादहमहमिकया विक्रमादित्यास्त-

२३ म [य]ने राक्षसा इव प्रजाबाधनपरा दायादराजपुत्रा राज्याभिलाषिणो युद्धमल्लरा-

२४ जमार्त्तण्डकण्ठिकाविजयादित्यप्रभृतयो विग्रहीभूता आसन् [।] विग्र—

तीसरा पत्र, पहली ओर।

२५ हेणैव पंचवर्षाणि गतानि [।] ततः [।] योऽग्रवीद [।] जमा-र्त्तण्डन्तेप[।] येन रणे कृतौ [।] क—

२६ ण्ठिकाविजयादित्ययुद्धमल्लौ विदेशगौ। [५] अन्ये मान्यमही-भृतोपि बहवो दु—

२७ ष्प्रवृत्तोद्धता (:) देशोपद्रवकारिण. प्रकटिताः कालालय प्रापिताः [।] दोर्द्दण्डेरि—

२८ तमण्डलाग्रलतया यस्योग्रसग्रामकाद्याज्ञा[1] तत्परभूभृद्भिश्च

२९ शिरसो मालेव सन्धार्य्यते। [६] नाद्यप्या विनिवर्त्तते रिपुकुलं कोपाग्निरामूल—

३० तः शुभ्र य [स्य] यशो न लोकमखिल सन्तिष्ठते न भ्रमत् [।] द्रव्याम्भोधरराशिरप्यनुदिनं

३१ सन्तप्यमाने भृश दारिद्र्योग्रनरातपेन जननासत्ये न नो वर्षति। [७] स चालुक्यभीमनाम्ना वि—

३२ जयादित्यनन्दन[।] द्वादशाब्दसमास्तम्यग् राजभीमो धरा-तलं। [८] तस्य महेश्वरमू—

तीसरा पत्र, दूसरी ओर।

३३ र्त्तेरुमासमानाकृते. कुमाराभः[।] लोकमहादेव्याः खलु यस्सम-भवदम्म[रा]—

३४ जाख्यः ॥ [९] जलजातपत्रचामरकलशांकुशलक्षणा[ङ्क]करचर-

---

1 शायद °साग्रामिकस्याज्ञा° पढ़ो।

णतलः [।] लसदाजा–

३५ न्यवलविनभुजयुगपरिघो गिरीन्द्रसानूरस्कः ॥ [१०] विदितधरा-
धिपविद्यो विविधायु–

३६ धकोविदो विलीनारिकुलः [।] करितुरगागमकुशलो हरचरणांभोज–
युग–

३७ लमधुपश्श्रीमान् ॥ [११] कविगायककल्पतरुर्द्दिजमुनिदीनान्ध-
बन्धुजन-

३८ सुरभि. [।] याचकगणचिन्तामणिरवनीशमणिर्म्महोग्रमहसा द्युमणिः
॥ [१२] गिरिरिसर्वसु–

३९ संख्याब्दे शकसमये मार्ग्गशीर्षमासेस्मिन् [।] कृष्णत्रयोदश-
दिने भृगुवारे मैत्रनक्षत्रे [॥ १३]

४० धनुषि रवौ घटलग्ने द्वादशवर्षे तु जन्मनः पट्ट [।] योवादुदय-
गिरीन्द्रो रविमिव लोका–

चतुर्थ पत्र, पहली ओर ।

४१ नुरागाय ॥ [१४] स समस्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजा-
धिराजपरमेश्वरऽपरम[भा]–

४२ न्मिकोम्मराजकम्मनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटु-
म्बिनस्सर्व्वे[।] नित्यमाज्ञापयति [।]

४३ आर्य्या[ ]। किरणपुरमधाक्षीत्कृष्णराजास्थितं यत्रिपुरमिव महे-
शऽ पा(ण्डु ?)रंग[:]प्रतापी [।] तदिह [मु]–

४४ खसहस्रैरन्वितस्याप्यशक्य गणनममलकीर्तेस्तस्य सत्साहसानाम् ॥
[१५] तस्य[ा]त्म-

४५ जो **निरवद्यधवल[:]** कटकराजपट्टशोभितललाटः [।] तत्तनयो **विजयादित्य**कट-

४६ काधिपति[ः] । वृत्त । तत्पुत्रो **दुर्ग्गराज**ऽप्रवरगुणनिधिर्द्धार्म्मिक-स्सत्यवादी त्यागी भो[गी]

४७ महात्मा समितिषु विजयी वीरलक्ष्मीनिवासः [।] **चालुक्यानां** च लक्ष्म्या यदसिरपि सदा रक्षणा[यै]-

४८ व वश[ ] ख्यातो यस्यापि **वेंगी**गदितवरमहामण्डलालवनाय । [१६] तेन कृतो **धर्म्मपु[रीद]**-

४९ क्षिणदिशि सज्जिनालयश्चारुतरः [।] **कटकाभरण**शुभाकितनाम-र्न्न[1] पुण्यालयो वसति [॥ १७]

चतुर्थ पत्र, द्वितीय ओर ।

५० [श्री] **यापनीयसंघ**प्रपूज्य**कोटिमडुवगणे**शमुख्यो यः [।] पुण्या-र्ह**नन्दिगच्छो जिननन्दि**मुनीश्वरो [थ] ग-

५१ [ण] धरसदृशः । [१८] तस्याग्रशिष्यऽप्रथितो धरायाम् (।) **दिव[ा]करा**ख्यो मुनिपुगवोभूत् [।] यत्केवलज्ञाननिधि-

५२ र्म्महात्मा स्वय जिनाना सदृशो गुणौघै' ॥ [१९] **श्रीमान्दि-रदेव**मुनिस्सुतपोनिधिरभवदस्य शिष्यो धीम[ा]न् [।] य-

५३ स्प्रातिहार्य्यमहिम्ना संप्पन्नमिवाभिमन्यते लोक. [॥ २०] तद-धिष्ठित**कटक[ा]भरणजिनालय[ा]**-

५४ य **कटकराज**विज्ञप्ते खण्डस्फुटनवकृत्याबलिप्रपूजादिसत्रसिद्ध्यर्थमु-

---

१ इस सम्पूर्ण समाससे 'कटकाभरणशुभनामाङ्कित' अपेक्षित है, जिसके रखनेसे छन्दोभङ्ग हो जाता ।

५५ त्तरायणनिमित्ते मलियपूण्डिनामग्रामटिका सर्वकरपरिहार(म्) मुदक-

५६ पूर्व्व कृत्वा दत्ता । अस्य ग्रामस्यावधय: पूर्व्वत: मुंजुन्यरु[1] ॥ दक्षिणत: यिनिमिलि ॥ पश्चि[म]-

५७ त: कल्वकुरु ॥ उत्तरत[:] धर्म्मवुरमु ॥ एतद्ग्रामस्य क्षेत्रावधय: पूर्व्वत: गोल्लनि-

५८ गुण्ठ ॥ आग्नेयत[:] रावियपेरिय ಱ वु । दक्षिणत: स्थापितशिला ॥ नैर्ऋत्या स्थ[ा] पितशिलैव [।]

पञ्चम पत्र ।

५९ पश्चिमत: मल्कप ಱ ಱ को ಱ वोयुनट[ा] कश्च ॥ वायव्यत: स्थापितशिलैव । उत्तरत. दुव[चे] ಱ वु [।]

६० ऐशान्याम् (।) कल्वकुरि ऐव्वोकचेनि सीमैव सीमा ॥

[चूंकि लेखमे एक जैनमन्दिरके दानका उल्लेख है, अत. इसका प्रारम्भ जैनधर्मके मंगलाचरणसे किया गया है। पक्ति ३ से लेकर ४१ में पूर्वी चालुक्य वशकी 'समस्तभुवनाश्रय' विजयादित्य (छटे) या अम्मराज (द्वितीय) तक की वशावली है। वंशावलीके भागमें ऐतिहासिक महत्त्वके दो स्थल हैं, पहिला (प० १३-१६) विजयादित्य तृतीयके राज्यका वर्णन करता है और दूसरे (प. २०-३२) मे चालुक्यभीम द्वितीयका अभिपेक अर्थात् राजतिलक है।

शिलालेखमे वर्णित मङ्गि नोलम्बवाडिका एक पल्लव राजा और सङ्किल दाहल (या चेदि) का प्राचीन सरदार मालूम पड़ता है। अन्तमे इस शासन (लेख) मे विजयादित्य तृतीयका एक नया उपनाम परचक्रराम (प० १४) आता है। विक्रमादित्य द्वितीयकी मृत्युके बाद बराबर पाँच वर्षतक युद्धमल्ल, राजमार्त्तण्ड और कण्ठिका-विजयादित्यमें लड़ाई होती रही। अन्तमें राजभीम (या चालुक्यभीम द्वितीय) राजमार्तण्डका वधकर, कण्ठिका-

[1] या सम्भवत. 'मुंजुन्युरु'।

विजयादित्य और युद्धमल्लको हराकर या देशनिकाला देकर व्यवस्था एवं शान्तिके स्थापनमें सफल हुआ।

उल्लिखित दान उत्तरायणमें (प० ५४) किया गया था। दानपात्र एक जिनमन्दिर था, जो धर्मपुरी (श्लोक १७) के दक्षिणमें तथा यापनीयसंघके एक मुनिके अधिकारमें था। इसकी स्थापना 'कटकराज' (प० ५४) दुर्गराज (श्लो० १६) ने की थी और उन्हींके उपनामसे वह कटकाभरण-जिनालय (श्लो० १७ तथा प० ५३) कहलाया। उसकी प्रार्थना पर (प० ५४) ही दान किया गया था, और दानके वर्णनका भाग उसके कुटुम्बकी वंशावलीके वर्णनसे शुरू होता है। कहा गया है कि उसके पूर्वज पाण्डुरंगने कृष्णराज (श्लो० १५) के निवासस्थान किरणपुरको जला दिया था, और तदनुसार वह विजयादित्य तृतीयका कोई सैनिक अधिकारी होना चाहिये। उसके पुत्र निरवद्यधवलको 'कटकराज' का पट्ट दिया गया था (पं० ४४)। उसका पुत्र 'कटकाधिपति' विजयादित्य (प० ४५) था, और उसका पुत्र दुर्गराज (श्लो० १६) था।

दान की गई चीज मलियपूण्डि (प० ५५) नामका एक छोटा गाँव था, यह कम्मनाण्डु (प० ४२) जिलेमें था। इसकी सीमाएं पंक्ति ५६ में दी गई हैं। उत्तरकी सीमा धर्म्मवुरमु (धर्म्मपुरी) के दक्षिणमें यह जिनालय था।]

[EI, IX, n° 6]

१४४

कलुचुम्बरू (जिला कृत्तीली)—संस्कृत तथा तेलुगू।

[विना कालनिर्देशका (ई० सन् ९४५ से ९७० के लगभग)]

ओ स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमानव्य-सगोत्राणां हारिति-पुत्राणां कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्यानाम्मातृगणपरिपालितानां स्वामिमहासेनपदानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादित-वर-वराह-लाञ्छनेक्षणक्षणवशीकृताराातिमण्डलानामश्वमेधावभृतस्नानपवित्रीकृतवपुषं चालुक्यानां कुलमलङ्करिष्णोस् सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता [।]

श्रीपतिर्व्विक्रमेणाद्यो दुर्ज्जयाद्बलितो हृतां
अष्टादशसमाः कुब्ज-विष्णुर्ज्जिष्णुर्महीमपालयत् ।(॥)
तदात्मजो जयसिंहस्त्रयास्त्रिंशत [।] तद-

दूसरा पत्र; प्रथम ओर

नुजेन्द्रराज-नन्दनो विष्णुवर्धनो नव । तत्सूनुर्म्मङ्गी-युवराजः पञ्चविंशतिं । तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयोदश ॥ तस्य द्वैमातुरानुज' कोकिलिः षण्मासान् [।] तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्द्धनस्तमुच्चाट्य सप्तत्रिंशतम् । तत्सुतो विजयादित्यभट्टारकोऽष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्द्धनः षट्-त्रिंशत । तत्सुतो नरेन्द्रमृगराजस्साष्टचत्वारिंशत । तत्पुत्रः कलि-विष्णुवर्द्धनोऽध्यर्द्ध-वर्ष [॥] तत्सुतो गुणग विजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशत । अथवा ।

सुतस्तस्य ज्येष्ठो गुणग-विजयादित्य-पतिरं-
ककारस्साक्षाद्वल्लभनृप-समभ्यर्च्चितभुजः
प्रधानः शूराणामपि सुभट-

दूसरा पत्र; दूसरी तरफ

चूडामणिरसौ
चतस्रश्चत्वारिंशतिमपि समा भूमिमभुनक् ॥
तद्भ्रातुर्युवराजस्य विक्रमादित्यभूपतेः ।
शत्रुवित्रासकृत्पुत्रो दानी कानीनसन्निभः ॥
जित्वा संयति कृष्णवल्लभमहादण्ड सदायादकन् (?)
दत्वा देव-मुनि-द्विजातितनयो धर्म्मार्थमर्थम्मुहुः ।
कृत्वा राज्यम[क]ण्टकन्निरुपमं संवृद्धमृद्धप्रजं
भीमो भूपतिरन्वभुंक्त भुवनं न्यायात् समात्रिंशत ॥

तदनु **विजयादित्य**स्तस्य प्रियतनयो महा-
नधिकधनदस्सत्य-त्याग-प्रताप-समन्वितः ।
परहृदयनि[र्]भेदी नाम्नैव **कोल्लविगण्ड**-भू-
पतिरकृत षण्मासान् राज्यन्नयस्थितिसयुतः ॥

तस्याग्रसूनुरपराजितशक्ति**रम्म-**
राजः पराजितपरावनिराजराजिः ।
राजाभवद्विदित**राजमहेन्द्र**नामा
वर्षाणि सप्त सरणिः करुणारसस्य ॥

तस्यात्मज**विजयादित्य**बालमुत्त्वाट्य श्री**युद्धमल्ला**त्मज-**स्तालप**राजो मासमेकमरक्षीत् ॥ तमाहवे विनिर्जित्य **चालुक्य-भीम**तनयो **विक्रमादित्यो** विक्रमेणाक्रमे निक्षिप्य नव मासान-पालयत् ॥ ततो **युद्धमल्लस्तालप**-राजाग्रजन्मा सप्त वर्षाणि गृही-त्वाऽतिष्ठत् ॥

तत्रान्तरे विदित**कोल्लविगण्ड**-सूनो
द्वैमातुरो विनुत-**राजमहेन्द्र**-नाम्नः
भीमाधिपो विजितभीमबलप्रतापः
प्राचीं दिशं विमलयन्नुदितो विजेतुम् ॥

श्रीमन्तं राजमय्यन्-धळग-मुरुत्त(त)रन् **तातविक्किं** प्रचण्डं
विज्जं स[ज्ज च] युद्धे बलिनमतितरा**मय्यपं** भीममुग्र
दण्ड **गोविन्द**-राज-प्रणिहितमधिक **चोळपं लोवविक्किं**
विक्रान्तं **युद्धमल्लं** घटितगजघटान् सन्निहत्यैक एव ॥
भीतानाश्वासयन् सच्छरणमुपगतान् पालयन् कण्टकानुत्-
सन्नान् कुर्वन् सुगृह्णन् करमपरभुवो रञ्जयन् स्व जनौघ ।

तन्वन् कीर्त्तिं नरेन्द्रोच्चयमवनमयन्नार्जवन् वस्तुरागी-
नेव **श्रीराजभीमो** जगदखिलमसौ द्वादशाब्दान्यरक्षत् ॥

तस्य महेश्वरमूर्त्तेरुमासमानाकृते कुमारसमानः
लोकमहादेव्याः खलु यस्तनभवदम्मराज इति विख्यातः ॥

यो रूपेण मनोज विभवेन महेन्द्रमहिनकरं
उरुमहसा हरमरि-पुरदहनेन न्यक्कुर्वन् भाति विदितनिर्मलकीर्त्तिः [॥]

यद्बाहुदण्डकरवालविदारितारि-
मत्तेभकुम्भगलितानि विभान्ति युद्धे
मुक्ताफलानि सुभट-श्रटजोक्षितानि
बीजानि कीर्त्ति-विततेरिव रोपितानि । (॥)

स समस्तभुवनाश्रयश्री**विजयादित्य**महाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टा-
रक परमब्रह्मण्योऽत्तिलिनाण्डुविषयनिवासिनो **राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-**
नस्समाहूयेत्थमाज्ञापयति ॥ **अड्डकलि**-गच्छ-नाना । वल-

चतुर्थपत्र, दूसरी बाजू

हारिगणप्रतीनविख्यातयशा[ः] । चातुर्वर्ण्य-श्रमण-विशेषानश्राणना-
भिलषित-मनस्क ॥ श्रीराजचालुक्यान्वयपरिवारिन **पट्टवर्द्धिकान्व-**
यतिलका । गणिकाजनमुखकमलचुमणिद्युतिरिह हि **चामेकाम्बाभूत**
सा । (॥) जिनधर्मजलधिवर्धनशशिरुचिरसमानकीर्त्तिलाभविलोला ।
दानदयाशीलयुता चारुश्रीः श्रावकी बुधश्रुतनिरता ॥

यस्या गुरुपंक्तिरुच्यते—

सिद्धान्तपारदृश्वा प्रकटितगुणसकलचन्द्रसिद्धान्तमुनि. ।
तच्छिष्यो गुणवान् प्रभुरनियशास्त्रमतिरय्यपोटिमुनीन्द्रः ॥

तच्छिष्याऽर्हनन्दिविख्यातवरमुनये चामेकाम्बा सुभक्त्या ।
श्रीमच्छ्रीसर्व्वलोकाश्रयजिनभवनख्यातसत्रार्थमुच्चै ॥
र्व्वेङ्गिनाथाम्मराजे क्षितिभृति कलुचुम्बर्रुग्राममिष्ट ।
सन्तुष्टा दापयित्वा बुधजनविनुता यत्र जग्राह कीर्त्ति ॥

उत्तरायणनिमित्तेन खण्डस्फुटितनवकर्म्मार्थं सर्व्वकरपरिहार शासनीकृत्य दत्तमस्यावधय. [।]

पूर्व्वत. आरुविल्लि । दक्षिणतः कोरुकोलनु । पश्चिमत यिडियूरु । उत्तरत' गुल्लिकोडमण्डु । तस्य क्षेत्रावधयः । पूर्व्वत. शर्करा-करु । दक्षिणतः इर्रुलकोळु । पश्चिमतः इडियूरि पोल्गरसु । उत्तरतः कञ्चरिगुण्डु ॥ अस्योपरि न केनचिद्बाधा कर्त्तव्या य. करोति स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति । (॥)

वहुभिर्व्वसुधा दत्ता (त्ता) वहुभिश्चानुपालिता ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टाया जायते कृमिः ॥

अस्य ग्रामस्य ग्रामकूटत्व कट्टलाम्बात्मज-कुसुमायुधाय दत्त शाश्वतं ॥ अस्य ग्रामस्य [क?] प्याभिधान करवर्जित ॥

आज्ञप्तिः कटकाधीशो भट्टदेवश्च लेखक ।
कविः कविचक्रवर्त्ती शासनस्सास्युक्त[1] ॥

पेड्ड-कलुचुबुर्रिति शासनम्बुशेसिन भट्टदेवनिकार्हनन्दिभटारुलु गुम्सिमिय रेड्डिल्लगाम्बुलतुण्डिपनु(पने) ण्डु तूमुन नि बुट्लु विट्टु-पट्टु प्रसादम्बेसिरि [॥]

---

1 शासनस्सास काव्यकृत् ।

[यह लेख प्राच्य चालुक्यराजा अम्म द्वितीय अपरनाम विजयादित्य षष्ठकी प्रशस्ति है। इसका काल नहीं दिया है। लेकिन दूसरे प्रमाणोंसे पता चलता है कि उसका राज्याभिषेक शुक्रवार, ५ दिसम्बर, ९४५ ई० को हुआ था और उसने २५ वर्षतक राज्य किया था।

अत्तिलिनाण्डु प्रान्त (विषय) के कलुचुम्बर्रु नामके गावके दानका इसमें उल्लेख है। यह दान वलहारि गण और अड्डकलि गच्छके अर्हनन्दि जैन गुरुको दिया गया था। दानका प्रयोजन सर्व्वलोकाश्रय-जिनभवन नामके जैनमन्दिरके धर्मादिकी भोजनशाला (या भोजनभवन) की मरम्मत वगैरः कराना था। यह दान स्वय अम्म द्वितीयने किया था, लेकिन पट्टवर्धिक वंशकी और अर्हनन्दिकी एक शिष्या चामेकाम्बाकी ओरसे दिलवाया गया था। प्रशस्तिके अन्तका तेलुगू भाग स्वय अर्हनन्दिके द्वारा प्रशस्तिके लेखकको दिये गये एक इनामका जिक्र करता है।]

[EI, VII, n° 25, f 5]

१४९

हुम्मच—संस्कृत।

[काल लुप्त, संभवत. लगभग ९५० ई० (लु० राइस)।]

[पार्श्वनाथवस्तिके दरवाजेकी पश्चिम ओरकी दीवालपर]

श्रीमत् स्वस्त्यनवद्य-दर्शन-महोग्ररु प्रताप-सम्पन्न पर-चक्रगण्ड.... ....य्युत्तिरे शक-वर्षमेण्टु-नू....... .. ....नाड नाळ्गामुण्ड मक्ते-यर म....सर्ग्गतन्.. ....नाळ्गामुण्ड वी...क्किळडोळ् किषुकवे सर्ग्गतन वाणसिगेयाकेय पिरिय-मगं...ळियर्क तोळापुरुष-सान्तरन वळेयाके तम्मव्वेय सन्या... ळुत्तमी-कल्ल वसदियुमोन्दु-देवारसुम माडिसिदळ्... श्रीसामियव्वे सेदेगोट्टडे सान्तरन विन्नणप्प मोगम नोडिनेन्द-रसि....पपिद्दु प्रभावति-कन्तियरेन्दु पेसर कोण्डु सन्यासन गेय्दोडे.. . कुक्कस-नाड किपिय-सालेयुरं वसदिगित्त वल्क-नाड सुव्विळगोड देवारके....भटारर्ग्गे वळिय नदि वसदिग देवारक कोट्टळ् पाळियक वोलि-

यक्क पुत्तु·····णक्केय्य ···इर्कण्डुग-वित्तवुद कोट्टऴ् कुन्दय्य कोन्दरोऴ्···· ···येम्बुदु मणिर्कण्डुग ···· ट्ट पोरवक्कनु सेम्बक्कनु पाऴियक्कन केऴ-दिये पुळ्यिण्णवी-धर्म्म नडयिसु ···री-नाडरसं रणविक्रम **पाळियक्कन वसदिगे** बदरीनाडानन्दु प्पन्नेरड वण्ण तम्म वाणसिगेय वयल कोट्ट ईधर्म्मम श्रीसामियब्बे गेल्लुगन मुन्नमे सालिय् ···र ने डि पाऴियक्कन वसदिगित्तळ् गेल्लुगन धर्म्म कावोनु नडयिसुवोनु··· · गळ महा श्री ॥ श्री-**माधवचन्द्रत्रैविद्य-देवर** शिष्यरप्प **नागचन्द्र-देवर** पुत्र **मादेय-सेनबोव** ···स पुन-प्रतिष्ठेय माडिदनु मङ्गळ महा श्री श्री-वीतरा[ग] ॥

[स्वस्ति । जिस समय अनवद्यदर्शन, महोग्र, प्रतापसम्पन्न, परचक्रगण्ड, · · · ······शासन कर रहा था,—(उक्त मितिको), प्रत्यक्षरूपसे नोलापुरुष-शान्तरकी पत्नी पालियक्कने, अपनी माताकी मृत्युपर, पालियक्क वसदि नामकी एक पाषाण-वसदि खडी की और बहुतसे दान इसके लिये किये गये ।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 45]

१४६

कुम्सी—संस्कृत तथा कन्नड—भग्न ।

[वर्ष साधारण ९५० ई० (लु० राइस)]

[कुम्सीमें, किलेके भण्डार-गृहके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
तनगेन्दु व········ ········नन्- ।
द···पुत्रङ्गति-भीतिय······मताचष्टम्भदिं माडि को- ।
डनो जाम ···सोम्युवेत्त **पोळलोळ् कुम्बशिकेयोळ** माडिदम् ।
जिन-गेहङ्गळवाशेयिं पलवु···· ··························॥

·········यिणेन्द्र········ ·· ··· · तुङ्गादिय ।
दोरेय ········· ······भक्ति-मनदिं पुम्बुच्चुमिपन्नेगम् ।
······· · लोक्कियब्बेय जिन-गेहम माडिदम् ।
धरेयेल्ल पोगळ्वन्नेग वि ······ ·अवनीपाळकम् ॥

जिनदत्त-रायं श्रीमन्महा ··· · धिपति-चोम्मरस-गौडर मक्कळु ·· ··· ति-दत्त तन्न अनुज मानिभद्र-गौडर मक्कळु रायविभाड राज··· रेवन्त नडे-गौड सुरितण्ण हिरिय-तम्मगौडरु मुख्यवाद आतन अनुज पद्मयनु आतन तम्म चिक्क-तम्म-गौडरु आतन अनुज होन्नण-गौडरु धर्म-शासनव साधारण-संवत्सरद कार्तिक-सुद्द-पुन्नमि-सो···· ·············सेट्टि सोकि-सेट्टि पदुम-सेट्टि ······ वाद आ-दिव्य-स्थानके······· ·· सन्दायवेन्दु · देरिगे येन्दु विट्टि येन्दु केळ-सल्लदु ईधर्म्मव नडसिदवरिगे स्वर्गपदव पडेवरु ईधर्मक्के तप्पिदवरु एळनेय नरकक्के होहरु जिन-रभिषेक-निमित्त । घन-पूर्ण कुम्बकेन्दु **कुम्बसे-पुरमम् । जिनदत्त-रायनित्त । कनक-कुळोद्भवरु कलस-राजान्वयरुम् ॥** सन्नकोप्पद बस्तियिन्द वडगलु वेळल कोप्पद केरे · कल्लु सरुहु सह विट्टरु · ·· वीजवरि कोट्टरु प्रतिपालिसुवदु

[जिनशासनकी प्रशंसा । ········· पोल्लु और कुम्बसिवेसे, पोम्बुच्च जबतक जिन्दा रहे तबतक उन्होंने जिनमन्दिर बनवाये, जिनमन्दिरमें लोक्कि-यब्बेकी स्थापना की । और जिनदत्त-राय [की स्वीकृतिसे], शासक चोम्मरस और अनेक गौडोंने (जिनके नाम दिये हैं),— तथा कुछ सेट्टि लोगोंने उक्त मितिको इसके लिये वार्षिक दान दिया । शापात्मक श्लोक ।

जिनदत्तराय, जिसने जिनके अभिषेकके लिये कुम्बसे-पुरका दान किया था, कलस राजाओंके खानदानके कनककुलमें उत्पन्न हुआ था । उसने कुछ जमीन भी दी थी ।]

[E C VII, Shimoga t, n° 114]

१४७

खजुराहो—संस्कृत

(विक्रम संवत् १०११=९५५ ई०)

१ ॐ [।।] सम्वत् १०११ समये ।। निजकुलधवलोयं दि-
२ व्यमूर्त्ति खसी (शी) ल स (श) मदमगुणयुक्त सर्व्व-
३ सत्वा (त्वा) नुकंपी [।] स्वजनजनिततोषो **धांगराजेन**
४ मान्य प्रणमति जिननाथोय भव्य**पाहिल** (ल्ल) —
५ नामा । (।।) १ ।। पाहिलवाटिका १ चन्द्रवाटिका २
६ लघुचंद्रवाटिका ३ स (श) करवाटिका ४ पंचाइ-
७ तलवाटिका ५ आम्रवाटिका ६ ध (धं?) गवाडी ७ [।।]
८ पाहिलवंसे (शे) तु क्षये क्षीणे अपरवंसो (शो) यः कोपि
९ तिष्ठति [।] तस्य दासस्य दासोयं मम दतिस्तु पाल-
१० येत् ।। महाराजगुरुस्री (श्री) **वासवचंद्र** [।।] वैसा (शा) ष (ख)
११ सुदि ७ सोमदिने ।।

[एपिग्राफिआ इण्डिका, जि० १, पृ० १३६]

[EI 1, p 135-136]

[यह शिलालेख खजुराहोमे जिननाथके मन्दिरके बायें दरवाजेपर उत्कीर्ण है। इसमे ११ पंक्तियाँ है। इसमे बताया गया है कि राजा धङ्ग या धाङ्गके राज्यकालमे विक्रम सं० १०११ या ९५४ ई० में भव्य पाहिल या पाहिल्लने जिननाथके मन्दिरको बहुत तरहकी वाटिकाओं (छोटे उद्यानों या बगीचो) का दान किया। दानोंके निम्नलिखित नाम हैं.—

१. पाहिल वाटिका, या पाहिल बगीचा
२. चन्द्र-वाटिका, या चन्द्र बगीचा
३. लघु चन्द्रवाटिका, या छोटा चन्द्र बगीचा
४. शकर-वाटिका, या शकर बगीचा

५. पञ्चाइतल वाटिका ?

६. आम्र वाटिका, या आमके पेडोंका बगीचा

७. धङ्ग वाडी, या धङ्ग उद्यान-भवन।

ए० कनिंघमने सम्वत् १०११ को सुधारकर और युक्तिपूर्वक सिद्ध कर इसको सं० ११११ पढ़ा है। शिलालेखका पूरा श्लोक प्रो० एफ् कीलहोर्नने इस तरह शुद्ध किया है —

निजकुलधवलोय दिव्यमूर्त्तिः सुशीलः
  शमदमगुणयुक्त सर्वसत्वानुकम्पी।
सुजनजनिततोषो धङ्गराजेन मान्य
  प्रणमति जिननाथं भव्यपाहिल्लनामा ॥ १ ॥]

१४८

सुहानिया [ग्वालियर]—संस्कृत।

[सं० १०१३=९५६ ई०]

संवत् १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेनकमा (खो?) दिता[1]
[सुहानियामें माधवके पुत्र महेन्द्रचन्द्रने एक जैन मूर्ति प्रतिष्ठापित की। संवत् १०१३।]

[JASB, XXXI, p 399, a, p 410, t]

[इं० ए० जिल्द ७, पृ० १०१-१११ नं० ३८ १-५१ की पंक्तियाँ]

१४९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ८९०=९६८ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

---

१ यह 'प्रतिष्ठिता' का अपभ्रंश मालूम पड़ता है।

स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनाभेन **पद्मनाभेन** [।।] श्रीमज्जाह्नवीयकुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणविभूषितः **कण्वायन**सगोत्रः श्रीमान् **कोङ्गणिवर्म्म**धर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वर**श्रीमाधव**प्रथमनामधेयः ।। तत्पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनयविहितवृत्तः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चननिकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्ते प्रणेता श्रीमन्**माधव**महाराजाधिराज ।। तत्पुत्रः पितृपितामहगुणयुक्तो(ऽ)नेकचतुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशः श्रीमद्**हरिवर्म्म**महाराजाधिराजः ।।

अपिच ।। वृत्त ।।

आसीज्जगद्गहनरक्षणराजसिंहः
क्ष्मामण्डलाब्जवनमण्डनराजहंसः ।
श्रीमारसिंह इति बृंहितबाहुकीर्त्ति-
स्तस्यानुज कृतयुगक्षितिपालकीर्तिः ।।

आदेशाद्देवचोलान्तकधरणिपतेर्गंगचूडामणिस्त्वा
वेगादभ्येति योद्धुं त्यज गजतुरगव्यूहसन्नाहदर्प्पम् ।
गङ्गामुत्तीर्य गन्तु परबलमतुल कल्पयेत्पाप दूतै-
र्व्विज्ञप्त गूर्ज्जराणा पतिरकृति तथा यत्र जैत्रप्रयाणे ।।

पद्माम्भोरुहभृङ्गभृत्यभरणव्यापारचिन्तामणि,
संत्रासग्रहविह्वलीकृतरिपुक्ष्मापालरक्षामणिः
विद्वत्कण्ठविभूषणीकृतगुणप्रोद्भासिमुक्तामणि-
र्देवस्सज्जनवर्ण्णनीयचरितश्रीगङ्गचूडामणि ।।

मन्दाकिन्या जिनेन्द्रस्नपनविधिपयस्स्यन्दसम्पादिनायाः
कालिन्द्याश्चण्डवैरिप्रहृतगजमदश्वेननिर्व्वर्त्तितायाः ।
सम्भेदे श्रीनिकेनाङ्क्यभुवि भवतो गङ्गकन्दर्पभूपे–
र्व्यातन्यो दिग्वधूना विधुविजयी (यि) यशो हारमाचन्द्रतारम् ॥

अपि च ॥ वृत्त ॥

निर्व्वादोज्ज्वलबोधपोनवलतस्सिद्धान्तरत्नाकरम्
चारित्रोल्प्लुतयानपात्रवलनस्संसारमीनाकरम् ।
उत्तीर्ण्णस्समुदीर्ण्णभक्तिविननन्वेन्धाभिधानो बुधै-
रासीद् देवगणाग्रणीर्गुणनिधिर्द्देवेन्द्र भट्टारकः ॥

उद्दामकामकलिनिर्द्दलनैकवीर-
स्तस्यैकदेव इति योगिषु देव एकः ।
शिष्यो बभूव हृदि यस्य दधाति भव्यो
रत्नत्रय शिरसि यच्चरणद्वय च ॥

महिनस्य तस्य महितैर्म्महता, प्रथमस्य च प्रथमशिष्यतया ।
जयदेवपण्डित इति प्रथित , प्रथमानशास्त्रमहिमद्रविण' ॥

अपि च ॥ गद्य ॥

तस्मै स भुवनैकमङ्गलजिनेन्द्रनित्याभिषेकरत्नकलशः स तु सत्य-वाक्य-कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमारसिंहदेवप्रथम-नामधेयः गङ्गकन्दर्प्पः ॥ शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेष्वष्टेसु-नवत्युत्तरेषु प्रवर्त्तमाने विभवसंवत्सरे शङ्खवसति-तीर्थव-सतिमण्डलमण्डनस्य गङ्गकन्दर्प्पजिनेन्द्रमन्दिरस्य दानपूजादेवभोग-निमित्तं पुलिगेरे-नगरात्पूर्व्वस्या दिशि तल-वृत्ति दत्ते स्म [॥] तस्या-स्सीमा समाख्यायते तद्यथा ।

---

१ शुद्धपाठ सभवत 'भूपस्यातेने' होना चाहिये ।

कुमारीसरसः पूर्व्वस्यामाशायामेकनिवर्त्तनान्तरादुपलयुगलाद्दक्षिणस्यां दिशि **वेल्कनूर**ग्रामपश्चिमसीम्नः पावकदिशि **कोशिततटाक**पुरोवर्त्तिनशिलासरसस्समीरणदिक्कोणे हस्ति-प्रस्तरात् पश्चिमस्या दिशि **वट-तटाक**पुरोनिकटनिम्नोत्तरदिग्वर्त्तिनः कृष्णपाषाणादुत्तरस्या दिशि **नागपुर**ग्राममार्गाद्दक्षिणस्या दिशाया **मळिगमार्त्तण्ड**गृहक्षेत्रादैशान्या दिशायामानीलशिलायाः पुनः पश्चिमस्या दिशि **कृष्णसरस** उत्तरजलप्रवाहनिर्गमादुत्तरस्या दिशि **नीलिकार**-तटाकागतप्रवाहादुत्तरस्यामाशायामेकनिवर्त्तनान्तरे वायव्यदिक्कोणवर्त्तिरक्तपाषाणपार्श्ववर्त्तिन्याश्शम्याः । पूर्व्वदिग्मुखेनागत्योत्कीर्ण्णादरुणपाषाणान्नागपुरग्राममार्गस्योत्तरपार्श्वे पूर्वदिग्मुखेन गत्वोत्तरदिश प्रति निवृत्तात्पश्चिमदिशायामेकनिवर्त्तनान्तरे पूर्व्वोत्तरदिशि कृष्णपाषाणाद्दक्षिणस्यामाशाया शमी-**कन्थारी**गुल्मान्तर्गतानीलशिलायाः पश्चिमतः पुरोक्तव्यक्तपाषाणयुगले सङ्गता सीमा [।।] प्राक्प्रकाशितकृष्णसरःपुरोभागवर्त्तीनि पण्निवर्त्तनान्यभ्यन्तरीकृत्य सुष्टि(स्थी)कृतानि षष्टि-शत निवर्त्तनानि ।। तस्मादेव नगराद्वरुणदिग्भागवर्त्तिन्यास्तलवृत्तेस्सीमा समाम्नायते तद्यथा । **देशग्रामकूट**-**क्षेत्रा**द्वायव्या ककुभि त्रिशमीरक्तोपलाद् वायव्यामाशायामेकशम्या आखण्डलदिशायामेकदण्डान्तरादरुणपाषाणादाग्नेयकोणवर्त्तिनो विशालशमीकन्थारीजालात्पश्चिमस्या दिशि श्रेष्ठितटाकदक्षिणजलप्रवाहनिर्गमाद् **वल्लभराज**मार्ग्गात् पूर्व्वस्यामाशाया कन्थारीगुल्मात् **सवसी**-ग्राममार्ग्गाद्दक्षिणतश्शमीकन्थारीकुञ्जात् कुबेरककुभो वायव्यायामाशाया **ज्येष्ठलिङ्ग**-भूमेर्न्निर्ऋत्या हरितकृष्णपाषाणात् पूर्व्वस्या दिशि वल्लभराजमार्ग्गात् पश्चिमस्यामाशायामुत्तरदिग्मुखप्रवृत्तमहाप्रवाहान्तर्गत**किन्नर**-पाषाणाद् दक्षिणस्या दिशायाम**न्धकार**क्षेत्रात् पश्चिमसीम्नि प्राक्प्र-

कटीकृतादेशग्रामकूटक्षेत्राद् वायव्या दिशि त्रिशमीशोणपापाणे सीमा समागता । एव पश्चिमदिग्वर्त्तीनि चत्वारिंशच्छन्नं निवर्त्तनानि ॥ शङ्ख-वसतेर्व्वासवदिशि निवर्त्तनमात्रः पुऽप(पुष्प)वाटः पश्चिमदिशि च निवर्त्तनद्वय-द्वयदो (?) पुऽप(पुष्प)वाटः ॥ तस्य चैत्यालयस्य पुरप्रमा-णमाख्यायते [।] पूर्व्वतः **बाळवेश्वर**पश्चिमप्राकारः पावकदिशि **चर्म्म-कार**देवगृहसीमान्तम् [।] तत्पश्चिमतः वारिवारणसीमा कृत्वा दक्षिणस्या दिशि पुऽप(ष्प)वाटाङ्ग(?)जचैत्यपुरपुरः **श्रीमुक्करवसतेः** पश्चिमस्यां दिशि गोपुरपर्य्यन्तात् पश्चिमदिग्वर्त्तिदेवगृहद्वयमभ्यन्तरीकृत्य **मरुदेवी**देवगृहस्य पश्चाद्भागादुत्तरस्या दिशि **चन्द्रिकाम्बिका**देवगृहात् पूर्व्वतः मुक्करव-सतिं प्रविष्टीकृत्य **रायराचमल्लवसतिं(ति)**दक्षिणप्राकारः ततः पूर्व्वतः **श्रीविजयवसति**दक्षिणप्राकारः ई (ऐ)शान्या दिशि **कर्म्म-टेश्वर**देवगृहं तद्दक्षिणतः पूर्व्वोक्त**बाळवेश्वर**पश्चिमसीमा [।।] देवनगरा-त्पश्चिमदिशि पुऽप(ष्प)वाटद्वयनिवर्त्तनक्षेत्र दत्तम्।। तस्य सीमा पृथक्क्रि-यते [।] **परव**सरसः पूर्व्वदिशि **तपसी**ग्रामपथादुत्तरतो पुऽप(ष्प)वाटनिव-र्त्तनमेक । **गङ्ग-पेर्म्मा**डिचैत्यालयपुऽप(ष्प)वाटादुत्तरतो निवर्त्तनमेक नागवल्लीवनम् । एवं **गङ्गकन्दर्प्पभूपाळजिनेन्द्रमन्दिर**देवभोगनिमित्त निवर्त्तनशतत्रयमात्रक्षेत्र पुऽप(ष्प)वाटत्रयमुर्व्वीशदेशग्रामकूटाकारविष्टिप्र-भृतिबाधापरिहारं मनोहरमिदम् ॥ श्लोक ॥

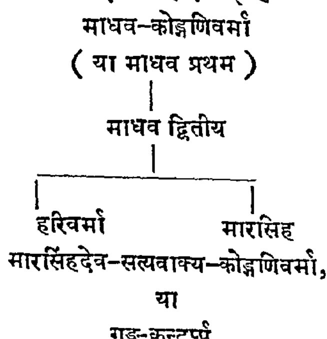
बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजाभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा
पापादपेतमनसो भुवि भाविभूपाः ।

ये पालयन्ति मम धर्म्ममिम समस्तं
तेषा मया विरचितोऽञ्जलिरेष मूर्ध्नि ॥

[यह शिलालेख धारवाड जिलेके दक्षिण-पूर्व कोनेकी ओर मिरज रियासतके लक्ष्मेश्वर तालुकेके प्रसिद्ध शहर लक्ष्मेश्वरके शङ्खवसति नामके मन्दिरमे पत्थरकी एक लम्बी शिलापर है। इसमे ८२ पक्तियाँ है। अक्षर दशवी शताब्दिकी पुरानी कर्णाटक (कन्नड़) लिपिके है। इसमे तीन विभिन्न शिलालेख समाविष्ट है।

पहला भाग—१ से लेकर ५१ वी पक्तितक गङ्ग या कोङ्गु वशका शिलालेख है। इसमें उल्लिखित दान, ८९० शक वर्षके व्यतीत होनेपर और जब विभव सवत्सर प्रवर्त्तमान था, मारसिंहदेव-सत्यवाक्य-कोङ्गणिवर्मा, के द्वारा जिन्हें गङ्ग-कन्दर्प भी कहते थे, जयदेव नामके एक जैन पुरोहित (पण्डित) को किया गया था। विभव संवत्सर शक ८९० ही था और शक ८९१ शुक्ल सवत्सर था, इसलिये शिलालेखका समय ठीक दिया हुआ है। यह दान पुलिगेरे (जिसका अर्थ होता है चीतेके तालाबका नगर) नगरकी कुछ भूमियोंका था। इस 'पुलिगेरे' नगरको मिस्टर फ्लीटने लक्ष्मेश्वरका ही पुराना नाम माना है। यह दान एक जैनमन्दिरके लिये, जिसे इसमें 'गङ्गकन्दर्प जिनेन्द्रमन्दिर' कहा गया है, किया गया था। इस मन्दिरको स्वयं मारसिंहदेवने बनवाया या उसका जीर्णोद्धार किया था।]

वंशावली इस तरह दी गई है:—



[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, न० ३८ (१-५१ की पंक्तियाँ)]

१५०

कडूर—कन्नड़

[शक ८९३=९७१ ई०]

[कडूरसे, किलेके दरवाजेके एक स्तम्भपर]

(पश्चिममुख) स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दान्वय देशिय-गण-मुख्यर् **देवेन्द्रसिद्धान्त-भटार**-रवर पिरियशिष्यर् **चान्द्रायणदभटार**रवर-शिष्य-**गुणचंद्र-भटार**रवर-शिष्यर **श्रीमदभयणन्दि-पण्डित-देवर नाणब्बे-कन्तियर** शिशिन्तियर**पडियर-दोरपय्यन** पिरियरसि **पाम्बब्बे** तलेवरिदु मूवत्त-वरिस तप गेय्दय्द नोन्तुच्छम-ठाणमेरिदर्वरेदोनवर मग विडि··· ············

(उत्तरमुख) परसे महा-प्रसाददोळोरेवक**निम्मडि-धोर**नोल्दु-तन्न् ।

अरसुममौल्य-वस्तुगळुम कुडे **बूतुग**नक्कनेन्दु विस् ।
तरिसे धरित्रि जीय वेसनेनेने सन्दिवु सन्दवल्लेविन्द् ।
अरसु दलेन्दु पाम्बवेगळन्तु तपो-नियमस्तरादोर् (आदोर्) आर् ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मोनानुष्ठान-परायणे(यणे)यरप्प श्री-**पाम्बब्बे**-कन्तियरयूद नोन्तुच्छम-ट्ठाण-मेरिदर् । बरेदोनवर मग**नर्हद्-भक्तम्** ।

(दक्षिण मुख) [ऊपरका श्लोक, जो 'परसे' इत्यादिसे शुरू होता है, यहाँ दुहराया गया है ।]

शक-काल ८९३ य प्रजापति-संवत्सरदन्तर्गत मार्गशिर-मासद शुद्ध-त्रयोदशियु गुरुवार[द]न्दु अय्दं नोन्तुन्छम-ड्डाण मेरिदर बरेदोनवर मग वि ....

[पडियर-दोरपय्यकी ज्येष्ठ रानी पाम्बब्बेने,—जो कोण्डकुन्दान्वयके देशिय-गणके मुख्य देवेन्द्र सिद्धान्त-भटारके ज्येष्ठ शिष्य चान्द्रायणदभटारके शिष्य गुणचन्द्र-भटारके शिष्य अभयनन्दि-पण्डित-देवकी (शिष्या) नाणब्बे-कन्तिकी शिष्या थी,—केशलोच करनेके बाद, तपके पूरे ३० साल पूर्ण किये, और पाँच अणुव्रतोंको धारण करके उच्च अवस्थाको पहुँची। उसके पुत्र विदि .... से लिखा हुआ।

आगेके श्लोकमें उसके त्याग और तपकी प्रशंसा है। दक्षिण और पूर्व मुखकी तरफ भी ये ही लेख कुछ भेदके साथ, उसके अन्य दो पुत्रों, अर्हद्भक्ति और वि......के द्वारा लिखाये गये हैं।]

[EC VI, Kadur tl., n° 1]

१५१

श्रवण बेल्गोला—कन्नड

[विना काल-निर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

१५२

श्रवण बेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड

[विना काल-निर्देशका, लगभग ९७५ ई० (फ्लीट)]

[देखो, जैन शि० ले० सं० प्रथम भाग]

१५३

[सुहानिया (ग्वालियर]-संस्कृत

[सं० १०३४=९७७ ई०]

सम्वतः । १०३४ श्री वज्रदाममहाराजाधिराज वइसाखवदि पाचमि * * *

संवत् १०३४ की वैशाख वदी ५ को महाराजाधिराज वज्रदाम (शेष-लेख स्पष्ट नहीं है।)।

[JASB, XXXI, p 399, a, p 411, t.]

१५४

पेग्गूर—कन्नड़

[शक ८९९=९७७ ई०]

[पेग्गूर (किग्गद्-नाड्से)में एक पाषाणपर]

स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-सतङ्ग ८९९ त्तनेय ईश्वर-[सं] वत्सर प्रवर्त्तिसे सत्या(त्य)वाक्य-कोङ्गिणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधि-राज कोळाळ-पुरवरेश्वर नन्दगिरिनाथ श्रीमत् राचमल्ल-पर्म्मनडिगळ् तद्वर्ष[ा]भ्यन्तर पा(फा)ल्गुण(न)-शुक्ल-पक्षद नन्दीश्वरं तल्प-देवसमागे स्वस्ति समस्तवैरिगजघटाटोपकुम्भिकुम्भ-स्तळ-स्फुटितानर्घ्य-मुक्ताफल-ग्रहण-भीकर-करासे-निवासित-दक्षिण-दोर्द्दण्ड-मण्डित-प्रचण्ड अण्णन-वण्ट वडवर-नण्ट श्रीमत् रक्कस वेद्दोरेगरेयनाळुत्तिरे भद्रमस्तु जिनशासनाय श्री-बेळ्गोळ-निवासिगळप्प श्री-वीरसेनसिद्धान्त-देवरं वर-शिष्यर् श्री-गोणसेन-पण्डित-भट्टारकर वर-शिष्यर्[1] श्रीमत् अनन्तवीर्य्यय्यङ्गळ् पे[र्]ग्गदूरुं पोस-वादगसुमन् अभ्यन्तर-सिद्धियागे पडेदरदर्क्के साक्षी तोम्भत्तरुसासिर्व्वरुमय्-सामन्तरु वेद्दोरेगरे-येळपदिम्बरुमेण्टोक्कलुमिद कावन्नोल्वर् म्मलेपरुमय्नूर्व्वरुमय्-दामरिगरु श्रीपुरुष-महाराजरदत्तियनावोनोर्व्वनळिदोम् वाणरासियु सासिर्व्व-ब्राह्म-णरु सासिर-कविलेयुमनळिद पञ्चमहापातकनक्कु इदनारोर्व्वर् कादरवर्गे पिरिदु पुण्य चन्दणन्दियय्यन लिखितम् ॥ पेर्ग्गदूर वसदिय शासनम् ।

[शक नृपके सैकडो वर्ष बीतने पर जब ईश्वर नामका संवत्सर ८९९ वाँ चालू थाः—

---

१ ये दोनों शब्दसमूह 'देवरवर शिष्यर्' तथा 'भट्टारकरवर शिष्यर्' भी पढ़े जा सकते हैं ।

और जिस समय सत्यवाक्य-कोङ्गिणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज राचमल्ल पेर्म्मनडिका, जो कोळाळपुरके ईश्वर तथा नन्दगिरिके नाथ थे, राज्य था, उस समय श्रीमत्-रक्कस वेद्दोरेगरेपर राज्य कर रहा था। उससे श्री-वेलगोलके निवासी श्रीमत् अनन्तवीर्य्यय्यने पे[र्]ग्गदूर तथा नयी खाई प्राप्त की। अनन्तवीर्य्यय्य गोणसेन-पण्डित भट्टारकके शिष्य थे और ये वीरसेन-सिद्धान्त-देवके शिष्य थे। यह लेख चन्दणन्दियय्यका लिखा हुआ है।]

[EC, I, Coorg ins, n° 4]

१५५

श्रवण-वेल्गोला—कन्नड

[विना काल निर्देशका]

१५६

श्रवण-वेल्गोला—कन्नड़ तथा तामिल।

[विना काल निर्देशका]

१५७

श्रवण-वेल्गोला—कन्नड

[विना काल-निर्देशका]

[देखो जैनशिलालेखसंग्रह, भाग १]

१५८

विद्रे—कन्नड़

[शक ९०१=९७९ ई०]

[विद्रे (चेळूर परगना) मे, तालावके व्यर्थ पड़े हुए बाँध-परके एक पाषाणपर]

स्वस्ति स (श) क-वर्ष ९०१ नेय प्रमातिक-संवत्सरद कार्त्तिक-मासदोळ् त्रिलोकचन्द्र-भटारर शिष्य रविचन्द्र- भटारर् सन्यसन गेय्दु मुडिपिदर् कोण्डकुन्दान्वयद देसिग- गणद भानुकीर्ति-भटारर् परोक्षविनय माडिसिदर्

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), त्रिलोकचन्द्र-भटारके शिष्य रविचन्द्रभट्टार ने 'सन्यसन' धारण किया और मृत्युको प्राप्त हुए । कोण्डकुन्दान्वय तथा देसिग-गणके भानुकीर्त्ति-भटारने उनकी स्वर्गयात्राका यह स्मारक बनवाया ।]

[EC, XII, Gubbi tl n° 57]

१५९

वरुण—कन्नड़-भग्न

···९९· (काल लुप्त)=सम्भवत. लगभग ९८० ई०

[वरुण गाँवमें, बसवगुडीके सामनेके स्तम्भपर]

······· ·· · ·· ९९····स्य सकळ-समर्मेन्दु दर्म्म गेय्दु सन्यसद····
····निज-स्तिति················

[मुनिव्रत धारण करके दिवगत होनेवाले एक जैन यतिका स्मारक ।]

[EC, III, Mysore tl, n° 40]

१६०

सौंदत्ति—कन्नड

[शक ९०२=९८० ई०]

रट्टकुळान्वयनृपरु पट्टद पतवर्म्म नेगळेनिप गावुण्डुगळु विट्टर्जिनेन्द्रपूजेगे नेट्टने धान्यगळोळगे पो(दिद) कुळम ॥ रट(ट्ट)र पट्टजिनालय किट्टळवादप्यतोक्कलनुमतदिन्द कोट्टर्ज्जिनेन्द्रपूजेगे नेट्टने ······· घ(प) ॥ दीपावळिय (प)र्व्वक्के देवर सोडरिंगे गाणद लोम्मानेण्णे ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीप्रि(पृ)थ्वीवल्लभं महाराजाधिराज-परमेश्वर-परमभट्टारक सत्याश्रयकुळतिळक चाळुक्य(क्या)भरण श्रीमत्तैलपदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धियिं सलुत्तमिरे ।

तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्तं समरविजय-लक्ष्मीकान्त वै(चै ?)सान्वयसरोजवनमार्तण्डं नुडिदंतेगण्डं हयवत्स-**राजं** रूपमनोज परबळ-सूरेकारं वैरिबंगारं नरस(श)कभीम चलदंकराम गण्डरगण्ड वैरिभेरुण्ड प्रतिपन्नमन्दरं शरणागतव्रजपजर श्रीमत् **शान्तिवर्म्म**रसर वशावतरमेन्तेन्दोडे [॥] श्रीमदमरेन्द्रविभवो-द्दाम संग्रामरामनूर्जिततेज भीमपराक्रमनेनिसिदनी महियोळ् **पृथ्वीराम**-ननुपरूप ॥ तत्सुत ॥ आरूड(ढ)**वत्सराज**नुदारगुण विनुतकन्दुका-दित्य श्रीनारीकान्त निर्ज्जितवैरिप्रजनेनसि **पिट्टगं** सले नेगर्द ॥ वृ ॥ अन्त-कनन्ते बन्दिदिरोळान्त**जम(व)र्म्म**न नोडिसुत्ते मारान्तोरनेकरं तविसि वस्तुगळं मदवारणगळ कान्तेयरं तुरगचयमं पिडिदित्तोडे मेच्चिराभय दन्तियनित्तनन्तदुवे पेळदे **पिट्टग** निन्न गेल (छ)म ॥ तदग्रपत्नि ॥ वृ ॥ पोगळलल्कुम्बमप्प चरित मिगे वण्णिसलब्जसंभवंगगणितमप्प रूपविभवं पतिभक्तियोळोन्दि सज्जनीकेगे नेलेयाद मान्तनद पेपु समन्तळवट्ट **नीजिकब्ब**रसिगे सन्दरुन्धति पेळ्ळ द्दोरेयेन्ददे दोस(प) वल्लदे ॥ तत्तनूज । क ॥ श्रीमदुदयाद्रिशिखरोद्दामोदयतपनविभवरूप कीर्ति-श्रीमहिमातिशय जयरामारमण जितारि **शान्तनृ**पाळ ॥ दयेयिन्दोळिपन तेळिपिनिं गुणगणाळ्कारदिं मार्ग्गनिर्ण्णयदिं तत्व(त्त्व)विचारदिं गमक-दिंदाहारभैषज्यसाभयशास्त्रामळदानदिन्दधिकनेन्दन्दोळिपनिं **शान्ति-वर्म्म**न विख्यातियनोन्दे नाळिगेयोळिन्ने वण्णिपं बण्णिप ॥ तदग्रपत्नि ॥ श्रीवनिते ताने बन्दु महीवनितेगे तिळकमेनिसि **शान्त**न ललितश्रीवनि-तेयाद विभवमने वोगळ्वुदो **चन्दिकब्बे**यरसिय पेप ।

यतितारकापरीतः कण्डूरगणोरुकन्धिवृद्धिकरः । **बाहुबलिदेवचन्द्रो** जिनसमयनभस्तले भाति ॥ व्याकरणतीक्ष्णदंष्ट्रस्सिद्धान्तनख(खः) प्रमाणकेसरभारः । **बाहुबलिदेवसिंहं** (हः) प्रवादिगजतीव्रमदहरस्स-

एरकमल्लदे पोल्लदागेरगि दोरेकाण्मे कोळ्व तेरनल्लदे ।
नेरेये वरल् तक्कडियल्लि विसुवल्लिये बिस अरिदयिल्ल ।
परियना दिट्टि मुरिवल्लि कडुपिनोळ् मुरिदयिल्लिल्लिय विन्नणवन् ।
नेरेये कल्पदे वीरर वीरन गिडेगळाभरणन नेडिकल्ल ॥
आसुवनुं कूसुवनुम् ।
बीसुवनु गडेय नेगळ्द तक्कडियोळेनुत्त् ।
आसदेयु कुङ्कदेयुम् ।
बीसन्देयु विद्द मेळेगुमेळेव-बेडङ्गम् ॥
एरगळरियदे मेण्टुकम्मगुळ्दु वरलणमरियदे तप्पा पिन्दम् ।
तेरेननरियदे भागमनिक्कियु मूरेडेगल्लदे कट्टाडियु मुरिये पायिसिद ।
तुरुय कोन्दु धरेगेडेतेगे गेडेयिवनेनिसद ।
नेरेये कडु-जाणनेनिसल्के बर्कुमे गडेगळाभरणन कल्लदल्लम् ॥
कालगळ कय्गळ तुरगद ।
कोलगळ तिणिवुगळोळल्लि बञ्चिसुतेळेगुम् ।
गेल्गुमेने नेगळ्द मार्गदे ।
गेल्गुमे वणेदल्लि **कीर्त्ति-नारायणनम्** ॥

वनधि-नभो-निधि-प्रमित-संख्य-स(श)कावनिपाळ-काळमं ।
नेनेयिसे चित्रभानु परिवर्त्तिसे चैत्र-सितेतराष्टमी-
दिन-युत-भौमवारदोळनाकुळ-चित्तदे नोन्तु ताळ्दिदम् ।
जन-नुत**निन्द्र-राज**नखिळामर-राज-महा-विभूतियम् ॥

[एरेव-बेडङ्गम्, कीर्ति-नारायणके युद्धमें शौर्यके कार्योंका वर्णन । (उक्त मितिको) अनाकुल चित्तसे व्रतोको पालते हुए, प्रसिद्ध

इन्द्रराजने स्वर्गकी विभूति पाई-(अर्थात् मर गये)[1] ।]

[EC, XII, Sira tl., n° 27]

१६५

श्रवण बेल्गोला—संस्कृत

[विना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं , भा. १.]

१६६

अङ्गडि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ९९० ई० का]

[अङ्गडि (गोणीवीडु परगना) में, वसदिके पासके पाषाणपर]

(सामने) ··· ·· ···· ······सुद पञ्चमी-बृहस्पति वारदन्दु स्वस्ति · ·यम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-परायणरप्प द्रविळ-सघद···· अद श्री-कोण्डकुन्दान्वयद त्रिकालमौनि-भट्टारक शिष्यर् श्रीमदिरिव-बेडेङ्ग ···ळन गुरुगळ् विमलचन्द्र-पण्डित-देवर् सन्यासन-विधियिं मुडिपि मुक्तियनेय्दिदर् ॥ (पीछे) श्रुत-विमळादिचन्द्र ··· · ·· ···· श्रीमनु···· · ···· ···पण्डिताह्वयसु-विमळचन्द्र-मुनिः ॥

नमो विमळचन्द्राय कळाकळित-मूर्तये ।
सत्त्वात् सद्-बुधसेव्याय शान्तामृतमयात्मने ॥

श्री-विमळचन्द्र-पण्डित-देवर गुड्डी हवुम्ब्बेया तङ्गे शान्तियब्बे तम्म गुरुगळ्गे परोक्ष-विनय गेय्दर् ॥

[(साधु-गुणोसहित), द्रविल-संघ, कोण्डकुन्दान्वय तथा पुस्तक-गच्छके त्रिकालमौनि-भट्टारकके शिष्य,—श्रीमद् ईरिव-बेडेङ्ग···के गुरु,—

---

१ उसका काल और अतिमावस्थाका कथन वही है जो श्रवणबेलगोला नं० ५७ के शिलालेखमें हैं । इन्द्रराज अन्तिम राष्ट्रकूट राजा था ।

विमलचन्द्र–पण्डितदेवने, सन्यास-विधिसे मरण कर, मुक्ति प्राप्त की। पण्डित पदके साथ विमलचन्द्रमुनिकी प्रशंसा।

विमलचन्द्र-पण्डित-देवकी गृहस्थ शिष्या हबुम्बेकी छोटी बहिन शान्तियब्बेने अपने गुरुके स्वर्गवासके उपलक्ष्यमें स्मारक खड़ा किया।]

[EC, VI, Mudgere tl, n° 11]

१६७

पञ्चपाण्डवमलै—तामिल

[काल लगभग ९९२ ई०]

श्री

१ स्वस्ति [॥]

२ [को] विराजराज [क] े [सर] ीव [न्] मर्क्कु याण्डु ८ आ [व]दुपडुवूर्क्[ो]ट्टत्तुप्पेरुन्-तिमिरिनाट्टुत्तिरुप्प[ा]न्मलैप्पो-

३ गमागिय कूरग[न्प्]ाडि [इ]रैयिलि प[ळ्]ळिच्चन्दत्ते की [ळ्]-प्-[प]ग[ला]ड[इ]लाडर[ा]जगेळ् कर्पूर-विलै को [ण्डु इ] द्द[म्]मङ्क

४ ट्टप्पोगि[न्]रडेन् [रु उ]डैयार् इला[ड]राजर् पु[ग]ळिच्-चप्पर्-[ग] ण्डर् मग[ना]र् [वी]रशोळर् तिरु[प्पान्]मलैदेवरै-त्तिरुव-

५ [डित्तो]ळु [देळुन्]द[रु]ळि इ [रु]उक्क इ[व]र् देवियार् इलाडमह[ा]देवि[य]ार् कर्पूर-विलैयुमन्नियाय[य]वावद[ण्ड]विरै [यु]म[ो]-

६ ळिन्द[रुळ वे]ण्डुमेन्रु विण्णप्पञ्जेय् [य उ]डै[या]र् [वी]र-शोळर् कर्पूर-विलैयुमन्नियाय[य] वावदण्[ड]विरै-

७ युमो [ळ्] ि ञ्जोमेन्ररुच्चेय्य अरि[यू]ऊर् किळ [वन्] ा गि[य वी] र-शोळवि-लाड-प्पेर [र्] ै य[नु]डैयार् [क] न्मियेया]-

८ णत्तियागविदु[1] कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-[वा] वदण्ड[व्]-इरैयुमोळि ञ्जु शासनाञ्चेय्द-पडि [।] इदु [व]-

९ ल [द्] उ कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-वावदण्डव्-इरैयुमिप्पळ्ळिच्चन्द-त्तैक्कोळ्[व्]ान गङ्गैयि-

१० डै [कुमरिय्] इडैचेय्दार् शे[य्] द पा [व]ङ्कोव्वारिदुवल्लदिप्प-ळ्ळिच्चन्दत्तै केडुप्पार वल्लव[रै]

११ · · [न]रु[व] [।] [इ]-द्द [र्म्मत्] तै [र]क्षिप्पान् पादधूळिय् एन्-[रलै] मे[ल]न [।] अर[म]रवर्क्क अरमल्ल तु[ण]ैयिल्लै ॥

[यह शिलालेख तमिल गद्यकी ११ पक्तियोका है। लेखकी दूसरी पक्तिमें राजराज-केशरीवर्मन्के राज्यका ८ वा साल इसका काल बताया गया है। प्रस्तुत लेख महाराजा राजराज चोलके राज्य-कालका है। यह ९८४-८५ ई० मे गद्दीपर बैठे थे। इस लेखमें किसी विजयका वर्णन नहीं है। इस शिलालेखके नीचे एक पशु बनाया गया है, वह चीता होना चाहिये, क्योकि चोल राजाओका वह चिह्न रहा है।

लेखमें (पक्ति ३) लाटराज वीरचोलका एक शासन है। वह चोल राजा राजराजका कोई अधीनस्थ राजा होना चाहिये, क्योकि राज्यकाल उसीका (राजराजका) दिया हुआ है। लाटराज वीर-चोल पुगळिवप्पवर गण्डका पुत्र था। वीर-चोल और उनके पूर्वजोके नामके पहले लाटराज ऐसा विरुद लगा रहनेसे मालूम पड़ता है कि ये लोग पहले किसी समय लाट (गुजरात) से आये थे।

यह अभिलेख इस बातका उल्लेख करता है कि अपनी रानीकी प्रार्थना पर वीर-चोलने तिरुप्पान्मलैके देवताके लिये (पं० ४) कूरगन्पाडि गाँवसे कुछ आमदनी बाँध दी थी।

यद्यपि चैत्यालयका नाम सिर्फ 'तिरुप्पान्मलैका देवता' दिया गया है, परतु 'पळ्ळिच्चन्दम्' इस शब्दसे मालूम पडता है कि यह कोई जैन

---

१ 'इन्द' पढ़ो।

चैत्यालय होना चाहिये। शिलालेख नं० ११५ से भी यह निर्णीत होता है। उसमे यक्षिणी और नागनन्दि गुरुकी प्रतिमा है। यद्यपि यक्षिणियोंको बौद्ध और जैन दोनों ही मानते हैं, परन्तु नागनन्दि यह जैन नाम है।]

लेखमें कूरगम्पाडिके 'पल्लिचन्दं' की आमदनी दो तरहकी बताई गई है – एक तो कर्पूरविलै (कपूरके खर्च) की, दूसरी 'अन्नियाय वावदण्ड-विरै' की। कपूरखर्चकी बात तो ठीक समझमे आ जाती है, लेकिन उत्तर-की आमदनी 'अन्नियाय–वावदण्डविरै' का क्या अर्थ है, सो स्पष्ट नहीं है। इसके भी दो अर्थ किये जाते हैः एक तो अन्याय वावदण्ड (जुलाहोंका करघा) इरै (कर)। इसका अर्थ होगा 'अनधिकृत करघोपरका कर' (The tax on unauthorised looms)। दूसरा अर्थ इसका यह हो सकता है अन्याय+आव+दण्ड+इरै। 'आव'का अर्थ होता है वाणोंका तूणीर। इसका तात्पर्य यह है कि विना अधिकारपत्र पाये जो धनुष-बाणका प्रयोग करते थे उनपर जुर्माना (दण्ड) किया जाता था।

[EI, IV, n° 14, B.]

१६८

श्रवण-बेल्गोला—कन्नड

[विना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं., भा. १.]

१६९

कुम्बरहल्लि—कन्नड—भग्न

[विना काल–निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १००० ई०]

[कुम्बरहल्लि (कूद्दनहल्लि परगना) मे, बसवगुडिकी दक्षिणी दीवालपर]

स्वस्ति श्रीमदजितसेनपण्डितदेवर शिष्यण ना···क पुणि-समय

[इसमे अजितसेन-पण्डितके शिष्यका वर्णन है।]

[EC, III, Mysore tl, n° 31.]

१७०

मुत्सन्द्र—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग सन् १००० ई० का]

[मुत्सन्द्र (देवलापुर परगना) में, गाँवके पूर्वमें एक गोल बटिया (Bouldei) पर]

श्रीमतु कलुकरें-नाड् आळ्वरु चोक-जिनालयके मत्तिकेरेय नट्ट कल चतुस्सीमान्तरेषु विट्ट दत्ति इद किडिसिदवं कविले ब्राह्मणनुव कोन्द ब्रह्म......एय्दुगु

[कलुकरें-नाड्के शासकने चोक जिनालयके लिये मत्तिकेरेंका दान दिया ।]

[EC, IV, Nagamangala tl, n° 92]

१७१

तिरुमलै—(नार्थ अर्काट)-तामिल

[१००५ ई०]

१ स्वस्ति श्री [।।] तिरुमगळ् पोलप्पेरु निलच्चे-

२ ल्वियुन् तनक्के युरिमै पूण्डमै मनक्कोळ क्कान्दळूर् च्चालै कलम-रुत्तरुळि वेङ्गैनाडुड् गङ्गपाडियु

३ नुळम्बपाडियु न्तडिगै पाडियुड् कुडमलैनाडुड् कोल्लमुड् कलिङ्गमुं एण्डिशै पुगळ्तर विळमण्डलमु तिण्डिरल् वेन्रि त्त-

४ ण्डाऱ्कोण्ड[त्ते]ळ्लि्ल् वळ्ळरुळि एछायाण्डु तोळुतेळ विळङ्गुयाण्डै चेळिआरैत्तेचु कोळ् श्रीकोचि-

५ राज इराजकेशरिपन्मरान श्रीइराजइराजदेवर्क्कु याण्डु २१ आवदु अलैपुरियु पुनर् पोन्नि आरुडैय चोळन्

६ अरुमोळिक्कु याण्डु इरुपत्तोन्रावदेन्रुङ्गलै पुरियुमतिनिपुणन् वेण् किळान्

७ **गणिशेखरमरुपोर्च्चुरियन्न्** नामत्ताल् वामनिलै निरूरकुड्-

८ कलिन्चिट्टु नीमिर् **वैय्यौमलैक्कु** नीडुळि इरुमरुङ्गुं नेल् विळैय-

९ कण्डोन् कुलै पुरियु पडै अैरचर कोण्डाडुं पादन **गुणवीरमा-मुनिवन्**

१० कुळिर् वैय्यौक्कोवेय् [॥]

[यह अभिलेख कोविराजाराजकेसरिवर्मन्, उर्फ राजराज-देवके २१ वें वर्षमें अभिलिखित है, तथा पोन्नि, अर्थात्, कावेरी नदीके स्वामी 'शोरन् अरुमोरी' के इक्कीसवें वर्ष में (शब्दोंमे) ।

लेख बताता है कि किसी गुणवीरमामुनिवन्ने एक नहर या मोरी (Sluice) गणिशेखर-मरु पोर्चुरियन् नामके उपाध्यायके नामसे बनवाई थी । तिरुमलै चट्टानका उल्लेख "वैय्यौमलै" नामसे है ।]

[South Indian Ins, I, n° 66 (p. 94–95), t & tr.]

१७२

बेलूरु—कन्नड-भग्न

[शक ९४४=१०२२ ई०]

[बेलूरु (कोत्तचि परगने)में, तालाबपर दुर्गा-देवीके पीछेके पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-रिपु-नृप-कुम्भि-कुम्भ-दळन-पञ्चास्य समुदित-श्रीम···· ळ-विमुक्त-**चोळ**-भूपाळ···· लित ··· जित-वीर-**लक्ष्मी** आश्रित-भक्त-मला-पकर्षण भूमिसञ्चरण जय-मूल-स्तम्भं श्रीमद् अ····**गङ्गमण्डलेश्वर** प्रभु-पद्म-युग्माशोक-भोगिकाश्रित-भ्रमद्-भ्रमर जित-रिपु संसित-समर-प्रताप राज्य-भार-धुरन्धरं अमात्य-समिति-विराजमानम् सत्यत्व-**नाभि**-कानीनम समर-जित-भूप-जीव-प्रदनु अतिपूताचरणम् रिपु-खरकिरणम्········ ति**गाङ्गनेयं** सौच-**गाङ्गेयं** शरणागत-वज्र-पञ्जरम् रिपु-कञ्ज-कुञ्जरम् तन्त्र-रक्षामणि मन्त्री-चिन्तामणि विनेय-विळासम् श्रीमत्-**पेर्ग्गडे-हासम्**

विश्व-विस-हासर् प्पतिहिताभरणम् ॥ शक-नृप-कालातीतसंवत्सर-शतङ्गळ् ९४४ नेय दुर्म्मुखि[1] (दुर्म्मति) संवत्सरद फाल्गुण-मास-सुद्ध-पञ्चमी-सोमवार पुनर्वसु-नक्षत्रदन्दु गङ्ग-पेर्म्मनडिगळु कर्ण्णाटनाळुत्तमिरे तम्म स-दोराळ्दन्दु ......नव जिनालयक्के पेर्म्मनडि जीवितम् ....द बलोर-कट्टलाळ्वाद केरेय मेट्टुकं वोग्सि कट्टेय कट्टिसि तूबनिरासि मुन्न तव....कोळग मण्णु विट्ट दोन्द...केर्क्केगे.......मुम विट्ट मिदनळिद् कोटि-कविलेय ब्राह्मणरु काशियुमनळ्किरे

बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[इस लेखमें 'पेर्गडे-हासम्' के द्वारा, उक्त मितिको, बलोर-कट्टके गहरे तालावकी सीडियोंके बनवाने, बांधके निर्माण कराने, नहर या मोरीके बनाये जाने, तथा.......... एक 'कोलग' भूमिके देनेका जिक्र है। उसके समयमें कण्णोट (कर्नाटक) पर गङ्ग पेर्म्मनडि शासन कर रहे थे। यह पुण्यकार्य पेर्म्मनडिके दीर्घजीवनकी कामनाके लिये उसकी सरकारके स्थानमें एक नये जिनालयके रूपमें किया गया था।]

[EC, III, Mandya II., n° 78]

१७३

मथुरा—संस्कृत

[संवत् १०८०=१०२३ ई० सन्]

१ ओ श्रीजिनदेवः सूरिस्तदनु श्रीभावदेवनामाभूत् ।
आचार्यविजयसिङ्ग-
२ स्तच्छिष्यस्तेन च प्रोक्तैः ॥ [१ ॥]
सुश्रावकैर्नवग्रामस्थानादिस्थै ससत्कितः ।

1 सवत्सर 'दुर्म्मुखि' दिया हुआ हैः यह स्पष्टत गल्तीसे लिखा गया है। इसकी जगह 'दुर्म्मति' होना चाहिये जो शक ९४४ से मेल खाता है।

३ वर्द्धमानश्चतुर्बिंबः कारितोयं सभक्तिभिः ॥ [॥ २]
संवत्सरै १०८० थंभकप-
४ प्पकाभ्या घटितः ॥ ओं[१]

अनुवादः— ॐ। श्री जिनदेवसूरि हुए, उसके बाद श्री भावदेव हुए। उनके शिष्य आचार्य विजयसिङ्ह (विजयसिंह) हैं। उनके उपदेशसे नवग्राम, स्थान आदि (शहरों) में रहनेवाले सुश्रावकोंने स्वशक्ति और स्वभक्तिके साथ वर्धमानकी चतुर्बिंब (सर्वतोभद्र) प्रतिमाका निर्माण करवाया। यह प्रतिमा १०८० [विक्रम] सवत्में थंभक और पप्पक शिल्पियोंके द्वारा बनकर तैय्यार हुई थी। ओं॥

[EI, II, n° XIV, n° 41]

१७४

तिरुमलै - तामिल

[१०२३ ई०]

१ स्वस्ति श्री [॥] तिरुमन्नि वळरविरु निलमडन्दैयुं पोर्च्चयप्पावैयुञ् चीर्त्तनिच्चेल्वियुन् तन् पेरुन् देवियराकि इन्पुरु नेडु तियल् ऊळियुळ् इडैतु-
२ रैनाडुन्तुडर् वनवेलिप्पडर् वनवासियुञ् चुळ्ळिच्चुळ् मदिट्को-ळ्ळिप्पाकैयु नण्णर्करु मुरण् मण्णैक्कडक्कमुं पोरु कडल् ईळत्तरशर् तमुडियुं आड्ग-
३ वर् देवियरोङ्केळिन् मुडियुमुन्नवर् पक्कल्त्तेन्नवर् वैत्त सुन्दर-मुडियुं इन्दिरनारमुन्तेण्डिरै ईळमण्डलमुळुवदुं एरि पडैक्के-रळर्

---

१ यह लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम पड़ता है।

४ मुरैमैयिऱ्गुड्कुलतनमाकिय पलर् पुगऴ् मुडियुन्चेड्कादिऱ् मालैयुन् चड्कादिऱ् वेलैतोल् पेरुड्कावऱ् पल पऴन्तिवुन् चेरुविऱ् चेन-

५ विल् इरुपत्तोरु कालैरुचुकऴै कट्ट **परशुरामन्** मेवरुन् **शान्ति-मत्तिवत्तरण्** करुति इरुत्तिय चेम् पोऱ्रिरुत्तकु मुडियुं भयड्कोडु पऴि मिग **मुशङ्गियिल्** मु-

६ दुकिट्टोऴित्त **जयसिड्गन्** अऴप्पेरु पुगऴोडु पीडियल् **इरट्ट-पाडि** एऴरै इलक्कमु **नवनेदिक्कुल** प्पेरुमलैक्कुऴ् **विक्किरमवीरर्** शक्करकोट्टमु-

७ **मुदिरपडवल्ले मदुरमण्डलमु** कामिडैवऴैय **नामणैक्कोणमुं वेञ्जिलैवीरर् पञ्चप्पऴ्ऴियुं** पाचुडैप्पऴनन् **माशुणिदेशमु** अयर्वि-

८ ल् वण् किर्त्तियातिनगर **वैयिर्** चन्दिरन् रोल् **कुलत्तिरतरनै** विऴैयमर्क्कऴत्तुक्किऴैयोडु पिडित्तुप्पल तनत्तोडु निरै कुल तनक्कुवे-

९ युन् चिट्टरुन्चेरि मिऴैयोट्**डविषैयमु भूशुरर्** चेर नल्**कोशलै-नाडुन्तन्मपालनै** वेम् मुनैयऴित्तु वण्डुरै चोलै**त्तण्डयुत्तियु-मिरण**

१० **शूरनै** मूरनूर त्ताक्कि त्तिक्कणै किर्त्ति**त्तक्कणलाडमुड् गोविन्द-चन्दन्** माविऴिन्तोडत्तड्गाद चारल् **वड्गाऴदेशमुन्तोडु** कडर्शड्गुकोट्टन् **महीपालनै**

११ वेञ्जम वऴाकत्तञ्चुवित्तरुऴि ओण्टिरल् यानैयुं पेण्डिर् पण्डार-मुनित्तिल नेडुड्कडलुत्तिरलाडमु वेरि मणर्रित्तेरि पुनर्गड्गै युमाप्-

१२ प्पोरु तण्डाऱ्कोण्ड कोप्परकेशरिपन्मरान उडैयाऱ् श्रीरा-
जेन्द्रचोळदेवऱ्कु याण्डु १२ आवदु जयङ्गोण्डचोळम-
ण्डलत्तु पङ्गळनाट्टु नडुविल्

१३ वगैमुगैनाट्टुप्पळ्ळिच्चन्दं वैगवूऱ् त्तिरुमलै श्रीकुन्दवैजिनाल
यत्तु देवऱ्कु प्पेरुंबाणपाडिक्करैवळिमल्लियूऱ् इरुक्कुं-
व्या-

१४ पारि नन्नप्पयन् मणवाट्टि चामुण्डप्पै वैत्त तिरुनन्दाविळ-
क्कु [।।] ओन्रिनुक्कुक्काशु इरुपदु तिरुवमुदुक्कु वैत्त काशु
पत्तुम् [।।]

[यह अभिलेख कोपरकेसरिवर्मन्, उर्फ उडैयार् राजेन्द्र-चोल-देवके बारहवें वर्षका है। इसके आरम्भमे उन सभी देशोके नाम दिये हुए है जिनको इस राजाने जीता था। उनमे हमें ७॥ लाख भूमिकरवाले 'इरट्ट-पाडि' का पता चलता है जिसे राजेन्द्रचोलने जयसिंहसे लिया था। इस देशको उन्होंने अपने राज्यके ७ वें और १० वें वर्षके मध्यमें जीता होगा। इस अभिलेखका जयसिंह 'पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह तृतीय' (लग-भग शक ९४० से लगभग ९६४ तक) के सिवाय और कोई नहीं हो सकता। जब कि राजेन्द्र-चोल और जयसिंह तृतीय दोनों एक दूसरेको जीतनेकी डींग मारते हैं, तब हमें यह मान लेना चाहिये कि या तो सफ-लता दोनोको क्रमशः मिली होगी, या चिर विजय किसीको भी नहीं मिली होगी।

दूसरे दो देश, जिन्हें राजेन्द्र-चोलका जीता हुआ कहा जाता है, 'इडैतु-रैनाडु' और 'वनवासि' है। पहला 'ईडतोरे' देश है, जोकि मैसूर जिलेके एक तालुकेका हेड-क्वार्टर है, दूसरा बम्बई प्रान्तके 'नॉर्थ केनारा' जिलेका 'बनवासि' है।

"कोकिळप्पाकै" मि० फ्लीटके अनुसार, पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह तृतीयकी राजधानियोंमेंसे एक था।

'ईरम्' या 'ईर-मण्डलम्' से मतलब सीलोन (लङ्का) से है। तेन्न-वन्='दक्षिणका राजा' से प्रयोजन पाण्ड्य राजासे है। उसके विषयमें अभिलेख कहता है कि उसने पहिले 'सुन्दर' का मुकुट सीलोनके राजाको दे दिया था जिससे राजेन्द्र-चोलने पुनः वह सुन्दरका मुकुट ले लिया। वर्तमान लेखमें 'सुन्दरका मुकुट' से मतलब 'पाण्ड्य राजाका मुकुट' मालूम पडता है। यहाँ 'सुन्दर' कोई पाण्ड्य-वंशका राजा मालूम पडता है। उसका नाम लेखके कर्त्ताने नहीं दिया और न सीलोनके राजाका नाम जिसे राजेन्द्र-चोलने जीता था। आगे लेख यह भी बताता है कि राजेन्द्र-चोलने 'केरळ' अर्थात् मलबारके राजाको जीता था। उसने 'शक्कर-कोट्टम्' के राजा विक्रम वीरको भी हराया था। लेखका 'मदुरा-मण्डलम्' पाण्ड्य देश है, जिसकी राजधानी मदुरा थी। 'ओड्ड-विषय' उडीसा है। 'कोशलैनाडु' दक्षिण कोसल है, जो जनरल कानिंघमके अनुसार, महानदी और इसकी सहायक नदियोंकी ऊपरकी घाटी है। 'तक्कणलाडम्' और 'उत्तिरलाडम्' से मतलब क्रमशः दक्षिणी और उत्तरी लाट (गुजरात) से है। पहला किसी 'रणशूर' से लिया गया था। आगे बताया जाता है कि राजेन्द्र चोलने 'बङ्गालदेश' अर्थात् बङ्गाल को किसी गोविन्दचन्द्रसे जीतकर उसका विस्तार गङ्गातक किया था। शेष देश और राजाओंके नाम, ई हुल्ज (E. Hultzsch) कहते है कि, वे पहचान नहीं सके।

लेखमे तिरुमलै, अर्थात् 'पवित्र पहाड' का वर्णन है, और वह इसके ऊपरके मन्दिरको जिसे 'कुन्दवै-जिनालय' कहा गया है, दिये गये दानका उल्लेख करता है। यह 'कुन्दवै' कौन थी, इसके विषयमे ऐतिहासिकोंके दो मत है।

इस शिलालेखके अनुसार, तिरुमलै पहाड़की तलहटीमें जो गाँव है उसका नाम 'वेंगवूर्' है। यह 'मुगैनाडु' का है, जो 'जयङ्कोण्ड-चोल मण्डलम्' के 'पङ्गळनाडु' का एक डिवीजन (भाग) है।

[South Indian Ins., I, n° 67 (p. 95–99)

१७५

चिक्क-हनसोगे—संस्कृत

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०२५ ई० का]

[चिक्क हनसोगे (हनसोगे परगना)में, जिन-वस्तिके दरवाजेके ऊपर]

(ग्रन्थ और तामिल अक्षर)

श्री-राजेन्द्र-चोळन जिनालय देशिगण वसदि पुस्तक-गच्छम्

[राजेन्द्र चोळ जैनमन्दिर, देशि-गण और पुस्तक-गच्छकी वसदि]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 21]

१७६

खजुराहो—संस्कृत

(सं० १०८५=१०२८ ई०)

संवत् १०८५ । श्रीमत् आचार्य पुत्र श्री

ठाकुर श्री देवधर सुत । श्री सिवि

श्री चन्द्रयदेव. श्री शान्तिनाथस्य प्रतिमा कारी ।

[इस लेखमें स्थापित प्रतिमाका नाम शान्तिनाथ है, सेतनाथ नहीं, जैसा कि लोगोंमें प्रसिद्ध है । सम्वत् (विक्रम) भी साफ १०८५ दिया हुआ है ।]

[A. Cunningham, Reports, xx 1 p, 61.]

१७७

मुल्लूर—संस्कृत

[विना काल निर्देशका । लगभग १०३० ई० (लू० राइस) ।]

[मुल्लूरमें, वस्ति मन्दिरमें शान्तीश्वर वस्तिके सामने पादद कल्लु पर]

गुणसेन-पण्डितस्य गुरोः पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवस्य श्री-पादम् ।

[गुणसेन-पण्डितके गुरु पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके पवित्र पदचिह्न या पादुकाएँ ।]

[EC, IX, Coorge tl, n° 41]

१७८

अङ्गडि—कन्नड़-भग्न

[विना काल-निर्देशका, पर संभवत: लगभग १०४० (?) ई०
(लू० राइस) ।]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, हरमकि दोड्ड-उडचेमें पाषाणपर]

................राज्यं गेये... **द्रविणान्वयद मूल-सं**.........
... **पण्डित**...............तु तर्क्काचाळितामा....जलधि-यशो...कुतू-
हल...शय **वज्रपाणि पण्डित**-चरण ॥ एनिसि सले **गङ्गवाडिय** ।
मुनि-वररिं **राजमल्ल**-भूपालकनीमनु-नीति-मार्ग्गनभयं । जन-पति-सम्य-
क्त्व-**मार**-नृपतिय गुरुगळ् ॥ वृ ॥ इरदापन्निगळङ्गळिं तळ...व्यक्त
हो....। दुरितारण्यमनेय्दे सुट्टु **सोसवूरोळ्** विळ्द कालान्तदोळ् । ....
रे सन्यास-विधानदिं मुडिपि पूज्य **वज्रपाणि-व्रतीश्वरर**त्युत्तम-मुक्तिय
पडेदरेम् पुण्यक्कनर् नो.... ॥

(बायीं ओर)............... **रविकीर्तिमुनीन्द्रनेन्दु** पट्टळिगेये
पेळदेनेळ्व **कल्नेले-देवर** साहसोक्तियम् ॥ श्रीमत्-कल्नेले-देवर्त्तम्म
गुरुगळ्गे निषिधिगेयं माडिसिदर् मङ्गळ

[द्रविणान्वय, मूलसंघके ..पण्डितके शिष्य वज्रपाणि-पण्डितके चरणोंमें
जब राज्य कर रहा था -गङ्गवाडिके मुनियोंमें प्रसिद्ध राजा राजमल्ल था ।
इसके गुरु वज्रपाणि-व्रतीश्वरने सोसवूरमें अपना जीवन व्यतीतकर अन्तमें
संन्यास-मरण धारण किया और उन्हींका यह स्मारक है ।]

[EC, VI, Mūdgere tl, n° 18]

१७९

ब्या(बया)ना (राजपूताना)—संस्कृत

[स० ११००=१०४४ ई][1]

[IA, XIV, p 8-10 n° 151, t & a]

---

१ यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

१८०

दोड्ड-कणगालु—कन्नड़।

[वर्ष तारण=१०४४ ई० ? (लु० राइस) ।]

[दोड्ड-कणगालुमे, गौडके खेतमें एक दूसरे पाषाणपर]

श्री-मूलसंघ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय इङ्गुळेश्वरद बळिय‥‥‥शुभचन्द्र-देवर प्रियाग्र-शिष्यरुमप्प प्रभाचन्द्र-देवर निसिधि तारण-संवत्सर-चैत्र-शुद्ध-पञ्चमी-शुक्रवारदन्दु मुक्तरादरु ।

[श्री-मूलसंघ देसिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय और इङ्गलेश्वर वलिके‥‥शुभचन्द्र-देवके प्रिय ज्येष्ठ शिष्य प्रभाचन्द्र-देवकी समाधि (निसिधि) । (उक्त वर्षमें) उन्हें छुटकारा मिला, अर्थात् स्वर्गगत हुए ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 56]

१८१

बेळगामि—कन्नड़

[शक ९७०=१०४८ ई०]

[सोमेश्वर मन्दिरके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर विजय-राज्यं प्रवर्त्तिसे तत्पाद-पल्लवोपशोभितोत्तमाङ्ग स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं वनवासि-पुर-वरेश्वरं महालक्ष्मी-लब्ध-वर-प्रसादं त्याग-विनोदमायदाचार्य्यनसहाय-शौर्य्यं गण्डर गण्ड गण्ड-भेरुण्ड मूरु-रायास्थान-कलि बिरुद-मण्डलिक-वृषभ-शकरं कलिगळ मोगद कयि बिरुदरादित्यम् प्रत्यक्ष-विक्रमादित्य जगदेक-दानि-

नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **चा-ण्ड-रायरसर बनवासि-पन्निर-च्छासिरमनाळुत्तमिरल्** राजधानि-**बळ्ळिगावेय** नेले-वीडिनोळ् **शक-वर्ष ९७० नेय सर्व्वधारी-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-त्रयोदशी-आदित्यवारदन्दु** जजाहुति-श्री-**शान्तिनाथ**-सम्बन्धियप्प **बळगार-गणद मेघनन्दि-भट्टारकर**-शिष्यरप्प **केशवनन्दि-अष्टोपवासि-भळा(ट्टा)रर** वसदिगे पूजा-निमित्तदिं धारा-पूर्व्वकं **जिड्डुळिगे ७० र** वळिय राजधानि-बळ्ळिगावेय पुळ्ळिय-बयलोळ् मेरुण्ड-गळेयोळ् कोट्ट गळ्दे मत्तरय्दु अदर सीमे (सीमाओंकी चर्चा)

धर्म्मेण शौर्य्य-सत्येन त्यागेन च महीतले ।
गण्ड-भेरुण्ड-सादृश्यो न भूतो न भविष्यति ॥
(हमेशाके अन्तिम श्लोक)
वनवासे-देसदोळगण ।
जिन-निळय विष्णु-निळयमीश्वर-निळयम् ।
मुनि-गण-निळयमिव रा- ।
यन बेसर्दि **नागवर्म्म**-विभु माडिसिदम् ॥

[जिस समय, (हमेशाकी चालुक्य उपाधियो सहित), त्रैलोक्यमल्ल देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान था —वनवासि-पुरवरका ईश्वर, महालक्ष्मीसे जिसने वर प्राप्त किया था, 'गण्ड-भेरुण्ड' 'जगदेकदानी' इन और दूसरे पदो सहित, महामण्डलेश्वर चामुण्डराय रायरस वनवासी १२००० पर शासन कर रहा था,—बळ्ळिगावे राजधानीमें, (उक्त मितिको), जजाहुति शान्तिनाथके साथ सम्बद्ध बळगार गणके मेघनन्दि-भट्टारकके शिष्य केशवनन्दि अष्टोपवासि-भट्टारकी वसदिमें पूजा करनेके लिये, जिड्डुळिगे-सत्तरमें, राजधानी बळ्ळिगावेके मृगवनमें, 'भेरुण्ड' दण्ड (माप) अनुसार, ५ मत्त धान (चावल)-क्षेत्रका दान किया । (भूमिकी सीमाएँ) ।

गण्ड-भेरुण्ड' की प्रशंसा । इमेशाके अन्तिम श्लोक ।
बनवासे देशमें, जिन-निवास, विष्णु-निवास, ईश्वर-निवास और मुनिगणके लिये निवास । ये, रायकी आज्ञासे, नागवर्म्मा-विभुने बनवाये ।]

[EC, VII, Shikarpur tl, n° 120]

१८२

कल्भावी—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

शक २६१ (?)

ॐ (॥) श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्त्यमोघवर्षदेव-परमेश्वर-परमभट्टारक-विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारंबरं सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वर कुवलालपुरवरेश्वर पद्मावतीलब्धवरप्रसादित कोङ्गुणि-पट्टबन्धविराजित शासनदेवीविजयभेरीनिर्ग्घोषण भगवदर्हन्मुमुक्षुपिञ्छध्वजविभूषण सकलभूपालमौलिमाणिक्यचूडारत्नरञ्जितचरण विद्विष्टमनोरमालङ्कारहरण सारस्वतजनितभाषात्रयकवितालतिवाग्ललनालीलाललाम गजविद्याधाम श्रीमत्-शिवमाराभिधानसैगोट्टगङ्ग-पेर्म्मानडिगळ् मरदलुमेतेयागे गङ्गवाडि-तोम्भत्तारु-सासिरम सुखसङ्कथाविनोददिं प्रतिपाळिसुत्तिल्दु कादलवल्लि-मूवत्तरोळगण कुम्मुदवाडदोळ् जिनेन्द्रमन्दिरम माडिसिदनदे दोरेयदेन्दोडे ॥ वृ ॥

इदु गङ्गाधीश्वर-श्रीगृहमिदु विलसद्गङ्गभूपालराम्नायद
कीर्तिश्रीविहारास्पदकरमिदु गङ्गावनीनाथरौदार्य्यद
जन्मस्थानमेम्बन्तिरे विबुधजनानन्दम भव्यसंपत्पदम
सैगोट्ट-पेर्म्मानडि जिनगृहम माडिद भक्तियिन्दम् ॥

आ जिनमन्दिरके । वृ० ।

विमळश्रीगुणकीर्तिदेवरवरंतेवासिगळ्-
नागचन्द्रमुनीन्द्रर्तदपत्यरुदृघजिनचन्द्राख्य-
र्त्तदीयात्मजर्द्दमिताघश्शुभकीर्तिदेवरेसेद-
र्त्तच्छिष्यरुवद्वचो-रमणीयर्स्सले देवकीर्त्तिगुरुगळ्वादीभकण्ठीरव[र् ॥]

आ परमेश्वरर्प्परवादिविध्वसिगळु विदिताशेपशास्त्ररुं मैलापान्वय मेनिसिद [क]रेयगणगगनचूडामणिगळुमप्प देवकीर्तिपण्डितदेवर काल कर्चि ॥ ॐ शकवर्ष २६१ नेय विभवसंवत्सरद पौष्य(ष)-वहुल-चतुर्द्दशीसोमवारमुत्तरायण-संक्रान्तियन्दु सैगोट्ट-गङ्ग कुम्मुदवाडमेम्बूर विट्टनळ्ळियेमत्त दानसालेगे पोल्नुम कुम्मुदव्वेय देगुलर्दि वडग पोगि मूड मुख केरिवुमं वसदियिं मूडलु दानसालेगे पन्निर्क्कयिनिवेसणमुम । ऊरिं मूड सर्पासि(?)गे-गर्द्देयु वयलुमं विट्ट-॥-ना ग्रामद सीमेयेन्तेन्दोडे । आलिगोण्डर्दि । सिडिलनेरिलिं । समेयदातनकेरेयिं । मलप्प-बूदर्नि । तोळप-वळप-विळियळरियिं । गङ्गरोळादुव-सकिय-केरेयिं । हिच्चलगेरेय कोडियिं । निन्दवेलिं । सिन्दगिरि-वोव्भागर्दि । सून्दिगेरेय नीर तट-वोव्भागर्दि । सिङ्गस-गेरेयिं । कदिकोट्ट-वळिवळि-गर्द्दयिन्दोळगुळ्ळ भूमि कुम्मुदवाडके ॥ मत्तमूरिं तेङ्क दानसालेय पोलके एरपकेरेय मूडण कोडिय वडगण गुत्तिय तेङ्क मुखदे मूडल्मेरे । तेङ्क [लु] वळिवळि-गर्द्देयु । आलिगोण्डसु मेरे । वडगलिविन-केरेय मध्य मेरे । पडुवलु विकिय-वेट्टद तेङ्कण वागोळगागि मेरे ॥ (।) इळिन्दोळगुळ्ळ भूमि दानसालेगे ॥ ओम् [॥]

ॐ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वर कुवलाल-पुरवरेश्वर पद्मावतीलब्धवरप्रसादित कोङ्गुणिपट्टवन्धविराजित शासनदेवीविजय-

मेरीनिर्ग्घोषण भगवदर्हन्मुमुक्षुपिञ्छध्वजविभूषणनुमप्प श्रीमत्कश्वरस-स्सैंगोट्ट-गङ्गर्नि वन्द धर्म्मम समुद्ररिसिदनिदन्तप्पदे प्रतिपालिसिदातं वारणासियोळ् सासिर्व्वरु ब्राह्मणर्गे सासिर कविलेय[म्] कोट्ट फलम् । इदनळिदात वाणरासियोळ् सासिर कविलेयुम सासिर्व्वर्त्तपोधनरुम सासिर्व्वर्ब्राह्मणरुमनळिद पातकमक्कु [।।] ओम् [।।]

सामान्योऽय धर्म्मसेतु नृपाणाम्
काले-काले पालनीयो भवद्भिस्-
सर्व्वनेतान् भाविनः पार्त्थिवेन्द्रान्
भूयो-भूयो याचते रामभद्रः । (।।)

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ।।
न विष विषमित्याहुः देवस्व विषमुच्यते
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्य पुत्र-पौत्रिकम् ।।
बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।।

ॐ [।।]

[कल्भावी बम्बई प्रान्तके बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकेके मुख्य-शहर सम्पगाँव (Sampgaum) से दक्षिण-पूर्व करीब ९ मीलदूर एक गाँव है । इसका पुराना नाम इसी शिलालेखकी पंक्ति ८, १५, और २१ में 'कुम्मुदवाड' दिया हुआ है । लिपिकी लिखावटसे यह लेख ई० ११ वीं शताब्दिका मालूम पडता है ।

लेख प्रकट करता है कि किसी अमोघवर्ष नामके राजाने मैलाप अन्वय और कारेय गणके देवकीर्त्ति नामके जैन गुरुके पादो (चरणों) का प्रक्षालन किया था । उस अमोघवर्षके सामन्त, गङ्ग महामण्डलेश्वर सैगोट्ट-पेर्मानडि या सैगोट्ट-गङ्ग-पेर्म्मानडिने, जिनका दूसरा नाम शिवमार था,

कुम्मुडवाड (कलभावीका ही पुराना नाम) गाँवमें एक जिनेन्द्रका मन्दिर बनवाया और इसके लिये गाँव दानमें दे दिया। इस दानका काल शक संवत् २६१, विभव संवत्सर दिया हुआ है। लेकिन, जे० एफ० फ्लीटकी रायमें, यह काल जाली है और वास्तविक उल्लेख लेखके उत्तरार्ध में सन्निहित है (ॐ स्वस्तिसे लेकर), जिससे मालूम होता है कि उपर्युक्त दान बीचमें या तो जब्त कर लिया गया था या असावधानीके कारण बन्द कर दिया गया था और उसे कञ्चरस नामके किसी दूसरे गङ्ग महामण्डलेश्वरने फिरसे चालू किया। भले ही तमाम लेख बनावटी हो, पर, जे० एफ० फ्लीटकी मान्यतानुसार, इसका उत्तरार्ध तो सच्चा है। मौलिक दानपत्रके खो जानेसे ही स्वयं लेखगत दानकी बनावटी तिथि देनी पडी है। लेखमें खाली 'अमोघवर्ष' ऐसा नाम देनेसे यह पता नहीं चलता कि 'अमोघवर्ष' नामके राष्ट्रकूट राजाओंमेंसे कौन सा अमोघवर्ष इस समय शासन कर रहा था। मौलिक दानका काल मैलाप अन्वय तथा कारेय गणके आचार्य गुणकीर्ति, नागचन्द्र, जिनचन्द्र, शुभकीर्ति और देवकीर्तिके वर्णनसे निकाला जा सकता है। प्रथम दान देनेके समयका काल शक सं० २६१ गलत है, क्योंकि विभव संवत्सर चालू शक सं० २३१ पडता है।]

[Ind. Ant, Vol XVIII, pp 309-13]

१८३

नल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड

[विना काल-निर्देशका, लगभग १०५० ई० (लूई राइस)]

[नल्लूर (हत्तुगट्टुनाड्) में, तीतरमाडके घरके पास सर्वे (Survey) ११७ नं. के तालाबके बाँधपर एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाघनाशिने ।
कु-तीर्थ-ध्वान्त-सघात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥

स्वस्ति श्री

प····धन परत्र-हित-कारणकं परमोपकारकम् ।
कुडे त····ताब्दि····य तिग···मतिग····भया····दन्तम····।

तडेयदे मुक्तियं पडेवेनेन्दु विचारिसि वन्धु-वर्गव····।
विडिसि समाधिय पडेदुदेल्लियुमच्चरि **जक्कियब्बेय** ॥

कस्तूरि-भट्टारर्गे अवर श्राविकि **चन्दियब्बे-गावुण्डि**····यर **मन्नकि जक्कियब्बे** सन्यसन गेय्दु मुडिपिदळ् ॥ आकेय गण्ड परम-श्रावक **एडय्य** मङ्गळम्

[जिनशासनके लिये कल्याण-कामना। स्वस्ति। भयके साथ यह सुनकर कि दाय-तिगमति परलोककी इच्छासे मृत्युको प्राप्त हुई—तथा इस बातको न सहन कर, अपने सम्बन्धियोंकी सम्मति लेकर जक्कियब्बेने, जो चन्दियब्बे-गावुण्डिकी 'मन्नकि' और कस्तूरी भट्टारकी 'श्राविका' थी, संन्यसन विधि की और स्वर्गगत हुई। उसका पति श्रावक एडय्य था।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 31]

१८४

नल्लूर्—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, लगभग १०५० ई० ? (लूई राइस)]

[नल्लूर (हत्तुगट्टुनाड) में, तीतरमाडु मादय्यके घरके पश्चिमकी तरफ हित्तलमें]

········ ··········**कोडङ्गाळ** 'ए मग·······दिळे आळ्दडे मेन्दु यति-वरर्गेल्ल सादरदि **वीळि** पा [द]दोळेरगि ताळिदनी-सुर-कीर्त्ति भद्रमस्तु जिन-शासनाय श्रीम मदुवङ्गनाड् दोर **किविरि-यय्यङ्गळ् चाङ्गळद वसदियोळ्** पन्नेरड नोन्तु मुडिपि नवर मक्कळ् **चाकियु वुकिय** निरिसिदर्

[...जब कोडङ्गाळुवका पुत्र शासन कर रहा था, वीळिय-सेट्टिने देवोंके यशका लाभ किया। जिनशासनका कल्याण हो।

मदुवङ्गनाड्का स्वामी, किविरिके अय्यने १२ दिन तक चाङ्गल बसदिमें व्रत रक्खा और स्वर्गगत हुआ। उसके पुत्र चाकि और वुकिने इसकी स्थापना की।]

[EC, IX, Coorg tl, n° 30]

१८५

अङ्गडि—कन्नड़

[शंक ९२४, वर्ष जय (ठीक शक ९७६=१०५४ ई०) लूई राइस]

[अङ्गडि (गोणीबीड़ु परगना) मे, बसदिके पासके पाषाणपर]

स्वस्ति सक-वर्ष ९२४ नेय जय-संवत्सरद चैत्र-मासद सुद्ध-दशमी ‥ ‥‥‥वार पुष्य नक्षत्रदन्दु विनयादित्य-पोय्सळन राज्य प्रवर्तिसे सूरस्त-गणद श्री-वज्रपाणि-पण्डित-देवर ‥‥गन्तियरप्प जाकियव्वे-गन्तियर् (पीछे) सोसवूरोळे नाडे पोपणद दिसेयनरसर्गे वोक्कलग पोन्नरे कोट्टु मण्णरेकोण्डु सोसवूर-वसदिगे बिट्टर् निसिदिगे यडेवळ्ळेय ˙ ण्ण आरतारगे ‥‥एरडु-हळ्ळद मेगण गण्ण नाल्कु मकर-जिनालयके बिट्टर् (हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[(उक्त मितिको) जिस समय विनयादित्य पोय्सळका राज्य प्रवर्त्तमान था—सूरस्त-गणके वज्रपाणि पण्डितकी शिष्या जाकियव्वे-गन्तिने सोस-वूरसे नाड्की ओर जानेवाली दिशामे निवासस्थानके लिये पूरा रुपया राजाको देकर और पूरी जमीन लेकर उसे स्मारकरूप सोसवूरकी 'वसदि' के लिये छोड़ दिया। और यडेवळ्ळे की ण्णने दो खड्डो (ravines) के ऊपर चार गण्ण मकर-जिनालयके लिये दिये।]

[EC VI, Müdgere tl, n° 9]

१८६

होन्वाड—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९७६=१०५४ ई० सन्]

ॐ [।।] भद्रमस्तु जिनशासनाय सभद्रता प्रतिविधानहेतवे [।]
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसि [।।]

---

१ शक ९२४ जय वर्ष दिया हुआ है। लेकिन शक ९२४ प्लव संवत्सर है, जय शक ९७६ है, और यही ठीक मिति मालूम पड़ती है।

ओं स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्रार्कतारं बरं सलुत्तमिरे [।] तद्धिशालोरःस्थलनिवासिनियरप्प श्रीमत्-केतलदेवियर् तर्द्दवाडि-सासिर-दोळगण ऊनुकुं-वाडद खम्पण वागेयय्वत्तर वळिय मुत्तम-मग्रहारं पोन्नवाडमं त्रिभोगाभ्यन्तरसिद्धियिन्दाळुत्तमिरे [।] न पादपद्मोपजीवी गणकचूडामणियु [म्] वाणसकुलाम्बरभानुवुं अर्हच्छासन-मूलस्तम्भवु कलिकाल-श्रेयासनु सम्यक्त्व-रत्नाकरनुमप्प ॥

वानसवंशकूर्म्मनिभ सोम्म जगद्दिनुतात्तिकाम्बिका-सूनुरुदात्तकीर्त्तिधरनी कुनर्दिगिजनयोगिराज महासेनमुनीन्द्रपादकमलभ्रमरं

परिपूर्णचारवियानिविचाद्धिराजविसुराश्रितशिष्टजनेष्टतुष्टिद: ॥

गम्भीरो बहुशास्त्रसम्यमकरश्रीमत्तत्व सात्त्विके

लक्ष्मीजन्मगृहस्समस्तवसुधाव्याविष्टनोवधगः

अन्तर्व्योतिरचारुरत्ननिचयो निर्द्धूतकल्मापको

धीमानन्दरमाकरो विजयते सम्यक्त्वरत्नाकर. ॥

आहाराभयभेषज्यशास्त्रदाने तथा पर ।

चाद्धणार्यसमो (आर्यसमो) नास्ति न भूतो न भविष्यति [॥]

योग [॥] श्रीमूलसंघे जिनधर्म्ममूले गणाभिधाने वरसेननाम्नि

गच्छेऽपि तस्मिन्नपि योगचर्यभिख्यं नलप्रमानो मुनिरार्यसेनः ॥

यनेकभूपाल समार्च्चितयोगाद्यावलातपजातकेन ।

प्रोच्छिन्नधीचरमार्गीन्द्र-श्रीब्रह्मसेनप्र(व्र)तिनाथशिष्य. ॥

त्यार्यसेनस्य मुनीश्वरस्य

शिष्यो महासेनमहामुनीन्द्रः ।

सम्यक्त्वरत्नोज्ज्वलितान्तरङ्गः
संसारनीराकरसेतुभूत[ः] ॥
तज्जैनयोगीन्द्रपदाब्जभृङ्गः
श्रीवानसाम्नायवियत्पतङ्गः ।
श्रीकोम्मराजात्मभवस्सुतेज-
स्सम्यक्त्वरत्नाकरचाङ्किराज[ः] ॥
कलङ्कमुक्तस्सततैकरूपो
दोषेतरश्रीनिलयस्समस्त-
भव्याब्जसंदोहविकासहेतु[ः]
विराजते नूतनचाङ्किराजः ॥
तन्निर्मित भुवनचुम्बुकमत्युदात्त
लोकप्रसिद्धविभवोन्नत-पोन्नवाडे
रंरम्यते परमशान्तिजिनेन्द्रगेह
पार्श्वद्वयानुगतपार्श्वसुपार्श्ववासम् ॥
महासेनमुनेच्छात्र[1] चाङ्किराजेन निर्म्मितं
द्रष्टुकामाघसहारि शान्तिनाथस्य बिम्बकम् ॥
महासेनमुनीन्द्रस्य च्छात्रेण जिनवर्म्मणा
छत्रीकृतमहानागं रचित पार्श्वदैवतम् ॥
जनकस्य कोम्मराजस्य[2] धर्म्मोद्देशाद्विनिर्म्मिता
राजते चाङ्किराजेन सुपार्श्वप्रतिमोत्तमा [॥]

ॐ ॐ शकवर्ष ९७६ नेय जयसंवत्सरद वैशाखदमावास्ये सोमवारदन्दिन सूर्य्यग्रहणनिमित्तदिं भीमनदिय तडिय

---

१ "°मुनि-च्छात्र-चाङ्कि°" पढ़ो । २ 'जनककोम्म' पढ़ो ।

मणियूर-अप्पयणवीडिनोळ् पोन्नवाडदोळ् चाङ्किमय्यन माडि-
सिद श्रीशान्तिनाथदेवर त्रिभुवनतिलक-चैत्यालयदलिर्प्प ऋषियरज्जिय-
राहारदानके सर्व्वनमस्यवागि श्रीमत्त्रैलोक्यमल्लदेवर् श्रीकेतलदेवियर
बिन्नपदिं मूवत्तुगेण गळेयोळ् बिट्ट नेल मत्त [र] ३५ तोण्ट मत्त [र]
१ निवेसणदगळमा गळेयोळ् गळे ४ गेणु १७ नीळ गळे ९ बळम्बे-
निवेसण मूडण वेळदोळा गळेयोळगल गळे ३ नीळ गळे ७ गोपुरद
मूडण अङ्गडिगं गाण १ अल्लि वेस-गेय्व कल्कुटिगर मने १ सावगरिर्प्प
पोलेमने १ [॥] ॐ अल्लिय सुपार्श्वदेवर वसदिगे आ गळेयोळ् मत्तर
सलिगे अरुवणद लेक्कदे बिट्ट नेल मत्त[र] ३५५ आ गळेयोळ् तोण्ट
मत्त [र] १ गाण १ [॥] ओ तम्म जिनवर्म्मय्यन माडिसिद पार्श्वदेवर
वसदिगे करहड-नाल्सांसिरदोळगण कळम्बडि-३००रर वळिय
कन्नडिगेय सङ्घरसन मग मन्नेय वज्जरसन गुड्डे-मान्य ५०० मत्तर्-
केरोळगे मूवत्तु-गेण गळेयोळ्सर्व्वनमस्यमागि चाङ्किमय्यं मारुगोण्डु
बिट्ट नेल मत्त[र] ३५ [॥]

[यह लेख पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर प्रथमका, जो यहाँ अपने विरुद 'त्रैलोक्यमल्लदेव' से वर्णित हुए हैं, उल्लेख करता है और उसकी रानी केतलदेवीका भी जो पोन्नवाड 'अग्रहार' पर शासन कर रही थी। यह एक जैन शिलालेख है, इसका उद्देश यह बताना है कि किस तरह चाङ्किराज, चाङ्कणार्य, या चाङ्किमय्यने, जो कि बानस या बाणस वंशके तथा केतलदेवीके ऑफीसर थे, शान्तिनाथ, पार्श्व, और सुपार्श्वकी वेदियोंको पोन्नवाडमें[1] त्रिभुवन-तिलक नामके चैत्यालयमें बनवाया और किस तरह उन वेदियोंके लिये कुछ जमीन और मकानात दान किये गये।]

[IA 19, p 268–275, n° 190]

---

१ लेखमें वर्णित पोन्नवाड, वास्तवमें, वर्तमान होन्वाड ही है।

१८७

वङ्कापुर—कन्नड

[मन्मथ संवत्सर=शक ९७७=१०५५ ई०]

[इस लेखका परिचयमात्र मिलता है, लेख नहीं । वङ्कापुर धारवाड़ जिलेके वर्त्तमान शिग्गाँम या वङ्कापुर तालुकेसे दक्षिण-पश्चिम छह मील पर है ।

यहाँके सारे लेख किलेमें है । यह लेख एक दीवालके सहारे है जो कि पूर्वकी तरफसे किलेमें घुसते समय दाहिने हाथकी तरफ़ है। एक विशाल चिकने पत्थरपर ५९ पक्तियोंका यह एक लेख है, हर एक पंक्तिमें करीव ३७ अक्षर पुरानी कनडी लिपि और भाषामे हैं। शिलालेखका अधिकांश अच्छी स्थितिमें है; लेकिन चौथी पक्ति जानवूझकर मिटा दी गई है और उस शिलापर दरारें पडी हुई हैं जिनसे ऐसा मालूम पडता है कि यदि इस शिलाको किसी सुरक्षित स्थानपर ले जानेका प्रयत्न किया जायगा तो वह टूट जायगी। शिलाके अग्रभागके चिह्न चालाकीसे मिटा दिये गये हैं; लेकिन निम्नलिखित फिर भी कुछ चिह्न मिलते हैं—मध्यमें लिङ्ग है; इसके दाईं ओर एक वैठी हुई या घुटने टेकी हुई मूर्त्ति; उसके ऊपर सूर्य है और इसके वाहरकी ओर एक गाय और बछड़ा है, और इसके वाईं ओर एक स्थानापन्न पुरोहित या पुजारी, उसके ऊपर चन्द्रमा और उसके वाहर वसवकी मूर्ति वनी हुई है । लेखका काल शकवर्ष ९७७ (१०५५–६ ई०), मन्मथ 'सवत्सर' दिया हुआ है, जब कि चालुक्य राजा गङ्गपेर्म्मानडि-विक्रमादित्यदेव,—जो कि त्रैलोक्यमल्लका पुत्र; कुवलाल-पुरका अधीश्वर; नन्दगिरिका स्वामी, और जिसके मुकुटमें क्रुद्ध हाथीका चिह्न था,—गङ्गवाडि ९६००० और वनवासि १२००० पर शासन कर रहा था, तथा जव कि महाप्रधान हरिकेसरीदेव, जो कादम्ब-सम्राट् मयूरवर्म्माका कुलतिलक था, उसके अधीन वनवासि १२००० पर शासन कर रहा था। हरिकेसरीदेवकी उपाधियाँ अधिकतर उसी तरहकी हैं जैसी कि अन्य कादम्ब राजाओंकी । लेखमें कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । यह भूमि निडगुन्दगे बारह, की थी जो पानुङ्गल ५०० का एक 'कम्पण' था । यह भूमि-दान एक

जैनमन्दिरको हरिकेसरीदेव और उसकी पत्नी लच्चलदेवी तथा बङ्कापुरके पाँच मतोंको आश्रय देनेवाली जनता, नगरमहाजनोंकी गिल्ड (कम्पनी) तथा 'सोलह' वर्गोंने किया था।[1]]

[IA, IV, p 203, n° l, a, ASI, XVI, p 133, a.]

१८८

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[विनाकाल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ बस्तिकी उत्तरी दीवालपर]

स्वस्ति श्री-राजाधिराज कोङ्गाळ्वनव्वे पोचव्वरसियर् द्रविळ-गणद् नन्दि-सघद् अरुङ्गळान्वयद् गुणसेन-पण्डितदेवर गुड्डि माडि-सिद् वसदि मङ्गळ महा।

[स्वस्ति। द्रविळ गण, नन्दिसंघ, तथा इरुङ्गलान्वयके गुणसेन पण्डित-देवकी गृहस्थ-शिष्या, राजाधिराज-कोङ्गाळ्वकी माँ पोचव्वरसिने इस बस्तिको बनवाया। महा मङ्गल।]

[EC, IX, Coorg tl, n° 37]

१८९

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९८०=१०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें दूसरे पाषाणपर]

धर्म्म-सेट्टि बरेद स्वस्ति शक-वर्ष ९८० नेनेय विलम्बि-संव-त्सरद उत्तरायण-संक्रान्तियन्दु श्री-राजेन्द्र-कोङ्गाळ्वं तम्मय्य माडिसिद बसदिगे कोट्ट हारुवनहळ्ळि अरकनहळ्ळि निडुतद गोडल खण्डुगम् ३ के (दूसरे गावोंमें ऐसे ही दान) श्रीराजाधिराज-कोङ्गाळ्वनव्वे पोचव्वरसियर् तम्म गुरुगळु द्रविळ-गणद नन्दि-

[1] 'बङ्कापुरद पञ्चमत(ठ)स्थानमु नगरमहाजनमु पदिनरवरुम्'।

संघदरुङ्गळान्वयद **गुणसेन-पण्डित-देवर्ग्गे** माडिसि धारा-पूर्व्वकं कोट्टरु ॥ (वही अन्तिम श्लोक) ।

[धर्म्म-सेट्टिके द्वारा लिखित ।

स्वस्ति । (उक्त मितिको), राजेन्द्र-कोङ्गाळ्वने, अपने पिता द्वारा निर्मित बसदिके लिये हेरुवनहळ्ळि, अरकनहळ्ळि, तथा निडुत गोडलुमें तीन खण्डुगका दान दिया, और इसी तरह दूसरे गाँवोंमे (जिनके नाम दिये हैं) ।

और राजाधिराज कोङ्गाळ्वकी माँ पोचब्बरसिने अपने गुरु द्रविळ-गण, नन्दि-संघ, तथा अरुङ्गळान्वयके गुणसेन-पण्डित-देवकी प्रतिमा बनवाकर जलधारापूर्वक इसे समर्पित की । शाप ।]

[EC, IX, Coorg tl , n° 35]

१९०

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई० का]

[मुल्लूरसे, पार्श्वनाथ बस्तिके नीचे देहलीमें]

स्वस्ति श्री **राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळ्वन** पुत्र श्री—रा···**कोङ्गाळ्व**··· वास-स्थानम तम्म गुरुगळ् तिवुळ-गणदरुङ्गळान्वयद नन्दि-सघद **गुण-सेन-पण्डित-देवर्ग्गे** धारा-पूर्व्वक कोट्ट मङ्गळ महा श्री श्री ।

[स्वस्ति । राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळ्वके पुत्र रा कोङ्गाळ्वने तिवुळ-गण, अरुङ्गलान्वय और नन्दि-संघके अपने गुरु गुणसेन-पण्डित-देवको रहनेके स्थानके रूपमें···दिया ।]

[EC, IX, Coorg tl , n° 38]

१९१

मुल्लूर—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५० ई०]

[उसी बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री **गुणसेन-पण्डित-देवर्** अगळिसिद नागवाबि नकरद धर्म्म

[स्वस्ति । नाग-कुआँ जिसको गुणसेन-पण्डित देवने नकर याने व्यापारी संघके धर्मके रूपमे खुदवाया ।]

[EC, IX, Coorg tl, n° 42]

१९२

सोमवार—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, लेकिन सभवत· लगभग १०६० ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना) मे, वसवण्ण मन्दिरकी वाहरी दीवाल के पाषाणपर]

धरेयोळगेचल-देविगे ।
गुरुगळ् गुणसेन-पण्डितर्द्रविळ-गणम् ।
वर- नन्दि-संघमन्वय-।
मरुङ्ग··· ···नगदेन्दडेम्वण्णिपुडो ॥
भद्रमस्तु ।

[एचलदेविके गुरु,—द्रविळ गण, नन्दि-संघ और अरुङ्गल-अन्वयके, गुणसेन-पण्डित, जो इतने प्रसिद्ध हैं, उनका वर्णन इस ससारमें कैसे हो सकता है ? कल्याण हो ।]

[EC, V, Arkalgud tl, n° 98]

१९३

कडवन्ति—कन्नड़-भग्न ।

[विना काल-निर्देशका पर संभवत लगभग १०६० ई०]

[कडवन्तिमे, मेलु-कडवन्तिकी चट्टानपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय श्रीमत्-दान ···खचर-कन्दर्प्प सेनमार पृथुवी-राज्य गेय्युत्तमिरे देव-गणद पाषाणान्वयद महेन्द्र-बोळळं पडेद अङ्कदेव-भटारर शिष्यमहीदेव-भटारर गुड्ड निरवद्यय्यं मेळसरय मेगे निरवद्य-जिनालयमं माडि खचर-कन्दर्प-सेनमारन दयगेये निरवद्यय्य मानिय पडेदु जक्कि-मानियेन्दु पेसरनिट्टु निरवद्य-जिनालयके कोट्ट

एडेमलेय सासिर्व्वरु गळ्देय मेक्कळ तम्म तम्म गळ्देय मेगे एल्ला-कालमु पल दप्पदे जक्कि-गोळगमेन्दित्तर्कडमन्तियोम् ` मादेर रचिपन्दूरुग एञ्जलिग सिरिपुरसनुमित्तुवु मूगण्डग-भत्तं पोकुळि-मक्किय पलिसिन तार-नित्तरुज्जेनियोळ नाल्-गण्डग भगमनित्तरर्द्देवाडियोळपिन्दगर-ण्डुग मूगण्डुग मित्तमुळ्ळि-भागदोळ्............मूगण्डुगमित्तं शालादि-ल्वर कृप्पिगमिर्क्कण्डुग........मुळियर कुन्द कोण्टार्प्पन्दियो सार........ .... मेढुकय्य किरगादण्णा मू-गण्डुग मण्ण...म् इकुळ-भत्तमुमन .. ....न्ददणिकिग देपण्ण मूगण्डु ....मित्तर्...... योळ श्री-त्र...

[जिस समय खचर-कन्दर्प सेनमार पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे— निरवद्यने, जो देवगण और पाषाणान्वयके अङ्कदेव-भटारके शिष्य मही-देव भटारका गृहस्थ-शिष्य था और जिसने महेन्द्र-बोळलुको पाया था,— मेलस चट्टानपर निरवद्य जिनालय खड़ा किया; और खचरकन्दर्प्प सेनमारकी कृपा प्राप्तकर निरवद्यको एक 'मान्य' मिला, जिसे उसने जक्कि-मान्यका नाम देकर निरवद्य-जिनालयको भेंट कर दिया।

और एडेमले हजारने अपनी हरएक धान्यके खेतोकी फसलसे कुछ धान्य (चावल) दानरूपमे हमेशा के लिये दिया।

और भी जिन लोगोने अनाजका दान किया उनके नाम दिये हैं।]

[EC, VI, Chikmagalur tl, n° 75]

१९४

अङ्गडि—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सभवत· लगभग १०६० ईसवी]

[अङ्गडि (गोणीवीडु परगना] मे, छठे पाषाणपर]

(ऊपरका हिस्सा टूट गया है) सोसवूर सेट्टिगळ लोकजितनिगे निषिधिय कल्ल नखर-समूह नट्टरु

[सोसवूरके व्यापारी लोकजितके इस स्मारकको उस नगरके व्यापारी लोगोने खड़ा किया।]

[EC, VI, Mūdgere tl, n° 16]

१९५

चिक्क-हनसोगे—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ई० का]

[चिक्क-हनसोगे (हनसोगे परगना) में जिन-बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्री-वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळ्व-देवर्म्माडिसिद पुस्तक-गच्छद वसदि

[वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळ्व-देवने पुस्तकगच्छकी वसदि बनवाई]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 22]

१९६

चिक्क-हनसोगे—कन्नड।

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०६० ई०]

[जिन-बस्तिमें, दरवाजेपर पडे हुए पत्थरोंपर]

दशाशिर-प्रहारियप्प रामस्वामि बिट्ट परमेश्वर-दत्तियं शकनोड विक्रमादित्यं पडिसलिसि-तान·······मुन्निनन्ते वडगण-तूम्बिन नीर्व्वरिदनितु नेलन ख········ ····ताम्र-शासन-पूर्व्वक कोट्टरदं मारसिंह-देव पडिसलिसलेन्ता-परमेश्वर-दत्तिय वडगण तूम्बिन नीर्व्वरिदनितु·······मुन्निनन्ते कादना-रामर दत्तिय ताम्र-शासन पडिय ···मडि ईयक्कर वरेदवद नन्नि-चङ्गाळ्व-देवर्प्पुनर्ण्णव माडिसिद बसदिय तूम्बिनलक्करखु प्रतिमेयु माडिद तप्पिदर्गे कविलेगे तप्पिद पाप

[पहलेकी ही तरह, उत्तरीय नहरसे, सींची गई सारी जमीन,—दशशिर (रावण) के वधक रामस्वामीके द्वारा जो छोड दी गई थी, परमेश्वरने जिसे दिया था, और जिसे इनामके तौर पर शक तथा विक्रमादित्यने भी दिया था,—ताम्बेके शासन (लेख) पूर्वक······दी। परमेश्वर-प्रदत्त तथा उत्तरीय नहरसे सींची गई सारी जमीनका दान मारसिंह-देवने किया और पहलेकी ही तरह उसका रक्षण भी किया।

......मडिने रामके दिये हुए इस ताम्बेके शासनपर दानके अक्षर लिखे और बसदिके पानीकी राहके फाटकपर मूर्त्तियां और अक्षर खोदे । इस बसदिको नन्नि-चङ्गाळ-देवने फिरसे बनवाया ।]

[EC, IV, Yedotore tl , n° 25]

१९७

हुम्मच—कन्नड़

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[सूळे बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-सुरासुर-
मस्तक-मुक्तांशु-जाल-जल-धौत-पदम् ।
प्रस्तुत-जिनेन्द्र-शासन-
मस्तु चिरं भद्रमखिल-भव्य-जनानाम् ॥

स्वस्ति श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलक चालुक्याभरण श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-देवर**राज्य सल्लुत्तमिरे ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महामण्डलेश्वरनुत्तर-**मधुरा**-धीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वरं महोग्र-वग-ललाम पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुलापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वान-रध्वज-विराजित-राजमानं मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कळा-कीर्ण्ण शान्तरादित्य सकळ-जनं-स्तुत्य कीर्ति-नारायण सौर्य्य-पारायण जिन-पादाराधक रिपु-बल-साधकं नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्व्वज्ञ श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-वीर-शान्तर-देवं सान्तलिगे-सायिर**मुमनेकच्छत्र-च्छा-येयिन्दमाळुत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि स्वस्त्यनेकगुण-गणाभिमण्डन नखर-मुख-मण्डन शान्तर-राज्या-भ्युदय-कारणं कलि-युग-दोस(ष)-निवारण आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-कानीन विशद-यशो-निधानरप्प

श्रीमत्-पट्टण-स्वामि-**नोकय-सेट्टि** स (श) क-वर्ष ९८४ **शुभकृत्-संवत्सरद कार्त्तिक-सुद्ध ५ आदित्यवारदन्दु** तन्न माडिसिद **पट्टण-स्वामि-जिनालयके वीर-सान्तर-देवङ्गे** (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा आती है) सर्व्व-बाधा-परिहार-मागि माडि तन्न सहधर्म्मिगळ् **सकलचन्द्र-पण्डितदेवर्गे** कोट्टम् (यहाँ वे ही हमेशाके अन्तिम वाक्याव-यव आते है)।

इष्टनोर्व्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम् ।
दुष्टनोर्व्वनदर फलव सले तिन्दवम् ।
सिट्टि-मेले परमात्मने वन्देडेगोवदम् ।
कट्टिकोण्ड विदिरन्ते कुल-क्षयमागुगुम् ॥

(वे ही अन्तिम श्लोक ।)

अक्कर ॥ ईवरेन्दत्ति पळिरिदेरदप ''तागि वेळ्दपर् ळेञ्जेगेट्टु काव-रेन्दल् 'सरणेन्दु वन्दपर् तावञ्जि मरेवक्कुं वाल्वेमेन्दु साम-बङ्गदा मरेवक्कु वन्'''''' विडियु निद्दे पट्टियदन्दु

जीवम्जीवके तूकके बारद्दे किळवट्टु बरवेके **वीर-देव** ॥
धुरदोळसि-लतेयनुच्चिदड् ।
अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कील् ।
तरतरदितुळ्चिदवु निज- ।
कर-खळ्गमवर्के कीले **शान्तर-नृपति** ॥
वीरुगन दोरेगे दोरे पेर- ।
रारु बन्दवरी-कृत-युग त्रेते द्वा- ।
पर कलि-युगदोळगण ।
वीररुदार-प्रतापिगाळ् धर्म्म-परर् ॥

वृत्त ॥ परम-श्री-जैन-धर्म्मकतिशय-विभव माप्पं विद्वज्जनक्का- ।
दरदिन्द सन्तोस (प) माडुव मुनि-जनकाहार-भैषज्यम वि- ।
स्तरदिन्द चिन्तेगेय्वुत्तन-गुण-[···] युतं पट्टण-स्वामिनोक्कं- ।
वरमारव्भव्यकॆळन्ता-पुरुष-रतुनदिं वीरदेवं कृतार्थम् ॥
पुदिद तमम्-तम-पटलं ओन्दिद चिन्ते नगुळ्दु तळ्दु प- ।
त्तिद रुजे पेर्च्चि सार्चिद दरिद्रते वट्टेयॆळाद सेदे वड्-
गिद्पुदु कण्ड काण्केयोळे तप्पदु पट्टण-स्वामि नोक्कनि- ।
ळ्दडे वळ्ळ्दु वन्द वुध-मण्डलिगी-मले सू(शू)न्यमागदे ॥
वल्लनप्प पेर्व्वुसिय वक्किगे भाजनमाद् दोव्गे वी- ।
ळ्ळ् वरिवन्ते नेल्द नरे-गड्डद दोड्डर वेळ्ळवातुगळ् ।
कोल्लुमवार्कॆ केम्मनॆडेयाडदिरोवॆले शिष्ट वेडिको- ।
ळ्ळॊल्वडे नम्म धर्म्मद तवर्म्मने पट्टण-स्वामि नोक्कनम् ॥
जिनन वणिगप पूजिप ।
जिनागमोक्तियाडे नेगळ्व जिन-पदमं भा- ।
वनेय निच्च ताळ्दुवन् ।
एने पट्ट[ण]-स्वामि ये जिनागमनिधियो ॥

वचनम् ॥ **सम्यक्त्व-चारासियुमेनिसिद पट्टण-स्वामि** नोक्कय्य···· हुरदोळु देवर वळ्ळभरनॆरगिसि रत्नङ्ळम् खचियिसि । पोन्न वेळ्ळिय पवळद महा-मणिय पञ्च-लोहदोळ प्रतिमेगळ माडिसिद । (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा है ।) **सकळचन्द्र-पण्डितदेवर गुड्ड मल्लिनाथं** वरेदम् ॥

सुजन-जन-कुसुद-चन्द्रन ।
सुजन-जनानन-विलोक-मणिसुकुरनना- ।

सुजन-जन-वनज-हंसन ।
सुजनजन पोगळे मल्लिनाथ नेगळ्दम् ॥

गुडिवयलुम त्रिट्ट (सिरेवर) पट्टण-स्वामिय परि नेम-व्रतवेरेदन्दे तुरवनिन्तिदु···गेय्यद·········येत्तिद य ···सा ··सन्तोस(प)-दान-विनोद··· ·॥ श्री-पट्टण-सामिय गुरुगळ् श्रीमद्-**दिवाकरणन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देवरु** श्री-विरुद-सर्व्वज्ञ **वीर-सान्तर-देवम्** ॥

पुसियदिरारोळव-नदिं पर-नारिय त्तपोगे तप्पु ।
एसगदिराव-जीवदेळमेवडेयेम्बुदनेन्तुमोल्लदिरू ।
कुसियदिरायदिं पोणर्दु तळ्तेडेयोळ् व्रतमेन्दु कोण्डुदम् ।
विसडदिरेम्बुदी-वरेद · ·सने **सान्तर-वीर-देवनम्** ॥
नेगर्दुग्रान्वय-पद्मिनी-दिनकरं श्री-शान्तरोर्व्वीशनु- ॥
दूध-गुणाम्भोनिधि वीरुग बिरुद-सर्व्वज्ञ धरा-मण्डळम् ।
पोग[ळ]ळ् कूर्म्मियिनीये निर्म्मळ-यश धर्म्माधिक ताळ्दिदम् ।
जगदोळ् **पट्टण-सामि**-वट्टमनिदेम् **नोक्क** यशो-भागियो ॥
पट्टणस्वामि-जिनालयद शासनम्

[जिनेन्द्रकी प्रशंसा ।

जब, (उन्हीं चालुक्य-पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल-देवका राज्य प्रवर्त्तमान था—जब, (उन्हीं पदो सहित जिनसे अलङ्कृत नन्नि-शान्तर शि० ले० नं० २१३ में हैं), त्रैलोक्य मल्ल वीर-शान्तर-देव शान्तळिगे हज़ार-पर एकछत्र राज्य कर रहा था,—

तत्पादपद्मोपजीवी (उन्हीं पदों सहित जैसे कि पद शि० ले० नं० २११ में है) । पट्टण-स्वामि नोक्कय्य सेट्टिको (उक्तमितिको) अपने बनवाये हुए पट्टण-स्वामि जिनालयके लिये वीर-शान्तर-देवको सोने के १०० गद्याण भेंट करने पर, मोळकेरेका दान मिला; इस गाँवकी सीमाये । इसने

(नोक्कय्य-सेट्टिने) अपना गाँव कुक्कुडवळ्ळि भी दानमें दे दिया, और इसको (उक्त) सब करोंसे मुक्त कर दिया, और अपने सह-धर्म्मी सकलचन्द्र-पण्डितदेवको सौंप दिया।

शापात्मक और वे ही अन्तिम श्लोक।

राजा वीर शान्तर और 'सम्यक्त्व वारासि' नामसे प्रसिद्ध पट्टण-स्वामि नोक्कको प्रशंसामें श्लोक। माहुरमें प्रतिमाको रत्नोंसे मढ़ दिया और उसके पास सोना, चादी, मूगा (Coral), रत्नो और पञ्चधातुकी प्रतिमायें थीं। शान्तगेरे, मोळकेरे, पट्टण-स्वामिगेरे और कुकुडवळ्ळिके तळेविण्डेगेरे—ये सब तालाव उसने बनवाये थे। और सौ सुवर्ण गद्याण देकरके उसने उगुरे नदीका सौळंगके पागिमगल तालावमें प्रवेश कराया।

सकलचन्द्र-पण्डित-देवके गृहस्थ-शिष्य मल्लिनाथने इसे लिखा, उसने गुडिवयल्का दान किया। पट्टण-स्वामिके गुरु दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देव और सर्व्वज्ञ-पदलाञ्छित वीर-शान्तर-देवकी प्रशंसा]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 58]

१९८

हुम्मच,—कन्नड

शक ९८४=१०६२ ई०

[पार्श्वनाथबस्तिमें मुखमण्डपके खम्भोपर]

(दक्षिण-स्तम्भ)

(पूर्व-मुख) ...पृथुवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतुस्समुद्र-पर्यन्त पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्च-पुरवरेश्वर महोग्र-वंश-ललाम पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुला-पुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज-विराजित-राजमान-मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कलाकीर्ण्ण सान्तरादित्य सक-

ल-जन-स्तुत्य कीर्त्ति-नारायण सौर्य्य-पारायण जिन-पादाराधक रिपु-बळ-साधक नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्व्वज्ञ नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमत् **त्रैलोक्यमल्ल-वीर-सान्तर-देवं सान्तळिगे-सासिरमं** निर्-दा-यादम निष्कण्टकम निराकुळमु माडि निजान्वय-राजधानि-**पोम्बुर्च्चदोळ्** सुख-संकथा-विनोददिनरसु-गेय्युत्तिव्दु **स(श)क वर्ष ९८४ नेय शुभकृत्संवत्सरं प्र** ...

(उत्तर-मुख) **जिनदत्तं** तनगन्दु देवतेय कारुण्य पोदव्दिर्प्पिनम् ।
दनु-पत्रगतिभीतिय निज-भुजावष्टम्भदिं माडि को-।
ड निजाम्नायद पेम्पु-वेत्त पोळलोळ् **पोम्बुर्च्चदोळ्** माडिदम् ।
जिन-गेहङ्गळनर्त्तियिं पलवुम श्री**वीर-भूपाळकम्** ॥
सुरसैलेन्द्रमो मेण् **कुबेरगिरियो** मेण् तुङ्ग-ताराद्रियो ।
दोरेयेम्बन्तिरे तन्न भक्ति मनदिं पोण्मुत्तमिर्प्पन्नेगम् ।
परमोत्साहदे **नोक्कियब्बेय** जिन-श्री-गेहमं माडिदम् ।
धरेयेल्ल पोगळ्वन्नेग विरुद-सर्व्वज्ञावनीपाळकम् ॥

वचन ॥ अन्तु नेगळ्द वीर-शान्तरन मनो-
नयन-वल्लभेयेनिसिद **चागलदेवि** ॥

वृत्त ॥ गुणदोळ् रूपिनोळोळ्पिनोळ्
सुवगिनोळ् शृङ्गारदोळ् सौम्यल-।
क्षणदोळ् भैमेयोळोजेयोळ्
विभवदोळ् शीलङ्गळोळ् मृत्य-पो-।
षणदोळ् भोगदोळार्प्पिनोळ्
विभुतेयोळ् कारुण्यदोळ् पोलिसल्क-।
एणेयार् गेल्ल वेडङ्गिगेन्दनुदिन

विद्वज्जनं वण्णिकुम् ॥

(उत्तरस्तंभ)

(दक्षिणमुख) कन्द ॥ जयदङ्ककात्ति दान—।
प्रिये शान्तर-देवनोप्पुवर्द्धाङ्गद-ल—।
क्ष्मियेनिप्प पुण्यवतियम् ।
जय-देवतेयलदुन्ते पेरतेनेम्बर् ॥
श्री-वनितेगे वीरन वाक्—।
श्री-वनितेगे कीर्त्ति वधुगे सान्तर-विजय—।
श्री-वनितेगधिके चागल—।
देवियें भाविसुवदखिल-विश्वम्भरेयोळ् ॥
सल्लगेगे साम्यक्केक्कगे ।
पलरक्केम मतियरहितरं गेल्वेडेय्....।
गेल्व वेडङ्गिये वीरन ।
वलद भुजा-दण्डदल्लि केलदोळ् निल्वळ् ॥
पतिय वश्चिसि सले निज—।
कृतकदिनर्द्धावलोकनाक्षिगळिं भ्रू—।
लतेयोळ्मोळ्पोग्वी-दुर्—।
व्रतेयर् प्पोल्तपरे चागियब्बरसियरम् ॥
सङ्गत गुणनमळ-लसत्—।
तुङ्गाखिळ-कीर्त्ति-वीर-सान्तर-नृपन—।
र्द्धाङ्ग-स्थित-लक्ष्मियेनल्क् ।
एङ्गळ पोल्तपरे चागियब्बरसियरम् ॥
नेत्रावळि-दोच्छर्द्दि-वि—।

चित्राम्बर-कनक-रजत-मणि-मौक्तिकमम् ।
पात्रमरिदीव-गुणकति-।
मात्रेयरेय्दिपरे चागियव्वरसियरम् ॥

(पूर्वमुख) वृ ॥ अतिशयमप्प रूपिनोळुदारतेयोळ् विनयोपचारदोळ् ।
पतिगतिभक्तिनोळ् विपुळ-भोगदोळिं पेरतेननेम्बे माण् ।
रतिगनुसारि पार्व्वतिगे तोडु कुजातेगे पाटि नोडरुन्-।
धतिगेणे वासवाङ्गनेगे पासटि **चागल-देवि** धात्रियोळ् ॥

येनिसिद चागल-देवि निज-वल्लभं वीर-शान्तरन कुल-देवते नोक्कि-यव्वेय बसदिय मुन्दे **मकर-तोरण**म माडिसि ॥ मत्त **बळ्ळिगावे**यले **चागेश्वर**मेम्ब देगुलम माडिसि पलवरु ब्राह्मणर कन्ने-दानम माडिसि महादानङ्गळ्दु वन्दि-वृन्दक्कवाश्रितर्गं पोन्नु बुट्टिगेयुमं बेर्प्पन्नेगमित्तु चागम मेरेदळ् ॥ अन्तु नेगर्द चागल-देविय तायेनिप **अरसिकब्बे** प्रसिद्धकेसेदळ् सान्तरन मनेय सर्व्व-प्रधान **ब्रह्माधिराज काळिदास**य्यबगेद (पश्चिम मुख) श्री-**लोक्किय बसदिगे देकरसं जम्बहळ्ळिय** विट्ट श्री-**माधवसेन-देव**ङ्गे धारा-पूर्व्वक माडि कोट्टम् ॥

[जब, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल देव समुद्र-पर्यन्त दुनियाके राज्यपर शासन करनेमे लगे हुए थे —

तत्पादपद्मोपजीवी (नं० २१३ वाले लेखमे जो नन्नि-शान्तरके पद है उन्ही पदो सहित) त्रैलोक्यमल्ल वीर-शान्तर-देव, सान्तलिगे हजारको मुक्त करके, अपने वशकी राजधानी पोम्बुर्चमे शासन कर रहा था:— (उक्त मितिको),- अपने वशके प्रसिद्ध नगर पोम्बुर्चमें वीर-भूपालकने बहुतसे जिनमन्दिर बनवाये। इसी पोम्बुर्चमे जिनदत्तने देवी (संभवतः पद्मावती देवी) के प्रसादको प्राप्त करके एक राक्षसके पुत्रको अपने भुजबलसे भयभीत कर दिया था। वीर-भूपालने नोक्कियब्बे जिनमन्दिर बडी शोभाके साथ खडा किया था।

वीर-शान्तरकी पत्नी चागल-देवी थी। उसकी प्रशसामें वहुत से श्लोक दिये हैं। अपने पति वीर-शान्तरके कुल-देवतारूप नोकियब्बेकी बसदिके सामने उसने 'मकर-तोरण' बनवाया था और बल्लिगावेमे चागेश्वर नामका मन्दिर बनवाया था और बहुत-से ब्राह्मणोको कुमारिकायें भेटकर उसने 'महादान' पूर्ण किया था, तथा प्रशंसको और आश्रितोंकी भीडको यथेच्छक दान देकर अपनेको दानी प्रसिद्ध किया था। (तथा) चागल-देवी की माँ अरसिकब्बेकी भी वहुत प्रसिद्धि हुई। (और) शान्तरके घरका 'सर्व्व-प्रधानं' ब्रह्माधिराज कालिदास विख्यात हुआ था।

लोक्किय बसदिके लिये, देकररसने जम्बहळ्ळि प्रदान की, इसका दान माधवसेन-देवको किया था।]

[EC, VIII, Nagar, tl, n° 47]

१९९

श्रवण-वेल्गोला;—संस्कृत-भग्न

[सं० ११११=१०६२ ई०]

(जैन शि० ले० सं०, भा० १)

२००

अङ्गडि—कन्नड-भग्न

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) मे, ७ वें पाषाणपर]

..................विनयादित्य....... ..पोय्सळ.. . ... भट्टार गुरुगळ...

सक-कालं गति-नाग-रन्ध्र-शुभकृत्-संवत्सरापाढदोळ्।
सुकर पौर्णमि-भौमवार मोसेदिळ्दा-श्रावण ..,
.कदिन्द् बरे शान्तिदेवरमळ्र् सन्यासन गेय्दु भक्-।
ति करं कै-वशमागे गेय्दु पडेदर् निर्व्वाण-साम्राज्यमम्॥

(पीछे)······शान्ति-देवर् श्रीमत् सो[सेवू]र···नकर-समूह तम्म गुरुगळ्गे परोक्ष-विनयं गेय्दु निषिदिगे मङ्गळमहा

[····· विनयादित्य····· पोय्सळके गुरु ···········(उक्त मितिको) शान्तिदेवने, अपने धर्मके फल स्वरूप निर्व्वाणको प्राप्त किया।

नगर(व्यापारी संघ)के लोगोंने अपने गुरु शान्ति-देवकी मृत्युके उपलक्ष्यमें यह स्मारक खडा किया।]

[EC, VI, Müdgere tl, n° 17]

२०१

अङ्गडि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[शक ९८४=१०६३ ई०]

[अङ्गडि (गोणीवीडु परगना)में, वसदिके पासके पाषाणपर]

···· · ······· ··· तन्त्र-प ·· · ···च्वरसिय ···· ···

··· ········साम्पराय····· ········· ·· ······ · (७ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है) पोय्सळन विद्यावन्त **पोय्सळाचारि** आतन मग **माणिक-पोय्सळाचारि** आत माडिद वसदि उळि-वळ्ळि-पिडिवर चट्ट (पीछे) इन्तिनितु भूमीयुम कोट्टु **शक-वर्ष ९८४ नेय शुभकृत्-संवत्सरद फाल्गुन-सुद्ध-पञ्चमी-बुधवारं रोहिणी-नक्षत्रदन्दु** प्रतिष्ठे-गेय्दु पूजेय माडि तिरु-नन्दीश्वरदन्दु दान-माडेयु पोय्सळन गुरुगळ् **मुल्लूर श्री-गुणसेन-पण्डित-देवर्गे** धारा-पूर्व्वकदिं स्थानम कोट्टर् ॥

श्री-वनितेगे धरणिगे वाग्-देविगे रुग्मिणिगे रतिगे रम्भगे सीता- ।
देविगे कोन्तिगे **परियल-** । देवियिमिल्लळि गुणके वप्परुमुण्टे ॥

श्रीमदभिमानपिण्डः । पर-गण्ड-प्रलय-काल-यम-दण्डः ।
सद्गुणरत्नकरण्डः । स जयतु भुवि **मलेपरोळ् गण्डः** ॥

रक्कस-पोय्सलनेम्बा- । इ-अक्करव बरेदु पटमनेत्तिदडिदिरोळ् ।

लक्कद सत्र-लेक्कद मरु- । वक्क निन्दपुवे समर-संघट्टनदोळ् ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[प्रथम भाग बहुत घिसा हुआ है और अन्तिम पक्तियोंमें दानकी विशेप चर्चा है ।

छेनी और बल्लिको पकड़नेवालोमें प्रधान, अर्थात् पाषाणशिल्पियोंमें प्रधान विद्यावान पोय्सळाचारिके पुत्र माणिक-पोय्सळाचारिने यह बसदि बनवाई ।

इतनी भूमि देकरके, उन्होंने (उक्त मितिको) भगवान्‌की प्रतिष्ठा की, और पूजाकर तिरु-नन्दीश्वरके कालमें दान देकर मन्दिर पोऽसलके गुरु मुल्लूरके गुणसेन पण्डितदेवको सौंप दिया ।

परियल-देवी और मलेपरोळ् गण्डकी प्रशंसा । "रक्कस-होय्सळ" इन ६ अक्षरोंको अपने झण्डेपर लिखकर यदि वह उसे उड़ाता है, तो लक्षावधि शत्रु भी क्या उसका युद्धमें सामना कर सकते हैं ? (हमेशाके अन्तिम श्लोक)]

[EC, VI, Mūdgere tl., n° 13]

२०२

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९८६=१०६४ ई०]

मुल्लूर (निड्डुव परगना) में, बस्ति मन्दिरमें पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें प्रथम पाषाणपर]

(पहली ओर) स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-शतङ्गळ् ९८६ नेय क्रोधि-संवत्सरं परिवर्त्तिसुत्तिरे तच्-चैत्र-बहुल-नवमी मङ्गळवारं पूर्व्वाभाद्रपद-नक्षत्रम्मिनोदयदल् ॥

स्वस्ति समस्त-सुरासुरेन्द्र-मकुट-तट-घटित-मणि-मयूख-रेखालङ्कृत-चा (दूसरी ओर) रु-चरणारविन्द-युगल भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गतागमामृत-गम्भीराम्भोराशि-पारगरप्प श्रीमद्-गुणसेन-पण्डित-देवरम्मोक्ष-लक्ष्मी-निवासके सन्दर् (तीसरी ओर)

गुरुगळ् सिद्धान्त-तत्त्व-प्रवचन-पटुगळ् पुष्पसेन-व्रतीन्द्रर् ।
वर-सङ्घ नन्दि-सङ्घ द्रविळ-गण-महारुङ्गळाम्नाय-नाथम् ।
परमार्हन्त्यादि-रत्न-त्रय-सकल-महा-शब्द-शास्त्रागमादि- ।
स्थिर-षट्-तर्क्क-प्रवीणर् व्रति-पति-गुणसेनार्य्यरार्य्य-प्रणूतर् ॥

[(उक्त मितिको), आगमरूपी अमृतके गहरे समुद्रके पार जाने वाले श्रीमद् गुणसेन-पण्डित-देवने मोक्ष-लक्ष्मीका निवास प्राप्त किया। उनके गुरु पुष्पसेन-व्रतीन्द्र थे। गुणसेन-पण्डित-देव द्रविळ गणके नन्दिसंघके तथा महा अरुङ्गलाम्नायके नाथ थे। ये सब विद्याओं—व्याकरण, आगम, तर्क—में प्रवीण थे।]

[EC, IX, Coorg tl n° 34]

२०३

हुम्मच—कन्नड

[शक ९८७=१०६५ ई०]

[हुम्मचमें, चन्द्रप्रभ वस्तिकी बाहरी दीवालपर]

भद्रमस्तु जिन सा (शा) · ··स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथिवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळति-ळकं चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतुस्समुद्र-पर्य्यन्त-पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वर महोग्र-वंश-ललाम पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज- विराजित-राजमान मृग-राज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कलाकीर्ण्ण सान्तरादित्य सकळ-जन-स्तुत्य कीर्त्ति-नारायण सौर्य्य-परायण जिन-पदाराधकं रिपु-बळ-साधक नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्व्वज्ञ नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमत् त्रैलोक्यमल्ल-भुजबळ-शान्तर-देव शान्तळिगे-सासिरम निर्द्दायादवु निरा-

कुळ माडि राज्य गेय्युत्तिल्दु स(श)क-वर्ष ९८७ नेय विश्वावसु-संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे निजान्वय-राजधानि-पोम्बुर्च्चदोळ् भुजबळ-शान्तर-जिनालयक्के माघ-मासद सुद्ध-पञ्चमी-सोमवारमुमुत्तरायण-संक्रमण-दन्दु तम्म गुरुगळ् कनकणन्दि-देवर्गे धारा-पूर्व्वक माडि हरवरिय बिट्टम्। (यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है)।

' जिनशासनके कल्याणकी कामना। स्वस्ति। जय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) चतुस्समुद्रपर्यन्त पृथ्वीके राज्यपर त्रैलोक्यमल्लदेव शासन कर रहे थे·—

तत्पादपद्मोपजीवी,—जिस समय, (उन शान्तरके पदों सहित जो कि शि० ले० नं० १९७ में दिखाये गये हैं), त्रैलोक्यमल्ल भुजबल-शान्तर-देव, शान्तलिगे हजारको उपद्रवों और कष्टोंसे मुक्तकर शासन कर रहे थे,—(उक्त मितिको), अपनी राजधानी पोम्बुर्च्चमें भुजबल-शान्तर जिनालयके लिये अपने गुरु कनकनन्दि-देवको हरवरिका दान किया था. इसकी सीमायें। बसदिका ऐसा शासन (लेख) है।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 59]

२०४

बलगाम्बे—संस्कृत तथा कन्नड।

[शक ९९०=१०६८ ई०]

[बलगाम्बेसे, बडगियर-होण्डके पासके आगनमें पाषाण-खण्डोंपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर ... भट्टारक सत्याश्रय-कुल-तिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रैलोक्य-मल्लनाहवम ·· ···सुख-संकथा-विनोददिं राज्य गेय्युत्तमिरेयिरे॥

वृत्त॥ मलेपर् म्माराम्परिळक्रमदि····तराटर्प्परिळुर्कि दर्कुन्-।

दले-वाय्बुद्दुत्तरिल्लोट्टजि-वेरसु कुरुम्बर्त्तरुम्बिर्प्परिळे-।

त्तलु····वर्प्प दळ्ळेन्दुरित्र रिपुगळिळेम्बिन कुन्तळोर्व्वी- ।
तिळक त्रैलोक्यमल्ल-क्षितिपतिगे धरा-चक्रदो····क-चक्र ॥
लाट-कलिंग-गंग-करहाट-तुरुष्क-वराळ-चोळ-क- ।
र्णाट-सुराष्ट्र-माळव-दशार्ण्ण-सुकोशल-केरळादि-दे- ।
शाटविकाधिपर् म्मलेदु निल्लदे कम्पमनित्तु निर्म्मिता- ।
घाटदोळिर्प्प ' अळवी-दोरेताहवमल्ल-देवन ॥

कन्द ॥ इन्तु चतुरन्त-धात्री- । कान्तेयनळवडिसि चक्रवर्त्ति-श्रियम् ।
ता तळेदु सुखदे पल-का- । लन्तव तव-निधिगधीशनाहव-मल्लम् ॥

वृत्त ॥ म ···धावन्ति-वंग-द्रविळ-कुरु-खसाभीर-पाञ्चाळ-लाळा
दिगळं पेसेळे कोन्दु कवर्दुमसदळं कोङ्गज गोण्डुमाळो- ।
ळिगे दण्डु तोळ-तीनु मनद तवकमु पोगदेन्दिन्द्रन का- ।
डि गेलल् कप्प गोडल् वरिसि तळर्देनेकागर्दि सार्व्वभौमम् ॥
गगन-नवाङ्क-सङ्ख्ये शक-काळदोळागिरे कीळकाब्दकम् ।
नेगळे तदीय-चित्र-बहुळाष्टमियोळ् रविवारदोळ् जसम् ।
मिगे कुरुवर्त्तियोळ् परम-योग-नियोगदे तुम्····द्रेयोळ् ।
जगदधिप त्रिविष्टपमनेरिदनाहवमल्ल-वल्लभम् ॥

कन्द ॥ आ-चालुक्य-ललाम-म- । हा-चक्रिय पेर्म्मग धरा-तळम गो-
त्राचळ-जळधि-परीतमन् । आ-चन्द्र-स्थायि यागळाळ्व महात्म ॥

··दित-व्योम-नवाङ्क-संख्ये सक-काळं वर्त्तिसल् कीळका-
ब्दद वैशाखद सुद्ध-सप्तमियोळ् इज्य-ज्योतियोळ् शुक्रवा- ।
वृत्त ॥ रदोळत्यन्त-कुळीर-लग्नदोळिभास्व-व्रात-रत्नातप- ।
च्छद-सिंहासन-पूज्य-राज्य-पदम सो[मे]श्वरं ताळिददम् ॥

वृत्त ॥ जयम धर्म्मक्के धर्म्मान्वियमनसदळ साधु-वर्गक्के वर्ग- ।
त्रयम तन्नन्तरङ्गक्कोडरिसि धरेयें कूडे सन्मान-दान- ।
त्रयदिं सन्तप्से काळं कृत-युग-मयमाद्देम्बिन तन्न राज्यो- ।
दयदोळ् लोकक्के रागोदयमोदविदुदेम् धन्यनो सार्व्वभौमम् ॥

आ-प्रस्तावदोळ् ॥

वृत्त ॥

नव-राज्य वीर-भोज्य पुगलिदवसर सुत्तुवे गुत्तिय मु- ।
त्तुवेनेम्वी-गर्व्वदिं चोळिकनधिक-वळ मुत्ति मार्-गुत्तिय प- ।
ण्णुवुद केळ्देत्तेनुत्तेत्तिद तुरग-धळन् तागे सय्तागदग्रा- ।
हवदोळ् वेङ्गोड्डु **सोमेश्वर**-नृपन वळक्कोडिद वीर-चोळम् ॥
पेसरं केळ्दळ्कि वेळ्कुर्त्तुदु पर-धरणी-मण्डल गण्डु-गेय्दाळ्- ।
वेसनं पूण्दत्तु शौर्य्योन्नतिगगिदसुहृन्मण्डळ मेलपनावर्- ।
ज्जिसिदोन्दाज्ञा-विसेपक्केळसिदुदु सुहृन्मण्डळ सन्तमिन्ता- ।
देसकं कैगण्मे **सोमेश्वर**-नृपति मही-चक्रम पाळिसुत्तम् ॥
अन्तःकण्टकर पडल्वडिसि दुर्गाधीशरं दुष्ट-सा- ।
मन्त-द्रोहरनुद्धताटविकरं निर्म्मूळनं गेय्दु वि- ।
क्रान्तारातिगळ कळल्चि धरेय निष्कण्टक माडि नि- ।
श्चिन्तं श्री-**भुवनैकमल्ल**-महिप राज्य गेयुत्तिर्प्पिनम् ॥

वचन ॥

तत्पादपद्मोपजीवि समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-मण्डलेश्वरनुदार-महेश्वर चलक्के बलगण्ड शौर्य्य-मार्त्तण्ड पतिगेक-दाश सग्राम-गरुड मनुज-मान्धात कीर्ति-विख्यात गोत्र-माणिक्य विवेक-चाणिक्य पर-नारी-सहोदर

वीर-वृकोदरं कोदण्डपार्थं सौजन्य-तीर्थं मण्डलिक-कण्ठीरव परचक्र-भैरव राय-दण्ड-गोपाळ मलय-मण्डलिक-मृग-शार्दूल श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-देव**-पाद-पङ्कज-भ्रमर श्री-**भुवनैकमल्ल**-वल्लभराज्य-समुद्धरण पति-हिताभरण मण्डलिक-मकरध्वज विजय-कीर्ति-ध्वज मण्डळिक-त्रिनेत्र रिपु-राय-मण्डलिक-यम-दण्ड जयाङ्गनालिङ्गित-दोर्-द्दण्ड विसुळर-गण्ड गण्ड-भूरि-श्रवनेम्बिव मोदलागे पलवुमन्वर्थाङ्क-मालेगाळिनलङ्करिसि ॥

क ॥ **त्रैलोक्यमल्ल**-वल्लभन् - । आळेनिसिदरोळगे मिक्क पसयितनु मि-
क्काळु मिक्कण्मिन व- । ल्लाळु **लक्ष्मण**ने पेररनरिवरुमोळरे ॥
भुवनैकमल्ल-देवन । भवनदोळ ताने मानस ताने महा- ।
व्यवसायि ताने विजय- । प्रवर्द्धकन् ताने पसयित **लक्ष्म-नृपम्** ॥

अन्तेनिसि ॥

वृत्त ॥ अणुगाळ् कार्य्यद शौर्य्यदाळ् विजयदाळ् चाळुक्य-राज्यक्के का-
रणमादाळ् तुळिलाळ्तनक्के नेरेदाळ् कट्टायदाळ् मिक्क म- ।
लगेयाळ् मान्तनदाळ् नेगळ्ते-वडेदाळ् विक्रान्तदाळ् मेळ्दाळ्
रणदाळाळ्दन नच्चुगावेडेयोळ विश्रामदाळ् लक्ष्मणम् ॥
एरडु राज्यदोळ प्रजा-परिजन कोण्डाडे चक्रेशरि- ।
व्वेरु मोरन्दद कूर्म्मेयिन्दे **बनवासी**-देशम शासनम् ।
वरेदश्व-द्विप-पट्टसाधन-समेन कोट्ट कारुण्यदिम् ।
पोरेयल्मण्डलिक-त्रिणेत्रनेसेद भू-भागदोळ् लक्ष्मणम् ॥
किरियं विक्रम-गङ्ग-भूपनेनगा-पेर्म्माडि-देवङ्गे ने-
र्गिरिय वीर-नोणम्ब-देवनेनगं पेर्म्माडिग सिङ्गिगम् ।
किरियै नी निनगेल्लरु किरियरेन्दग्गाग्सि कारुण्यदिम् ।
नेरे कोट्टं प्रतिपत्ति-वृत्ति-पदम लक्ष्मङ्गे सोमेश्वरम् ॥

मिगे वनवासे-नाळ्के विभु लक्ष्मणनागे नोळम्ब-सिन्दवा-।
डिगे विभुवागे विक्रम-नोळम्बनळपुरमादियाद भू-।
मिगे विभु गङ्ग-मण्डलिकनागे यमागेगे नीळ्द लाड-वि-।
ण्डिगेयेने कण्डु कोट्टनवर्गा-नेलन भुवनैक-वल्लभम् ॥
मदवद्वैरि-नरेन्द्र-मण्डलिक-सेना-भञ्जन वीर-नी।
रद-दुर्व्वार-समीरण वितरण-क्रीडा-विनोद प्रता-।
प-दिलीपं रिपु-पुञ्ज-कञ्ज-वन-केळी-कुञ्जरं लञ्जिका-।
मदनाख्र चलदङ्क-राम नृप-लक्ष्मी-लक्ष्मन **लक्ष्मणं** ॥

क ॥ वलिवलेव मलेव केलेवद-टलेव पळच्चलेव मलेपरेल्व मुरिद ।
मलेयद केलेयद वलियद। मलेपरनिसुवेसके वेससिद **लक्ष्म-नृपम्** ॥

वृ ॥ धाळियनिट्टु कोङ्कणमनङ्कणियोक्किदप तगुळ्दु कोम्ब्र-।
एळुमनट्टि मुट्टि मले-येळुमना " मुंच्चि मुक्कि नि-।
र्म्मूळिसिदप्पनेन्दु मलेपर्त्तले दोरदे रायदण्ड-गो-।
पाळ-नृपङ्गे मुन्दुवरिदेन्दुःनेन्दपरेम् प्रतापियो ॥
आळवलमुळ्ळडश्व-वलमिल्ल भटाश्व-वलङ्गळुळ्ळडम् ।
तोळ्वलमिल्ल भृत्य-हय-दोर्-व्वलमुळ्ळडमेर्व्वलङ्गळिल्ल् ।
आळ् वेसगेय्यदेके वलिवर् मलेपर् म्मलेयेम्बुदेनदम् ।
वेळ्वलमागे मुन्तुळिदनल्लने लक्ष्मणनेम्ब कावणम् ॥
कवि दुग्ग चातुरङ्ग ववसे दळवुळ धालि सूळेरेनिप्पा-।
हवदोळ् चालुक्य-राम वेससे रिपु-वळक्केल्लनिन्द्रारियन्नम् ।
भवनन्न भद्रनन्न सिडिल वळगदन्न ज्वळ-ज्वाळियन्नम् ।
जवनन्नम्मारियन्न समर-समयदोळ् लक्ष्मण रामनन्नम् ॥
कुदुरेय मेले विल् परसु शूलिगे तीरिके भिण्डिवाळ्मे-।

त्तिद करवाळमाटिडुव कर्क्कडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्त् ।
ओदरुवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तरुम्बुवरेन्तु निल्परेन्त् ।
ओदवुवरेन्तु लक्ष्मणनोळान्तु वर्दुङ्कुवरन्य-भूभुजर् ॥
ईयल् वन्दडे कल्प-वृक्षमिदिरं बन्दान्त विद्विष्टरम् ।
सोयल् वन्दडकाळ-मृत्यु शरणायातावनीपाळरम् ।
कायल् वन्दडे वज्र-शैल-कृत-दुर्ग्गं लौल्य-भाव पर-।
ब्रियल् बन्दडे रावणात्मज-चमू-विद्रावण लक्ष्मणम् ॥
विसुपळिदर्क्कनुर्कुडिगुमिन्दुव कान्ति कळ्ल्गुमागसम् ।
कुसिगुमिळा-तळ तळर्गुमम्बुधि बत्तुगुमिल्लि लक्ष्मणम् ।
पुसिदोडमार्ग्गे टेप्परमनोड्डिदोड मनमोल्दु कूडि छि-।
द्रिसिदोडमन्य-नारिगे मरुळ्दोडमाहवदोळ् मरल्दडम् ॥
शत्रघ्न हरि-शौर्य्यनङ्गद-भुज सुग्रीवनात्मेश-सौ-।
मित्र रामनपामरं नर-वर दुर्य्योधन भीम-गा-।
त्र भीष्म युधिष्ठिर गुरु कृप सत्-कर्ण्णनेन्दन्दे दल् ।
चित्र भाविसे लक्ष्म-भूप-चरित रामायण भारत ॥
कलितनमिल्ल चागिगे वदान्यते मेय्गलिगिल्ल चागि मेय्- ।
गलियेनिपङ्गे शौच-गुणमिल्ल कर कलि-चागि-शौचिगम् ।
निले-नुडि-त्रोजे यिल्ल कलि चागि महा-शुचि सत्य-वादि म-
डलिकरोळीतनेन्दु पोगळ्गु बुध-मण्डलि लक्ष्म-भूपन ॥
कं ॥ मुनिर्यि किसुकळ्ळुवरोसे- । दु नगुवरिन्तिनिते पेरर मुनिसु मेच्चु ।
मुनियिसे मुनिद जव ह- । र्षनागे हर्षं गवृषभ-लक्ष्मं लक्ष्मम् ॥
एने नेगळ्द लक्ष्म-भूप । विनमित-रिपु नृपति-मकुट-घट्टितचरणम् ।
वनवसे-पन्निर्च्छासिर- । मनाळुतु सुखदिनरसु-गेय्युत्तिळ्दम् ॥

इरे बनवसे-पन्निर्च्छा- । सिरक्कमर्त्थाधिकारियु कार्य्य-धुर- ।
न्धरनुं तद्-राज्य-समु- । द्धरणनुमेने नेगळ्द मन्त्रि मन्त्रि-निधानं ॥
वृ ॥ कविता-चूताङ्कुर-श्री-मद-कळ-कळकण्ठोपम काव्य-सौधा- ।
र्ण्णव-वेळा-पूर्ण-चन्द्रं सम-विषम-महा-काव्य-वल्ली-तलान्तो-
त्सव-चञ्चच्चञ्चरीक वसुधेगेसेदनुर्व्वी-नुत **दण्डनाथ-** ।
प्रवरं श्री-शान्तिनाथं परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहसम् ॥
कुनयङ्गळ् जैन-मार्ग्गामृत दोळिरे जल-क्षीरदन्तळि सद्-वा- ।
क्य-निशातोच्चञ्चुविन्द कुमत-कलुष-पानीयम तूळ्दि जैना- ।
नन-निर्य्यत्-तत्त्व-दुग्धामृतमनखिळ-भव्योत्करं मेच्चलाखा- ।
दने-गेय्वोळिपन्दमाद परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहंस ॥
परमात्म निष्ठितात्मं जिनपति परम-स्वामि तद्-धर्म्ममार्म्मम् ।
गुरु-वन्द्यं **वर्द्धमान-व्रति-पति** जनकं सन्द **गोविन्द-राजम्** ।
पिरियण्णं **कन्नपार्य्यं** तनगधिपति **लक्ष्म**-क्षमापालनात्मा- ।
वरजं **वाग्भूषणं रेवणनेने** नेगळ्दं धात्रियोळ् शान्तिनाथम् ॥
क ॥ सहज-कवि चतुर-कवि निस्- । सहाय-कवि सुकवि सुकर-कवि
मिथ्यात्वा-
पह-कवि सुभग-कवि नुत-महा-कवीन्द्रं सरस्वती-मुख-मुकुरम् ॥
सुकर-रसभावदिं व- । र्ण्णकदिं तत्त्वार्थ-निचयदिं सूक्तमेनल् ।
सुकुमार-चरितमं पेळ्- । द कवीन्द्राग्रणि **सरस्वती-मुख-मुकुर** ॥
असहायनागियुं सुज- । न-सहायं मद-विहीननागियुमर्त्थि- ।
प्रसरोत्कट-दानाधिक- । नसद्दृश-विभवं सरस्वती-मुख-मुकुर ॥
वृ ॥ हरहासाकाश-गङ्गा-जळ-जळरुह-नीहार-नीहार-धात्री- ।
धर-नीहारांशु-तारावनीधर-शरदम्भोधर-क्षीर-नीरा- ।

कर-तारा-भारती-दिग्-रदनि-रदन-पीयूप-डिण्डीर-मुक्ता- ।
कर-कुन्देन्द्रेभ-हंसोज्वळ-विशद-यशो-वल्लभं शान्तिनाथ ॥
ओडवेयनोळिपनिं पडेदु पुञ्जिसि पूजिसि कोण-नाणदोळ् ।
मडगदे शिष्टरिङ्डेगे बन्धुगळिल्ल मेगप्पुदेन्दुमे- ।
न्नोडमे शरीरमेन्नदु नियोगद पर्व्वमिदेन्नदेन्दु मे- ।
ळपडदिरिमेन्दु गोसने तोळव्वुदु···· ·· · ·शान्तिनाथन ॥
कं ॥ एने नेगळ्द शान्तिनाथं । जिन-शासन-सत्-सरोजिनी-कलहंसम् ।
विनयदे निजाधिपति-ल- । क्ष्म-नृपङ्गे सु-धर्म्म-कार्य्यमं बिन्नविकुं ॥
चञ्चच्चामीकर-र । वाञ्चित-जिन-रुद्र-बुद्ध-हरि-विप्र-कुलो-
···· ··ह-सङ्कुळदिं । पञ्चमठ-स्थानमेनिसुगु **बळि-नगर** ॥
व ॥ अन्तु समस्त-देवता-निवास-पवित्रीभूतमप्प राजधानियोळाद जिनधर्म्म-प्रभावम पेळ्वडे ॥
वृ ॥ सले जम्बू-द्वीपमोळ्प तळेदुदु पलवु····भारतोर्व्वी-।
वळ्य तद्-द्वीपदोळ् रञ्जिसुगुमेसेगुमा-क्षेत्रदोळ् **कुन्तळं** कु-
न्तळदोळ् सन्त वसन्त वनवसे वनवासोर्व्वियोळ् भव्य-सेव्यम् ॥
बळि-नाम-**ग्राम**मा-ग्रामदोळमर-नुत शान्ति-तीर्त्थेश-वासम् ॥
क ॥ अ ·र्म्म-निर्म्मित-। मद शिला-कर्म्ममागे माडिसु कोळवो-॥
दुदु निनगे धर्ममेम्बुदुम् । अदर्क्के बगेदन्दु धर्म्म-निर्म्मळ-चित्तम् ॥
वृ ॥ जिननाथावासम वासव-कृतमेने मुन्न शिला-कर्म्मदिं शा-।
सनमप्पन्तागिरल् माडिसि बळिके शि ···स्तम्भम तज्-।
जिनगेह-द्वारदोळ् निर्म्मिसि विलिखित-नामाङ्क-मालावळी-शा-
सनमं चन्द्रार्क्क-तार निले निलिसिदनेम् धन्यनो **लक्ष्म-भूपम्** ॥
कं ॥ मिगे **मूल-संघदोळ् दे-**। **सिग-गण**दोळ् सन्द **कोण्डकुन्दा-**
न्दान्वयमं ।

जगती-त····न्त् । इरे नेगळ्चिदर् न्नेगळ्द-वर्द्धमानमुनीन्द्रर् ॥
वृ ॥ पडेदडे पेम्पनेय्दे वडेयर् श्रुतमं श्रुतदोन्दु सम्मेयम् ।
पडेदडे दिव्यमप्प तपमं पडेयर् त्तपमं निरन्तरम् ।
पडेदडे कीर्त्तियं पडेयरी ·· गुणङ्गळम् ।
पडेवडे **वर्द्धमान-मुनिपुङ्गव**रन्तिरे मुन्न नोन्तु··॥
सन्ततमोन्दि निन्द तपदोळ् श्रुतदोळ् गुणदोळ् विशेषरि-।
न्निन्तिवरेल्लरिं पिरियरिन्तिवर् अगळ्दग्रगण्यरोर्-।
अन्तिवरेन्दु कीर्त्तिपुदु कूर्त्तु······**देव-सि**-।
द्धान्त-मुनीन्द्ररं नत-नरेन्द्ररनब्धि-परीत-भूतळम् ॥
मुनिसणमागलाग मुनिसें मुनियुं मुनि-वन्ध्यनागना-।
मुनिसु ममत्वदिं ममते मायेयिनन्तदु लोभदिं प्रव-।
र्द्धनकरमेन्दु ··········वीत-कषायराद स-।
न्मुनि **मुनिचन्द्र-देव**रे धरित्रिगे देव····देवरल्लरे ॥
सार-कळा-प्रवोधित-सुदारकरूर्ज्जित-साधु-सव-नि-।
स्तारकर·· ·जात-महीजात-विदारकरुग्र-कर्म्म-सम्-।
हारकरत्युदार··· · **सव्र्वणन्दि-भ**-।
ट्टारकरल्ते भव्य-सुकुमारक-कैरव ··धिपर् ॥
उरग-पिशाच-भूत-विहगोग्र-नव-ग्रह-शाकिनी-निशा-।
चर-भय ···चरदोळ्द्भुतदिं विपरीतमाडदम् ।
वरेदुदे यन्नमो ··· · तन्नम् ············।
··· ·· ·· ·· · ··· ··· · · ·· · ॥
जित-कुसुमास्त्ररूर्ज्जित-यशो-वनराजित-पुण्य-कर्म्मर-।
न्वित-बहु-शास्त्रराद्भुत-सुशीळरधःकृत-किल्बिसर् प्रवो-।

थिन-बुध ········· ··········· · · ····· ··।

···· · ······ · · · · · ···· · · ···· ······· ····· ॥

····अभिविनुत श्री-माघनन्दि-देवरू पल्लवु जिन-निळयङ्गळम-खिळा-वनि वण्णिसे वक्किगा ··· ··· · ·········· ·······जिन-पूजाभि ··· र्चना-निरननाहारादि-दान-प्रवर्द्धन-शील नुत-भव्य···········हा-मण्डलेश्वरं लक्ष्मरसं श्रीमल्लिकामोद शान्तिनाथ-जि · ····कीलक-संवत्सरद भाद्रपदद पुण्णमे-सोमवारद ··· ····देसिगगणद ताळकोलान्वयद माघनन्दि-भट्टार ······ ···रंगे मुन्न श्रीमज्जगदे-कमल्ल-देवर व्वक्किगावेय ··· · · ·· ··· ··· ··· ···ळ्दे मत्तरू पन्नेरडु अल्लिय गोळपय्यन वसदिगे ··················· श्रीमच्चालुक्य-गङ्ग-पेर्म्मानडि-विक्रमादित्य- देवर ·· ·· ······ ······सुम नन्दन-वनद वसदिगे पूर्व्वदिन्नडेव ·· · ·······भूप समुचित-विनय विन्नप गेय्ये ··· · ···· · ·······दर्प्प-देवम् ॥ अनघ-श्री-शान्तितीर्त्थेश्वर-पद · ···· · ··· विधि-सहित शासन माडि कोट्ट ··· · (इसेगाके अन्तिम वाक्यावयव तथा श्लोक)··· ··· जिङ्डुळिगे गुळिद नाल्कारु पोम्मानिगर्द्धम् ·· एरडकु कृष्ण-भूमक्कदररे किसु ·· अदरेड्डु नोडि सिद्धायमक्कुम् ॥ ··· ग दासोजं खण्ड-रिसिदं मंगळ महा श्री ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा ।

जिस समय (चालुक्य उपाधियों सहित) त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल-देव शान्ति और बुद्धिमानीसे राज्य कर रहे थे —उन्हें लाट, कलिंग, गग, करहाट, तुरुष्क, वराड, चोळ, कर्ण्णाट, सुराष्ट्र, मालव, दशार्ण्ण, कोशल, केरल ये सब राजा भेंट देते थे। मगध, आन्ध्र, अवन्ति, वग, द्रविळ, कुरु, खस, आभीर, पाञ्चाळ, लाळ और दूसरे देशोका उन्होने नाश कर

दिया था। शक म. ९९० में उक्त मितिको उन्होंने प्रधान योगका उत्सव किया और वे तुगभद्रामें स्वर्गवासको सिधार गये।

इनका ज्येष्ठ पुत्र सोमेश्वर था। उसका दूसरा नाम 'भुवनैकमल्ल' था। वह जब राज्य कर रहा था —

तत्पादपद्मोपजीवी लक्ष्मण था। उसकी बहुत-सी प्रशसा। जिस समय यह बनवसे १२००० पर राज्य कर रहा था —

उसका दण्डनाथ शान्तिनाथ था। उसकी प्रशसा। बलिनगर, या बलिग्राम (बल्गाम्वे) में सभी धर्मोंके मन्दिरोंके होनेकी बात। राजा लक्ष्मणने भी वहाँ मन्दिर (जिन भगवान्‌का) बनवाया।

मूल संघ, देसिग गण और कोण्डकुन्दान्वयके वर्द्धमान मुनीन्द्र। मुनिचन्द्र-देव सिद्धान्त। इन दोनोंकी प्रशसा। इन्होंने भी जैनमन्दिर बनवाये। महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसने, मल्लिकामोद शान्तिनाथ-मन्दिरके लिये, (उक्त मितिको) देसिग-गण तालकोलान्वयके माघनन्दि-भट्टारको कुछ जमीन दानमें दी। दासोजने इस लेखको उत्कीर्ण किया।]

[EC, VII, shikarpur tl., n° 136]

२०५

सौंदत्ति—कन्नड-भग्न

[काल लुप्त ?]

भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं [।] जीयात्त्रै(त्रै)लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं [॥] स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराज-परमेश्वर-परमभट्टारक सत्याश्रय-कुळतिलकं चाळुक्याभरणं श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतार सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि [।] समधिगतपञ्च-महा-शब्द-महामण्डलेश्वर लत्तलूर्प्पुरवरेश्वर त्रिवळीतूर्य्य निर्ग्घोषणं वैरिकुळविलयान्तकविभीषणं सिन्दूरलाञ्छनं समस्तविद्याविरिंचनं सुवर्णगरुडध्वजं विदग्धमुग्धाङ्गनामकरध्वजं रट्टकुळवनज-

वनमार्त्तण्डं कदनप्रचण्डं रिपुसमरवीरवृकोदर परनारीसहोदरं साह-सोत्तुग सेननसिंग नामादिसमस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महामंडलेश्वरं कार्त्यवीर्यरसर वंशावतारमेन्तेन्दडे ॥ श्रीरमणनतुळविजयश्रीरमणं विपुळ विमळ समुदित कीर्ति श्रीरमणं चतुरवचःश्रीरमणं **नन्न**भूपनतु-परूप ॥ आतन तनय । स्थिरनुडिव कलिननदोळ्पोरेदाळि मुन्नमिरिवनेन्दडे सकळोर्व्वरेयोळ् कत्तन सत्वद दोरेग शौर्यद पोगळ्केगं समनोरे ॥ अन्तेनिसिद वीरकत्तरसनिं पिरिय ॥ वृ ॥ वसुधा चक्रदोळेन्तु वण्णिसुवदं तन्न(न्ना) [ळ्के] तन्नेळ्गे तन्नेसक तन्न पोगर्त्ते तन्न विभवं तन्नोजे तन्नुद्धसाहससंपन्नतेयिं धरावळयम नानाविध (ध) कूडे मुद्रिसिद रद्दर मेरु डायिम महीपाळं नृपाळोत्तमं ॥ तदनुज ॥ सुरकुजम पळचलुवु[दी]वगुण सले **संद** वज्र पजरमननागतं पळिवुत्तिर्प्पुद्दु [का]वगुणं परीक्षिसल् सरधियनेग्डे रेग-पुदु तन्न गभीरगुण समस्तदिक्परिवृड(ढ)देळ्गेयं नगुवुदुद्धगुण(ण) कलि**कन्न**भूपन । तत्सुत ॥ क ॥ निरुपम समस्त कडेयोळरसिज (स) भवनेसेव वाद्यविद्याधरनोळ्ळरसंकसंकर कप्परवर्पनेरेगे नेगर्ह्ननेरेग महीश ॥ तदनुज ॥ वृ ॥ कदनदोळान्तरातिगहि[यळु]द राहुवि-जाति रूपनळुद विनतासु [ह्रगेयु]र्व्वं(र्वे) दव्ळुरियळुद देहिकालन-ळुद जवन ॥•••म (?) वे गतनळुद वादव(न)न्त मानविळुध (द) रवियेन्दोडापदटरा[रु रणा]ग्रदोळकभूपन ॥ तदग्रजनप्पेरगभूपा-त्मज ॥ असुहृद्भूपकिरीटताडितपद वीरागनालिग(लिं)गनोळुसि[ता]ग हरहासकाशशिकान्ताकागंगाजळप्रसरामोघदिगतकीर्ति तपनप्र-द्योतसन्मूर्ति सन्द सु(सा)जद्गुणदीपवर्ति नेग[र्द] श्री **सेन**-भूपाळक ॥ तत्तनय ॥ अरिभूपाळ कृशान्तनुद्धतरिपुक्ष्मापाळसंदोह

शीकर काळानळनु (ने)............तदप्प (?) भयंकरवि[द्वि]ड्महिपाळ मेघलयकाळोत्पातवातं क्षितीश्वर-चूडाम[णि].......... [॥] श्रीवनितेशं कीर्तिश्रीवनिताधीशनुदित संशुद्धवच(चः)श्रीरमणीशं वीर (श्री)............[॥ जिन] नाराधिपदेवनुद्धचरितर्व्विधावन........ ....टासनधर्म्मा (?) रुगव्विरो........जनकनुव्विजाते प्रत्यक्ष गोमिनि तायि मैळलदेवियेन्दधिक..............नोळ्द्मतक्विनर्प्प (?) री क्षितिपति सैनि (?) र वधूप्रकर.........दिति..... . आतन कुळांगने [॥] श्री वनिते ताने वन्दु मही वनितेगे तिळकमेनिसि कत्तन वक्ष (क्षः) श्रीवनिते नेगर्द [भाग]लदेवी जगज्जननि सज्जनाग्रणियेनिकु ॥ आ दपतिगळगे गिरिसुतेगं हरगमनुरागदे पण्मुखनेन्तु पुट्टवंत(वि)रे नेगर्द रुग्मिणिगमा ह[रिगं] स्मरनेन्तु पुट्टवन्तिरे सले कान्तिग रविगमर्कतनूभव नेतुपुट्टवन्तिरलवग्गोल्दु पुट्टिदनु रगु कलि **सेन** भूभुज ॥ अवनीपालानत श्री[पद]कमलयुग तत्वनिर्णिक्तराद्धान्तविद चारित्ररत्नाकरनमळवच(चः)श्रीवधूकान्तन गोद्धवदर्प्पारण्यदावानळनुदितलसद्वोधसशुद्धनेत्र **रविचन्द्रस्वामि** भव्याम्बुजदिनपनघौघाद्रिसद्वज्रपात ॥ क ॥ कहूर्गणाब्धिचन्द्रन खण्डितसुतपोविभासिखण्डितमदनं डिंडीरपिंड सुरवेदण (ण्ड)[य]शगप्पिण्डनर्हणंदि मुनीन्द्र ॥ मल्लिकामाले ॥ कन्तुराजगजेन्द्रकेसरि भ[व्यलोकसुखाकर कान्तवाग्वनितामनोरमनुप्रवीरतपो]मय शान्तमूर्ति दिगन्तकीर्तिविराजि द्रडा (ढाभिमानी रणभूसेनानि रट्टान्वयश्रीनेत्र बुधमित्र नुज्ज (ज्ज्ञ) ळयशश्पात्रं नृपं रजिपं आ सेनावनिपगमप्रतिमलक्ष्मीदेविगं पुट्टिद । भूसंरक्षणदक्षदक्षिणभुज विध्वस्तशत्रुव्र (व्र) जं त्रासानम्रनृपालपाळितजयश्रीस(श)स्तान्विता

भास सूनृतवाग्विळासनवनीनाथोत्तमं कत्तमं ॥ आ विभुविन वधु पद्मलदेवी कळारूपविभवजिनमतदोळ्वाग्देवी रतिदेवी लक्ष्मीदेवी शचीदेवियेनिसि मिगे सोगयिसुवळ् ॥ श्रीपति ना विष्णुः पृथुवीपति येने लक्ष्मीदेवनो-गेदु वसुदेवोपमकत्तमविभुगं श्रीपद्मलदेवियेम्ब सुतदेवकिग ॥ प्रकटि-ततेजनन्वयसरोजसमूहविकासि(शि) सज्जनप्रकरथाग सम्मदकर (रं) नियताभ्युदयप्रशोभिताधिकनिजमण्डळ जितकळंक पवित्रचरित्रनागि चन्द्रिकेगधिनाथनादनिंदु विस्मयन्त प्रभुलक्ष्मीभूभुज ॥ श्रीयुवतीशहेम-गरुडध्वजमडितमण्डलेश्वरनारायणलक्ष्मणंगे तनुजम्भुजदन्ते धरोरु-भारधौरेयरनून दानजयधर्मधरव्विभुकार्त्तवीर्यलक्ष्मीयुतमल्लिकार्जुन महीश्वररादरतर्थ्यविक्रमर् ॥ परचक्र निजविक्रमक्कगिढु तेजःच (जश्ज) क्रम विट्टु कोवर चक्रक्केणे र्याप्पनन्तिरेविनं दिक्चक्रमं व्यापिसुत्तिरे

[यह लेख भी एक टुकडा है और उस पाषाण-तलसे लिया गया है जो मि० फ्लीटको उस मन्दिरके आँगनमें आधा गड़ा हुआ मिला था जिसमें कि पूर्वके दो लेख (नं १३० और १६०) मिले थे । इसमे नन्नसे ले कर कार्त्तवीर्य द्वितीय तककी वशावली मिलती है । का० द्वि० को चालुक्य राजा भुवनैकमल्लदेव या सोमेश्वर द्वितीय बतलाया गया है । इसका काल सर डब्ल्यू इलियट (Sir W Elliot) ने शक ९९१ ? (१०६९-७० ई०) से लेकर शक ९९८ (१०७६-७ ई०) तक बताया है । इसमें उसके पुत्र सेन द्वितीयका नाम भी आता है, लेकिन लेखकी वंशावलिके भागका मुख्य उद्देश्य स्पष्टत ७ वी पक्तिमें है जिसमे कार्तवीर्यकी सन्तान-परम्पराका उल्लेख है । यही कार्तवीर्य उस समय अपने कुटुम्बका प्रतिनिधि था, उसका पुत्र सेन नहीं, क्योंकि वह उस समय निरा बच्चा रहा होगा । दानगत लेखका भाग लुप्त है ।]

[JB, X, p 172, a, p 213-216, t, p 217-219, tr (ins n° 4)]

२०६

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड

[काल लुप्त पर लगभग १०७० ई०]

[मुल्लूर (निडुत परगना)में, पार्श्वनाम वस्तिके पश्चिममें तीसरे पाषाणपर]

...................यानिधि सत्या' ' ... 'ल्-देवि ।। भूतल .... विनिर्गत....... लोक्यविख्याते ... .. यण मोक्षदे ....वर्ण्णे...........द्यामुलं... ...पनिद् .. माळि...... .... नुर्व्वीपाळ-भूत ' वरसिद् कारुणियोद्व.... .... न वचन काय वद्दिग ..... तुळ्ळिन' .... यम्बन्तिरे स..... ' ' त दिविजलोक ।। खं ....पृथुविकोङ्गाळवनरसि"

[यह समस्त लेख बहुत बिगडा हुआ है। किसी मरे हुएका स्मारक है। और पृथुविकोङ्गाळवकी रानी ....]

[EC, IX, Coorg tl, n° 36]

२०७

वन्दलिके—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[शक ९९६=१०७४ ई०]

[वन्दलिकेमें, उसी वस्तिके उत्तरकी ओरके एक दूसरे पाषाणपर]

भद्रं समन्तभद्रस्य पूज्यपादस्य सन्मतेः ।
अकलंक-गुरोर्भ्भूयात् शासनाय जिनेशिनः ।।
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ।।
स्वस्ति श्री-प्रमदा-प्रमोद-जनकं यस्योरु-वक्ष-स्थलम्
यद्दोर्द्दण्ड-कृतान्त-वक्त्र-विवरे मग्नं द्विपट्-पार्थिवैः ।

यस्येय वसुधा चतुर्जलनिधिव्यवेष्टिता प्रेयसी
जीयाच्छ्री-**भुवनैकमल्ल-नृपतिः** सोऽयं नतानन्दनः ॥
तेनेद नरपाल-मौलि-विलसन्माणिक्य-लीढाङ्घ्रिणा
श्रीमद्-मल्ल-सुतेन शासनमहो दत्तं द्विपणमाथिना ।
आहारादि-चतुर्व्विधं मुनिगणे दानं च यस्य प्रियम्
तेनाप्त **कुलचन्द्र-देव-मुनिना** शुभ्राभ्र-सत्-कीर्त्तिना(म्) ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरण श्रीमद्-**भुवनैकमल्ल-**देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतार-वरं सलुत्त-मिरे **वङ्कापुरद** नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि स्वस्ति समस्त-भुवन-प्रस्तुत-ब्रह्म-क्षत्र-वीरान्वय श्री-**पृथ्वी-वल्लभ** महाराजाधिराज परमेश्वरं **कोळाळ-पुर**वरेश्वर विक्रम-गङ्ग जयदुत्तरङ्गं ··· मणि मण्डलिक-मकुट-चूडामणि श्रीमच्चा ······· पेर्म्माडि भुवनैक-वीर**नुदयादित्यनुं** चालु ल-स्तम्भं नर-वैद्यं कुमार-मण्डलिक बुद्धर ·· गेय्यलु श्रीमद्-**भुवनैकमल्ल-देवरु भर** ···· · ···**क्रवर्त्ति**-नवीकृतमप्प **बन्दणिके**-य तीर्थ शान्ति-नाथ-देव···· · त-नवीकार ·लाप्रवर्त्तन ···· कालान्तरित-पु ·· ·नव ··· द कम्पणं **नागरखण्ड** ··· वाड · **शक-वर्ष ९९६** रनेय आ ······द पुष्य-मासदुत्तरायण-सङ्क्रमण ··· ··· **श्री-मूल-संघान्वय-क्राणूर्-गण**···· · च्छद श्रीमदुभय-सिद्धान्त-वार्द्धि-चू ··· ····**प्प राम(परमा)नन्दि-सिद्धान्त-देवर** शिष्यरु **कुळ**·······**देवर** काल कर्च्चि सर्व्व-नमस्य धारा-पूर्व्वं · ···· वशासनमु शिला-शासनमुं माडि ·····(इसके आगे के अन्तिम वाक्यावयव

और श्लोक)········त रितोक्ति-सहित···· ·······खं मुखाब्ज-लसित ······· मनोदयं सद·······मदनेम्बिनं नेगळ्द············(हमेशाका अन्तिम श्लोक)।

[जिनशासनके कल्याणकी कामना। श्रीमद् मल्लके पुत्रद्वारा यह शासन (दान) कुलचन्द्र-देव-मुनिको मिला था। जिस समय (चालुक्य पदों सहित) भुवनैकमल्ल-देवका विजय-राज्य प्रवर्द्धमान था और वे चका-पुरमें रहते थे·—तत्पादपद्मोपजीवी चालुक्य पेर्म्माडि भुवनैकवीर उदयादित्य शासन कर रहे थे;—भुवनैकमल्ल-देवने शान्तिनाथ मन्दिरके लिये, (उक्त मितिको), मूलसंघान्वय तथा काणूर-गणके परमानन्द-सिद्धान्त-देवके शिष्य कुलचन्द्र-देवको नागरखण्डमें भूमिदान किया।]

[EC, VII, Shikarpur tl, n° 221]

२०८

बलगाम्बे—कन्नड़

[बिना काल निर्देशका, पर संभवत लगभग १०७५ ई० ?]

[बल्गाम्बेमें, चन्न बसवप्पके खेतमें भग्न जिन-मूर्तिपर]

(नागरी अक्षर)

स्वस्ति श्री चित्रकूटाम्नायदावलि मालवद शान्तिनाथ-देव-सम्बन्ध श्री-बलात्कार-गण मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिसिनु अनन्त-कीर्ति-देवरु हेगडे केसव-देवङ्गे धारा-पूर्वक माडि कोटेवु प्रथिष्टे पुण्य सान्ति (यहाँ दानकी विगत दी हुई है)।

[बलात्कार-गणके, मालवके शान्ति-नाथ-देवसे सम्बन्धित चित्रकूटा-म्नायके मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके शिष्य अनन्तकीर्त्ति-देवने हेगडे केशव-देवको दान दिया (यहाँ उसकी विगत है)।]

[EC, VII, shikapur tl., n° 134.]

२०९

कुप्पुटूरू—कन्नड़

[शक ९९७=१०७५ ई०]

श्रीमज्जयत्यनेकान्त-वाद-सम्पादितोदयम् ।
निष्प्रत्यूह-नमपाकशासन जिन-शासनम् ॥
पदिनाल्कु · · ··· · आरपदमा- ।
दुदशेष-लोकमल्लिऱ्पुदु मध्यम- एक-रज्जु-प्रमितम् ॥

आ-मध्यम-लोकद

···· · · ···नडुवण ।
पोम्बेट्टद तेङ्कलेसेव भरतावनि · ···॥
··· ···बुजवदनेय कुन्तळव् ।
एम्बन्ते सेदत्तु ललित ········· ॥
कुन्तळ-भूतळक्के तोडवादुदु ता वनवासि-देशमो- ।
रन्तेसेवग्रहार-पुर-पल्लिगळिन्दुरु-नन्दनाळियिन्- ।
दं तुरुगिर्द्द शाळि-वनदिन्द् ·· · ·· ।
क्रान्त-विरोधियिर्दु वनवासियोळन्वय-राजधानियोळ् ॥'

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डळेश्वर वनवासि-पुर-वराधीश्वर········ लब्ध-वर-प्रसाद कादम्ब-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डने-निसिद कीर्त्ति-देवन वश-वीर्य्य-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥

विनुतानन्द-जिन-व्रतीन्द्र-भगिनी ······ ।
वन-जैनाब्धि-सरोज-भृङ्गनधिकाभ्यस्तास्त्र-शास्त्र ···।
···नुतोर्व्वीज-तळ-प्रसूति-वर-वानप्रस्थ-तद्-योगि-पू- ।
जन-शीलं वनवासियागि···· · इन्द्रोत्तमम् ॥

शासन-देवियिं कुडिसि राज्यमना···· ·· तद्-वनम् ।
देशमदागि निर्म्मिसि नोसलिगडे पट्टमिदेन्दु पीलियम् ।
वास्··· · · ····वळिक्का-विभुविङ्क्ते नाममादुवुद्- ।
भासि मय् ···वर्म्मनभिवन्द्य-कदम्ब-कुळ त्रिलोचनम् ॥
नयदा **मयूरवर्म्मा**-न्वय··· · ···अलर्चिदं कुवळयमम् ।
जय-लक्ष्मी-रमण ···जय-भुज-वळनमळकीर्त्ति **कीर्त्ति**-नृपाळ ॥
असम-वितरण · स-भीम **कीर्त्ति-देव**नेम्बी-पेसरम् ।
वसुधे कुडे पडेदनेण्टु-देसेयानेगे कीर्त्ति कीर्त्ति-मुख्यवादुदरिम् ॥
किं कर्ण्णः किं ······ विजं-पतिष् किं स्मरः किं विधाता
दानी नून प्रतापी पृथु···र-विभवश्चारु-रूपप् कला-वित् ।
य····यस्येति नित्य वितरण-विजय ·· ····न्दर्य्य-विद्या- ।
वार्द्धिस् संस्तूयतेऽसौ सकळ-रिपु-कुलो · ···नः **कीर्त्ति-देवः** ॥
चलदिं साधिसि सप्त-कोङ्कणमनाटन्दिक्कि विद्विष्ट-मण्-।
········· ··उर्व्वरा-वळयमङ् केयूरमं पेत्तल् ।
तळे····दक्षिण-बाहु-दण्डदोळुदात्त **कीर्त्ति-देवं** यशो-।
मळ-मुक्ता-फळ् ··· ·· णोचित-लसद्-दिक्-कामिनी-सङ्कुळम् ॥

आ-**कीर्त्ति-देव**नग्रमहिषी ॥

परिवार-सुरभि जिनमत-। शरधि-सुधाकिरण-लेखे सुचरि···।
भरणेयेने नेगळ्द नृप- सौन्-। दरि **माळल-देवि**येणेगे राणिय-रेणेये ।
पुरु-जिन-पति कुल-देव्यं । गुरु वेट्टद ···मुनि **कीर्त्ति**-नृपेश्वरम् ।
आत्म-कान्तनेने वा-। प्पुरे **माळल-देवि**-राणियेणेयार् रसातियर् ॥
सिरि गिरिजाते सीते रति भा····रुक्मिणि-देवि रूप-सौन्द-
रतेगे पेर्म्मेगुद्य····;····कधिकं सुवगिङ्गे सत्कळा-।

करतेगण जिनेन्द्र-पद-भक्तिगे पासटि········।
सरि कलि-**कीर्त्ति-देवन** कुळाङ्गने **माळल-देवि**-राणियोळ् ॥
मिळिर्व्व पताकेगळ् मकर-तोरण-मण्डलि मान-गम्बमग्-।
गळिसिरे·· ····चैत्य-गृहावळि लेक्किपडे सङ्-।
गलिपडे लक्केग मिगिलगेप-जन तणिवन्तु कोळ्व पू-।
मळेयोळे नोम्प नोम्पि सतकोटिये माळल·········॥

व ॥ आ-**वनवासे नाडोळु** ॥

वळेद सुगन्धि-शालि-वनदिन्दोळगोप्पुव नारिकेळ-का-।
दळ-नव-पूग-नागलतिका-वनदिं परि········ळदिम् ।
वळयितमागि विप्र-सुर-चित्र-निकेतन-माळेयिन्दे कण्-।
गोळिपुदु **कुप्पटूर्** स्सकळ-विधेगे तानेने जन्म-भूतलम् ॥
नेगळ्दखिवळ ··ति-पुराण-कळा-वहु-तर्क्क-तन्त्र-पा-।
रगरुचिताध्वरावभृय-सत्नपनाति पवित्र-गात्रर-।
त्यगणित-सत्य-शौच ·· तिथि-पूजन-देव-पूजेयिम् ।
सोगयिप **कुप्पटूर** विभु-विप्ररिदेम् भुवन-प्रसिद्धरो ॥
धरेगे चतुस्समय-समु ।··· ··शरणागतैक-रक्षामणिगळ् ।
निरवद्य-चरितराज्ञा-। धरारी-**कुप्पटूर** सासिर्व्वरवोल् ॥
ब्रह्मैकश्चतुरा ·· थ विबुधा देवाः कविर्ब्भार्ग्गवो
येषामग्रत एव नान्य इति ये प्रस्तुत्य-विद्यार्ण्णवाः ।
उत्तङ्गाः कुळशैळवत्तरणिवत्तेजस्विनो वार्द्धिवत्
गम्भीरा भुवि **कुप्पटूर्**-व्विभु-वरा विप्रा जयन्ति स्थिरम् ॥
प्राणुत **वन्दणिका**-सु ···कृत-सम्बन्ध जगक्केय्दे भू-।
षणमी-**ब्रह्म-जिनालयं** दलेने पेळ्दी-**कुप्पटूरोळ्** गुणो-।

व्वने मु मा·······दी-स्थलक्कदेडे-नाडोळ् चल्वु-वेतिर्द - सिदु ।
डणियं माळल-देवि ता विडिसिदळ् श्री-कीर्त्ति-भूपाळनिम् ॥

अन्ता-चन्दणिका-तीर्त्थादि-सकळ-चैत्यालयक्काचार्य्यरुं मण्डळाचार्य्यरुमेनिसिद पद्मनन्दि-सिद्धान्त-देवर गुरु-कु ····· न्वय-प्रभावमेन्तेन्दोडे ॥

दुरित-कुलान्तक चरम-तीर्त्थकरं विभु वीरनाथनी- ।
धरे तिळिवन्तु हेयमिद·······समस्त-तत्त्वमम् ॥
परिविडियिन्दे पेळ्दु जनमं वर-मोक्ष-पथक्के तिर्द्दि वित्- ।
तरिसिद मुक्ति-कान्तेय लताङ्गमनप्पिदनिन्द्र-वन्दि -॥
आ-नेगळ्दन्त्य-कश्यपनिनादुदु काश्यप-गोत्रमी-जनम् ।
ज्ञान-निधानना-जिनन सद्गण-नायकरप्रिमावधि- ।
ज्ञानिगळप्प गौतम-मुनि····· मु ·· रे श्रुतकेवळ-प्रभा- ।
भानुगळप्प विष्णु-मुनि-मुख्यरुमा-पथम निमिर्च्चिदर् ॥
यतिगळवरिन्दे पलवरुव् । अतीतवा ·· वळिक्कमवतरिसि वहु-।
श्रुतनागियुं वल वि- । श्रुतनाद भद्रबाहु-यतियिदुचित्रम् ॥

अवरिं वळिक्के ॥

श्रुत-पारगरनवद्यर् । चतुरङ्गुळ-चारणर्द्धि-सम्पन्नर् स्सं- ।
हृत-कु-मत-तत्त्वरेनिसिदर् । अतर्क्य-गुण-जलधिकुण्डकुन्दाचार्य्यर् ॥

आ-कोण्डकुन्दान्वयदोळु ॥

श्री-कुण्डकुन्दान्वय-मूलसंघे काणूर्-गणे गच्छ-सु-तिन्त्रिणीके (य्)
अम्भोनिधाविन्दुरिवोदपादि सिद्धान्ति-चक्रेश्वर-पद्मनन्दी ॥
शान्त-रसं पोनल्-वरिदु सयमवळि मडल्तु पर्व्वि तो- ।

.... चराचर-व्रजमनात्म-वचोऽमृतदिं विनेयर ।
स्वान्त-रजो-मळ तोळेदु पोग्तेने पेळ् बुध-पद्मनन्दि-सि- ।
द्धान्तिक-चक्रवर्तियनदार् पोगळर् ग्गुण-शील-मूर्त्तियम् ॥

आ-प्रतिष्ठाचार्य्यरेनिसिद श्री-पद्मनन्दि-सिद्धान्ति-देवरिं सु-प्रतिष्ठितमाद कुप्पटूर श्री-पार्श्वदेवर चैत्यालयम पट्ट-मा-देवि माळल-देवि नेरेये माडिसि स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्रीमदनादियग्रहार कुप्पटूरगेय-महाजनङ्गळु यथोक्त-विधियिं पूजिसियवरिं ब्रह्म-जिनालयमेन्दु पेसरिट्टुयह्लिय कोटी वर-मूलस्थान-प्रमुख-पदिनेण्टु-स्थानदाचार्य्यरु वेरसु वनवसेय मधुकेश्वर-देवराचार्य्यर वरिसि पूजेयं कोट्टु जोग-वट्टिगेय-निक्किसिया-महाजनङ्गळ्गेययनूरु-होन्न कोट्टु स्त (स्थ) ल-वृत्ति (आगेकी ३ पंक्तियोंमें दानकी विस्तृत चर्चा है) शक-नृप-वर्षद ९९७ य पिङ्गल-संवत्सर दक्षय-तदिगेयमावासे-आदित्यवार-संक्रमण-व्यतीपातवोन्दिद दिनदोळु देवर नित्य-नैमित्त-पूजेग ऋषियराहार-दानकवेन्दु पद्मणन्दि-सिद्धान्तिचक्रवर्त्तिगळ् काल तोळेदु धारा-पूर्व्वक माडि कोट्टुळु (हमेशा के अन्तिम वाक्यावयव) आरुवणव नमस्यवागि बिट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक) ब्रम्मरहरियण्ण हेळद शासन मङ्गळ महाश्री ॥

[मेरु पर्वत, भरत क्षेत्र, कुन्तल-देश, और वनवासिके उल्लेखपूर्वक.—कादम्ब कुल-कमल मार्त्तण्ड कीर्त्ति-देव राज्य करते थे, जिनका वंशावतार निम्न प्रकार है'—मयूरवर्म्मा नामके एक राजा या युवराज थे। शासन-देवीकी कृपासे इनको राज्य मिला था, और एक वनको राज्यके रूपमें रूपान्तरित किया गया था। एक मयूरके पङ्खोका बनाया हुआ पट्ट उनके सिरपर रक्खा गया था, इसलिए उनका नाम मयूरवर्म्मा था। ये कदम्ब-कुलके अभिवन्द्य थे। उन्हींकी साक्षात् सन्तान कीर्त्ति-देव थे, उनकी

प्रशसा। उन्होने सप्त कोंकणोको, लीलामात्रमें ही वश कर लिया था। उनकी ज्येष्ठ रानी माळल-देवी थी, उसकी प्रशंसा।

उस वनवासे-नाड्में, (अनेक आकर्षणों सहित) कुप्पटूर् था, जिसके हजार ब्राह्मण अपनी विद्या और भक्तिके लिये विख्यात थे। प्रसिद्ध बन्द-णिक्केसे सम्बन्ध रखनेवाली चीजोंमेंसे कुप्पटूरका ब्रह्म-जिनालय सबसे आगे था; इसके लिये माळल-देवीने राजा कीर्त्तिसे सिड्डुणि, जो एडे-नाड्में सर्व-सुन्दर स्थान था, प्राप्त किया था।

बन्दणिके तीर्थ तथा दूसरे चैत्यालयोके मुख्य पुरोहित मण्डलाचार्य पद्मनन्दिसिद्धान्तदेवके आध्यात्मिक वंशका अवतार वर्णनः—भगवान वीरनाथ, गणधर गौतम (इन्द्रभूति)मुनि, तथा श्रुत-केवली विष्णुमुनि ये तीन ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने जिन-मार्गका विशेष रूपसे विस्तार किया। उनके बाद कई मुनियोके गुजर जानेके बाद भद्रबाहु यति हुए। उनके बाद, जैनपरम्परामें परिपूर्णरूपसे निष्णात, चार अङ्गुल ऊपर जमीनसे चलनेवाले (चारणऋद्धिधारक) कुन्दकुन्दाचार्य हुए। उसी कुन्दकुन्दान्वयमें मूल-संघ, काणूर्-गण तथा तिन्त्रिणीक-गच्छके सिद्धान्ति-चक्रेश्वर पद्मनन्दि हुए, उनकी प्रशसा।

उस पट्ट-महिषी माळल-देवीने कुप्पटूरके पार्श्व-देवचैत्यालयको उन पद्मनन्दिसिद्धान्त देवसे सुसंस्कृत कराके और उसका नाम वहाँके ब्राह्मणों (जिनमें साधुओं-मुनियोंके गुण थे) से 'ब्रह्म जिनालय' रखवाकर कोटीश्वर-मूलस्थान तथा वहाँके सभी अन्य १८ मन्दिरोके पुरोहितोके साथ, तथा बनवासि मधुकेश्वरको भी बुलवा कर उनकी पूजा करके और उन्हे ५०० 'होन्नु' देकर, और उनसे (उक्त) भूमियाँ प्राप्त करके,—इन सबको तथा कीर्ति-देवसे प्राप्त सिड्डुणिवल्लिको (उक्त मितिको) प्राप्तकर, पद्मनन्दि सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिके पाद-प्रक्षाल-पूर्वक दैनिक पूजा और ऋषियोके आहारके लिये दान कर दिया।]

[EC, VIII, sorab tl, n° 262]

२१०

गुडिगेरी—कन्नड़-भग्न

[शक सं० ९९८=१०७६ ई०]

१ ¯ ¯ ¯ लवर बसदि [म्] ॥ वृ ॥ सर ˘ ˘ ¯ ¯ ˘ ˘ ˘ ¯
˘ ˘ ¯ ˘ ˘ ¯ ˘ ¯ ˘ ¯ ˘ ˘ ˘ ¯ ˘ ¯ ˘ नय-मूकरनन्तदु माणे

वाग्न—

२ याकरनभयाकर द्विज-दिवाकरन्— ˘ ˘ ¯ ˘ ¯ ˘ ¯ ˘ ˘ ˘ ˘
मीकरं बुध-निशाकरनुद्‌घयश **प्रभाकरम्** ॥ अन्तेनिसिद पेर्ग्गडे

३ **प्रभाकरय्य**ननुभवणेयल्ल ॥ ॐ स्वस्ति समस्त-भुवनवलय-
निलय-निरतिशय-केवलज्ञान-नेत्रतृतीय-विराजमान-
भगवदर्हत्सर्व्वज्ञवीतरागपरमेश्वरपरमभट्टारकमुखकमलविनिर्ग्ग-
तानेक-सदसदादिवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवीणसिद्धा-

५ न्तादि-समस्तशास्त्रामृतपारावारपारगरुमनेकनृपतिमकुटतटघटि-
तमणिगणकिरणजलधारावौतावदातपूतचर-

६ णारविन्दरु बुधजनमनःपुण्डरीकवनमार्त्तण्डरु पट्‌तर्क्कषण्मुखरु
परमतपश्चरणनिरतरु **परवादिशरभभेरुण्डापर-**

७ नामधेयरप्प श्रीमत् **श्रीनन्दिपण्डितदेवरा**चार्य्यरागि तपो-
राज्य-गेय्युत्तमिरे ॥ वृ ॥ जिनसमयागमाम्बुनिधिपारगरु-

८ ग्रतपोनिवासिगळ् मनसिज-वैरिगळ् शम-दमाम्बुधिगळ् बुध-
सज्जनस्तुतरुव्विनतनरेन्द्ररुन्द्रमकुटार्च्चितपादपयोज-

९ युग्मरेम्बिनितु महत्त्वर्दि **सिरियनन्दि-मुनीन्द्ररे** देवरुर्व्वि-
योळ् ॥ अवर शिष्यितियर् ॥ शम-दम-यम-नियमयुतर्व्वि-

१० मल-चरित्रर् जिनेन्द्रधर्म्मोद्धरणक्रमनिरतरेलेल्ले लोकोत्तमरेसेवृष्टो-पवासिगन्तियरेळेयोल् ॥ वृ ॥ अन्तवरेळु

११ मत्तरने पण्डितरीये नमस्यमागि कल्पान्तदिन वर् पडेदु पार्श्व-जिनेश्वर-पूजेग श्रुतात्यन्तसदान्नदान-

१२ विधिग सले कोट्टरिद नितान्तवोरन्तिरे रक्षिप[र्] व्वज-तटाकद् पन्नेरडु-गवुण्डुगल् ॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

१३ ॐ समस्तगुणसम्पन्ननप्प श्रीमत्सेनबोव सिङ्गणाङ्ग ॥ अरुहने नम्बिद देय्व गुरुगळु परवादि-शरभ-भेरुण्ड-

१४ बुधरप्पर-हितमे तनगे चरित दोरे-वेत्तुदु सिङ्गनेम् कृतार्त्थनो जगदोळ् ॥ परमश्रीजैनधर्म्मक्कनवरतविशेषान्नदानक्के

१५ मुन्न भरत श्रेयासनीगळु निजकुलतिलक जैनधर्म्माब्धिचन्द्र स्फुरदुद्यत्तेजनत्युन्नतनमलयश शिष्टरत्नाकरं-

१६ वाप्पुरे सिङ्गं भव्यसेव्य शुचि-शुभचरित धात्रियोळु पुण्य-पुञ्जम् ॥ कन्द ॥ परहितचरित्रननुपमवरगुणनिल-

१७ य प्रियम्वदं धर्मदनक्षरपक्षपाति यतिपति-सिरिणन्दिन्न(न्न)ति-पदाब्जभृङ्ग सिङ्गम् ॥ अमलचरित्र बुधहृत्क-

१८ मलाकरदिनकर कृतार्त्थ जैनक्रमनलिनेष्ट श्रीनन्दिमुनीन्द्र सेनबोवसिङ्गं धरेयोळ् ॥ अन्तेनिसिद ॥ ॐ ॥

१९ शकवर्ष ९९८ नेय नल-संवत्सरद आहेयोळ स्वस्ति श्रीमत् परवादि-शरभभेरुण्डापरनामधेयरप्प

२० श्रीनन्दिपण्डितदेवर्म्मुन्न श्रीमत् चालुक्य-चक्रवर्त्तिविजया-दित्यवल्लभानुजेयप्प श्रीमत् कुङ्कुम-महा-

२१ देवि **पुरिगेरेयलु** माडिसिदानेसेज्जेय-बसदिगे ताम्र (ताम्र) शासन-मर्य्यादेयिन्दाळव **गुडिगेरेय** भूमियोळगे प—

२२ डुवण पोलनोत्तु-त्तोगिळ्दडे कालदिय-नायिम्मरसगे शासनम तोरि पडेद भूमियोळगे तम्म गुड्ड **सिङ्गय्यंगे** कारु—

२३ ण्यर्दि सर्व्वनमस्यमागि पदिनाल्कु मत्तरं दये-गेय्दु कोट्टदा· यय्यना पदिनाल्कु मत्तरुम ऋषियर्गे **गुडि-**

२४ **गेरेयोळ्** आहारदान नडेवन्तागि बिटनी केय्योळ् पुट्टिदर्त्थ- मन्निल्लियाहारदानक्कल्लदे पेरतोन्दु धर्म्मक्कं

२५ पेरतोन्देडेगमुप्यलागदिन्ती मर्य्यादियनरसुं पण्डितरु पन्निर्व्व- र्ग्गावुण्डुगळु धर्म्मवरिववरेल्ल-

२६ रुवोडेयरागि परिरक्षे-गेय्दु स्वधर्म्मर्दि नडसुवुदु ॥ कन्द ॥ **गुडिगेरेयोळु** धर्म्मंगळिगोडरिसुववरेल्ल

२७ वोडेयरी धर्म्मं कावोडेयरेमोर्व्वरे वेनवेदुडुपति रवि जलधि धात्रि निल्लपन्नेवर ॥ अन्तु **सिङ्गण्णं** बिट्ट

२८ केय्गे चतुस्सीमेयेन्तेने मूड बन्दि-गावुण्डन केयि तेङ्क **पुल्लुङ्गूर** वट्ट मडुव बसदिय केय्यु [मू]

२९ नाकय्यन केयि बडग गावुण्डुगळ पसुगेय पोलनन्तु मत्तर्प्प- दिनाल्कु ॥ मत्त**मष्टोपवासि-कन्तियर**

३० बिट्ट केयूगे चतुस्सीमेयेन्तेने मूड **चङ्गेरिय** केयि तेङ्क ग्रामचै- त्यालयद केयि पडुव पेर्ग्गडे

३१ प्रभाकरय्यन केयि बडग **पुल्लुङ्गूर** वट्टेयन्तु मत्तरेळुमनिन्ती येरडुं पर्य्यायद मत्तरिर्प्पत्तो

३२ न्दुम प्रतिपालिसुवचर्ग्गे **वारणासि कुरुक्षेत्रं प्रयागे**यर्ग्धतीर्त्थ मोदलागि पुण्यतीर्त्थङ्गळो-

३३ ळु सूर्य्यग्रहणदोळु सासिर कविलेयनलङ्कारसहित चतुर्व्वेदपारगरप्प सासिर्व्वर्ब्राह्म-

३४ णर्ग्गेयुभयमुखिगोट्ट प(फ)लमक्कुवी धर्म्मनळियल्ल मनदंदवर्ग्गेयिन्ती पुण्य-तीर्त्थङ्गळोळु सासि-

३५ रकविलेयुम [मू] सासिर्व्वर्ब्राह्मणरुमनळिद् पञ्चमहापातकनक्कु ॥ ॐ स्वस्ति श्रीमत् परवादि-शरभ-मे-

३६ रुण्डापरनामधेयरप्प **श्रीनन्दि**पण्डितदेवर्म्मत्तमा पडुववोलदोळगे पन्निर्व्वगर्गावुण्डुगळ्गे दर्येगेय्दुम्बळियागि

३७ कोट्ट मत्तर्न्नूर पन्नोन्दु पेर्ग्गडे प्रभाकरय्यन मग **रुद्रय्य**ङ्गे दयेगेय्दुम्बळियागि कोट्ट मत्तर्प्पदि-

३८ नाल्कु । **सेनबोव हब्बणंगे** दये-गेय्दुम्बळियागि कोट्ट मत्तर्प्पदिनाल्कु **भूकियर-कावणंगे** दये-गेय्दुम्बळि-

३९ यागि कोट्ट मत्तरेळु **कन्तियर-नाकय्य**ङ्गे दये-गेय्दुम्बळियागि कोट्ट मत्तर्नाल्कु कम्मवरुनूरु श्रीमद्भुवनै-

४० **कमल्ल-शान्तिनाथ-देव**र्ग्गे सर्व्वनमस्यमागि पडेद मत्तरिर्प्पत्तु॥ बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः य-

४१ स्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा प(फ) लम् ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् षष्टिर्व्वर्षसहस्रा-

४२ या (णि) मि (वि) ष्ठाया जायते कृमिः ॥

[प्रभाकर (पंक्ति २) या प्रभाकरय्य (पंक्ति ३) नामके 'पेर्ग्गडे' की जगहपर काम करनेवाले एक अधिकारीके वर्णनके साथ यह लेख शुरू होता है। उसके समयमें श्रीनन्दि पण्डितदेव (प. ७) सिरियनन्दि

मुनीन्द्र (पं. ९), या सिरिणन्दि (पं. १७) नामके गुरु थे जो सर्व पदार्थोंके व्याख्यान करनेमें चतुर थे, जिनकी पदवी 'परवादि-शरभ-भेरुण्ड' (प ६) थी। जब ये आचार्य, श्रीनन्दिपण्डित, तपश्चर्यामें संलग्न थे, उनके शिष्य 'अष्टोपवासिगन्ति' (प. १०), या अष्टोपवास-कन्ति (पं. २९) थे, जो जिनधर्मके उद्धार करनेमें बहुत प्रसन्न थे। और इनको श्रीनन्दि पण्डितसे सात 'मत्तर' भूमिका 'नमस्य' दान मिला था और इस दानका उपयोग ध्वजतटाक (पं० १२) (गाँवके) १२ 'गावुण्डु' सरदारोंकी छत्रछायाके नीचे, पार्श्वजिनेश्वरकी पूजा तथा शास्त्र लिखनेवालोंके भोजनके प्रबधके लिये किया। इसके बाद लेखमें एक 'सेनबोव' या पटवारी सिङ्गण्ण (प. १३), सिङ्ग (प. १४), या सिङ्गय्य (प २२) का उल्लेख आता है जो जिनधर्मभक्त था। यह सिङ्ग श्रीनन्दिका पटवारी था।

इसके बाद कथन है कि अनल संवत्सर, जो व्यतीत शक सं. ९९८ था, की श्राही या आग्रहीमें श्रीनन्दिपण्डितको गुडिगेरीकी भूमिमें पश्चिम दिशाके खेतोंका अधिकार मिल गया था। ये खेत, एक ताम्रपत्रके अनुसार, उस आनेसेज्जेय बसदिके जैनमन्दिरके अधिकारमें थे, जिसको श्रीमत् चालुक्यचक्रवर्ती विजयादित्यवल्लभकी छोटी बहिन कुङ्कुममहादेवीने पहले पुरिगेरीमें बनवाया था। श्रीनन्दि पण्डितने इन खेतोंमेंसे अपने शिष्य सिङ्गय्य (प. २२) को, 'सर्वनमस्य' दानके तौर पर, १५ मत्तर भूमि दी। सिङ्गय्यने यह भूमि गुडिगेरीके मुनियोंके आहारके प्रबन्धके लिये दे दी, और इस बातका ध्यान रखते हुए कि इसकी उत्पन्न इसी कार्यमें खर्च होती है, किसी दूसरे धर्म या कार्यमें खर्च नहीं होती, यह काम राजा, पण्डितो, १२ 'गावुण्ड' लोग, और शेष सभी धार्मिक लोगोंको (प २५) सौंप दिया। जबतक चन्द्र, सूर्य और समुद्र तथा पृथ्वी हैं तबतक यह दान जारी रहे, यह बात भी निगाहमें रखनेके लिये इन लोगोंको कहा। इसके पश्चात् इस भूमिकी सीमायें दी हुई हैं।

उन्हीं पश्चिम दिशाके खेतोंमेंसे श्रीनन्दि पण्डितने, लगान-मुक्त जमीनके रूपमें, १२ गावुण्डोंको १११ मत्तर (पं ३६), 'पेर्गडे' प्रभाकरय्यके पुत्र रुद्रय्यको १५ मत्तर; सेनबोव हव्वणणको १५ मत्तर (पं. ३८);

मूकियर-कावणणको ७ मत्तर; कन्तियर-नाकय्यको ४ मत्तर और ६०० 'कम्म' (पं ३९), और 'सर्वनमस्य'-दानके रूपमें श्रीमद्भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेवको २० मत्तर (पं. ४०) दिये। भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेव नामका मन्दिर 'भुवनैकमल्ल' विरुदवाले पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वितीयने बनवाया था या उसमें शान्तिनाथकी प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी।]

[इ० ए०, १८, पृ० ३५-४०, नं० १७३]

२११

मथुरा—संस्कृत

सं० ११३४=१०७७ ई०

[पद्मासनस्थ तीर्थंकरकी विशाल मूर्तिका लेख]

[इस मूर्तिका लेख साफ-साफ पढनेमें नहीं आता। कुछ भाग पढा जाता है, कुछ नहीं। परन्तु लेख सिर्फ दो पक्तियोंका है। इस मूर्तिका लेख सिर्फ कालकी दृष्टिसे ध्यान देने योग्य है। डा०, फूहरर् (Dr, Führer) के मतसे यह लेख बताता है कि इस मूर्तिका निर्माण मथुराके श्वेताम्बर सम्प्रदायकी तरफ़से हुआ था। शेष लेख न० १६१ के अनुसार जानना।]

[Antiquities of Mathura, (ASI, XX), p 53, t]

२१२

हुम्मच—कन्नड

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमे, सूळे बस्तिके सामनेके मानस्तम्भपर]

(पश्चिम मुख) श्री-वीर-सान्तरन पिरिय-मगं तैलह-देवं भुजबळशान्तरनेन्दु पट्टमं कट्टिसि कोण्डु पट्टण-स्वामि माडिसिद तीर्त्थद-बसदिगे बीजकन-बयलं बिट्टन् (बे ही शापात्मक वाक्यावयव) स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-कल्याणाष्ट-महाप्रातिहार्य्य-चतुस्त्रिंशदतिशय-

1 "Progress Report" for 1890-91, p 16

विराजमानं भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमळ-विनिर्ग्गत-सद-सदादिवस्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवीणरु सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वार्द्धौत-विशु-द्धेद्ध-बुद्धि-समृद्धरुभय-सिद्धान्त- रत्नाकररप्प श्रीमद् **दिवाकरनन्दि-सि-द्धान्त-देवर** गुड्ड स्वस्त्यनेक-गुण-गणाभिमण्डन नरवर-मुख-मण्डनं **शान्तर**-राज्याभ्युदय-कारण कलि-युग-दोष-निवारण **शान्तळि**-देश-कान्तारान्तर-जङ्गम-तीर्त्थं कलि-युग-पार्त्थं **पोम्बुर्च्च**-कुलोद्भव-दिवाकरं जिन-पाद-शेखरं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-कानीन विशद-यशो-निधान सम्यक्त्व-वाराशियुमप्प श्रीमत्**पट्टण-स्वामि-नोकय्य-सेट्टियर** वृत्त ॥ जिन-तत्त्व व्याप्त-चित्त जिन-मत-तिळक जैन-कल्पावनीज ।

जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्र जिन-समय-सरोजाकरोत्तंस-हंसम् ।

जिन-राज-स्तोत्र-माळाविळ-मुख-कमलोद्भासि **सिद्धान्त-रत्ना-** ।

कर-देव-श्री-पदाम्भोरुह-मधुपनेनल् **पट्टण**-स्वामि सन्दम् ॥

(उत्तरमुख) गुणिगळ् सिद्धान्त-रत्नाकररमळ-चरित्रर्म्महा-योगि-वृन्दा- ।

ग्रणिगळ् श्री-शान्तिनाथ-क्रम-कमळ-युगाराधकर् भारती-भू- ।

पणबुद्धर् ज्ञानिगळ् देशिग-गण-तिळकर् जैन-सिद्धान्तचूडा- ।

मणिगळ् श्री-**पट्टण**-स्वामिगे गुरुगळेनल् नोक्कनन्तार् कृतार्त्थर् ॥

परम-श्री-जैन-धर्म्मक्कतिशय-विभव मार्प्प विद्वज्जनक्का- ।

दरदिन्द सन्तोस माडुव मुनि-जनकाहार-भैषज्यम वि- ।

स्तरदिन्दं चिन्तेगेय्वुन्नत-गुण-युत **पट्टण**-स्वामि नोक्कम् ।

वरमार् भव्यर्क्कळ् अन्ता पुरुष-रतुनदिं **वीर-देवं** कृतार्त्थम् ॥

हरि-संघातदे कट्टु-पेत्त वडब-ज्वाळाळियिं वेन्द भी- ।

कर-पाठीन-तिमिङ्गिळाळियिनतिक्षोभक्के सन्दिळ्दग- ।

स्त्यरिनप्-प्राशनकेय्दे वारदति-तीक्ष्ण-क्षार-वारि-प्रभ- ।

गुर-वाराशियोळन्तु पोलिपुदो पेळ् सम्यक्त्व-वाराशियम् ॥
सिरिगावासमनेक-रत्न-निचयोत्पत्त्याश्रय भीरु-र- ।
क्ष-रत चन्द्र-कळा-प्रवर्द्धन-मुद पीयूष-पिण्डास्पदम् ।
वर-वेळा-वळयामृत समतेयिं वारासि पोल्तु मनो- ।
हर-दानत्वदिनेय्दे पोलदे वल सम्यक्त्व-वाराशियम् ॥
पट्टण-स्वामिय मग **मल्लं** वरेदम् ।
(पूर्वमुख) जडरु बाळकरु बुध-प्रकरमुं तत्त्वार्थमं कल्तघम् ।
किडे सम्यक्त्वमनेय्दि सप्त-परम-स्ता(स्था)नाप्तियं निश्चयम् ।
पडेयल् माडिदरोप्पे··· ····· **तत्त्वार्थसूत्रक्के** क- ।
न्नडदिं वृत्तियनेल्लिग नेगळ्पिन **सिद्धान्त-रत्नाकरर्** ॥
कन्तु-दर्प्प-हर जिन तनगाप्तनाळ्दनवार्य्य-वि- ।
क्रान्तनोळ्गलि वीर-शान्तरनम्मणं गुणि तन्दे दिग्- ।
दन्ति-वर्त्तित-कीर्त्तिगळ् गुरुगळ् **दिवाकरणन्दि-सि-** ।
द्धान्त-देवरेनल्के **पट्टण-सामिनोक्कने** सन्नुतम् ॥
स्नान पञ्चामृताख्यं पटु-पटह-रण झल्लरी-शब्द-रम्यम्
पूजा पुष्पाभिराम मळयज-पयसा लेपन दिव्य-धूपम् ।
नित्य कृत्वा जिनाना सकळ-जन-दया-जीव-रक्षान्न-दानम्
योम्बुर्च्चार्हित्-प्रतिष्ठा तव भवति पर लोक-विद्या-विवेकः ॥
दारिद्र्य-लोभ-मद-भय-नाशकरं एकमेव तत्क्षणतः ।
पञ्चाक्षरमिद मन्त्र **पट्टण-सामि** ते जप-विबुधम् ॥
पुसि नुडिव चपल-वित्तियोळ् ।
असदळमेसगुव पराङ्गना-सङ्गतिगा- ।
टिसुव तवगिल्लदोळ्पम् ।

पसरिप नररणम-नोक्कन पोल्तपरे ।

(दक्षिण मुख) चारु-चरित्ररी-दोरेयरारेनिपोळिपन **चन्द्रकीर्ति-भ-** ।

ट्टारकरग्र-शिष्यरग्र-हारिगळार्हत-तत्त्व-वस्तु-वि- ।

स्तारिगळङ्गजारिगळशेप-विशेप-गुणावली-मनो- ।

हारिगळेम्बिन नेगळ्दरल्ते **दिवाकरणन्दि-सूरिगळ्** ॥

वचन ॥ उभयसिद्धान्त-चूडामणिगळु त्रैविद्य-देवरुमेनिसिद श्री-**दिवाकर-णन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देवर** शिष्यर् ॥

सकलचन्द्र-मुनि नाथरुर्व्वरा- ।

सकलदोळ् परम-योग्यरेम्बुदम् ।

ककुभ-दन्तिगळ दन्तदोळ् करम् ।

प्रकटमागे बरेद पितामहम् ॥

वचन ॥ सम्यक्त्व-वाराशियुमेनिसिद **पट्टण-स्वामि-नोक्क**य्य-सेट्टियर मगम् ॥

सुन्दर-रूपदिं विनयदिन्दभिमानदिनोळिपर्नि जना- ।

नन्द-परोपकार-गुणदिं सुजनत्वदिनोजेयिं जगद्- ।

वन्दित-कीर्ति पुण्य-निधि तन्देयोळच्चिनोळोत्तिदन्ननेन्द्- ।

अन्देले वैश्य-वंश-तिलक नेगळ्दि**न्दिरनेम्** कृतार्त्थनो ॥

[वीर-शान्तरके ज्येष्ठ पुत्र तैलह देवने, जो भुजबल-शान्तर नामसे भी ज्ञात था, राजा होकर, पट्टण स्वामिके द्वारा निर्मित तीर्थद-वसदिके लिये मन्दिरके दानके रूपमें, बीजकन वयल्का, दान किया । (शाप)

भगवदर्हत्के द्वारा प्रतिपादित सत्य और असत्यकी प्रकृतिके प्रतिपादन करनेमे निपुण दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, जिनके गृहस्थ-शिष्य पट्टणा स्वामी नोक्कय्यसेट्टि थे। उनकी और उनके गुरुकी प्रशंसा । उसके द्वार-

वीरदेव भी सफल है। आगेके श्लोकोमें उनकी समुद्रसे तुलना की गई है। पट्टण-स्वामीके पुत्र मल्लने इसे लिखा।

सिद्धान्त-रत्नाकरदिवाकरनन्दिने मूर्खों या बच्चों तथा विद्वानोंके सबके अवबोधार्थ कन्नडमें तत्त्वार्थसूत्रकी वृत्ति लिखी। पट्टणस्वामीके इष्ट देव जिन थे, उसके शासक वीर-शान्तर थे, उनके पिता अम्मण, गुरु दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे। (जिनकी पूजाके लिये दैनिक सामग्री तथा लोगोके कल्याणका वर्णन करनेके बाद),—नोक्ककी प्रशसा।

चन्द्रकीर्ति-भट्टारकके मुख्य शिष्य दिवाकरनन्दिसूरिकी प्रशंसा। उन्हींका अपर नाम सिद्धान्त-रत्नाकर था। उनके शिष्य सकलचन्द्र-मुनिनाथ थे।

पट्टण-स्वामीनोक्कय्य-सेट्टिके पुत्र वैश्य-वंश-तिलक इन्दरकी प्रशंसा।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 57]

२१३

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड

[शक९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मच में, पञ्चवस्तिके ऑगनके एक पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन-शासनम्॥

शक-वर्ष ९९९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चाळुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्धमानमा-चन्द्रार्क्कतार सलुत्तमिरे। तत्पाद-पद्मोपजीवि॥ समधिगतपञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर पट्टिपोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वर महोग्र-वंश-ललाम पद्मावती-लब्धवर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुप-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानरध्वज

मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कळा-सम्पन्न सान्तर-कुल-कुमुदिनीशशाक-मयूखाङ्कुर रिपु-मण्डलिक-पतङ्ग-दीपाङ्कुर तोण्ड-मण्डलिक-कुळाचळ-वज्र-दण्ड विरुद-भेरुण्ड कन्दुकाचार्य्यं मन्दर-धैर्य्यं कीर्त्ति-नारायण सौर्य्य-पारायण जिन-पादाराधक पर-बल-साधक सान्तरादित्यं सकळजन-स्तुत्य नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्व्वज्ञ श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर नन्नि-सान्तरदेव ॥

वृत्त ॥ चरण-विनम्ननागि तोदळेम्बिडि मुन्ने ललाट-पट्टदल् ॥
वरेद दुरक्षरावळिगळ तोळेदप्पुवु तामे निन्न मच्-।
चरण-रजङ्गणेन्दोड्डुळिदर्न्निनगार्दोरे देव मण्डळे- ।
श्वर-कळभैक-केसरि नरेन्द्र-शिखामणि नन्नि-सान्तरा ॥
प्रतिबिम्ब स्वपिनोळ् पोल्केम गुणदोळ्दार् पोल्पर्न्निन्ननेम्बी-।
स्तुतियं निश्चयिसि गोविन्दर् बेमेयदिरेन्तेम्ब निन्नन्ते नोड्डु- ।
न्नतियोळ् हेमाचळ क्षान्तियोळवनि-नळ मेरेयोळ् वार्धि शौच- ।
व्रतदोळ् सिन्धूद्भव सत्यदोळिनन्तनेय सौर्य्यदोळ् भीमसेनम् ॥

अन्तेनिसिद नन्नि-सान्तर-देवरन्वयमदेन्तेने । उत्तर-मधुरावीश्वरनु सुग्रवगोद्भवनुमेनिसिद राहनेम्ब मण्डलेश्वर कुरुक्षेत्रदोळ् भारतदल् कादि गेल्वडे नारायण मेच्चि एक-सखमुमं वानर-ध्वजमुमं कोट्ट ॥ आतनिं पलवरु राज्य गेय्दु पोगे । सहकारनात नर-मास-व्रतनागे आतङ्क श्रिया-देविग पुट्टिद जिनदत्तनातन चरितक्के पेसि दक्षिणाभि-मुखनागि वरुत सिंहरथनेम्बसुरन कोन्दडे जक्कियव्वे मेच्चि सिंहलाञ्छन कोट्टळ् ॥ अन्धकासुरनेम्बसुरन कोन्दु अन्धासुरमेन्दु माडिद । कनकपुरके वन्दल्लि कनकासुरन कोन्द । कुन्दद कोटि-

योळिर्द **करनु करदूपणनुमं** कादि योडिसिदडे **पद्मावती-देवी** मेच्चि कनकपुरं एनिसिद **पोम्बुर्चद** लोक्कियमरदल् नेलसि **लोक्कियब्बेये**-म्बेरडनेय पेसरं ताळ्दि **पोम्बुर्चमा**तङ्गे राज्यस्थानमेन्दु पोळल माडिदळ् ॥ अल्लि जिनदत्तनुं पलवरुमरसु-गेय्दु सले **श्री-केशियं जयकेशियुमा**-दरा-श्रीकेशिग मुदर्दि महादेविग **रणकेसि** पुत्रनादनातर्नि पलवररसु-गेय्ये । **हिरण्यगर्भमिर्दु** महादानं माडियधिवासद पलवररसुगळ कोन्दु ओडिसियु तेङ्क सूलद-होळे पडुव तवनसि वडग वन्दगे मेरेयागे **सान्तलिगे-सायिर-नाडुमुमनेकायत्त** माडि **कन्दुकाचार्यनु दान-विनोदनु विक्रमसान्तरनुमे**निसिदम् । आतङ्गं वनवासियरस काम-देवन मगळु **लक्ष्मी-देविगं चागि-सान्तरं** तनेयमादनात **चागिस-मुद्रम** माडिसिदन् । आतङ्ग (म्) **आळ्वर नन्नयन** मगळेज्जल-**देविगं वीर-सान्तरं** सुतनादन् । आतङ्गमदेयूर शान्ति-वर्म्मन सुते जाकल-देविग **कन्नर-सान्तरं** तनूभवनादन् । आतर्नि किरिय काव-देवङ्ग वीर-वयलूनायन मगळ् चन्दलदेविग **त्यागि-सान्तर**नात्मजना-दन् । आतग कदम्बर हरिवर्म्मनात्मजे नागल-देविगं **नन्नि-सान्तरं** तनूजनादम् । आतग पलसिगे-नाडरिकेसरिय नन्दने सिरिया-देविगं **राय-शान्तरं** पुत्रनादन् । आतगमक्का-देविग **चिक्क-वीर-शान्तरं** नन्दन नादन् । आतग विज्जल-देविग **मम्मण-देव**नात्मजनादन् । आतङ्गं होचल-देविग मगळ् **बीरवरसियु** मग **तैलपदेवनु** पुट्टिदर् ॥ आ-वीरल-देवि **बङ्कियाळ्वरङ्गे** महादेवियादळ् । या-बङ्कियाळ्वरर्नि किरिय **माङ्क-ब्बरसियु गङ्गवंश**-तिलक पाल्य-देवन् सुते **केळेयब्बरसियु** तैलप-देवङ्गे वल्लभेयरादरल्लि मादेवि-केळयब्बरसिगे ।

वृ ॥ वर-लक्ष्मी-लक्ष्मण सान्तर-कुल-तिळक सूर्य-तेजःप्रभावं ।
पर-नारी-दूरमावर्जित-गुण-निळयं वैरि-कालानल मन्- ।
दर-धैर्य्यं नीति-पारायणनमळ-लसत्-कीर्त्ति-मूर्त्ती-वितानम् ।
धरेय कायल् समर्थं सुरपति-विभव पुट्टिद वीर-देवम् ॥

क ॥ धुरदोळसि-लतेयनुच्चिदोड् ।
अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कील्- ।
तरतरदिनुच्चिदवु निज- ।
कर-खड्गमवर्क्के कीले शान्तर-नृपति ॥

वीरुगन दोरेगे दोरे पेरर् ।
आरु वन्दपरे कृत-युग त्रेता-द्वा- ।
पार-कलि-युगदोळगण वी- ।
ररुदारर् प्रतापिगळ् धर्म्म-परर् ॥

आतननुजर् जगद्वि- ।
ख्यातर् श्री-सिङ्गि-देवनु रिपु-बळ-निर्- ।
घातनेने वर्म्म-देवनुम् ।
आतत-कीर्त्ति-वितानरवनी-तळदोळ् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद वीर-देवङ्गे काडव-मादेवियेनिसिद चट्टल-देवियिं किरिय वीरल-मादेविय विवाहोत्सवर्दि कूडेया-वीर-मादेवियु नोळम्ब नारसिंग-देवन सुते विज्जल-देवियुमाळ्वर मगळचलदेवियु कुल-वधुगळवरोळगे वीर-महादेवियन्वय-क्रममदेन्तेने ॥ स्वस्ति समस्त-भुव-नाधीश्वरेक्ष्वाकु-कुल-गगन-गभस्तिमालिनीपराक्रमाक्रान्त-कन्याकुब्जा-धीश्वर-शिरो-विलग्न-निशित-शिळीमुख पार्थिव-पार्थस् समर-केळी-धनञ्जयो धनञ्जयः तद्-वल्लभा गान्धारी-देवी तत्सुनो हरिश्चन्द्रस्तदग्र-महिषी

महो-हय-वंशोद्भवनु ज्योतिष्मती-पुरवरेश्वरनु मध्य-देशाधिपतियु एनिसि-दय्यण-चन्दरसङ्गं पुट्टिद गावब्बरसिग अरुमुळि-देवङ्गम् ॥

क ॥ सरसतियुं सिरियु दिन- ।
करनु पुट्टिर्दुवेम्बिन चट्टलेयुम् ।
वर-वधु कञ्चलेयु सत्- ।
पुरुषोत्तमनेनिप राज-विद्याधरनुम् ॥
पुट्टे तनगन्दु राज्यद ।
पट्ट कै-सार्दुदन्दु रक्कस-गङ्गम् ।
निट्टिसि तन्नरमनेयोळ् ।
नेट्टने तन्दिरिसिदं महोत्सवदिन्दम् ॥

व ॥ अन्तु सुखदिं बळेयुत्तिर्द कन्या-रत्नङ्गळिर्व्वरिं पिरिय-चट्टल-देवियं तोण्डे-नाडु नाल्वत्तेण्ठासिरक्कधिपतियुं कञ्ची-नाथनुवीश्वर-वर-प्रसादनुं वृषभ-लाञ्छननुमेनिसिद काडुवेट्टिगे रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडि विवाहोत्सवम माडि चट्टल-देविगे काडव-महादेवि-वट्टम कट्टि सुखदि निरिसिदन् । आ-वीर-देवङ्ग कञ्चल-देवियेनिसियुं वेरडनेय पेसरं तान्दिद वीर-महादेविगम् ॥

क ॥ दसरथन तनयरन्दमन् ।
एसेदिरे पोळ्निर्द तैलनुं गोग्गिगनुम् ।
कुसुमास्त्रनेनिसिदोड्डुग- ।
वसुधेसनुमन्तु वर्म्मनु तनयरवर् ॥
पुट्टलोडमात्म-गृहदोळ् ।
पुट्टिदुदैश्वर्य्यमोळ्पुमाप्पु कूर्प्पुम् ।

नेङ्गनरि-नृपर गृहदोळ् ।
पुङ्गिदुवुत्पात-भीति चेतो-विकळम् ॥

व ॥ अन्ता-कुमारर् सुखदिं ब्बळेयुत्तिरे यवरोळग्रज **तैलप-देव**-नसहायसिंहनेनिसियु तन्न बाहा-बळमे चतुरङ्ग-बळमागे दायिगरुमनाट-विकरुम राज्य-कण्टकरुम निःकण्टकं माडि तन्न दोर्ब्बळ-विक्रमदिं सान्तर-वङ्गमनवटय्सि **भुजबळ-शान्तर**नेनिसि सुखदिं राज्यं गेय्द ॥

भुजबळ-शान्तर-नृपतिय ।
भुजबळदळवु प्रतापमुं शौर्य्यतेयुम् ।
विजिगीषु-वृत्तियु निज- ।
विजयमुमी-लोकदोळगे भुम्भुकमेनिकुम् ॥

अन्तातननुज **गोविन्दर-देवम्** ॥

गोविन्दरन पराक्रमम् ।
आवगमवु तन्नोळेय्दे तोरिरे धरेय ।
काव पर-नृपरनळ्करे ।
सोव महा-गुणमे तनगे निज-गुणमेनिकुम् ॥

वृ ॥ देव समुद्र-मुद्रित-वसुन्धरेयोळ् नृपरादरेल्लरम् ।
भाविसि कण्डेनान्त रिपु-सन्ततिय नेलेगेट्टु पोपिनम् ।
सोव बुधाळिगार्त्तु पिरिदीव शरण्-बुगे काव सद्-गुणक् ।
आवनो निन्नवोल् नेरेद मण्डलिकर् कलि-**नन्नि-शान्तर** ॥
पिरिदेत्त मेरुग सागरमे जगदोळा-मेरुग सागरकम् ।
धरणी-चक्र कर भाविसुवडे पिरिदा-मेरुग सागरकम् ।
धरणी-चक्रकमाशालिये कडुविरिदा-मेरुग सागरकम् ।
धरणी-चक्रकमाशालिगमेले पिरियं **शान्तरादित्य-देव** ॥

ख्यातियनेनं पेळ्वुदो ।
वूतुग-वेर्म्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।
भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।
मातीतं चक्रि कुडल पडेदनमोघ ॥
अर्द्ध-पथमिदिर्गे वोन्दु तद्
अर्द्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सम्- ।
वर्द्धित-शान्तरनेनिप ध- ।
नुर्द्धरन चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

व ॥ इन्तेनिसिदुन्नतिय ताळ्दि तन्न मण्डळदोळगण राज्य-कण्टकर निष्कण्टकं माडि तनगे नन्नियें निज-गुणमप्प कारणदिं **नन्नि-शान्तरने-**म्ब पट्टम ताळ्दि पल-कालदिं परायत्तमाद भूमिय स्वायत्त माडि जग-देक-दानियेनिसि लोकदार्त्थि-जनक्के पिरिदनित्तु सम्यक्त्व-रत्नाकरनु जिन-पादाराधकनुमेनिसियुमेल्ला-समयगळ स्व-धर्मदिं नडयिसुतुं परा-ङ्गना-सहोदरनेनिसि वीरदोळ वितरणदोळ धर्मदोळं शौचदोळ लोकदोळ् पेररिल्लेनिसि नडेदु बन्धु-जनमुम स्व-देशमुम रक्षिसि **चट्टल-देवियु** कुमारर् **ओड्डमरसनु वर्म-देवनु** तामु **पोम्बुर्च्चदोळ्** सुखदिं राज्य गेय्युत्तमिर्द्दु धर्म्मं प्रागेव चिन्तेदेम्ब वाक्यार्त्थमुम भाविसियर् **इमुळि-देवङ्ग** **गावब्बरसिग वीरल-देविगं राजादित्य-देवङ्ग** परोक्ष-विनयम माडले-न्दुर्व्वी-**तिळक**मेनिसिद **पञ्च-वसदिय** मार्प्पुद्योगमनेतिकोण्डु ॥

कं ॥ '**श्रीविजय-देव**रुग्र-त- ।
पो-विभवर् ग्गुरुगळखिळ-शास्त्रागम-स- ।
भावितरेनिसल् **चट्टल-** ।
देविये कृत-पुण्यवन्ते विश्वम्भरेयोळ् ॥

वृ ॥ जनक रक्कस-गङ्ग-भूमिपति काञ्चीनाथनात्म-प्रियम्
विनुतर् श्री-विजयर् सुशिक्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळ-सं- ।
हृण-विक्रान्त-यशो-विलास-भुज-खड्गोल्लासि ता गोग्गि-
नन्दनना-चट्टल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥

क ॥ केरे भावि बसदि देगुलम् ।
अरवण्टगे तीर्त्थ शत्रमारवें-मोदलाग् ।
अरिकेय धर्म्मादिगळम् ।
नेरे माडिसि नोन्तलेसेके चट्टल-देवि ॥
उत्तुंग-प्रासादमन् ।
उत्तर-मधुरेशनप्प गोग्गिय ताय् लो- ।
कोत्तरमेने माडिसिदळ् ।
वित्तरदि **पञ्च-कूट-जिन-मन्दिरमम्** ॥
देसेयागसमेम्बेरडुमन् ।
असदळमेय्दिर्द्देवेम्बिन पोस-गेरेयम् ।
बसदियुम माडिसि तन्न् ।
एसमं शान्तरन ताय् निमिर्च्चिदळेत्त ॥

वृ ॥ इन्तु समस्त-दान-गुणदुन्नतिग पेररारो मुन्नमेम् ।
नोन्तवरेम्बिन नेगर्द **चट्टल-देवि** चतुस्-समुद्र-प- ।
र्य्यन्तमनेक-विप्र-मुनि-सन्ततिगन्न-हिरण्य-वस्त्रमम् ।
सन्ततमित्तु शान्तरन ताय् पडेदळ् पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥

व ॥ अन्तु पोगर्त्तेग नेगर्त्तेग नेलेयेनिसि चट्टल-देवियु नन्नि-शान्तरनु **बोडेय-देवर** गुड्डगळप्प-कारणदिं श्रीमत्-**तियङ्गुडिय निडुम्बरे-तीर्थदरुङ्गळान्वयद** सम्बन्धद **नन्दिगण**ाधीश्वररेनिसिद **श्रीविजय-भ-**

ट्टारकर नामोच्चारणदिं शुभ-करण-तिथि-मुहूर्त्तदलवर शिष्यर् श्रेयांस-पण्डितरुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदिगुन्नतमप्पेडेयल् करुवेनिसे केसर्क्किळिक्किदरवराचार्य्यावळियदेन्तेने । श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ तीर्थं प्रवर्त्तिसे गौतमर् ग्गन(ण)धररेने त्रि-ज्ञानिगळप्प मुनिगळ् सले यवरिं चतुरङ्गुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद कोण्डकुन्दाचार्य्यरिं केलव-काल पोगे भद्रबाहु-स्वामिगळिन्दित्त कलिकाल-वर्त्तनेयिं गण-भेद पुट्टिदुदवर अन्वय-क्रमदिं कलि-कालगणधररु शास्त्र-कर्त्तुगळुमेनिसिद समन्तभद्र-स्वामिगळवर शिष्य-सन्तानं शिवकोट्याचार्य्यरवरिं वरदत्ताचार्य्यरवरिं तत्त्वार्थ-सूत्रकर्त्तुगळेनिसिदार्य्य-देवरवरिं गङ्ग-राज्यम माडिद सिंहनन्द्याचार्य्यरवरिन्देकसन्धि-सुमति-भट्टारकरवरिम् ।

वृ ॥ राजन् बुद्धोप्यबुद्धस्सुरगुरुरगुरुः पूरणोऽपूरणेच्छः

स्थाणुः स्थाणुस्त्वजोजोविरविरळघुर्म्माधवो माधवस्तु ।

व्यासोप्यव्यास-युक्तः कणभुगकणभुग् वागवागेव देवी

स्याद्वादामोघ-जिह्वे मयि विशति सति मण्डपं वादिसिंहे ॥

व ॥ एनिसिदकलङ्क-देवरवरिं वज्रणन्द्याचार्य्यरवरिं पूज्यपाद-स्वामिगळवरिं श्रीपाल-भट्टारकरवरिं अभिनन्दनाचार्य्यरवरिं कवि-परमेष्ठिस्वामिगळवरिं त्रैविद्यदेवरवरिनकळङ्क-सूत्रके वृत्तिय वरेदनन्त-वीर्य्य भट्टारकरवरिं कुमारसेन-देवरवरिं मौनि-देवरवरिं विमळचन्द्र-भट्टारकरवरशिष्यर् ॥

क ॥ आदित्यन केलदोळ् चन्- ।

द्रोदयमेसेयदवोली-धरा-मण्डलदोळ् ।

वादिगळेम्बी-टुण्टुक- ।

वाडिगळेसेदपरे वादिराजन केलदोळ् ॥

व ॥ अन्तेनिसि राय-राचमल्ल-देवङ्गे गुरुगळेनिसिद **कनकसेन-भट्टारक**रवर शिष्यर् शब्दानुशासनक्के प्रक्रियेयेन्दु रूपसिद्धियं माडिद **दयापाळदेवरुं पुष्पषेण-सिद्धान्त-देवरुम्** ॥

वृ ॥ अळवे दिग्-दन्ति-दन्त बरमेसेदुदु सद्-गद्य-पद्योक्तिविद्या-
वळवे सर्व्वज्ञ-कल्प विरुदनुळिवुदिन्नन्य-वादीन्द्ररिं चा-
वळिसल् वेडोहो पत्र गुडदिरेदळळिर् बेन्दप पेळ्वोडिन्निन् ।
अळवल्ल वादिराज पर-मत-कुभृत् आभीळ-वाग्-वज्र-पातम् ॥

व ॥ इन्तेनिसिद षट्-तर्क्क-षण्मुखनु जगदेकमल्ल-वादियुमेनिसिद **वादिराज-देवर** ॥ . रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडिगळ चट्टल-देविय बीरदेवन नन्नि-शान्तरन गुरुगळेनिसिद ॥

व ॥ यद्विद्या-तपसोः प्रशस्तमुभय श्री-**हेमसेने मुनौ**
प्रा ······चिराभियोग-विधिना नीत परामुन्नतिम् ।
प्रायश्**श्रीविजयेश-देव** सकल तत्त्वाधिकाया स्थिते
संक्रान्ते कथमन्यथा·· ·······दक् तपः ॥
शास्त्र बुधानामुपसेव् ···
य दातुकाम यत एव दाता ।
ततोपि हि **श्रीविजये**ति-नाम्ना
पारेण वा **पण्डित-पारिजातः** ॥

व ॥ एनिसिद **श्री-विजय**-भट्टारकरुमवर शिष्यर् **चोळ**········ **शान्तादेवर् गुणसेन-देवर् दयापाल-देवर् कमळभद्र-देवरजितसेनपण्डित-देवर् श्रेयांस-पण्डित**रन्तवरायुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्चकूट-बसदिय **शक-वर्ष ९३९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरद जेष्ठ शुद्ध-विदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु** प्रतिष्ठेय माडिया-बसदिय खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारण-

क्कमल्लिर्द ऋषि-समुदायदाहार-दानक्क पूजा-विधानक्कमागे नन्नि-सान्तर-देवनुमोड्डमरसनु बम्म-देवनु चट्टल-देवियुमाचार्य्यर् कमळ-भद्र-देवर काल कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे माडि कोट्ट ग्रा········ (यहाँ दान और सीमाओंकी विस्तृत चर्चा है।)

[जिन शासनकी प्रशसा। (उक्त मितिको), जब (हमेशाके चालुक्य पदो सहित) त्रिभुवनमल्लदेवका राज्य सब ओर प्रवर्द्धमान था—तत्पादपद्मोपजीवी, महामण्डलेश्वर, उत्तर-मधुराधीश्वर, पट्टिपोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वर, महोग्र-वंशललाम, जिसने पद्मावती देवीके प्रसादसे 'तुलापुरुष,' 'महादान,' और 'हिरण्यगर्भ' ये तीन दान पूरे किये थे, सान्तर-कुल-कुमुदिनीके लिये प्रदीप्त किरणोवाला चन्द्रमा, जिनपादाराधक, सान्तरादित्य, नीतिशास्त्रज्ञ,—महामण्डलेश्वर नन्नि-सान्तर देव था। इसकी प्रशसा। नन्नि-सान्तर-देवकी वश-परम्परा इसप्रकार थी.—

उत्तर-मधुराका अधीश, उग्र-वशोत्पन्न राह राजा था, जो [महा] भारतके युद्धमे कुरुक्षेत्रमे लडा था और जीतनेपर जिसे नारायणने प्रसन्न होकर एक शंख और वानर-ध्वज दिया था। इसके बाद बहुत-से राजा हुए, उन सबके बाद,—एक सहकार नामका राजा हुआ, जो अन्तमे नर-मांस-भक्षी हो गया। उससे और श्रियादेवीसे जिनदत्त उत्पन्न हुआ, जो अपने पिताके आचरणसे ग्लानि-प्राप्त होकर दक्षिणसे आया और जिसके सिंहरथ नामके असुरके मारनेसे जक्कियब्बे (देवी) प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर उसने उसे सिंहका लान्छन (मुद्रा) दिया। अन्धकासुर नामके असुरको मारनेसे उसने अन्धासुर नामका नगर बसाया। कनकपुरमें आकर उसने कनकासुरका वध किया, तथा कुन्दके किलेमे रहनेवाले कर और करदूषणके भगा देनेसे पद्मावती देवी प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर उसने वहाँ कनकपुरसे, जो कि पोम्बुर्च्च (हुम्मच) का ही नामान्तर है, एक 'लोक्कि' वृक्षपर वास करना शुरू किया तथा लोक्कियब्बेका नाम धारणकर उसके लिये एक राजधानीके रूपमे शहर बसा दिया। जिनदत्त तथा दूसरे और भी राजाओके राज्य करनेके बाद श्रीकेसि और जयकेसि हुए। श्रीकेसि

और उसकी रानीसे रणकेसी पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके बाद अनेकोंके शासन करनेके बाद हिरण्यगर्भ हुआ, जिसने 'महादान' नामका दान किया और जिसने सान्तलिगे-हजार-नाड्का एक भिन्न राज्य स्थापित किया,—इससे वह कन्दुकाचार्य्य, दान-विनोद, विक्रम-सान्तर, इन तीन नामोंसे प्रसिद्ध हुआ। उस और लक्ष्मीदेवीसे चागि-सान्तर उत्पन्न हुआ, जिसने चागि-समुद्रका निर्माण कराया। उस और जाकल-देवीसे कन्नर-सान्तर उत्पन्न हुआ। उसके छोटे भाई काव-देव और चन्दल देवीसे त्यागिसान्तरने जन्म लिया। उस और नागल-देवीसे नन्नि-सान्तरका जन्म हुआ। उस और सिरिया-देवीसे राय-सान्तरने जन्म धारण किया। उस और अक्का-देवीका पुत्र चिक्क-वीर सान्तर हुआ। उस और बिज्जलदेवीका पुत्र अम्मण-देव हुआ। उस और होचल-देवीसे एक पुत्री वीरवरसि तथा एक पुत्र तैलप-देव हुआ। वह वीरल-देवी बङ्कियाळ्वकी रानी हो गई। उस बङ्कियाळ्वकी छोटी बहिन माङ्कब्बरसि, और गङ्गवंशललाम पालय देवकी पुत्री केलय-ब्बरसि तैलपदेवकी पत्नियाँ हो गईं। इनमेंसे, मादेवि केलयब्बरसिके वीर-देव उत्पन्न हुआ। उसकी प्रशंसा। उसके छोटे भाई विश्व-विख्यात सिङ्गि-देव और बर्म्म-देव थे। उस वीरदेवसे जब काडवकी रानी चट्टल-देवीकी छोटी बहिन वीरल-मादेवीसे विवाह हो गया, तब उसके वीर-मादेवी, बिज्जल-देवी और अचल-देवी ये तीन स्त्रियाँ और थीं। इनमेंसे, वीर-महा-देवीकी उत्पत्तिका वर्णन करते हैं।

इक्ष्वाकु कुलके सूर्य, कान्यकुब्ज (कन्नौज) के अधीश्वर धनञ्जय नामके राजा थे, जिनकी पत्नी गान्धारी देवी थी। उनका पुत्र हरिश्चन्द्र हुआ, जिनकी ज्येष्ठ रानी रोहिणी देवी थी। उनके दो पुत्र राम और लक्ष्मण थे, जिनके अपर नाम दड़िग और माधव थे। उनका वंश गङ्ग-वंश था। माधवकी प्रशंसा। उसके बड़े भाई दड़िगकी प्रशंसा। माधवका पुत्र किरिय-माधव,

उसका	पुत्र	हरिवर्म्म,
,,	,	विष्णुगोप;
,,	,,	तडङ्गालमाधव;

,, ,, अविनीत;

,, ,, दुर्विनीत,

,, ,, मुष्कर

,, ,, श्रीविक्रम

,, ,, भूविक्रम

उसका छोटा भाई राजा काम (या नृप-काम) था जिसने एक अर्थी (याचक) को गजका दान दिया था और इस कारणसे 'चागि'का नाम प्राप्त किया था।

उस नृप-कामका प्रपौत्र श्रीपुरुष था, इसका 'श्रीवल्लभ' अन्वर्थक नाम प्रसिद्ध था तथा यह गज-शास्त्रका प्रणेता था। इसने विळर्दे (या चिवर्दे) की लड़ाईमे काञ्चीके युद्धप्रिय राजा काडुवेट्टिसे उसका पल्लव-छत्र छीन लिया था तथा उसके हाथसे 'पेर्म्मानडि' का नाम भी छीन लिया था। तब उसका पुत्र शिवमार-देव (सैगोट्ट) हुआ, वह वीरमार्तण्ड-देव नामसे भी प्रसिद्ध था। उसने 'शिवमारमत' नामसे एक गज-शास्त्रका भी प्रणयन किया था। राजा विजयादित्य उसका छोटा भाई था। उसका पुत्र एरेयङ्ग था। उसका पुत्र राजमल्ल, उसका पुत्र मरुळ, उसका पुत्र बूतुग, उसका पुत्र एरेयप; उसका पुत्र नरसिंग; उसके तीन नाम और भी प्रसिद्ध थे—वीर वेडेग, मनुजपति तथा राजमल्ल। उसका (नरसिंगका) छोटा भाई कच्चिय-गङ्ग था। उसका छोटा भाई बूतुग-पेर्म्मानडि था। यह कृष्ण-राजाकी बहिनका पति था। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। इसका ज्येष्ठ पुत्र मरुळ-देव था। उसका छोटा भाई मारसिंह देव था। इसका छोटा भाई राजमल्ल देव था, जिसे नोळम्बकुलान्तक, पल्लव मल्ल, और गुत्तिय-गङ्ग भी कहते थे। इसकी प्रशंसा। उसका छोटा भाई नीति-मार्ग था। उसके छोटे भाई राजा वासव और कच्चल-देवीसे गोविन्दर-देव उत्पन्न हुआ था। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। उसका छोटा भाई अरुमुळि-देव था।

अरुमुळि-देव और गावब्बरसिसे चट्टल, कञ्चल और राजविद्याधर उत्पन्न हुए थे। इनमेंसे चट्टल-देवी की शादी काडुवेट्टिसे,—जो तोण्डे-नाड् ४८००० का शासक तथा काञ्चीका अधिपति था—कर दी थी। कञ्चल

देवी, (जिसका दूसरा नाम वीर-महादेवी था) और वीर-देवसे ये पुत्र उत्पन्न हुए—तैल, गोग्गिग, राजा ओड्डुग, और वर्म्म ।

इनमेंसे ज्येष्ठ पुत्र तैलप-देवने अपने भुज-बलसे शान्तरका मुकुट प्राप्त किया और भुजबल शान्तरके नामसे शान्तिसे राज्य किया । उसका नाम सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया था । उसका छोटा भाई गोविन्दर-देव था । इसका अपर नाम नन्नि-शान्तर था । नन्नि-शान्तरके नामसे ही इसने मुकुट धारण किया था । वह जिन-पादाराधक था, तथा चट्टल-देवि और राजकुमार ओड्डुयरस और वम्म देवके साथ शान्तिसे राज्य करता हुआ पोम्बुर्चमें था ।

चट्टल-देवीने अरुमुळि-देव, गावब्बरसि, वीरल देवी और राजादित्य देव-की स्वर्गयात्राके स्मारकके उपलक्ष्यमें उर्व्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चवस-दिके बनानेका काम अपने हाथमें लिया ।

सर्व शास्त्रों और आगमोंमें पारङ्गत होनेसे सम्मानित, तपस्वी श्रीवि-जय-देव चट्टल-देवीके गुरु थे । उसका पिता राजा रक्कसगंग था । काञ्ची-अधिपति (काडुवेट्टि) उसका पति था । गोग्गि उसका पुत्र था । तालाब, कुआँ, वसदि, मन्दिर, नाली, पवित्र स्नानागार, श (स) त्र, कुञ्ज इत्यादि प्रसिद्ध धर्म एवं पुण्यके कार्योंको चट्टल-देवीने सम्पन्न किया था ।

उत्तर-मधुराके अधिपति गोग्गिकी माँने बहुत उत्सुकतासे दुनियामें अग्रगण्य स्थान प्राप्त करनेवाले पञ्चकूट जिनमन्दिरको बनवाया । क्षितिज और आकाश दोनोंसे बात करनेवाले ऐसे एक नये तालाब और मन्दिरका उसने निर्माण किया । इस तरह शान्तरकी माँ प्रसिद्ध चट्टलदेवीने बहुत यश प्राप्त किया ।

श्रीविजय भट्टारक तियङ्गुडिके निडुम्बरे-तीर्थके अरुङ्गळान्वयके नन्दि-गणके अध्यक्ष थे । इनके गृहस्थ शिष्य चट्टल-देवी और नन्नि शान्तर थे । किसी शुभदिन, उनके शिष्य श्रेयान्सपण्डितने पञ्च-बसदिके नींवका पत्थर डाला ।

श्रेयांसके आचार्योंकी परम्पराका वर्णन—वर्द्धमान-स्वामीके तीर्थमें त्रिकालज्ञ गौतम-गणधर हुए । उनके बाद कोण्डकुन्दाचार्य हुए, जो जमीनसे चार इञ्च ऊँचे चलते थे । कुछ समय बाद भद्रबाहु स्वामी हुए, जिसके

बाद कलि-कालका अवतार (उत्पत्ति) हुआ और विभिन्न गणोंकी उत्पत्ति हुई।

उनमेंसे कलिकालगणधर, शास्त्र-प्रणेता समन्तभद्र-स्वामी हुए। उनकी शिष्य-परम्परामे शिवकोट्याचार्य हुए; उनके बाद वरदत्ताचार्य्य; उनके बाद तत्त्वार्थसूत्रके प्रणेता आर्य्य-देव, उनके बाद सिंहनन्द्याचार्य्य जो गङ्ग-राज्यके स्थापक थे। उनके बाद एकसन्धि सुमति-भट्टारक हुए। इसके बाद अकलङ्क देव (वादिसिंह) हुए। पुन क्रमशः वज्रनन्द्याचार्य्य, पूज्यपाद-स्वामी, श्रीपाल-भट्टारक, पुन. अभिनन्दनाचार्य्य; कवि परमेष्ठि-स्वामी, त्रैविद्य देव, अनन्तवीर्य भट्टारक, जिन्होने अकलङ्क-सूत्रकी वृत्ति लिखी थी। इनके बाद कुमारसेन-देव; उनके बाद मौनि देव, उनके बाद विमलचन्द्र-भट्टारक, उनके शिष्य कनकसेन-भट्टारक थे जो राजा राजमल्लके गुरु थे। उनके शिष्य थे दयापाल जिन्होने 'शब्दानुशासन' की 'प्रक्रिया' रूप-सिद्धि लिखी है—तथा पुष्पसेन सिद्धान्त-देव। वादिराज-देव 'षट्-तर्क-षण्मुख,' 'जगदेकमल्ल वादी' थे। श्रीविजय-देव रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडि, चट्टल-देवि, बीर-देव तथा नन्नि-शान्तरके गुरु थे। विद्वानोको वे शास्त्र देते थे तथा जो शास्त्रका महत्त्व नहीं समझते थे उन्हें उनका महत्त्व समझाते थे, इसी कारणसे उनका नाम श्रीविजय था तथा उन्हे 'पण्डित-पारिजात' भी कहते थे।

उपर्युक्त श्रीविजय-भट्टारक और उनके शिष्य चोल्ल ‥, शान्त-देव, गुणसेन-देव, दयापाल-देव, कमलभद्र देव, अजितसेन-पण्डित-देव तथा श्रेयान्स-पण्डित-देव। इनने (उक्त मितिको) उर्व्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चकूट-बसदिकी स्थापना की। बसदिकी मरम्मत, ऋषि-वर्गके आहार तथा पूजाके प्रबन्धके लिये, नन्नि-शान्तरदेव, ओड्डमरस, बम्म-देव, तथा चट्टल-देवीने,—आचार्य कमलभद्र-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्वक (उक्त) गाँव दिये।

शेष भाग बहुत घिसा हुआ है।]

[EC, VIII, Nagar tl n° 35]

२१४

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मचमें, तोरण-बागिलके दक्षिणी खम्भेपर]

(पूर्वमुख) श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

('स्वस्ति' से लेकर पाँचवी पंक्तिके 'महा मण्डलेश्वरं' तक का लेख पूर्वके शि० ले० नं० २१३ की पंक्ति १ से ६ तक से मिलता है।)

एलगे चेन्नने वीरुगं वपुविनिं भावोद्भव तक्कनेन्द् ।
एलगे वीरने वीरुगं विरुदिनिं भीमोपमं वाप्पु मत्त् ।
एलगे दानिये वीरुग पिरियना-कर्ण्णाख्यनिन्दकुमेन्द् ।
एलगे वीरल-देवि नोन्तळवनोळ् कूडिर्प्प सौभाग्यमम् ॥

अन्तेनिसिद वीर-शान्तर-देवगं वीरल-महादेविग ॥

दशरथन तनेयरन्दमन् ।
एनेदिरे पोत्तिर्द तैलनु गोग्गिगनुम् ।
कुसुमाखनेनिसु वोड्डुग-
वसुधेशनुमन्तु बोम्मनु तनयरदार् ॥

अवरोळग्रजनराति-सैन्य-शोषण-वाडवानळनुमाश्रित-कल्प-वृक्षनु-मेनिसि परायत्तमाद देशम तनगेकायत्त माडि सान्तर-वट्टमं ताब्दि ।

निज-भुज-बळदिन्दरि-भू- ।
भुजरं कोन्दोत्तिकोण्डु देशमनन्ता- ।
विजिगीषु तैल-भूपम् ।
भुजबळ-शान्तरनेनिप्प पेसरं पडेदम् ॥

आतननुजं गोविन्दर-देवननेक-राज्य-कण्टकरं निष्कण्टकं माडि

सम्यक्त्व-चूडामणियु जगदेक-दानियुं एनिसि सान्तळिगे-सायिरमुमनेक-
छत्र च्छायेयिन्दमाळ्दु **नन्नि-सान्तर**नेम्बेरडनेय पेसरं पडेदम् ॥

(दक्षिणमुख) ख्यातियनेनं पेळ्वुदो ।

बूतुग-पेर्म्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।
भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।
मातीत चक्रि कुडल् पडेदनमोघ ॥
अर्द्ध-पथमिदिर्गे वन्दु त- ।
दर्द्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सं- ।
वर्द्धिन-सान्तरनेनिप ध- ।
नुर्द्धरन चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

अन्तातन तम्म**नोड्डुग**नशेष-धरा-वळयम कर-वळयम ताळ्दुवन्ते
लीलेयिं ताळ्दि **विक्रम-सान्तर**नेम्ब पेसर पडेद ॥

स्वस्ति श्री-लसदुग्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः
दृप्यद्-वैरि-निकाय-दर्प-दळन-प्रादुर्भवद्-विक्रमः ।
सम्पूर्णेन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिप्त-दिक्-भित्तिकः
श्रीमान् **विक्रम-शान्तरो** विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः ॥

आतननुज ॥

पर-नरप-शिरः-कुञ्जो- ।
त्कर-करि-कमळा-पयोधर-द्वय-हारम् ।
स्मर-मूर्त्ति निखिळ-दिग्-मुख- ।
परिचुम्बित-कीर्त्ति **धर्म्म-देव** कुमार ॥

अन्तेनिसिदवर तायि ॥

जनकं **रक्कस-गङ्ग**-भूमिपति **काञ्ची-नाथ**नात्म-प्रियम् ।

विनुतर् **श्रीविजयर्** सु-सि (शि) क्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळसं-।
हन-विक्रान्त-यशो-विळास-भुज-खड्गोल्लासि ता **गोग्गि** नन्-।
दनना-**चट्टल-देवि**गेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥

अन्तु समस्त-गुण-सन्दोहक्क धर्म्मक्क जन्म-भूमियेनिसिद **चट्टल-देवि**यु **भुजबळ-शान्तर-देवनु नन्नि-शान्तर-देवनु विक्रम-शान्तर-देवनु बर्म्म-देवनु पोम्बुर्च्चदोळ्** सुखदिं राज्य गेय्युत्तमिर्द्दु धर्म्मं प्रागेव चिन्तेदेम्ब वाक्यार्त्थम भाविसि तमगे श्रेयो-निबन्धनार्त्थं उर्व्वी-तिळक-मेनिसिद पञ्च-बसदियं मार्प्पुद्योगमनेत्ति कोण्डु तामेल्लरु **मोडेयदेवर** गुड्ड गळप्प कारणदिन्द द्रविळ-सघद नन्दि-गणदरुङ्गुळान्वयद **श्रीविजय-देवर** नामोच्चारण गेय्दवर शिष्यरु **श्रेयान्स-पण्डित**रिन्दुर्व्वी-तिळक-मेनिसिद पञ्च-बसदिगे सु(शु)भ-मुहूर्त्तदोळाचन्द्रार्क्क-स्थायियप्पन्तुन्नत-मप्पेडेयोळ् केसर्क्कल्लिक्किसिदरु अवराचार्यावळियेन्तेने । श्री-**वर्द्धमान-स्वामि**गळ तीर्त्थं प्रवर्त्तिसे सप्तर्द्धिसम्पन्नरप्प **गौतमर् ग्गणधररेने** त्रिज्ञानिगळप्प मुनिगळ् पलवरु सले अवरिं चतुरङ्गुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद **कोण्डकुन्दाचार्य्यरु** श्रुतकेवलिगळेनिसिद **भद्रबाहुस्वामि**गळ् मोद-लागि पलम्बराचार्य्यर् पोदिम्बळिय **समन्तभद्र-स्वामि**गळुदयिसिदरवर-न्वयदोळ् गङ्ग-राज्यम माडिद **सिंहनन्द्याचार्य्य**रवरिं **अकलङ्कदेव**रवरि रायराचमल्लन गुरुगळप्प वादिराज-देवरेनिसिद **कनकसेन-देव**रुमवर-शिष्य**रोडेय-देवरु** रूपसिद्धिय माडिद **दयापाळ-देवरु पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवरु** षट्-तर्क्क-षण्मुखरु जगदेकमल्ल-वादियुमेनिसिद **वादि-राज-देव**रवरिं **कमळभद्र-देव**रवरिम्

एकास्य. चतुराननो गणपतिर्न्नेभाननो भारती
न स्त्री सर्व्व-कलाधरोऽशशधरः कामान्तको नेश्वरः ।

विद्याना परिनिष्ठित-क्षिति-तळं तन्मूळमाळम्बनम्
चित्ते तेऽजितसेन-देव विदुपा वृत्त विचित्रीयते ॥

अन्तेनिसिद **शब्द-चतुर्म्मुखनुं तार्किक-चक्रवर्त्तियु वादीभसिंह-नुमेनिसिद्दजितसेन-देवर** सह-धर्म्मिगळु

दुरित-कुळ-प्रध्वस ।
स्मर-मावत्-कुम्भि-कुम्भदळन-मृगेन्द्रम् ।
वर-वाग्-वनिता-कान्तम् ।
धरेयोळ् नेगर्दी-**कुमारसेन-देव-मुनीन्द्रम्** ॥

अन्तेनिसिद कुमारसेन-देवर्रि वेव-राज-केसरियेनिसिद **श्रेयान्स-देव**-रन्तवरायुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदियना- **शक-वर्षद९९९नेय पिङ्गळ-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-विदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु** प्रतिष्ठेय माडिया-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणक्कमह्लिर्द ऋषि-समुदाय-दाहार-दानक्क पूजा-विधानक्कमागे समस्त-गुण-मणि-गणविराजमाने-यरप्प श्रीमतु-**चट्टल-देवि**यरुमन्तु तम्म नाल्वरुमिर्द्दु **कमळभद्र-देवर** काल कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे **भुजबळशान्त-रदेवं** कोट्ट ग्रामङ्गळ् (जैसाकि कहा गया है) मत्तमातननुज **नन्नि-शान्तर-देवं** सुखदिं राज्य गेय्युत्तमिर्द्दु पोम्बुर्च्च-नाडोळगण हादिगारु अदर काल्लुहळ्ळि हल्लवनहळ्ळियु बिडेयुम कोट्ट अन्तातन नम्म **विक्रम शान्तर**-देव राज्यं गेयुत्तमिर्द्दु पोम्बुर्च्च-नाडोळगण हालन्दूरु कल्लूरु-नाडोळ-गण केरेगोड समीपद मडम्बळ्ळियुम कोट्टरिन्ती-वसदिय वृत्ति-एल्लवक्कं देवि-देरे अडे-गर्द्दु काणिक्के सेसे विर्द्दु वीय-मोदलागे कुमार-गद्याण किरु-देरे किरु-कुलायं साम्य सलगे मोदलागि पेर्खुं तेरेगळेम्ब सर्व्व-बाधा-परिहारवं माडिदर् । (यहाँ सीमाएँ तथा हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव आते है)।

[जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था—और तत्पादपद्मोपजीवी (ऊपरके शिलालेख न० २१३ में जो उपाधियाँ नन्निशान्तरकी हैं, उन्हींके सहित) महामण्डलेश्वर वीरुग या वीर शान्तर देव था। उसकी प्रशसा। उसकी रानी बीरल-महादेवी थी। उनके चार लड़के—तैल, गोग्गिक, ओड्डुग, और बम्म—थे। इनमेंसे तैलका नाम भुजबळ-शान्तर, गोग्गिक या गोविन्दर-देवका नन्नि शान्तर तथा ओड्डुगका विक्रम-शान्तर प्रसिद्ध हुआ। सबसे छोटे भाईका नाम कुमार बम्म-देव ही रहा। इनकी माँ चट्टल देवी (वीरल महादेवी) थी। उसके पिता राजा रक्कस-गङ्ग, पति काञ्ची-अधिपति, गुरु श्रीविजय, और पुत्र गोग्गि (नन्नि-शान्तर) थे।

इस प्रकार, जिस समय सब धार्मिक गुणो और पवित्रताकी जन्मभूमि चट्टलदेवी, भुजबल शान्तर-देव, नन्नि-शान्तर-देव, विक्रम-शान्तर-देव और बर्म्मदेव पोम्बुर्चमें थे और शान्तिसे राज्य कर रहे थे 'धर्म सर्व प्रथम चिन्तनीय है', इसका खयाल करके, धर्म उपार्जन करनेके लिये, उन्होने 'उर्वी तिलक' नामकी पञ्च बसदिके निर्माणका कार्य अपने हाथमें लिया। ये सब ओडेय-देवके (श्रेयास-पण्डितके शब्दोंमें जो श्रीविजय-देवका नामान्तर है) गृहस्थशिष्य थे। उन सबने किसी शुभ दिन पञ्चबसदिकी नींव डाली।

श्रेयान्सदेवके आचार्योंकी परम्परा—वर्द्धमान स्वामीके तीर्थमें गौतम गणधर हुए। उनके पश्चात् बहुतसे त्रिकालज्ञ मुनियोके होनेके बाद क्रमशः कोण्डकुन्दाचार्य, 'श्रुतकेवली' भद्रबाहु स्वामी, बहुत-से आचार्योंके व्यतीत होनेके बाद, समन्तभद्र स्वामी, सिंहनन्द्याचार्य, अकलङ्क-देव, कनकसेन देव (जो वादिराज नामसे भी प्रसिद्ध थे), ओडेयदेव (श्रीविजयदेव जिनका ऊपर नाम दिया है), दयापाल, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, वादिराज-देव (जो 'षट्-तर्क-षण्मुख' तथा 'जगदेकमल्ल-वादि' नामसे भी प्रसिद्ध थे), कमलभद्र-देव, अजितसेन देव (प्रशसासहित) हुए। और अजितसेन देवके सहधर्मी शब्द-चतुर्म्मुख, तार्किक-चक्रवर्त्ती वादीभसिंह हुए। तत्पश्चात् कुमारसेनदेव मुनीन्द्र। इनके बाद श्रेयान्सदेव हुए।

(उक्त मितिको) पञ्चवसदिकी नींव डालकर, चट्टल देवी और चारों भाइयोंकी उपस्थितिमें, कमलभद्रदेवके पैर धोकर, भुजबल-शान्तर-देवने (जैसा कि ऊपर कहा गया है) गाँव और भूमियाँ दीं। इसीतरह उसके छोटे भाई नन्नि-शान्तर देवने तथा इसके छोटे भाई विक्रम शान्तरदेवने (जैसा कि लेखमें बताया गया है) गाँव और भूमियाँ दानमें दीं और वसदिके इन दानोंको (जिसकी सूची लेख में दी हुई है) उन्होंने सभी करोंसे मुक्त कर दिया। सीमायें, शाप और आशीर्वचन।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 36]

२१५

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका; पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमें, मानस्तम्भके ऊपर, दक्षिणकी तरफ़]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन शासनम्॥

नमो अर्हते॥

स्वस्ति-श्री रमणी-विनोद-भवनं यस्योद्व(द्य)-वक्षः-स्थलम्
वाग्-देवी-वनिता-विलास-निळयो यस्याननाम्भोरुहम्।
वीर-श्री-युवतेरभूत् कुळ-गृहं यद्-बाहु-दण्ड-द्वयम्
यत्कीर्त्तिश्शरदिन्दु-कान्ति-विमला पारेदिशं वर्त्तते॥
साक्षादुन्न-कुळ-प्रसूनि-निज-भुज-प्रोद्भासि-कौक्षेयक-
प्रध्वस्तीकृत-भूरि-गर्व्व-वळवद्विद्वेषि-भूपाळकः।
दीनानाथ-जना यदीय-सु-महा-दानात् परेष्टप्रदम्
स श्रीमान् भुवि नन्नि-शान्तर इति ख्यातो भृशं भ्राजते॥
विभाति यस्याप्रतिमः प्रतापः मानोगतो (?) वैरि-महीपतीनाम्।

सन्तापयत्येव तदन्तरङ्गम् श्रीमानसावोड्डुग-मण्डलेशः ॥
कुमार-चूडामणिरेप भाति श्री-ब्रह्म-देवो गुणवाननिन्द्यः ।
श्री-जैन-पादाम्बुज-युग्म-भृङ्गः यशोऽभिवेष्टयाखिळ-भूमि-भागः॥
श्रीमद् राक्षस-गङ्ग-मण्डळपतिः श्री-गङ्ग-नारायणः
दोर-दण्ड-द्वय-वीर्य्य-भीपित-रिपुः श्री-गङ्ग-पेर्म्मानडिः ।
स्याद् यस्या जनको मनो निरुपमो विख्यात-कीर्त्ति-ध्वजः
श्रीमच्चट्टल-देवि अत्र भुवने ख्याता त्वरीवृत्यते ॥
दृष्टे यत्र महोत्सवैक-निळये पश्यज्जनाना मनः
पुण्यं सञ्चिनुते-तरामतितरामंहो हरत्यप्यलम् ।
पूजाभिः पृथुभिः पुनः प्रतिदिनं वाभाति योऽयं सदा
श्रीमत्पञ्च-जिनालयो निरुपमो भक्त्या यया निर्म्मितः ॥
संसाराम्भोधिमध्यान् निरुपम-गुण-सद्-रत्न-भेदाधिवासम् •
निर्व्वाण-द्वीपमाप्तु प्रतियत-मनसा पण्डिताना मुनीनां ।
कृत्वा श्रीमज्जिनेन्द्रालय-विलसित-नावं व्यधाद् यक्षिणामनू-
मानस्तम्भोल्लसत्-कूवरमपि च वनान्यर्थि-सार्थाय दत्वा ॥
आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दानैरनिरन्तरै. ।
श्रीमच्चट्टल-देवीयं वाभाति भुवन-स्तुता ॥
रोहिणी चेळिनी सीता देवता च प्रभावती ।
श्रूयन्ते वार्त्तया सेय दृश्यन्ते विमलैर्गुणैः ॥
श्रीमद्द्रविळ-संघेऽस्मिन् नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गळः ।
अन्वयो भाति योऽशेप-शास्त्र-वाराशि-पारगैः ॥
यद्-वाग्-वज्राभिघातेन प्रवादि-मद-भूभृतः ।
सञ्चूर्ण्णितास्तु भाति स्म हेमसेनो महामुनिः ॥

शब्दानुशासनस्योच्चैर् रूपसिद्धिर्म्महात्मना ।
कृता येन स वांभाति दयापालो मुनीश्वरः ॥
श्री-पुष्पसेन-सिद्धान्त-देव-ग्वक्त्रेन्दु-सङ्गमात् ॥
जातावभाति जैनीयं सर्व्व-शुक्ला सरस्वती ॥
नम्रावनीश-मौळीद्ध-माला-मणि-गणार्च्चितम् ।
यस्य पादाम्बुजं भातं भात श्रीविजयो गुरुः ॥
सदसि यदकलङ्कः कीर्त्तने धर्म्मकीर्त्ति·
वचसि सुरपुरोधा न्यायवादेऽक्षपादः ।
इति समय-गुरूणामेकतस्संगतानाम्
प्रतिनिधिरिव देवो राजते वादिराजः ॥
सांख्यागमाम्बुधर-धूनन-चण्ड-वायुः
बौद्धागमाम्बुनिधि-शोपण-वाडवाग्निः ।
जैनागमाम्बुनिधि-वर्द्धन-चन्द्र-रोचिः
जीयादसावजितसेन-मुनीन्द्र-मुख्यः ॥
श्रेयांस-पण्डितर् ग्गत- ।
मायादि-कषायरमळ-जिन-मत-सारर् ।
न्याय-परर् रिसत-कमळ- ।
श्री-युत-द-न-कुन्द-रुन्द्र-कीर्त्ति-पताकर् ॥
नमो जिनाय ॥

[जिन-शासनकी प्रशंसा । नन्नि-शान्तरके यशकी प्रशंसा । राजा ओड्डुग, ब्रह्म(बम्म-)देव, और चट्टल-देवीकी प्रशसा ।

हेमसेन-मुनि, शब्दानुशासनके लिये 'रूपसिद्धि' बनानेवाले दयापाल मुनीश्वर, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, श्रीविजय, इन सबका प्रशसापूर्वक उल्लेख।

वादिराजदेवकी प्रशंसा। अजितसेन मुनींद्रकी प्रशंसा। श्रेयांसपण्डित-की प्रशंसा।]

नोट.—इस शिलालेखमें समय (काल) का कोई निर्देश नहीं है और न किसी कार्य या दानका इसमें उल्लेख है। यह लेख शुद्ध प्रशंसात्मक है।

[EC, VIII Nagar,tl, n° 39.]

२१६

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९९९=१०७७ ई०]

(पश्चिम मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

[तीसरी पंक्तिमें 'स्वस्ति'से लेकर १७ वीं पंक्तिमें "कृडिर्प्प-सौभाग्यमं" तक शि० ले० न. २१४ की ११ से २१ की पंक्तितक मिलता है।]

एनिसिद वीर-देवनग्र-तनयन्॥]
अरि-विरुद-भूभुजर्कळ।
विरुदं वेरिन्दे किर्त्तु वीर-श्रीयोळ्।
नेरेददटुपमातीतम्।
धरेगेने भुजबळने शान्तरान्वय-तिळकम्॥
विरुद-रिपु-नृपर शिरमम्।
भरदिं सेण्डाडि वीर-लक्ष्मि यनोलिसल्।
नरपतिगळारो धुरदोळ्।
निरुत निजन्ते नन्नि-शान्तर-नृपति॥
उत्तर-मधुरावीश्वरम्।
उत्तम-गुणगुम्ब-वंश-तिळकं विबुध-।

पर-बल-कृतान्त । बिरद-गण्डर बदिसुव सामन्तर गण्ड । ···········गण्ड । समर-प्रचण्ड । नुडिदन्ते गण्ड । ·······पराङ्गना-पुत्र । दायिगसुरारि विनेगोपकारि । ···· 'बल्लभ दुष्टाश्व-मल्ल भीतर कोल्ल हडिय मार्क्कोळुव दळव बेङ्कोळुवं । इडगूर-देवी-लब्धवर-प्रसाद । मृगमदामोद । यत्तिल-वन-विकासचन्द्र सदानन्दभोग-नागेन्द्र होय्सळ-देव-पादाराधकम् । पर-बळ-साधकम् । नीति-चाणुक्यं एक-वाक्य वैरि-मनो-भङ्ग । अय्यन सिङ्ग दायिग-दुट्टर गण्ड । नप्पे तप्पुव । वीरदिन्दो-प्पुव । सामन्तजगदळ । मलेय······दुळिव । मलेगे ···आने । येत्तिद मोनेगे मुन्तु केट्ट काळगके पिन्तु लट्टिद ·· ···ळन् । चतुस्समयसमुद्ध-रणनप्प श्रीमन् महा-सामन्त-माचाय्यनन्वयवेन्तेन्दडे ।

वेळगेरेय माचेय-नायक- ।
ननुपम-गुण-रत्ने माकल-देविय दान- ।
क्रनमेसेये चैत्य-गेहमु- ।
ननर्त्तियोळोप्पे साव्कुमा-पट्टणदोळ् ॥

[स]रसनिगे रतिगे सीतेगे ।
सरि दोरेयेनिसिद मारेय-नायकन ।
सतिय धरेय बण्णिसुवुदु ।
निरन्तर नेगळद बम्मियक्केय पेम्पन् ॥
सरणेने कायल्क वल्लम् ।
नेरेदर्त्तियोळीय-बल्लनाश्रित-जनकम् ।
पर-बळ वैरि-भूपर ।
कोळ बल्लं 'वेळुगेरेय बल्लनिम्मडि-बल्ल ॥
रुखुमिणि वेळगिदरुन्धति ।

मिगिलेनिसिद सीतेयेम्ब सतियरोळीगळ् ।
समनेनिप सतियेनिसिद ।
सति बल्लरे वल्लयनर्द्धाङ्गि **केतवे देवियक्क** वरेयोळ् ॥

श्रीमत् सावन्त-वल्लि-देवनर्द्धाङ्गि केतवे-नायकितियरु देवियक्क-नायकितियरुमवर सुपुत्र **सुय्य-देव पेरुमाळु-देव** सावन्त-**मारय्य माचि-देव**नु सुख-सङ्कता(था)-विनोददिं राज्य गेय्युत्तिरे ॥

सादिसिद मोक्ष-लक्ष्मिय- ।
नादरदिन्दभयरत्न-दान-विनोदम् ।
मेदिनियोळोप्पे माडुव ।
सासल-बम्मय्य भव्य-तिळक वरेयोळ्
भव्य-कुल-तिळकनोप्पुव ।
अग्रज **माणिक्य चाकि-सेट्टि**यरनुजम् ।
एरकाट्टि-सेट्टियेन्ती- ।
त्रै-पुरुषर् नेगळ्द दान-चिन्तामणिगळ् ॥

तर्क-व्याकरणदोळम् । वखाणगे वल्ल सकल- ··क्तिगळिम् ।
मिक्कदनिजाण धर- । म्मकर्त्थिग नेगळ्दिर्द्द **माचि-सेट्टि**ये धन्यम् ॥
आ-माचि-सेट्टियनुजं । भाविसे श्री-जैन-धर्म-धुर-कुजदत्तङ्गार्
स्समनेनिसल्तकाइ परि । यीव-गुण काळि-सेट्टियोरेग दोरेगम् ॥
कलि-काल-कल्प-वृक्षमन् । अलसदे नी बेडु **काळि-सेट्टि**य सुतन
पल्वु पोलुं बलम । सले चीयल्तु वल्ल मान्यना-**बम्मय्यम्** ॥
आश्रित-जन-चिन्तामणि । विश्रुत-कीर्त्तीशननळ्-बोधावीसं (श)
श्री-श्रेयास-जिनेशं । वैश्रावण-सेट्टिगीगे सुख-सम्पदमम् ॥
नुडिदेरडु-नुडिववनल्लं । कडु·········इल्ल आश्रित-जनकन्-

तेडेयुडुगदीव-दान- । वतियं कर्प्पूर-सेट्टियं वेड्ड वुदा ॥
कीर्त्ति-श्री-रमणन-वोल्ल ।
मूर्त्तियोळभिनव-मनोजन नम् ।
कूर्त्तीव मसण-सेट्टिगे ।
मार्त्तण्डन मग नळ- ·· ·नृप ळवे ॥
·· · ··· ··· ···मनुजर्गम् ।
मरे-वोक्करनेय्दि काव वन्धु-जनक्कम् ।
नेरे पोल्त कल्प-तरुवम् ।
नेरे वण्णिपुदेय्दे काचि-सेट्टियम्·····॥
गणधर-भूपनन्वय-शिखामणि गोत्र-पवित्रन-द्विपम्
गुण-गण-नाथ गुणिपन · ·पेम्विन मेरु वोन्द् ।
अगणित-वाव सत्यद तवर्म्मने मानव-वन्यनेन्दोडिन्त् ।
एणे ·हट्टणदोळोप्पुव माणिक्कनन्दि-देवरोळ् ॥

स्वस्ति **स(श)क-वरिस-सायिरद कालयुक्त-संवत्सरं** प्रवर्त्तिसे **नखरजिनालय**के विट्ट भूमि-(यहाँ दानकी विगत आती है) आ-पट्टण-दल्लु नडव देव-दाय हत्तु हेरिङ्ग हाग देवरिगे सोडरेणगेगे गाण १ (हमेशाके शापात्मक वाक्य) श्री-मूळ-सघदे सिय-गणपोस्तक-गच्छ-कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमतु **नागचन्द्र-चान्द्रायण-दे**वर-शिष्य **रुणि-कच्छगोण्डि-दे**वरु मदवळिगे **वोप्पवे** मगळु **काचवे मल्लवे मादवे माचवे वाळचन्द्र-दे**वरु । सेट्टिय हल्लिय मल्लि-सेट्टि चिक्कसेट्टि तम्म · सेट्टिगे विट्ट भूमि जक्कसमुद्रदल्लि सलगे ५

* **रोदद हलोजन** मग **वीरोज** ई-शासनव होयिद ॥

* यह पंक्ति पत्थरके सिरेपर है ।

[जिनशासनकी प्रशंसा ।

जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) भूलोकमल्ल सोमेश्वर-देव-का विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था,—

त्रिभुवनमल्ल पेरेयङ्ग-होय्सळ-देव और एचल-देवीके कुलमें उत्पन्न,—स्वस्ति । जब (अपने पदों सहित) वीर-बल्लाल-देव पृथ्वीका शासन कर रहे थे,—

तत्पादपद्मोपजीवी, महा-सामन्त गण्डरादित्य और हुलिगयव्वे नायकित्तिके सामन्त बुच्चय, मातय्य, और बूचय्य उत्पन्न हुए थे ।

महा-सामन्त माचय्यकी प्रशंसा । उसकी कुछ उपाधियाँ । माचय्यकी उत्पत्तिका वर्णन । जिस समय सामन्त बल्लि-देव (माचय्य) अपनी दोनों स्त्रियों और चार लड़कों सहित शान्ति और सुखसे राज्य कर रहा था;—मासल बम्मय्य और उसके दो लड़कों माणिक्य और जाकि-सेट्टिका उल्लेख । माचि-सेट्टि और उसके लड़के कालि-सेट्टि, फिर उसके लड़के बम्मय्यका वर्णन । माणिकनन्दि-देवका उल्लेख । (उक्त मिति को) नखर जिनालय-के लिये (उक्त) भूमियाँ, दस गट्टोंका दाम, एक कोल्हू दानमें दिये गये थे ।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पोस्तक-गच्छ, तथा कोण्डकुन्दान्वयके नाग-चन्द्र-चान्द्रायणदेवके शिष्य रणिकच्छगोण्डिदेव थे, उनकी पत्नी बोप्पवे, बच्चे काचवे, मल्लवे, माद्वे, माचवे और बालचन्द्रदेव थे । कुछ सेट्टियोंने और भी कुछ भूमियाँ दीं । रोढ हलोजके पुत्र बीरोजने यह शासन लिखा ।]

[EC, XII, Tiptur tl, n° 101]

---

१ ऊपर जो १०७८ ई० काल दिया हुआ है, वह विनयादित्यके कालका है । उसके लड़के बल्लालदेवका (११०१–११०४ ई०) नहीं, और न भूलोकमल्ल (११२६–११३८ ई०) का ।

२१९

तट्टेकेरे—संस्कृत तथा कन्नड—भग्न

[शक १००१=१०७९ ई०]

[तट्टेकेरे (शिमोगा परगना)मे, रामेश्वर मन्दिरके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति सक-वर्ष १००१ नेय क्रोधन-संवत्सरद ज्येष्ठ-बहुल-चट्टि-बड्डवार शासन निन्दुदु

श्रीमत्-परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

नमो वीतरागाय स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय तिळक चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर् कल्याणद-नेलवीडिनोळ् सुखदिं राज्य गेय्युत्तमि .

जीयात् समस्त-ककुभान्तर-वर्त्ति-कीर्त्तिर्
इक्ष्वाकु-वंश-कुल-वारिधि-वर्द्धनेन्दुः ।
कैळाश-शैल-जिन-धर्म्म-सु-रक्षणार्त्थम्
भागीरथी-वि ... तो द्वितीयः ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाधीश्वरेक्ष्वाकु-वंश-कुल-गगन-गभस्तिमालिनी पराक्रमाक्रान्त-कन्याकुब्जाधीश्वर-शिरो .... ळि-मुखो पार्त्थिव-पार्त्थः । समर-केलि-धनंजयो धनञ्जयः । तस्य वल्लभा गान्धारि-देवी तत्सुतो हरिश्चन्द्रः । रोहि ..दडिग-माधवापरनामधेयः । आ-गङ्गान्वयदरसुगळेल्लवेळ्गेपाडिवद चन्द्रनन्तुदितोदितवागि पल . ज्यं गेय्युत्तिरे तदन्वयाम्बर-द्युमणियु गङ्ग-चूडामणियुमेनिसिद भुज-बळ गंग-पेर्म्माडि ...

गुणि वेळर्त्थि-जनक्के दान-मणि दोर्-गर्व्वोद्धताध्मात-निर्-
घृण-वैरिप्रकरक्के वज्र-कणि कळा-विन्यास-वारासि सत्-

प ··· ···वेष्टित-यशं विक्रान्त-तुङ्ग नृपा- ।
प्रणियाद **कलि-गंग-देवन** सुत श्री-**वर्म्म-भूपाळकम्** ॥

कन्द ॥ ·· · ··· ···र्व्वि वाहा- ।
परिवदिनरि-नृपरनलेदु सेले-योळ् वोय्दुर
व्वैरे वर्णिसलेसेदं **गं- । गर-भीमं** लोकदोळगे **भुज-वळ- ...ग** ॥

····ळियेनिसिद **पेर्म्माडि-वर्म्म-देवङ्गं** पाण्ड्य-कुळोद्भवेयेनिसिद **गङ्ग-महा-देवियर्गं** रत्नत्रयं पुट्टुवन्ते ···

वृ ॥ श्री-**मारसिंग**-नवनी-तळ-रक्ष-पाळम् ।
कामोपमं भगीरथान्वय-रत्न-दीपम् ।
भीम-प्रतापनहिता ··· ······ ·· · · ।
सामान्यनल्लनुदितोदितनेकवाक्यम् ॥

आतनण्णुमार्प्पु लोक-विख्यातमाद तदनन्तरदोळ् । स्वस्ति सत्य ·· वर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वर **कुवळाल-पुर**-वरेश्वरम् । नन्दगिरि-नाथं राज-मान्धातम् । पद्मावती-लब्ध-वर-प्र···· ·······चकि-ळामोदन् । असती-सहोदर वीर-वृकोदरम् । सम्यक्त्व-रत्नाकरं जिनपाद-शेखरम् । मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-वि ··· ···ग-गङ्गेयं शौचाञ्जनेयं । गङ्ग-कुल-कमळ-मार्त्तण्डम् दुट्टर-गण्डम् । मन्निय-गङ्गम् जयदुत्तरगं । श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरम् त्रिभुवन-मल्ल-**गङ्ग-पेर्म्माडि-देवर्गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिरम** वाय्केळिसि तदाभ्यन्तरद **मण्डलिसासिरम** श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर् इये-गेय्ये निधिनिधानमोळगागि त्रि-भागा-भ्यन्तर-सिद्धियिन्दे सुखदिं राज्यं गेय्युत्तिरे ।

कन्द ॥ श्रीगे नेलेयागि वचन- । श्रीगागरमागि निज-भुजार्जितविजय- ।

श्रीगरुहनागिकीर्त्ति- । श्रीगधिपतियागि सुखदिनिरे **गङ्ग-नृपं** ॥

वृ ॥ नुडिदुदे नन्नि माडिदुद्दे शासन इत्तुदे रामरेखु मार्- ।
प्पिडिदुदे वज्र-लेपमुरदिर्द्दुदे मृत्यु परोपकारदोळ् ।
नडेदुदे बट्टे पड् गुणमे मेय्येने धर्म्मदोळोन्दि निन्नवोल् ।
नडेव नृपेन्द्रनावनखिळावनियोळ् **कलि-गङ्ग-भूपति** ॥
स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रदोळ् सेणसुवं गंभीरने वार्द्धियोळ् ।
पुरुडिप्प कलिये सुरेन्द्र-सुतन मेच्चं महा-दानिये ।
सुर-भूजक्कोरेगट्टव चदुरने पाञ्चाळनिं मिक्कनेन्- ।
दिरदीगळ् धरे बण्णिकु रण-जय-प्रोत्तुङ्गनं **गङ्गनम्** ॥

क ॥ अमळ-चरित्रं पुरुषो- । त्तमनेनिसिद **गङ्ग**-भूपनातन तम्मम् ।
विमळ-यश **गोविन्दर**- । नमोघ-वाक्य कुमार-चूडा-रत्नम् ॥

अन्तिर्व्वरुं सुखदि राज्य गेय्युत्तिरे ।

क ॥ धर्म्मकार्म्म दयेगे त- । वर्म्मने शिष्टेष्ट-कल्प-भूज गोत्रा-
शर्म्मम् कुलोत्तमं पोले- । यम्मनेनल् नल्-गुणक्के मच्चरमुण्टे ॥

आ-गुणोत्तमनेनिसिद **पोलेयम्मङ्ग** रमणी-रत्नमेनिसिद **केळेयब्बेग** सु-पुत्रः कुळ-दीपक एनिसि **नोक्कय्यं** पुट्टि समर्थनागि **मण्डलिय केञ्च-गावुण्डन** मक्कळु **काळेयब्बेयुम्मल्लियब्बेयुम** मदुवेयागि काळब्बे-गावितिगे **गुज्जणं** पुट्टि तन्देगे पदिर्म्मडियागि **पेर्म्माडि-गावुण्ड**नेम्ब पेसरं पडेदम् । मल्लियव्वे **जिनदास**नेम्ब मगन पडेदळन्तिर्व्वर्म्मक्कळ् वेरसु नोक्कय्यं सुखदिनिर्प्पुदु गङ्ग-पेर्म्माडि-देवर् **तट्टकेरे**गे विजय गेय्दु समस्ताधिकारं मकुडे देवेन्द्रङ्गे बृहस्पतियन्तु बळीन्द्रङ्गे भार्ग्गवनेन्तन्ते समस्तराज्य-भर-निरूपितमहामात्य-पदवी-विराजमान-मानोन्नत-प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-सम्पन्न महा-महिमोत्पन्नम् । सुजन-जनाधार वान्धव-प्राकारम् । पुरुप-रत्नाकरं

पर-बळ-भीकरम् । पति-कार्य्य-भार क्रमनसहाय-विक्रमम् । उपार्ज्जना-चार्य्यम् अचलित-धैर्य्यम्···क्षार-समुद्र लञ्चकार-मुख-मुद्रं । पतिगे कळापम् जय-लक्ष्मी-निक्षेपम् । कोदण्ड-पार्थ सौजन्य-तीर्त्थम् । जिन-पादाराधकम् । कलि-युग-साधकम् । गङ्गन हनुमन्तम् । जय-लक्ष्मी-कान्तम् । श्रीमन्महाप्रधानम् । पिरिय-पेर्ग्गडे नोक्कय्यम् ।

वृ ॥ पार्त्थिवर निराकरिप दान-गुणोक्तियिनर्त्थिगर्त्थमम् ।
प्रार्त्थिसदीव-कारणदे पेर्ग्गडे नोक्कणनी-परोपका-।
रार्त्थमिद शरीरमेनिपोन्दु पुराण-वरोक्तियिन्दम-।
प्रार्त्थित-दानदिन्दे नेगळ्वुन्नति सन्दुदिळा-तळाग्रदोळ् ॥
मार्ग्गदोळोळिपनोळ् गुणदोळणिमनोळार्प्पिनोळादुदोन्दु पेम्-।
पार्ग्गमसाध्यमिन्तिरिव-काव-गुणङ्गळे साजमेन्दु केळ्-।
दर्ग्गेदेगोण्डु जेङ्करिसे राज-गुणक्कळवट्ट नोक्कणम् ।
पेर्ग्गडेयेम्बुदे धुरके मार्ग्गडेयं पतिगेक-साधनम् ॥

क ॥ पेर्ग्गडेतनमं वल्लर् । खळ्ळामनणमरियरुळिदमाल्पर् नोक्क ।
पेर्ग्गडे-गगन मनेयोळ् । मार्ग्गडे सगरद मोनेयोळेने मेच्चदरार् ॥
किरिदरोळळवडद मनं । नेरे पिरिदक्कासे-गेय्व बुद्धियिनातम् ।
तेरे-विडिदु जोन्नढिन्दन । पेरेयन्ददे नोक्कनुत्तरोत्तरमाद ॥
अगळिसिद केरेगे माडिसि ।द गळ्देगेत्तिसिद देवता-गृहकरवण्-।
टगेगन्न-दानदेडेगी-।जगदोळ् पवणिल्लदेम् कृतार्त्थनो नोक्कम् ॥
सरनिधि वळसिदुदेम्बन्- । तिरलित्ता-तट्टकेरेय पेर्ग्गेरे सुत्तल् ।
पलिय नडुवमरसैळद । दोरेयेनिसिद तेरदे वसदि सोगयिसि तोर्क्कुम् ॥

२२४

मद्लापुर—कन्नड-भग्न

[काल लुप्त,—पर सभवतः लगभग १०८० ई०]

[मद्लापुर (मल्लिपट्टण परगना)में, गोणि वृक्षके नीचे एक पाषाणपर]

(सामने) स्वस्ति श्रीमनु‥ 'र्य-नन्नरस‥‥ ‥अरकेरेय बसदि माडितु इद्के‥‥ल्बदु-गद्दे ‥‥मण्णु अय्-गण्डुग पिरिय‥‥दोळ्य्-गण्डुग-मण्णु बिसवूर्-मण्णु अय्-गण्डुग कोटेय मण्णु मू-गण्डुग इनितु बसदिगे सल्व-भूमि अदा-पदके अद्दरादित्य अधिरत-पाण्ड्यय बेळ्तु ‥‥‥‥‥‥‥‥‥‥‥‥‥‥‥अरसर-कालदोळ् श्रीम‥‥मन्ने-ग‥‥सित्रय्य‥‥ गुड्डेय‥‥ ‥‥‥मण्डळ कलाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-भट्टारर् शिष्यर्‥‥ अमळचन्द्र-भट्टारकर्गे ‥‥बसदिय माडि ‥‥ ‥ सल्सिद्‥‥‥‥‥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक) ।

सेनबोव दे ‥‥ ‥‥‥ ‥

[‥‥‥नन्नरसने अरकेरेकी बसदि बनाई । (उक्त) भूमिका दान उसके लिये किया । जो कोई इसे नष्ट करेगा, वह अद्दरादित्यके क्रोधका पात्र होगा ।

‥‥अरसके समयमें, ‥ ‥ रमण्डल कलाचन्द्र-सिद्धान्तदेव-भट्टारके शिष्य अमलचन्द्र-भट्टारकने इस बसदिको बनवाया । हमेशाका अन्तिम श्लोक । सेनबोव दे‥‥ ‥]

[EC, V, Arkalgud tl n° 102]

२२५

खजुराहो—संस्कृत

[सं० ११४२=१०८५ ई०]

[इस प्रतिमा-लेखके लेखका पता नहीं है, क्योंकि यह लेख एक खण्डित प्रतिमापरसे ए. कनिंघमने लिया है, जो कि प्रतिष्ठाकाल और प्रतिमाके नामके सिवा और कुछ नहीं बताता । इस प्रतिमाकी प्रतिष्ठा या स्थापना

श्रेष्ठी श्री वीवतसाह और उसकी पत्नी सेठानी पद्मावतीने की थी। इस लेखके ऊपरसे ए. कनिंघमने फलितार्थ यह निकाला है कि प्राचीन बौद्ध मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दिके जैनोद्वारा अपने काममें लाया गया था। संभव है बौद्धमतकी हीनताके समय खजुराहामें जैनोंकी संख्या अधिक होनेसे उन्होने उस प्राचीन बौद्ध मन्दिरको अपना बना लिया हो, या हो सकता है कि कनिंघमका यह अनुमान ही गलत हो कि गन्यरई-भग्नावशेष जैनोंका न होकर बौद्धोंका था। अस्तु, जो कुछ हो। इन खण्डित दि० जैन मूर्तियोंसे उस समय खजुराहोमें जैनधर्मकी प्रधानता द्योतित होती है।]

[A Cunningham, Reports, II, p. 431, a]

२२८

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १००९=१०८७ ई०]

(उत्तरमुख)

स्वस्ति-श्री-लसदुग्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः
दृप्यद्-वैरि-निकाय-दर्प्प-दळन-प्रादुर्भवद्-विक्रमः ।
सम्पूर्णेन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिप्त-दिग्-भित्तिकः
श्रीमान् विक्रमशान्तरो विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः ॥
ओदेदु तटत्तटेम्ब पद-नाटनेयिन्दे दिशा-गजादिगळ् ।
मदमुडुगिळ्दुवक्षि पुगुविर्प्पेडे गाणने नागराजनुम् ।
कदळद गम्पदिन्दमेळे कम्पिसे कूडे कलङ्के सागरम् ।
विदिर्दलगिन्दे तारकि कळल् तरलोड्डुगनाईडोडुगुम् ॥
अदिरदे वर्प्प चप्परिप कप्परि पार्दलगोत्ति शात्रमम् ।
विदिर्दु मरल् मरल्वेनुते कुत्तुव कुत्तिढोडान्तु कड्डिदा-।
पददोळे सुत्ति मुत्तिदवोलेरने तोरुव गेण विन्नणक् ।
ओदवुव विन्नण नेगळलोड्डुग नीनरसङ्क-गाळनै ॥

परिदुदराग्नियं मरेदु तिन्द पेणङ्गळिनादजीर्ण्णदिम् ।
मरुळ बळाळि वैद्य-मरुळं वेसगोण्डडे दन्ति मद्देनल् ।
करियने नुङ्गि सूडुकोळे वैद्य-मरुळ् नगे वीर-लक्ष्मि नो-।
डरि-हर निन्निनार्पितदेने **विक्रम-शान्तरनादनोड्डुगम्** ॥

अन्तेनिसिद **विक्रम-शान्तर-देवर् सस(श)क-वर्ष १००९ नेय प्रभव-संवत्सरद शुद्ध-पाडिवदन्दु** पञ्च-वसदिय पूजा-विधान-जीर्ण्णोद्धरणकमल्लिर्प्प ऋपि-समुदायक्काहार-दानार्त्थमुमागि ॥

सरसति निनगिनितु कला-।
परिणति नेगर्द्दजितसेन-पण्डितरिन्दम् ।
दोरेवेत्तु देवियादी-।
पिरियतन निन्नदल्तिदवर महत्त्वम् ॥

एनिसिद **परवादीभसिंहा**पर-नामधेय-श्रीमत्-**अजितसेन-पण्डित-देवर** काल कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमा-सम्बन्धद समुदाय मुख्यमागे कोट्ट ग्रामङ्गळ् (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव और श्लोक आते हैं) **द्रमिळ-गणो** लसतितरा निरुपम-धी-गुण-महितैः ॥
श्रीमत्-**सेनवोवं शोभनय्यं दिगम्बर-दासि** बरेदम् ॥

[स्वस्ति । वीर-देवके पुत्र विक्रम शान्तरकी प्रशसा । उसका मूल नाम ओड्डुग था । उसकी प्रशसाके श्लोक । ओड्डुग 'विक्रम-शान्तर' हो गया ।

विक्रम-शान्तर-देवने (उक्त मितिको) पञ्चवसदिमे पूजाके लिये, मरम्मत तथा ऋपियोके आहारके लिये, वादीभसिंह इस द्वितीय नामसे प्रसिद्ध अजितसेन-पण्डित-देवके पैरोके प्रक्षालनपूर्वक (उक्त) गाँवोका दान, संपूर्ण करोंसे मुक्ति दिलाकर, किया । वे ही अन्तिम श्लोक ।

द्रमिळ-गणकी अत्यन्त शोभा है । सेनबोव शोभनय्य दिगम्बर-दासिने इसे लिखा है ।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 40 (Part II)]

२२७

कोणूर (जिला बेलगांव)—कन्नड

[विक्रमादित्य चालुक्यका १२ वा वर्ष=१०८७ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥

श्रीनारिप्रिये(य) कण्डु तन्न नयनद्वन्द्वाळकव्रातमं जैनाङ्घ्रिद्व(द्वि)नखाळियोळमधुकरव्रात सरोजाळियं तानेतिर्ल्लेगे तन्दुदेन्दु बगेदळ्मुग्धत्वदिन्दा जिन भूनाथेंगधरेश मोक्षुनिधिगंगी गायुम श्रीयुम ॥

स्वस्ति श्री त्रैभुवनाश्रय पृथुधराश्रीवल्लभ शूकरन्यस्तेद्ध्वजलाञ्छनं नुतमहाराजाधिराजं यशोविस्तार परमेश्वराकपरम भट्टारक गात्रवोन्मस्तन्यस्तपदाब्जनूर्जितयशं चालुक्यकण्ठीरव ॥

सत्याश्रय-कुलतिळक सन्य युधिष्ठिरननेकविद्यानिपुण प्रत्यक्ष**विक्रमादित्या**ख्यतयशोविळासि **त्रिभुवनमल्लं** ॥

तद्राज्यमुत्तरोत्तरवद्रिप्रभुचन्द्रसूर्य्यरुळ्ळन्नेवर भद्रं सल्लुत्तमिरे रिपुविद्रावणतत्प्रियात्मजं **जयकर्ण्ण** ॥

जयकर्ण्णावनिपाळभासुरलसल्लाटिक श्रीवधूनयनाळंकृतरूपनूर्जितयश.श्रीकामिनीवल्लभ जयकान्तासुजदण्डनाहवगदादण्ड गुणोन्मण्डित नयदिं कूडिधराधिपत्यदोळिरल् **चामण्ड**दडाधिप ॥

स्वस्ति समधिगतपचमहास्तुत्यविराजमानशब्द महाश्रीविस्तार पृथुविमळगुणस्तोमं मण्डळेश्वर **सेन**नृप ॥

वदन निर्म्मळवाग्वधूसदनवात्मीयोरुवक्ष लसत्सदळंकाररमाविळासविळसल्लक्ष स्वदोर्द्दण्डवुन्मदवीरारिशिर.प्रकन्दुकहतिक्रीडोद्धदण्ड निजाभ्युदय सर्वजनानुरागद्धुदय श्री**सेन**भूपाळन ॥

५३ दरम् । संभूयेदमकारयन्गुरुशिरःसंचारिकेत्वंव(ब)रप्रांतेनो-
च्छलतेव वायुविहतेर्धामादिश[त्पश्य-]

५४ ताम् ॥ ० ॥ अथैतस्य जिनेश्वरमंदिरस्य निष्पादनपूंजन-
संस्काराय कालान्तरस्फुटितत्रुटितप्रतीका-

५५ रार्थं च महाराजाधिराजश्री**विक्रमसिंहः** स्वपुण्यरासे(शे)
रप्रतिहतप्रसरं परमोपचय चेतसि [नि] धाय

५६ गोणीं प्रति विंशोपक गोधूमगोणीचतुष्टयवापयोग्यक्षेत्र
च **महा[चक्र]**ग्रामभूमौ **रजकद्रहद्व-**

५७ र्व्वंदिग्भागवाटिका वापीसमन्विता । प्रदीपमुनिजनशरीरा-
भ्यजनार्थं करघटिकाद्वय च दत्तवान् । तच्चाच-

५८ द्रार्कं महाराजाधिराजश्री**विक्रमसिंहो**परोधेन । "व (ब) हु-
भिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य य-

५९ स्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल"मिति स्मृतिवचना-
न्निजमपि श्रेयः प्रयोजन मन्यमानैः सकलैरपि

६० भाविभिर्भूमिपालैः प्रतिपालनीयमिति ॥ ० ॥ लिलेखो-
दयराजो या प्रस(श)स्तिं शुद्धधीरिमाम् । उत्कीर्ण्णवा-

६१ न् शिलाकूटस्तील्हणस्ता सदक्षराम् ॥ संवत् ११४५
भाद्रपदसुदि ३ सोमदिने ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥

[यह शिलालेख सन् १८६६ में कप्तान डब्ल्यू. आर. मेलविलीको दुबकुण्डके एक मन्दिरके भग्नावशेषमें मिला था। इस लेखमें कुल ६१ पंक्तियाँ हैं। ५४-६१ की पंक्तियोंको छोड़कर शेष लेख श्लोकोंमें है। इसको प्रशस्ति (पंक्तियाँ ४७ और ६०) कहा है। इसको विजयकीर्ति (पं. ४६) ने बनाया, उदयराजने (पं. ६०) लिखा और उत्कीर्ण करनेवाला

शिल्पी तिल्हण (पं. ६१) था। इस सारे लेखमें 'ब' 'व' अक्षरसे लिखा गया है।

इस लेखका उद्देश्य एक जैनमन्दिरकी—जिसके कि पास यह शिलालेख मिला है-स्थापनाका उल्लेख करना है। इसकी स्थापना कुछ निजी आदमियोंने की थी और इस मन्दिरको कुछ दान महाराजाधिराज विक्रमसिंह (पं. ५४-५८) ने दिया था। इस शिलालेखके लिखनेके समय, विक्रम स. ११४५ में, वे दुबकुण्डके आसपासके प्रदेशपर शासन करते थे। इस लेखके स्पष्टतः दो विभाग हो जाते है पहले विभागमे (पंक्तियाँ १०-३२) युवराज विक्रमसिंह और उनके पूर्वजोका वर्णन है; दूसरे में (पक्तियाँ ३२-५१) मन्दिरके सस्थापको (या प्रतिष्ठापकों) तथा उनसे सम्बद्ध कुछ मुनियोका वर्णन है। प्रारम्भके छह श्लोकों (पं १-१०) मे कवि ऋषभस्वामी, शान्तिनाथ, चन्द्रप्रभ और महावीर इन तीर्थङ्करोकी, तथा गणधर गौतम, श्रुतदेवताकी जो पकजवासिनीके नामसे जगत्मे प्रसिद्ध है, स्तुति करते हैं।

युवराज विक्रमसिंहके वर्णन (प. १०-३२) मे ऐतिहासिक तथ्य इस प्रकार है.—

कच्छपघात (कछवाहा) वशमें-

१ पांडु श्रीयुवराज (?) हुए। उनके बाद उनके लडके—

२ अर्जुन हुए, जिन्होने विद्याधरदेवके कार्यसे, युद्धमें राज्यपालको मारा। उनके पुत्र—

३ अभिमन्यु हुए, जिनके पराक्रमकी प्रशंसा राजा भोजने की थी। उनके पुत्र—

४ विजयपाल हुए, और फिर उनके पुत्र—

५ विक्रमसिंह हुए, जिनके कालकी तिथि यह शिलालेख संवत् ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमवार बतलाता है।

दूसरे विभागके लेखका सार यह है कि विक्रमसिंहके नगरका नाम चदोभा था। यह चदोभा वर्तमान दुबकुण्ड ही होना चाहिये और उस समय यह एक बड़ा भारी व्यापारका केन्द्र रहा होगा। ३२-३९ की पंक्तियोंके श्लोकोमे उस समयके दो प्रसिद्ध जैन व्यापारियो का नाम—ऋषि और दाहड

दिया हुआ है। विक्रमसिंहने उनको 'श्रेष्ठि' की पदवी दी थी और इन्हींमें से एक—साधु दाहड़-मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे हैं। ऋषि और दाहड दोनों ही जयदेव और उसकी पत्नी यशोमतीके पुत्र, तथा श्रेष्ठी जासूकके नाती थे। जासूक जायसवाल वंशके थे जो 'जायस' (एक शहर) से निकला था।

३९-४५ की पक्तियोंमें कुछ जैन मुनियोंका वर्णन है। उनमेंसे अन्तिम विजयकीर्ति थे। उन्होंने न केवल इस शिलालेखका लेख ही तैयार किया था, वल्कि अपने धार्मिक उपदेशसे लोगोंको इस मन्दिरके निर्माणके लिये भी, जिसका कि यह शिलालेख है, प्रेरणा की थी। उल्लेखित मुनियोंमेंसे सर्वप्रथम गुरु देवसेन हैं। ये लाट-वागट गणके तिलक थे। उनके शिष्य कुलभूषण, उनके शिष्य दुर्लभसेन सूरि हुए। उनके बाद गुरु शान्तिषेण हुए, जिन्होंने राजा भोजदेवकी सभामें पंडित शिरोरत्न अंबरसेन आदिके समक्ष सेकड़ों वादियोंको हराया था। उनके शिष्य विजयकीर्ति थे।

मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे पंक्तियाँ ४८-५१ उनका नामोल्लेख इस प्रकार करती हैं.—साधु दाहड़, कूकेक, सूर्पट, देवधर, महीचन्द्र, और लक्ष्मण। इनके अलावा दूसरोंने भी जिनका नाम यहाँ नहीं दिया गया है, इस मन्दिरकी स्थापनामें मदद दी थी।

गद्यभागमें (५४ वीं पक्तिसे शुरु होनेवाला) कथन है कि महाराजाधिराज विक्रमसिंहने मन्दिर तथा इसकी मरम्मतके लिये तथा पूजाके प्रबन्धके लिये प्रत्येक गोणी (अनाजकी ?) पर एक 'विंशोपक' कर लगा दिया था तथा महाचक्र गाँवमें कुछ जमीन भी दी थी तथा रजकद्रहमें कुँआसहित वगीचा भी दिया था। दिए जलानेके लिये तथा मुनिजनोंके शरीरमें लगानेके लिये उन्होंने कितने ही परिमाणमें (ठीक ठीक परिमाण जाना नहीं जा सका, शिलालेखके शब्द है 'करवटिकाद्वय') तेल भी दिया।

अन्तमें आगामी राजाओंको भी उपर्युक्त दानको चालू रखनेकी प्रार्थना करनेके बाद, ६०-६१ पक्तियोंमें इस प्रशस्तिके लिखनेवाले और इसको खोदनेवाले दोनोंका नाम दिया है। लिखी जानेकी तिथिका उल्लेख करके यह शिलालेख समाप्त हो जाता है।]

[F Kielhorn, EI, II, n° XVIII (p. 237-240).]

२२९

श्रवणबेलगोला—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

२३०

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[वर्ष शुक्ल. १०९० ई० ? (लू० राइस) ।]

[कणवेमें, कल्लु-बस्तिमें एक समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

साहस······· ·······महिम जिन-शत्रु वि······ 'होय्सळ'········ निळेयं सम्यक्त्व-चूडामणियेने नेगळ्दं भण्डारि-चन्दिमय्यन प्रियेयुं जिन-पादाम्बुजम स्मरियिसुत दिवकेय्-दिदरेन्दोडे कृतार्थरिलागु विश्वावनि-योळु ॥

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गसु भव्य-रत्नाकरन सरस्वती-देवी-कर्ण्ण-कुण्डलाभरणनप्प श्रीमन्महा-प्रधान होय्सळ-देवन भण्डारि चन्दिमय्यन हेण्डति बोप्पब्बेयु शुक्ल-संव-त्सरद पौष्य-मासदल्लु सन्यासन गेय्दु समाधि-सहित सोमवारदेरडनेय-जावदल्लु स्वर्ग-प्राप्तिनरादरु

[जिनशासनकी प्रशंसा । प्रधान मंत्री होय्सळ-देवके खजाञ्ची चन्दिम-य्यकी पत्नी बोप्पब्बेने (उक्त मितिको), संन्यसन करते हुए, समाधिपूर्वक 'स्वर्ग' प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl, n° 198.]

२३१

बाळहोन्नूर—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका,-पर सभवत लगभग १०९० ई० का]

[बाळहोन्नूरसे, दूसरी चट्टानपर]

श्रीमद्वादीभसिंहस्याजितसेन-महा-मुनेः ।
अग्रशिष्येण **मारेण** कृता सेयं निशीधिका ॥
अगणितगुणगणनिलयो जैनागम-वार्धि-वर्द्धन-शशाङ्कः ।
....त्यूर्जित-मण्डलि ......र-गणे नत-गणाधीशः ॥

[वादीभसिंह अजितसेन महामुनिका यह स्मारक उनके प्रधान शिष्य मारके द्वारा बनवाया गया था । ये गणाधीश अगणित गुणोंके निलय (स्थान) थे, जैनागमरूपी समुद्रके पानीको बढानेके लिये चन्द्रमा थे ।]

[EC VI, Koppa tl, n° 3]

२३२

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड

[वर्ष आङ्गिरस, १०९२ ई० ? (लू० राइस) ।]

[कणवेमें, एक दूसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

श्री-मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छ लोकियब्बे वसदिय प्र ...**तळताळ वसदि**

वळ' 'रं वळल्चुव लतान्त-सङ्गि ...टि सञ्- ।
चळिसि पळञ्चि तू ...रन नडिसि मेय्यगेयाद-दूसरिं ।
कळयदे निन्द कय्दुनद कगिद विट्टिनमरकेवेत्त क- ।
त्तळमेनिसित्तु पुत्तडर्द मेय्य मल **मलधारि-देवर** ॥

स्वस्ति श्रीमदाङ्गिरस-संवत्सर-पौष्य-मास-बहुळ-सप्तमियादित्यवारदन्दु अवर शिष्यरु शुभचन्द्र-देवर समाधिविधियिं स्वर्गस्थरादरु ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । श्री मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, देशिय गण और पुस्तक-गच्छ,—लोकियव्वे वसदिकी तलताल वसदिके मलधारि-देव थे, कठोर तपस्यासे जिनका सारा शरीर धूल-धूसरित हो रहा था, लोहेके समान बहुत समयतक जिसपर जङ्ग-सी चढी हुई थी, और वल्मीक (चींटियोंकी खोदी हुई मिट्टीका ढेर) के समान हो गया था। (उक्त मितिको), उनके शिष्य शुभचन्द्र-देवने समाधिके बलसे स्वर्ग प्राप्त किया।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl, n° 199]

२३३

हळे-बेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०१५=१०९३ ई०]

(जैन शिलालेखसंग्रह, प्र० भाग)

२३४

सोमवार—कन्नड-भग्न

[शक १०१७=१०९५ ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगने) में, बसव मन्दिरकी एक सोटपर]

स्वस्ति····भद्रमस्तु जिनशासनाय स्वस्ति शक-वर्ष १०१७ नेय युवसंवत्सरद भाद्रपद-मासद सुद्ध-सप्तमी-गुरुवारदन्दु मकर-लग्नं गुरूदयदल् श्रीमत्-सुराष्ट-गणद कल्नेलेय रामचन्द्र-देवर शिष्यन्तियरप्प अरसव्वे-गन्तियर् (यहाँ खत्म हो जाता है)।

[(उक्त मिति को) सुराष्ट-गणके कल्नेलेके रामचन्द्र-देवकी शिष्या अरसव्वे-गन्ति ·····]

[EC, V, Arkalgud tl, n° 96]

२३५

दुवकुण्ड—स्तम्भपर-संस्कृत

[संवत् ११५२=१०९५ ई०]

संवत् ११५२—वैशाखसुदिपञ्चम्यां ॥

श्रीकाष्ठासंघमहाचार्यवर्यश्रीदेव-

सेनपादुकायुगलम् ।

[स्पष्ट है]

[A Cunningham, Reports, XX, p 102]

२३६

सोमवार—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका,—लेकिन सभवत. लगभग १०९५ ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना)में, वसवण्ण मन्दिरके मुख-मण्डपके सामनेके पाषाणपर]

पतिय सन्ततिय पति पेळद-मार्ग्गदिम् ।

पति-हितनागि निस्तरिसि तत्पति माडिप जैनगेहमुन्- ।

नति-वेरसिर्....यनन्तदर्क्कहर्- ।

प्पति-शशियुळ्ळिन निरिसि जक्कनिदेम् सुकृतार्थनादनो ॥

दुद्दमल्ल-देवन वाणसि जक्कय्यं माडिसिदम् ॥

[अपने स्वामीके कुटुम्बमेंसे, उसी पद्धतिसे जिसे उसके स्वामीने वतलाया था, स्वामीके प्रति रहे हुए प्रेमसे उसने उसी मन्दिरको खड़ा किया जिसे उसका स्वामी वना रहा था। उसे आशा थी कि यह मन्दिर तब तक खड़ा रहेगा जब तक आकाशमें सूर्य और चन्द्र चमकते हैं। जक्क कितना भाग्यशाली था? दुद्दमल्ल-देवके रसोइये जक्कय्यने इसे वनवाया।]

[EC, V, Arkalgud tl, n° 97]

२३७

सौंदत्ति – संस्कृत तथा कन्नड

[विक्रमादित्य चालुक्यका २१ वाँ वर्ष=१०९६ ई०]

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय (यं) श्रीपृथ्वीवल्लभ (भं) महाराजाधिराज(ज) परमेश्वर (रं) परमभट्टारक । **सत्याश्रय**कुळतिलक (क) **चाळुक्याभरणं** श्री[म]**त्रिभुवनमल्लदेव**विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारवरं सलुत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वर । **लत्तलूर्पुर**वराधीश्वर त्रिवळीतूर्यनिर्घोषणं । रट्टकुळभूषण । सिन्धुरलाञ्छन । विवेकविरिञ्चन । सुवर्णगरुडध्वजं सहजमकरद्व(ध्व)ज नामादिसमस्तप्रस(श)स्तिसहित श्रीमन्महामण्डळेश्वरः **कार्तवीर्य**नृपः ।

रट्टवंशोद्भवः ख्यातो **नन्न**भूपस्य नन्दन. । श्रीमदाहवमल्लस्य पादपद्मोपसेवकः ॥ सहस्रबाहुरिव ख्यातः **कार्त्तवीर्यः** प्रतापवान् । **कुहुण्डि**देशया(स्या)धाटं सादि(धि)त तेन भूभुजा ॥ राजन्वत्यः प्रजा जाता **दावरि**नाम भूभुजा । तस्यानुज. प्रतापी स्यात् **कन्नकैरो** महीपति. ॥ तस्याग्रनन्दनो भाति **वाद्या** विद्याविदो भुवि । **एरगा**ख्यमहीप स्यादनुजोस्याङ्कभूपतिः ॥ **वाद्या** विद्याधरस्याग्रसूनुः **श्रीसेन**भूपतिस्तस्याग्रमहिषी जाता **मैळलादेवि**रूर्जिता ॥ श्री**काळसेन**भूपस्य तस्यासीदग्रनन्दनः [।] **कन्नकैर**नृपः ख्यातो नृत्यगीतादिकोविदः ॥ तस्य गुरवः ॥ त्रैविद्यो राजते भूमौ सर्वशास्त्रविशारदः । **कनकप्र(भ)सिद्धान्तदेवो** गणधरोपमः ॥ कनकप्रभदेवेभ्यः सक्रान्तो (न्तौ) सत्तियौ तदा । निवर्त्तन द्वादश (श) दत्तं नमस्य (स्य) नन्नभूभुजा ॥ तस्यानुजः ॥ गम्भीरेण समुद्रोसि

[illegible] नमः । श्रीकीर्त्तिवीर्य [illegible] (ने) [illegible] ॥
[illegible] ॥ ३० ॥ श्री [illegible] [illegible]
[illegible] (?) ॥ [illegible] श्रीसेन-
[illegible] लिखितं ॥

स्वस्ति ॥ सुवर्णवर्ष [illegible] । श्री [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] (?) [illegible] । [illegible] ।
[illegible] । [illegible] (सं) सेन [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible] धातुसंवत्सरे
[illegible] (?) । श्री [illegible] माहि-
देवेन [illegible] (?),
[illegible] ॥ [illegible] श्री [illegible]
(?, ?) ॥ [illegible] । [illegible] (?) [illegible] (?)
[illegible] । [illegible] सुवर्णवर्ष [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ।
[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible] (?)
[illegible] । [illegible]
[illegible] …… [illegible]
(?) [illegible] (?) [illegible] ॥……
…… ॥ [illegible]

[तु] कुळद्विजपुंगवगोकुळमनळि दरिन्तिदनळिदर् ॥ वीरपेर्मादिदेवस्य जिनालय ॥

[इस लेखमे चालुक्य राजा पेर्माडिदेवके द्वारा शकवर्ष १०१९ मे †जो धातु 'संवत्सर' था, १२ 'निवर्तन' भूमिके दानका उल्लेख है । तत्पश्चात् कन्नकेरके दानका उल्लेख है । यह दान उक्त दानसे पहलेका होना चाहिये । यह कन्नकेर, प्रथम या द्वितीय है, यह इस लेखपरसे कुछ पता नहीं चलता । अन्तमें यह लेख अपने साधारण तरीकेसे भूमिदान करनेके तथा पूर्ववर्ती राजाओंके दानोंकी रक्षा करनेके फायदोंके बतानेवाल श्लोकोसे समाप्त होता है ।]

[JB, X, p 170–171 a, p. 194–198, t, p 199, tr, ins n° 2, (II part)]

२३८

हुम्मच—कन्नड-भग्न

[काल लुप्त, पर संभवत. १०९८ ई० ? (लुई राइस)]

[पंचवस्तीके प्राङ्गणसे, दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री-मूल-संघद ····पुस्तकगच्छदोळे प्रसिद्धि-वडेद श्री ········भट्टारक-शिष्यरप्प लक्ष्मीसेन-भट्टारक-देवरु चिरकाल तप गेय्दु····· ····॥ विदित-बहुधान्य ·······कार्त्तिकशुक्ल तृतीयार्कज-वार-सूर्य्योदय····लक्ष्मीसेन-मुनिपरमरास्पदम ॥········ ······· · देवसेन-भट्टारक ············चारित्र-गुणोल्लसित-श्री-पार्श्वसेन-भट्टारक···एने जस बडे···॥

विदित-बहुधान्य-नामा ।
ब्ददोळोप्पुव-चैत्र-बहुळ-नवमी-कुजवा-।

---

† मूल लेखके अनुसार शक काल १०१८ बीतनेके बाद जो कि चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीयके राज्य प्रारम्भ होनेका २१ वॉ वर्ष था ।

रद्दोळोड्डि समाधियि ···।
य्दिदरनुपम-पार्श्वसेन-मुनिपर् दिव्यमम् ॥

[स्वस्ति। श्री-मूलसंघ और पुस्तक-गच्छमें प्रसिद्ध ·····भट्टारकके शिष्य लक्ष्मीसेन-भट्टारक-देवने बहुत समयतक तप किया। (उक्त मितिको), सूर्योदयके समय लक्ष्मीसेन मुनिने अमरपद प्राप्त किया।

पार्श्वसेन-भट्टारककी प्रशंसा, जिन्होंने उसी वर्षमें, समाधि-विधिके द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 42]

२३९

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़-भग्न

[शक १०२१=१०९९ ई०]

[जिन-बस्तिमें, अन्दरके दरवाजेके दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥

वननिधि-परिवृत-सीमा-वनियोळ् सले नेगळ्द **कोण्डकुन्दान्वयदोळ्**।
पनसोगे-निवासि-महा-मुनि-वरश्री-कर-[वि]मुक्तरागम-युक्तर् ॥

यमि-नाथाग्रणि **पूर्णचन्द्र-मुनिपर्त्त** ··· ···**दामणंदि-मुनीन्द्रर्** तदपत्यरन्तवर शिष्य-**श्रीधराचार्य्यर्** आयमि-शिष्यर् **म्मलधारि-देव**-रवर्गादर् **चन्द्रकीर्त्तिव्रति**-प्रमुखर्त्तत्तनुजातराततयशर् स्सिद्धान्त-चक्रेश्वरर् ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौन · ···परायणरप्प श्री-मूल-सङ्घद देशि-गणद पुस्तक-गच्छद श्री-**दिवाकरनन्दि-सिद्धान्ति-देवर** ···**न्तिब्बेंसवबे-गन्तियर्** सक-वरिष सायिरद इ १०२१ नेय

प्रमादि-संवत्सरद फाल्गुण-सुद्ध-पञ्चमी-आदिवारदन्दु…………य पाळि मूळपरिग्रहं चरियल्लु ३० गद्याण…………चन…………

[जिनशासनकी प्रशंसा। कोण्डकुन्दान्वयमें पनसोगे-निवासी मुनियोंमें प्रधान पूर्णचन्द्र मुनि थे। उनके शिष्य दामनन्दि-मुनीन्द्र थे, उनके शिष्य श्रीधराचार्य्य थे; उनके शिष्य मलधारी-देव थे; उनके पुत्र चन्द्रकीर्त्ति-व्रती थे।

मूलसंघ, देशिगण तथा पुस्तकगच्छकी, दिवाकरनन्दि सिद्धान्त-देवकी शिष्या, बेसवचे-गन्तिने……… … के करनेके लिये ३० गद्याण दिये।]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 24]

२४०

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवत लगभग ११०० ई०]

[चिक्क-हनसोगेमें, शान्तीश्वर बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद होत्तगे-गच्छद समुदाय मुख्यते **राम-स्वामि** विट्टीपरमेश्वर-दत्तिगे ॥

उपवास-प्रोन्नत-विधि- । युपवासानेक-वार-चान्द्रायणदिन्-
न्दर्प-मद-**जयकीर्ति-मुनि-** । प्रवरं श्री-पुस्तकान्वयाम्बुजसूर्य्य ।

दशरथसुतनु लक्ष्मणाग्रजनु सीता-वल्लभनु इक्ष्वाकु-कुलजनुमप्प **राम**न प्रतिष्ठे देसिग-गणद वसदि इप्पि ६४

रामर्म्माडि गङ्गर्प्पडि सलिसे **वन्द-तीर्त्थद**-वसदिय यादवरप्प चङ्गाल्वरोळगे **श्री-राजेन्द्र-चोळ-नन्नि-चङ्गाल्व-देवर्** पुनर्न्नवं माडिदरी-**पनसोगे**यल् **देसिग**-गणद **होत्तगे**-गच्छद वसदि ४ के **तले-कावेरि**य वसदिगळ्गु तत्समुदायमुख्य

[रामस्वामीके छोडे हुए (?) परमेश्वर-प्रदत्त (?) दानका प्रधान मूलसङ्घके देशी गणके होत्तगे गच्छका समुदाय है। पुस्तकान्वयरूपी कमलके लिये

जयकीर्त्ति-मुनि सूर्यके समान थे। ये अनेक उपवास और 'चान्द्रायण' व्रत करनेमें विख्यात थे।

यहाँ दशरथके पुत्र, लक्ष्मणके बड़े भाई, सीताके पति, इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न रामके द्वारा प्रतिष्ठित देसिग-गणकी ६४ वसदियाँ हैं।

वन्द-तीर्थकी वसदिको जिसे पहले रामने बनवाया था और जिसको गङ्गोंने दान किया था, चङ्गाळ्ववंशी यादवीय राजेन्द्रचोळ-नन्नि-चङ्गाळ्व-देवने फिरसे बनवाया।

इस पनसोगेमें देसिग-गणके होत्तगे गच्छकी ४ वसदियों, और तल-कावेरीकी वसदियोंका वही समुदाय मालिक है।]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 26]

२४१

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवत लगभग ११०० ई० ?]

[चिक्क-हनसोगेमें, नेमीश्वर बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमद्-देसिग-गण पुस्तक-गच्छद श्रीधर-देवर शिष्यरेळाचार्य्य-रवर शिष्यर्दामनन्दि-भट्टारकरवर साधर्म्मिगळ् चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक-रवर शिष्यर्दिवाकरणन्दि-सिद्धान्तदेवरवर शिष्यर्चान्द्रायणी-देवापर-नामधेयरप्प श्रीमज्जयकीर्त्ति-देवरादियागा-समुदाय-मुख्यमी-वसदिगळे-छत्तर्कमासमुदायद वशमल्लदवरना-समुदायमिर्द्दु निर्दोडिसि पोरमडिसि कळेवुदु। रामस्वामि विट्ट परमेश्वर-दत्तिगे तोळ्ळडियिन्द बडगण तुम्बिन नीर् वरिद नेलन विक्रमादित्यं विट्टं १८ गेण कोलिन्द १५०० कम्म मोदलेरियल्ल वेजिरिगट्टद केळगे आ-कोलि(न्द) २५० कम्म मण्ण तोण्टके चङ्गाळ्वं मदुरनहळ्ळियुमनाळ्ळि ५०० कम्म मण्ण......

[देसिग-गण और पुस्तक-गच्छके श्रीधरदेव थे, जिनके शिष्य एलाचार्य थे, उनके शिष्य दामनन्दिभट्टारक थे, उनके साथी चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक थे, उनके शिष्य दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, उनके शिष्य जयकीर्त्ति-देव थे जिनका दूसरा नाम चान्द्रायणी देव भी था, इन सबका समुदाय इन बसदियोका मालिक है। जो इस समुदायके अधीन नहीं है उन्हें यह समुदाय भगा देगा, बाहर भेज देगा।

चङ्गाळ्वने, १८ विलस्तके दण्डेके नापसे, विक्रमादित्यकी छोडी हुई और तोल्लडिकी उत्तरीय नहर या मोरीसे सींची गई तथा परमेश्वरकी दी हुई और रामस्वामीकी छोडी हुई १५०० 'कम्म' (एक नापविशेष) जमीन दानमे दी, उसी नापसे वेजिरिगट्टकी २५० 'कम्म' जमीन बगीचेके लिये, और ५०० 'कम्म' मदुरनहल्लिमे दिये।]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 28]

२४२

अङ्गडि—कन्नड़—ध्वस्त।

[विना काल-निर्देशका, पर संभवत लगभग ११०० (?) ई० का]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)मे, बसदिके पासके पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिनशासनस्य श्री · ण गङ्गदासि-सेट्टि सोमदि····

········धिय मुडिहिद प····क्षके मग चटयं निलिसिद सासन

[जिन-शासनका कल्याण हो। गङ्गदास-सेट्टिके मर जानेपर, उसके पुत्र चटयने यह स्मारक उसके लिये खड़ा किया।]

[EC, VI, Mūdgere tl, n° 10]

२४३

सण्ड—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[विना काल-निर्देशका, पर संभवत. लगभग ११०० ई० का]

[सण्डमें, तालावके प्रवेश-द्वारपरके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळतिळक चालुक्याभरण श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल देवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सल्लुत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महा-प्रचण्ड-दण्डनायक विबुधवर-दायक सुजन-प्रसन्न नुडिदु मत्तेन्न गोत्र-पवित्र पराङ्गना-पुत्र...... .....सोत्तुङ्गनय्यन-सिङ्ग नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्री .....वेर्ग्गडे **मने-वेर्ग्गडे-दण्डनायकननन्तपाळय्यं गजगण्ड-अरुनूरुमं वनवासे ....मुम सप्तार्द्ध-लक्षम(क्ष)यच्छ-पन्नाय**-मुम पडेदु सुख-संकथा-विनोददिं... तत्पादपद्मोपजीवि ॥

श्री-वनिता-कुच-सम्भृत-।
पीवर-वक्ष-स्थळ लसद्गुण-मणी . .।
.... ।
......सकळ-विमु (बु) ध-जनता........॥

आ-समस्त-गुण-गणाभरणनु विबुध-जन-पर.... ... ...विळसित-जगद्-वळय . वनु रण-रङ्ग भैरवन सकळ-सु-कवि-जन-क............ वीर-लक्ष्मी-विळासनुमनन्तपाळ-प्रसादनुदिताधिकार-लक्ष्मी-विळासनु.... . .. ...**[गो]विन्दरसं** वनवासे-पन्निर्च्छासिरमुम **मेलपट्टेय बङ्क-रावुळमु**..........नोददिं प्रतिपाळिसुत्तमिरे ॥

श्रियं निज-भुज-बळदिम् ।
दायाद बळ ....।

……………………………न-।
जेय रिपु-नृप-पयोज-सोम **सोमम्** ॥

आनेग…………गळ महा … वेयोगेववोलानत-रिपु-वोगेद……
महीपति-प्रतिम-प्रताप-निळय निज-सन्ततिगोसुगे पुट्टे रिपु…………
पुट्टिद **सोचरस** ॥ …जमदनणिमनार्प्पेने कट्टायदे चलदोळोदविदुन्नति-
नभम……… …रेम् पुट्टिदर् ॥

शरणेमगेन्नदेवुदेमगे-वेसनावुदु वुद्धियेन्नदुम् ।
वरिसि नितान्तमेरिसिद विल्लवोलुद्धत-वृत्तियुं-ने पेण्-।
डिर् केळदोळ् केळल्दु वीरुव विडे वीरुवविक-वैरि-भू-।
परनातनत्तर मरुळ तण्डम नोडने **सोम**-भूमिपम् ॥
किं कल्पद्रुम-वल्लरी किमु रतिः शृङ्गार-भङ्गी-गुरो.
किं वा चान्द्रमसी कला विगलिता लावण्य-पुण्या दिवः ।
सम्यग्दर्शन-रेवती किमु परा **सोमाम्बिका** राजते
राज्ञी सा वनवासि-**सोम**-नृपतेर्ज्जाता मनोवल्लभा ॥

श्लोक ॥ क्षीर-सिन्धोर्य्यथा लक्ष्मीर्हिमांशोरिव दीधितिः ।
तथा तयोस्सुते जाते जिन-शासन-देवते ॥
पूर्व्वं **वीराम्बिका** जाता ततोऽजन्युद**याम्बिका** ।
इति भेद तयोर्म्मन्ये सद्-गुणैस्समता द्वयोः ॥
कि देवेन्द्र-विमान एष किमुत श्री-नागराजाश्रयः
कि हेमाचल-शैल इत्यनुदिनं शङ्कां दधाने जने ।
निश्शेषावनिपाल-मौलि-विलसन्-माणिक्य-मालाञ्चितम् ।
भात्यत्युन्नतिमज्जिनेन्द्र-भवन ताभ्या विनिर्म्मापितम् ॥
तोडरे तोडङ्कु मच्चरिसे गण्टल सिल्किद-गाळ बुक्के मार्- ।

नुडिदडे जिहम पिडिदु किळ्प तोडर्प्पिन पागवेन्देडेन्त् ।
एडरुव (व) रेन्तु मच्चरिपरेन्तु कर कडि केय्दु दप्पम [मू] ।
नुडिदपरण्ण वार्प्पु मुळिदम्बद जूजिनोळन्य-भूभुजर् ॥
विडदेडरे सेणसि चुन्न ।
नुडिवरी-मन्नेयर वेन्न वार मिडिविम् ।
पेडेतले-वरम्माळ्पोच्चुव ।
कडु-गलि शसि-विशद-कीर्ति जूज-कुमार ॥
जवनेरे वच्चितेम्विनेगमान्नारि-भूपरनट्टि कोन्दु कू- ।
गुव तवे तिन्दु तेगुव तडगडिदि....व वेन्न-वारनेत्- ।
तुव पिडिदच्चि मुक्कुव पसुगरिर्डि वडगिन्दियादुवा- ।
हव-भुज-शौर्य्यम'' 'लि-वीरदनेन्दोड् इन्नार्ग्गेर पोगळर् नेगळ्द
कुमार-गजकेसरियं ॥

अरमनेयोळे ······ ··········· ।
········ · ···· ···न्दु त्रिगिदु संगरमादन्दे ।
शिरलेय मुन्नाल्गेणेयनि- ।
परसर् प्पोल्तपरे कु······· ··· ·· ··· ॥
········ ···डे मोगम तिरिपुवरिन्''''दडे नगुवरन्यरम्बद जूज
मुनि····   य रिपु-जनक्कमर्त्थि-जनक्कम् ॥ अनुपममे-
निसिद गुण ·· ··· ·······वारितमेनिप दान-गुणदोळु मत्त-
वण दोरेय ··············तळदोळ् ॥ आतनळिय ॥ खण्डदोळि
··········· · · ·· ···नेदु मूळेगळम्मूरि··············
·······················

[जिन-शासनकी प्रशंसा। जिस समय, (चालुक्य उपाधियो सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका राज्य चारो ओर प्रवर्द्धमान था और तत्पादपद्मोपजीवी मने-वेर्गडे दण्डनायक अनन्तपालय्य, गजगण्ड ६००, बनवासे १२०००, और सहार्द्ध-लक्ष (देश) अच्छ-पन्नायको प्राप्त करके उनके ऊपर शासन कर रहा था, तत्पादपद्मोपजीवी, जिस समय (अनेक उपाधियो सहित) गोविन्दरस बनवासे १२००० तथा मेल्पट्टे 'वड्डु-रावुळ'की शान्तिसे रक्षा कर रहा था,—उसका पुत्र (प्रशसासहित) सोम या सोवरस था, जिसकी पत्नी सोमाम्बिका थी। उनकी वीराम्बिका और उदयाम्बिका, ये दो पुत्री थीं। इन दोनोंने एक जिनमन्दिर बनवाया। अम्ब जूज-कुमारके, जिसे कुमार गजकेसरी भी कहते थे, पराक्रमकी प्रशंसा। उसका दामाद,··· (लेख बहुत घिसा हुआ है)।]

[EC, VII, Shikarpur tl, n° 311]

२४४

गुव्वी—कन्नड

[विना कालनिर्देशका]

(देखो, जै॰ शि॰ सं॰, प्र॰ भाग)

२४५

उदयगिरि (कटकके पास)—संस्कृत

[लगभग ईसाकी ११ वीं शताब्दि]

उद्योतकेसरीके समयका शिलालेख

नोट.—इस शिलालेखके लेखका कुछ पता नहीं है। इसका उल्लेख मात्र टी. ब्लॉक (T Bloch) के Archaeological Survey of India, Annual Report 1902–1903, पृ॰ ४० के उल्लेख परसे हुआ है।

[उद्योतकेसरीके समयका यह शिलालेख, जो कि ई॰ ११ वीं शताब्दिका है, शुभचन्द्रके कुल और गणका उल्लेख करता है। शुभचन्द्रके शिष्यका

नाम कुलचन्द्र था। ये (कुलचन्द्र) यहाँकी किसी गुफामे रहते थे और अपने गुरुकी तरह, अवश्य जैन रहे होंगे]

[T Bloch, A S I, Annual Report 1902-1903, p 40]

२४६

नेसर्गी (जिला बेलगाँव),—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिका (फ्लीट)]

बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकामें नेसर्गीके एक छोटेसे तथा अर्द्ध-ध्वस्त जैनमन्दिरकी एक खड्गासनस्थ बुद्ध-प्रतिमाके चरणपाषाणपर निम्न-लिखित अभिलेख पुरानी कन्नडके ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिके अक्षरोंमे है —

श्रीमूलसघद बलात्कारगणद श्रीपार्श्वनाथदेवर श्रीकुमुदचन्द्रभट्टारकदेवर गुड्ड वाडिगसात्ति-सेट्टियरु मुल्यवागि नख (ग ?) रङ्गलु माडिसिद नख (ग ?)रजिनालय ॥

[श्रीमूलसंघ बलात्कारगणके, श्रीपार्श्वनाथदेवके श्री कुमुदचन्द्र-भट्टारक-देवके शिष्य या अनुयायी वाडिगसात्ति-सेट्टि जिनसे मुख्य था ऐसे नगरके (व्यापारी लोगो) द्वारा 'नगरका जिनालय' बनवाया गया।]

[IA, X, p 189, n° 16, t & tr]

२४७

ऐहोले—कन्नड—भग्न

[विक्रमादित्य चालुक्यका २६ वाँ वर्ष; शक १०२३=११०१ ई० (फ्लीट)]

[ऐहोले गाँवके दक्षिण-पश्चिम दरवाजेके बाहर ही हनुमन्तकी आधुनिक कालकी वेदी है। इसके सामने 'ध्वजस्तम्भ' नामका एक पाषाण है। इस ध्वजस्तम्भके पादुकातलमे एक वीरगल् या स्मारक पत्थर बनाया गया है जिसपर पुरानी कर्णाटकभाषामे एक शिलालेख है। इस लेखकी नकल भाग १ Elliot MS. Collection पृ० ४१० पर दी हुई है।

पत्थरका ऊपरी हिस्सा दृष्टिसे ओझल हो गया है। लेकिन लेखकी तीन पंक्तियां द्रष्टव्य हैं। इनमे सोमवार दिन तथा विषु सवत्सरके, जो कि चालुक्य विक्रम-कालका २६ वाँ वर्ष अर्थात्, शक १०२३ (=११०१ ई०) होता है, श्रावणमासके शुक्लपक्षकी एकादशीका काल निर्दिष्ट है। पाषाणके दूसरे हिस्सेमें भगवान् जिनेन्द्रकी मूर्त्ति है जो कि पद्मासन है और जिसके दोनो तरफ यक्षिणियाँ चँवर ढोर रही हैं। पाषाणका शेष हिस्सा दृष्टिसे नहीं आता है; लेकिन उसमें अय्यावोळे (ऐहोले) के पाँचसौ महाजनोंद्वारा दिये गये दानका उल्लेख है।]

[इ० ए०, ९, पृ० ९६, नं० ६९]

२४८

दानसाले—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०२५=ई० ११०३]

[दानसाळेमें, दक्षिणकी ओर, बस्तिके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाजाराधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरण श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-देवर** विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतार सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर **पट्टि-पोम्बुर्च्चपुर**-वरेश्वरम्महोग्र-वंशललाम **पद्मावती**-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळा-पुरुप-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कळा-सम्पन्न **शान्तर**-कुल-कुमुदिनी-शशाङ्क-मयूखाङ्कुर रिपु-मण्डलिक-पतग-दीपाङ्कुरं **तोण्ड-मण्डलिक**-कुळाचळ-वज्रदण्ड विरुद-भेरुण्ड **कन्दुकाचार्य्य मन्दर**-धैर्य्य कीर्ति-नारायण शौर्य्य-पारायण जिन-पादाराधकं परबळ-

साधक शान्तरादित्य सकल-जन-स्तुत्यं नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्व्वज्ञं नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **त्रिभुवनमल्ल-सान्तर-देव** ॥

॥ वृत्त ॥

कनकाद्रीन्द्रक्कमम्भोनिधिगमवनिग पेम्पिनोळ् गुण्पिनोळ् तिण्-।
पिनोळेन्तुं ताने पोपासटि सरि समनेन्दन्ददाव समस्कन्-।
धनदात्रं पोल्वनाव पडिय्ये निसुवव राज-सर्व्वज्ञनोळ् तैं-।
लनोळर्थि-स्तोम-चिन्तामणियोळखिळ-भू-भागदोळ् नोर्पडेन्तुम् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद कलि-काल-कल्पावनिजङ्गा-महानुभावङ्गे जन्म-निळयमेनिसिद अखिळ-क्षत्रिय-कुलोत्तममुमद्वितीय मुमेनिसिदुग्रान्वयावतारमेन्तेन्दडे **पार्श्वनाथ**-सन्तानदोळनेकसमर-सम्मर्दित-रिपु-व्यूहराहनेम्बनुत्तर-**मधुरा**-पुरी-भुजङ्गनु प्रतिपाळिन-चतुस्समुद्र-मुद्रित-रुह्वरी-रगनु-मेनिसि राज्य गेय्दनातनिन्दनन्तरमर्थि-जन-कल्पभूरुहाकार-**सहकारं** राज्यभर-धुरन्धरनादनातन तनय ॥

क ॥ जगदोळगण नृपरेल्लम् ।
मृगदन्तिरलात्म-विक्रम-प्राभवदिम् ।
मृग-रिपुविनतिरेसेदम् ।
नेगळ्दुग्रान्वय-नगेन्द्रदोळ् **जिनदत्तम्** ॥

व ॥ आ-नृपेन्द्रचूडामणि दुर्व्वार-भारत-समर-समय-समुदीर्ण्ण-सौर्य्यातिरथ-समरथ-महारथार्द्धरथ-समूह-सम्मर्द्दन-लब्ध-विजयलक्ष्मीविवाहोत्सवनुं त्रिविक्रम-कारुण्य-लब्ध-लसदेकशङ्खनु धनञ्जय-दत्त-शाखामृग-ध्वजनुमतर्क्य-विक्रमोपात्त-कण्ठीरव-ध्वजनुमागि दिग्-विजय-यात्रा-निमित्त दक्षिण-दिशाभिमुखनागि विजय गेय्दु समस्त-दैत्य-वशध्वंसन माडि पद्मावती-

पदाराधना-लब्ध-सप्ताङ्ग-राज्य-राजधानी-**पोम्बुर्च्चदोळु** **सान्तर**-पट्टम ताब्दि **सान्तलिगेशायिर**मुमनेक-च्छत्र-च्छाय-यिन्दाळ्दु शान्तरमेम्बे-रडनेय पेसर पडेदनन्दि वळिक्कमु**ग्रान्वयं** **शान्तरान्वयाभिधान**म पडेदुदानर्नि वळिक्कमनेक-राज-सन्तानकमतिक्रान्तमागे तदन्वयदोळु ॥

वृ ॥ विरुदर मृत्यु वीरद नवर्मने चागद जन्म-भूमि शा- ।
न्तर-कुळ-वार्धि-वर्द्धन-शरत्-समयेन्दु समस्त-सत्-कळा-परिणत-
नङ्गना-जन-मनोभवनेन्दोसेदर्थियिं वुधो-
त्करमभिवर्ण्णिसल्के नेगळ्द धरेयोळ् विभु **शान्तर-ओड्डुग** ॥

क ॥ नव-जळददळि मिञ्चुम्-सुवुदुवद **शान्तरोड्डुगं** वाळ् गित्तन्- ।
तेवोलादुदेन्दु पोगळ्व । भुवनाधिपनात्म-समेयोळा-भूपतिय ॥

आतननुज ॥

क ॥ अदटिनिदिरान्त-भूपर- । नदटलदेरदर्थि-निकरम तणिपि जगद्- ।
विदित-यश नेगळ्द भू- । प दिळीप वैरि-वीर-काळ **तैल** ॥

तत्पुत्र ॥

क ॥ आयद कट्टळे मदवद्- ।
दायाद-नृपाळ-दर्प्प-विच्छेदनन- ।
त्यायत-दोर्-दर्प्पं जय- ।
जायापति दळित-वैरि-वीरं **वीर** ॥
अवन मनोरमे गङ्गा- ।
न्ववाय-पीयूष-वार्द्धि-सम्भवे लाव- ।
ण्यवति मनोभव-राज्यो- ।
द्भव-विळसज्जन्म-भूमि **वीरल-देवी** ॥

अवरिर्व्वर्ग्गम् ॥

भुजबल-शान्तरनच्यु-
दूय-जय-श्री-ललित-घन-भुजा-दण्ड भू- ।
भुज-बन्धनवर्ग्गे ताना- ।
म्भजनाद रिपु-चळटवी-दवदहन ॥

आतनिं किरिय ॥

वृ ॥ शरणायात-शरणनर्थि-जन-कल्पक्ष्माजनन्यावनी- ।
श्वर-सैन्यार्ण्णव-वाडवानळनशेषाशावधि-न्यस्त-भा- ।
सुर-कल्हार-सुरापगा-निभ-यशश्श्रीवल्लभं नन्नि-शान्-
तर-देवं जगदेक-दानि नेगळ्द विश्वम्भरा-भागदोळ् ॥

तदनुजन्मनोड्डुगनात ॥

क ॥ विक्रम-चक्रिय पुण्यदे ।
चक्र पुरुष-स्वरूपदिं पुट्टितेनल् ।
विक्रमदिन्देसेदान ।
विक्रम-शान्तरनेनिप्प पेसर पडेद ॥

व ॥ आतन मनोरमे पाण्ड्य-कुल-वियत्-तळ-चन्द्र-लेखेयु शफर-
पताका-जय-पताकेयुमेनिसिद चन्दल-देविग ॥

क ॥ उदयाचलदोळहिमकरन् ।
उदधियोळमृतकरनुदयिपन्तिरल्वर्ग्गन्द् ।
उदयिसिदं सकळ-कळा- ।
सदन महिमा-निळिम्प-शैल तैल ॥

अन्तु जगज्जनद पुण्यदिं कल्पवृक्षमे क्षत्रिय-स्वरूपदिं पुट्टितेनि ॥
पुट्टि सान्तळिगे-सायिरमुमनेक-च्छत्र-च्छायेयिं सुखं राज्य गेय्युत्तिरेसि

क ॥ अरुमुळि-देवन गाव- ।
व्वरसिय सुते वीर-भूपनत्तिगे वीर- ।
व्वरसियरग्रजे तैलप- ।
धरणीश्वरनज्जि नेगळ्द-चट्टल-देवि ॥

भुजबळन गोग्गियोङ्ग- ।
न जय-श्री-कान्तनेनिप वर्म्मन तायि वि- ।
श्व-जगद्-वन्द्ये तानव- ।
निजेगमरुन्धतिगमधिके चट्टल-देवि ॥

काञ्ची-नाथ-मनः-प्रिये ।
चञ्जिन-समय-कामधेनु दिगन्त- ।
प्राञ्चित-कीर्त्ति-पताके वि- ।
रञ्चि-रमा-सदृशे नेगळ्द्-चट्टल-देवि ॥

व ॥ आ-जिन-समय-निदान-दीप-वर्त्ति भुजबळ-शान्तर नन्नि-शान्तर विक्रम-शा [न्] तरं वर्म्मदेवं मोदलागि निज-नन्दन-समेत सुखं राज्य गेय्युत्तिर्द्दु राजधानि-पोम्बुर्च्चदोळु पञ्च-वसदियं माडिसि या-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारकमल्लिर्प्प ऋषि-समुदा-यक्काहार-दानार्त्थमागि भुजबळ-शान्तर नन्नि-शान्तर विक्रमशान्तरनुं सूवरुमिर्द्दु विट्ट ग्रामङ्गळु रावनाडोळ्गण अग्रहारमानंदूरुं (दूसरे स्थानों के भी नाम दिये है) विट्टरा-पञ्च-वसदिय प्रतिबद्ध मागियानन्दूरुळु चट्टल-देवियु श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-शान्तर-देवनु वीरव्वरसियर्गे परोक्ष-विनयमागि यी-वसदिय श्रीमद्-द्रविल-सङ्घदरुङ्गलान्वयद वादि-घरट्टनेनि-सिद श्रीमद् अजितसेन-पण्डित-देवर नामोच्चारणदिं केसरु-कल्लिकि-सिद-वराचार्य्यावलियेन्तेन्दडे श्री-वर्द्धमानस्वामिगळ तीर्त्थ प्रवर्त्तिसे

गौतमर् गणधररागे तत्-सनातनदोळनेकरतिक्रान्तरागे कलियुग-गण-धरर् **दयापाळ-देवरादरवरिं** वळिक्क षट्-तर्क्क-षण्मुखापर-नामधेय **जगदेकमल्ल-वादिराज-देवरवरिं ओडेय-देवरवरिं श्रेयान्स-पण्डित-**रवरिं वळिक्क ॥

क ॥ दूरीकृत-दुरघ निर्- ।
हारित-मदन स्व-तर्क्क-विद्या-वळ-सम्- ।
हारित-पर-समय वाक्- ।
श्री-रमणी-रमण**नजितसेन-मुनीन्द्र** ॥
प्रद्युम्न-मद-विदारणन्- ।
उपद्गुण रत्न-वार्द्धिनेगळ्द पेर्देन् ।
अद्यतन-गणधरं निर- ।
वद्य श्रीमत्-**कुमारसेन-व्रतिप** ॥

तार्किक-चक्रवर्त्तियु वादीभ-पञ्चाननमेनिसिद श्रीम**दजितसेन-पण्डिदेत**वर गुड्ड ॥

क ॥ नृप-विद्याम्बुधि-पारगन् ।
अपरिमित-त्याग-गुणनराति-मुखेन्दु- ।
ग्लपन-रुहा-राहु रिपु- ।
द्विप-सिंह **शान्तरान्वयाम्बर-चन्द्र** ॥
चागददगुन्ति याचकर्- ।
आगिसिद्दु पलवरसेर वीरददोन्द् ।
ओगडिसदेळ्गे वनचरर् ।
आगिसिद्दु पलवरहितर **तैलगन** ॥
अवननुज निज-निर्त्ति- ।

२५०

होन्नूर—कन्नड़

[लगभग शक १०३०=११०८ ई० (फ्लीट) ।]

[कोल्हापुरके पास कागलसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर दो मील दूरपर होन्नूरमें जैनमन्दिरके भीतर एक प्रतिमाके अभिषेक-स्थल (पाण्डुक शिला) के सामने यह प्राचीन कन्नड़का लेख है । प्रतिमा खड्गासनस्थ सिरपर सर्पके सप्तफणाधारी छत्रसे मण्डित पार्श्वनाथस्वामीकी है । इसके दोनों कोनोंमें एक-एक झुकता हुआ या बैठा हुआ आकार (मूर्त्ति) है । लेख १$\frac{3}{4}$ इञ्च ऊंची तथा २ फुट ७ इञ्च चौड़ी जगहको घेरे हुए है । यह कोल्हापुरके शिलाहारोंमेंसे वल्लाळ और गण्डरादित्यके समयका है, अर्थात् लगभग शक १०३० (११०८-९ ई०) के समीपवर्ती है ।]

लेख

स्वस्ति श्रीमूलसंघद पो(पु)न्नागवृक्षमूलगणद रात्रिमतिकन्तियर गुड्ड वम्मगावुण्डं माडिसिद वसदिगे श्रीमन्महामण्डलेश्वरं वल्लाळदेवनु गण्डरादित्यदेवन्म(नुम्) आहारदानक्के विट्ट कम्मविन्नूरक्कं अरुगायि मने ....

[स्वस्ति । श्रीमन्महामण्डलेश्वर वल्लालदेव और गण्डरादित्यदेवने श्रीमूल संघके (भेद) पुन्नागवृक्षमूलगणके रात्रिमतिकन्तिके गुड्ड (शिष्य या अनुयायी) वम्मगावुण्डके द्वारा निर्मापित वसदिके लिये, (तपस्वियोंको) आहारदान के लाभार्थ २०० 'कम्म' एव छ. हाथ या ३ गज़का एक भवन दानमें दिया ।]

[IA, XII, p 102, n° 6, t & tr]

निर्माण करता था उसको कुछ भूमि भेंटमें दी जाती थी, इसके सिवाय उस तालावसे फायदा उठानेवालोंसे तालावके निर्माण करनेवालेको उत्पन्न (फसल) का १० वाँ हिस्सा या और कोई छोटा हिस्सा मिलता था । इसीका नाम 'दशवन्न' था ।

२५१

हेव्वण्डे—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न
[वर्ष ३५ चालुक्य-विक्रम=१११० ई०]

[हेव्वण्डेमें, तालाबके दक्षिण नष्ट हुए बाँधके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्-परम····॥

········चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानम्माचन्द्रार्क्क-तारं सलुत्तमिरे ॥ आतन मगं एरेयङ्ग (४ पक्तियाँ नष्ट हो गई है) विष्णुवर्द्धन-म ··················एनिसि केतवेर्गडे (६ पक्तियाँ नष्ट हो गई है) श्री-शुभचन्द्र-देव····· ····· ·· ··· तुण्डरु वादि-कोळाहळ ' ········ ··स्व-समय-रक्षण-पक्षपाति ··· ········ · ··· एनिसिद कनक' ··त्रैविद्यसिद्धान्तदेवर शिष्यरप्प मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि केतव्वे ' · · · ····बिट्टि-देवनुं भुजबळ-गंग-पेर्म्माडियु वम्म-गावुण्डनु नाळ्-प्रभु चाळुक्य-विक्रम-कालद ३५ नेय विकृत-संवत्सरद फाल्गुन- मासद शुद्ध-पञ्चमी बृहवारदन्दु···मुख्य-स्थानवागि···चन्द्रशेखर-वेर्गडे कट्टिसिद केरेय केळगे गळदे कम्म मूवोत्तु आ-केरेय तेङ्कण-कोडियल्लु वेद्दले मत्तरोन्दु मने आरु गाण वोन्दु (इमेशाका अन्तिम श्लोक) श्रीमत् कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवर गुड्ड सेनवोव-वोग-देवन वरह ॥ श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा । जब (अपनी उपाधियों सहित) चालुक्य त्रिभुवनमल्लका विजयराज्य चारो ओर प्रवर्द्धमान था । (इस स्थानपर होयसलोंके विवरण हैं, जो कि वहुत घिस गये हैं ।) शुभचन्द्र-देव (से परम्परागत आये हुए) कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके शिष्य, मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य केतव्वेकी प्रशंसा ।

बिट्टिदेव, भुजबळ-गंग-पेर्माडि, वम्म-गावुण्ड (? तथा) नाळ्-प्रभुने, चालुक्य-विक्रम-कालके ३५ वें वर्षमे, जो कि विकृत वर्ष था, ६ मकान और

१ तेलकी चक्कीके साथ, (उक्त) भूमिका दान किया। इसमेंसाके अन्तिम श्लोक। यह लेख कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके गृहस्थ-शिष्य, सेनबोव बोग-देवके द्वारा रचा गया।]

[EC, VII, Shimoga tl, n° 89]

२५२

महोबा—संस्कृत

[संवत् ११६९, फाल्गुन सुदि ८ (१११२ ई०)]

यह लेख संभवत जयवर्म्मदेवके कालका होना चाहिये, जो, जैसा कि इतिहास कहता है, सिर्फ ४ साल बाद, सं० ११७३ मे शासन कर रहा था।

[A Cunningham, Reports, XXI, p 73, a]

२५३

आलहळ्ळि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ३७ चालुक्य विक्रम=१११२ ई०]

[आलहळ्ळि (होळलूर परगना) में, तलवारके खेतमे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ॥

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरं परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर विजय राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क्क-तारम्बर सलुत्त-मिरे कल्याणपुरद-नेलेवीडिनोळ् सुख-सङ्कथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवि।

---

* महोबाके ये (नं० २५२, ३२५, ३३८, ३४१, ३६०, ३६१, ३६५) अतिसंक्षिप्त शिलालेख ए कनिंघमको स्व० जैन मूर्त्तियोंके चरण-पाषाणपर लिखे थे। इनमेंसे कुछ शिलालेख बहुत कामके हैं, क्योंकि उनमे जिस समय मूर्त्तिका निर्माण या प्रतिष्ठा हुई थी उसका काल तथा उस समय शासन करनेवाले राजाका नाम, ये दोनों चीजें दी हुई हैं। कुछमे शासक-राजा का नाम नहीं मिलता, पर कालका उल्लेख मिलता है, कुछमें वह भी नहीं मिलता।

स्वस्ति समस्त-वस्तु-गुण-भूपणनब्धि-परीत-भूतळ- ।
प्रस्तुत-कीर्त्ति भावभव-मूर्त्ति जया-वनिता-प्रपूर्ण्ण-वृ- ।
त्त-स्तन-हार•••वाञ्छित-कल्प-कुजानुसारन- ।
भ्यस्त-कळागम-ज्ञनेने **गङ्गरसं** सरसं धरित्रियोळ् ॥
विनयाधारमुदारसुन्नति कुलङ्‍••••श्वर्यमेम्बृ ।
इनितु शोभिसे शोभे-वेत्तनेनुतु धात्री-तळ कूर्तु-की- ।
र्त्तने-गेय्गु जयदुत्तरंगननशेप-श्री •••वर्द्ध-प्रस- ।
गन् ••••••वितरण-व्यासङ्गनं गङ्गनम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द **नीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म** धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं **कुवळाळपुर**वराधीश्वरं **नन्दगिरि**-नाथं सकळ-गुण-सनाथ मद-गजेन्द्र-लाञ्छन परिपूर्ण्णीकृत-विबुध-जन-मनोवाञ्छन पद्मावती-लब्ध-वरप्रसादम् मृगमदामोदम् गङ्गकुळ-कुवलय-शरच्चन्द्र मण्डळिक•••द्र दर्प्पोद्धताराति-मण्डळिक-वनज-वन-वेदण्ड दुर्द्धर-गण्ड नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमन्महामण्डळेश्वर त्रिभुवनमल्ल **भुजवळ-गंग-पेर्म्माडि-देवर** पट्टमहादेवी ॥

पुट्टिद•••अनुज । **पट्टिग-देवङ्गे गङ्गवाडिगे** तळेदळ् ।
पट्टमनेसेदिरे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
परिवार-सुरभिगन्तर्- । पुर-मुख्य-मण्डनेगे **गङ्ग-मादेविगे** नायकि ।
यरनद्••••ओड सति । दोरे • ••••नृप••• पडेये ॥
अन्तवर्ग्गे ॥

गङ्ग-कुळ-तिळकरेनिसिद । **गङ्ग-नृपं मारसिंग-नृप गोग्गि-नृपं** ।
तुङ्ग-यशनेनिसिदं **कलियम्** । **अङ्ग-नृपं** नेगर्दरेळेगे कुमाराग्रणिगळ् ॥
कोळालपुर-वरेश-नृ-पाळ-सुतर्म्मद-गजेन्द्र-लाञ्छनररि-भू-
पाळ-कुळ-वनज-वन-शुण्डाळर्नेगर्दर् स्समस्त-सु-भटाग्रणिगळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्दग ङ्ग-पेर्म्माडि-देवरु **गङ्ग-महादेवियरु** कुमार-वर्गमुं मण्डलि-सासिरदोळगणेडेहळ्ळिय वीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्त मिरला-महा-मण्डलेश्वरनर्द्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

श्री-वधु जय-वधु कीर्त्ति- । श्री-वधु वाग्वधुवेनिप्प वधु **गङ्ग-नृपङ्** ।
ई-वधुवेनिसिद **वाचल-देवि**योळेगेयेन् वेनुळिद नृप-वनितेयरम् ॥
ई-चतुरम्बुधि-वेष्टित-।भू-चक्रद सतियरेल्लमादडवेनो ।
वाचल-देविगे समन् ··।-च-मणि-प्रतति दोरेये चिन्तामणियोळ् ॥
काम-मदेभ-गामिनिगे····नमे पूज्यमेनिप्प पेम्पिनिन्द् ।
ईव म तणुपि कल्प-कुजक्केणे···· ··· ······· ·······।
द्······र-दान-गुण-भूषणे दान-विनोदे दान-चिन्-।
तामणि दान-कल्प-लतेयेम्बिवु **वाचल-देवि**गोप्पदे ॥
एरगदराति-भूभुजरनाजियोळञ्जिसि निजाङ्घ्रिगळग् ।
एरगिसुतिर्प्प दर्प्पद पोड ··· · गण्डनप्प त-।
न्नेरेयन···· ··तनगे गङ्ग-महीभुजन विलासदिन्द् ।
एरगिसि···भाग्य-भरदुन्नति **वाचल-देवि**गोप्पुगुम् ॥
अन्तुमल्लदे ॥

अरि-विरुद-पात्र-जगदळ । धरेगेल्ल नीने राय जगदळे नानी-।
धरेगेल्लमेन्दु पिरिदा-। दरदिन्द · सि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥
कुडे राय जगदळे-पेसर- । वडेद्······डेय कडेय वडवुगळीयल् ।
पडेदळ् रायरोळप्प कुडे **वाचल-देवि** पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥
मत्तम् ॥

···· ··· ··मेवुदे-नडे-तन्न महत्त्व-वृत्तियं ।
वेडदे नोडिरे नेगळद **वाचल-देवि**य कीर्त्ति·······।

आडि दिगङ्गना-नटियरोळ् नणिविल्लदे मत्तविन्नु····।
··········वीर ··पात्र··········मेळे पात्रमुम् ॥

मत्तं स्वस्त्यनवरत-परम-कल्याणाभ्युदय-सहस्र-फळ-भोग-भागिनि ललित-करण-गृहीत-भाव-प्रयोगिनि भुजवळ-गग-भूपाळ-विशाळ-वक्ष-स्थळ-निवासिनि । नृत्य-विद्या-प्रभाव-प्रभूत निर्म्मळ-यशो-विभासिनि···स्थान-पात्र-मुख-मण्डने । प्रतिपक्ष-गायिका-गान-मान-परिखण्डने । अनवरत-दान-जनित-विबुध-जन-हर्षे । देवा····न··· स ·· तर्षे····। चतुर-विद्या-विनोदे । कस्तूरिकामोदे । अरि-विरुद-पात्र-जगदळे । जिन-गन्धो-दक-पवित्रीकृतविनीळ-नीळ-कुन्तळे । निखिळ-कुळ-पाळिका-गीयमान-वि-शद-यशो-गीति ·· स्थान ···जिन-शासन-साम्राज्य-यशस्-पताके । परोप-कार-कमळाकरचक्रवाके । सौभाग्य-सची-देवि श्रीमद्-**बाचल-देवियर् बणिकेरेय** त्रिभोगाभ्यन्तर-सिद्धियिन्द हुरवदिनिरप्प ।

जन-नुते **बाचल-देविय**···।
जननिगे सरि दोरे समानमेनल्के केळ-।
वनियोळ् पडवळति···।
जननिय······जननियरेणेये ॥

पडेदोडमे दान-धर्म्म-। कोडलु विशेष-वनक्किवेने नेगळ्द जसं ।
बडेदडव्····मतिगे ।·········वसुधा-तळदोळ् ॥

आ-महानुभावेयोडपुट्टिदम् ॥

जिन-पदाम्बुज-भृङ्ग । जिन-समय-सरोजिनी-मार्ता··· ।
··········प्रभ- । वेने नेगर्द **बाहुबलि** धरा-मण्डलदोळ् ।
एळेयं मुरडियं कोट्ट् । अळिपदनब्जो················ ।
············दिन्द् । इळिसिदप नम्म बाहु-बलिया-बलियन् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमद्-**वाचल-देवि** …हुवलियण्णनु धर्म्म-कार्य्या-
लोचनमनाळोचिसि ॥

ई-भवनदोळेन्दु परि- । शोभितं……… .. … ।
……एन्देन्दाहा- । राभय-भैषज्य-शास्त्र-दानमनेसेयल् ॥

माडुव बगेयिं मण्डलि- । नाडोळगण बन्नि……अनुनयदिन्दम् ।
माडिसिदळ् जिन-गृहम । नाडाडिगळुम्बमेन्दु धरे पोगळ्विनेग ॥

सङ्घगळोळगिदुत्तम- । सङ्घं 'मूल-सगमा-सग-… ।
तुङ्ग देसिग-गणमा- । सङ्घदोळा ……गुड्डि **वाचल-देवि** ॥

देसदोळुत्तममेनिसुव । देसिग-गणद…माडिसिदळिदम् ।
देसिग-गणक्के मण्डलि- । सासिरक तिळकमेनिप चैत्यालयमम् ॥

अल्लिगे देसिग-गणदव- । गॆल्लदे मत्ताव-गणदलार्गॆन्देडकूळ् ।
अल्लदे तेज वोन्दिप- । गॆल्लदेन्तु बुधाब्ज-वन-कळ-हंसा ॥

सुर-मनुज-भुजग-भुवना- । न्तरदोळ् सुन्दादविल्लुदिप्पुवाविन्तिम् ।
दोरेये जिन-भवनमल्लेम्- । बर मातु दिट बुधाब्ज-वन-कळ-हंसा ॥

जळधि-परीत-भू-वळय्दोळ् नेगर्दोप्पुव गङ्गवाडि-ना- ।
डोळगे नेगर्त्ते-वेत्तेसेव मण्डलि-नाळ्के मुखक्के मूगेनिप्प् ।
अळवियनान्त **बन्निकेरे**योळ् नेरेदोप्पुव **पार्श्वनाथ**नीग् ।
अळि-कुळ-नीळ-कुन्तळेगे **वाचल-देवि**गभीष्ट-सिद्धियम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्री-पार्श्वनाथ-देवर्गे **चालुक्य-विक्रम-वर्षद ३७ नेय नन्दन-संवत्सरद पौष्य-शुद्ध ५ बृहवारदुत्तरायण-सङ्क्रान्ति-यन्दु मण्डलिसासिरद** वळिय वाड **बूडङ्गेरेयल् बन्निकेरेयल्** तळ-वृत्ति गर्द्दे मत्तर्मूरु तोण्ट मत्तरोन्दु गाणवेरडु पुरद कोलियो….आ-येरडूर तळ-भण्डद सुङ्कवोळगागि यिन्तिनितुम **भुजबळ-गङ्ग-पेम्मीडि-देवरु**

गङ्ग-महादेवियरु बर्गडे-बाचल-देवियरु कुमार-गङ्ग-रसतु मार-सिंग-देवतु गोग्गे-देवतु कलियङ्ग-देवतु समस्त-प्रधानर नाड-प्रभु-गळ सन्निधानदल्लु सर्व्व-बाधा-परिहार सर्व्व-नमस्यमागि देवर श्री-पाद-पद्ममूळदोळ् धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्टरु ॥

धरे पुसिवोगदे बेळगी- । धरेय भुज-बळदिनाळ्द भुजबळ-गङ्गम् ।
परेदिर्क्कें जैन-धर्म्मं । धरेयोळ् चन्द्रार्क्क-तारमुळ्ळन्नेवरम् ॥
सकलोर्व्वी-स्तुतमप्प धर्म्ममनिद काद चिरैश्वर्य-भुम्- ।
भुकनक्कु विपरीतदिं नडेदवगा-गङ्गेया-वारणा-
सि-कुरुक्षेत्रदोळेय्दे गो-द्विज-मुनि-तीर्यर्क्कळं कोन्द पा-
तकनक्कु बिडदिर्क्कुमा-पुरुषनेन्तुं रौरव-स्थानमम् ॥

(हुमेशाके अंतिम श्लोकके बाद)

शासनमिदावुदेल्लिय । शासनमारित्तरेके सलिसुवे नानी- ।
शासनमनेम्ब पातक-।ना-सकळ रौरवक्के गळगळनिळिगुम् ॥

देवर श्री-पाददोळु धारा-पूर्व्वकदिं पुर-वर्गद सुङ्कव देवर्गे बिट्टरु वन्निकेरेयल्लु कल्लुकुटिग काळोज देव-दासिगळिगे बिट्ट बेद्दले गळेयल्लु मत्तरोन्दु ॥

श्री-देशी-गण-वार्धि-वर्द्धन- करश्चन्द्रोऽकलङ्काङ्कितस् ।
स्थेयान् श्री-मलधारि-देव-यमिनः पुत्र. पवित्रो भुवि ॥
सद्-धर्म्मैक-शिखामणिर् जिनप···चिन्तामणिस् ।
स-श्रीमान् शुभचन्द्र-देव-मुनिपस्सिद्धान्त-रत्नाकरः ॥

श्री-लोक्किगुण्डिय प्रभु एरकण्णं श्री-पार्श्व-देवरंग-भोगक्के वड्डि-यिन्द-क्षयमागि कोट्ट लोक्किय गद्याण १ ॥ मत्त बिट्ट गर्द्दे मत्तरोन्दु बेद्दले मत्तरु मूरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा। त्रिभुवनमल्ल-देवके विजय-राज्यमें तत्पादप-द्मोपजीवी गङ्गरस था; इसको 'जयदुत्तरग' नाम भी दे रक्खा था। नीतिवाक्य कोङ्गुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराज परमेश्वर महामण्डलेश्वर त्रिभु-वनमल्ल भुजबळ-गंग-पेर्म्माडिदेवकी पट्टरानीने अपने छोटे भाई पट्टिग-देवके लिये गङ्गवाडिका मुकुट धारण किया। तमाम रानियों और राजाओंसे वह ज्यादा प्रतिष्ठित थी।

उन दोनोंके चार पुत्र उत्पन्न हुए—गङ्ग, मारसिंग, गोग्गि, और कलियङ्ग। ये सब महान योद्धा थे।

जिस समय गङ्ग-पेर्म्माडि-देव, गंग महादेवी, और उनके लड़के मण्डलि हजारसे अपने निवास-स्थान एडेहल्लिमें थे, उस महामण्डलेश्वरकी एक अन्य अर्द्धाङ्गिनी वाचल-देवी (उसकी प्रशंसा) थी। उसने अपने पतिको'पात्र-जग-दळे'की उपाधि दी थी।

जिस समय (अनेक उपाधियोंवाली) वाचल-देवी बन्निकेरेमें, अपनी तीसरी पीढ़ीकी खुशीसे विश्रब्ध होती हुई, सुखपूर्वक रहती थी, उसने अपने बड़े भाई बाहुबलीसे परामर्श करके बन्निकेरेमें एक सुन्दर जिना-लय बनवाया।

वाचल-देवी मूलसंघ, देशीगणकी गृहस्थ-शिष्या थी। उस देशीगणके लिये उसने चैत्यालय बनवाया। समुद्र-परिवेष्टित लोकमें गङ्गवाडि-नाड् प्रसिद्ध है और उसमें मण्डलि-नाड् प्रसिद्ध है। उसमें चेहरेपर जैसे नाक है उसी तरह बन्निकेरे था। पार्श्वनाथ भगवानके लिये चालुक्य विक्रमके २७ वें वर्षमें भुजबळ-गङ्ग पेर्म्माडिदेव, गंग-महादेवी, पेर्ग्गडे-वाचल-देवी, और कुमार गङ्गरस, मारसिंग देव, गोग्गि-देव, कलियङ्ग-देव, और तमाम मन्त्रि-योंने, नाड्-प्रमुखोंकी उपस्थितिमें सब करो एवं चुङ्गियोंसे मुक्त, मण्डलि-हजारके वृद्धोंसे, बन्निकेरेकी कुछ जमीन, एक बगीचा, दो कोल्हू, और उन दोनों शहरोंकी कुछ चुङ्गीकी आमदनीका दान किया। आशीर्वचन और शाप। पाषाण-शिल्पी कालोज (शासनके उत्कीर्ण करनेवाले) का नर्त्तकियोंके लिये दान। शुभचन्द्र-देव-मुनिपकी प्रशंसा। लोक्किगुण्डि प्रभु एरेकण्णने भगवानके भोगके लिये १½ लोक्कि गद्याण, तथा कुछ भूमि दान की।]

[EC, VII, Shimoga tl, n° 97]

२५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

(देखो जैनशिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग।)

२६२

मत्तावार—कन्नड-भग्न

[शक १०३८=१११६ ई०]

[मत्तावार पार्श्वनाथ बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री सक-वरुष १०३८ नेय दुर्मुकि-संवत्सरद चैत्र-मासद् कृष्ण····· ·· यादिवार······ ···चेढळ्ळियु मायन····मग मावण्णन शिष्यरु सन्यसन गेय्दु मुडिहिद निसिदि।

[(उक्त मितिको), मायनका पुत्र और मावण्णका शिष्य सन्यसन (संन्यास=समाधि) धारण करके मर गया। उसका यह स्मारक है।]

[EC, VI, Chikmagalūr tl, n° 51]

२६३

तिप्पूर—संस्कृत तथा कन्नड

[शक स० १०३९=१११७ ई०]

[तिप्पूर (कुलगेरी-प्रदेश)मे, गॉवके उत्तर-पूर्व, पहाड़ीपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फोटनाय घटने पटीयसे ॥
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
स्वस्ति होय्सल-वंशाय यदु-मूलाय यद्भवः।
क्षत्र-मौक्तिक-सन्तानः पृथ्वी-नायक-मण्डनम् ॥
स्वस्ति श्रीजन्मगेहं निभृत-निरुपमौर्वानलोद्दाम-तेज।
विस्तारोपात्त-भू-मण्डलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धाम ॥

वस्तुव्रातोद्भव-स्थानकम् अतिशय-सत्वाढ्यमं गभीरं ।
प्रस्तुत्य निळमप्पोनिधियिनिभनेनिपं होय्सळोर्व्वीश-वंशं ॥
अदरोळ् कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणम् उद्देशमुद्धानसु-
रुद्रमुर्व्वि हिमरश्मियुज्वळ-कळा-सङ्गतिय तारेगा-
नदुदयल्कद् पेम्पनोर्व्विने निताम्त नाडे नागले पु-
ट्टिदम् उद्वाजितवैरि-वीरं विनयादित्यावनी-पाळकम् ॥
विनयादित्यहितं समरगं दुर्ज्जनगमाम्तविनय तेजं ।
जनियिसे नयन भयन । विनूत नाम्दो निशिलमनपहरमं ॥
आ-विनयादित्य-नृपं । भाविक्षव-सद्य-देवता-सन्निभे स-
द्भव-गुण-भवननिळिविळासिते क्येळेयब्बरसि येम्बळु पेसरि
आदम्पतिगे तनूभवन् । आद गतिगं सुराधिपतिगं सुतनन्द् ।
आदं जगन्तन् अन्ते भि पाद-विदूरान्तकन् एरेयङ्ग-नृपं ॥
एरेयन् अखिलोर्व्विप् एनिसिर्द्दं । एरेयङ्ग-नृपाल-तिलकन् अङ्गने चालिग-
एरेयङ्ग शीलगुणदिं । नेरेद् एचल-देविर् अन्तु नोन्तलोळरे ॥
एने नेगळ्द् अवरिर्व्वर्गं । तनूभवर् नेगळ्दरु अन्ते बल्लाळं विष्णु-
सनाळकम् उदयादि- । त्यनेन्द पेसरिन्द नाळिक-सदृशाकार ॥
अवरोळ् मध्यमनागियुं जगदोळ् पूर्व्वनेनिप्पोदिदं ए-
स्तुविन ब्रुडे निनिम्बुन्तु गिज-बाहा-विक्रम-प्रौडियु-
र्व्वविन्तु तमगादशु जगगुगवानि-यानं बरा-
बल-चूडामणि यादवाब्ज-दिन- श्री-विष्णु-भूपाळकम् ॥
॥ कं ॥ एळेयोळ् कोयतूर् तवनि तळवनपुरनन्ते रायरायपुरक्-
पळ बळेद् विष्णु-तेजोन । उज्वळदे वेन्दु वक्षि-रिपुदुर्गङ्गळ् ॥
स्वस्ति समधिगत-पञ्चमहाशब्दं महा-मण्डळेश्वरं द्वारावती-पुरवरा-

धीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलपरोळ्-गण्डाद्यनेक-नामावली-समलङ्कृतर् अप्प श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल तलकाडु**-गोण्ड भुज-बळ **वीरगङ्गविष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवर**-विजयराज्यप्रवर्द्धमानमाच-न्द्रार्कतारं सलुत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवी ॥

जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी-
घन-वृत्त-स्तन-हारनुग्र-रण-धीरम्मारनेनेन्दपै ।
जनक तानेने **माकणब्बे** विबुध-प्रख्यात-धर्म्म-प्रयु-
क्ते निकामात्त-चरित्रे तायेनलिदेनेच महा-धन्यनो ॥
उत्तमगुणततिवनिता-। वृत्तियनोळकोण्डुदेन्दु जगमेल्ल कै-
य्येत्तुविनममळ-गुण-स-। पत्तिगे जगदोळगे **पोचिकब्बेये**
नोन्तळ् ॥

अन्ते निसिदेचि-राजन **पोचिकब्बेय** पुत्रं श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायकं द्रोहघरट्ट **गङ्गराजं** चोळन-सामन्तर् **इडियमं** मोदलागि तळकाड-वीडिनोळ् पडियिप्पन्तिर्द्दु चोळं कोट्ट नाड कुडदे कादि कोळ्ळिमेने विजिगीषु- वृत्तियिन्देत्ति वलमेरडु सार्चिदल्लि ॥

इत्तण भूमि-भागदोळ् अदन्यरदेके भवत्प्रताप-सं-
पत्तिय वर्ण्णना-विधिगे **गङ्ग**-चमूप-जिगीषु-वृत्तियिन्द् ।
एत्तिद निन्न कय्य निशितासिय तेमोने वेन्न-वारनेत्-
तुत्तिरे पोगि **कञ्चि**-गुरि-यप्पिनमोडिद **दामने**य्दने ॥

आन् ओन्दे-मेय्योळ् एय्दि **नरसिंग-वर्म्म**-मोदलाद चोळन-सामन्तर् एल्लर वेड्कोण्डु **नाड्** आदुदू एल्लमनेक-च्छत्रम्माडि कुडे कृतज्ञं **विष्णु** नृपति मेच्चिदेम् वेडिकोळ्ळिमेने ॥

अवनिपनेतगित्तपनेन्-। दवरिवर-वोलुळ्दि वस्तुवं वेडदे भू-
भुवनम्बणिणसे **तिप्पूर** । वृत्तियं वेडिद जिनार्च्चन-लुब्धम् ॥
अन्तु वेडि कुडे पडेदु गाजल्रु-कुडुगेरेय् ओळगाद **तिप्पूर**

वृत्तियं **शकवर्ष १०३९ नेय हेमण(ल?)म्बि-संवत्सरद उत्तरायणसंक्रमणदन्दु** तम्म गुरुगलु **श्रीमूलसङ्घद काणूरग्गणद तित्रिणिक गच्छद श्रीमन्मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** काल कर्च्चि धारापूर्व्वक माडि बिट्ट दत्ति ॥

प्रियदिन्दितिदनेय्दे काव पुरुषर्ग्गायुं महाश्रीयुं अक्-
के इदं कायदे काव्य पापिगे कुरु-क्षेत्रोर्व्वियोळ् वाणरा-
सियोळ् एक्कोटि-मुनीन्द्रर कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्ददोन्दु-
अयसं सार्ग्गुमिदेन्दु सारिदपुव् ई-शैलाक्षरं सन्ततं ॥

[EC, III, Malavallı tl, n° 31]

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पोय्सल राजाओंके वंशकी प्रशंसा। इसी वशमें विनयादित्य उत्पन्न हुआ उसकी प्रशसा । उससे और उसकी पत्नीसे एरेयङ्ग उत्पन्न हुआ । उसकी पत्नी एचलदेवी । उनसे बल्लाल, विष्णु, और उदयादित्य उत्पन्न हुए। उनमेंसे बीचके विष्णुने पूर्व समुद्रसे पश्चिमतक सारी पृथ्वीपर कब्जा किया। उसके पराक्रमकी ज्वालाओंसे मजबूत छोटे शाही किले कोयतूर, तलवनपुर (जो कि रायरायपुरका ही दूसरा नाम है) नष्ट हो गये।

उस समय वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन होय्सलदेव अपनी चरमोन्नतिपर पहुँच कर राज्य कर रहे थे। एचि-राजाके पिता मार, माता माकणब्बे और पत्नी पोचिकब्बेकी प्रशसा। उनके पुत्र महाप्रधान एव दण्डनायक गङ्गराज हुए।

चोलके अधीनस्थ शासक इडियम और दूसरे लोगोंने जब चोल राजाके दिये हुए प्रदेशको देनेसे इन्कार कर दिया तब गङ्ग-चमूप (गङ्गराज) ने उनसे वह प्रदेश लडाई लड़कर ले लिया। अकेले ही गङ्गराजने नरसिंग वर्म्म और

चोलके अधीनस्थ अन्य तमाम विपक्षी शासकोंको भगा दिया और नाड देशको एक छत्रके नीचे लाकर विष्णुवर्धनको सौंप दिया, जिसपर उसने गङ्गराजसे अपनी इच्छाके माफिक कोई वर माँगनेको कहा। उत्तरमें गङ्गराजने तिप्पूर माँगा।

इस प्रकार इच्छानुसार माँगे हुए और दिये हुए तिप्पूरका, जो कि गाजलूरु और गौडुमेरीके बीचमें है, मूलसंघ, काणूर गण और तिन्त्रिणिक-गच्छके मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवको दान कर दिया।]

२६४

चामराजनगर—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०३९=१११७ ई०]

[चामराजनगरमे, पार्श्वनाथस्वामीकी बस्तीके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छन।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम्॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डळेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलेपरोळ्गण्डाद्यनेकनामा-वलीसमलकृतरप्प श्रीमद्भुजवल **वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन विट्टिग-होय्सल-देवरु गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिर कोङ्गाळ**गागि एकच्छत्रछयेयिं **तलेकाडलु** कोळाल-पुरदलु सुख-सङ्कथा-विनोददिं राज्य गेय्युत्तमिरे।

श्रीमत्स्वामि**समन्तभद्र**मुनिपो **देवाकलङ्क**स्तुतः
श्री**पूज्याङ्घ्रि**रुदात्तवृत्तनिलयो श्री-**वादिराजाम्बुधौ**।
आचार्यो **द्रविडान्वयो** जिनमुनिश्श्री**मल्लिषेण**-व्रती
श्रीपालः परिपालिताखिलमुनिस्सोऽ**नन्तवीर्य**क्रमः॥

जिननिष्ट-दैवमजितं। मुनिपति गुरु पोय्सळेशनाळ्दनेनल् सद्
विनुतं माडिसिदं श्री-। जिनगृहम पुणस-राज-दण्डाधीशं॥

मित्र-कुलाब्धि-वर्द्धन-सुधांशु विरोधि-बलान्तकं महा-
मात्य-कुलोद्भवं सकळशासनवाचकचक्रवर्त्ति लो-
कत्रयवर्त्तिकीर्त्ति **पुणिसम्म**-चमूपनवङ्गे शुद्ध-चा-
रित्रे पवित्रे पोचले मनः-प्रिय-वल्लभे तत्तनूभवर् ॥
चावणनाश्रितामर-महीरुहनुद्धतमन्त्रिमन्त्रविद्-
रावणनातनिं किरिय कोरपनन्वितसत्कळा-कळा- ।
पावृत-बोधनातननुजं सुजनाग्रणि नागदेवना-
ज्ञावनतान्य-मन्त्रि-निचय कवितागुण-पङ्कजासनम् ॥
पुणिस-चमूपनेम्बेसेव शासन-वाचक-चक्रवर्त्तिगेन्-
तेणिसलोड पोगर्त्ते तनगागिरे पुट्टिद **चामराज** ना-
कण कुमरय्यनेम्ब रतुन-त्रय-मूर्त्तिय पुत्रनोप्पिदं ।
पुणिसम-दण्डनाथनुदितोदित-चाम-चमूप सम्भवम् ॥
अवरोळगे पिरिय चावन । युवतियरप्परसिकव्वेग चौण्डलेगं ।
भुवन-प्रसिद्धरात्मोद्- । भव [रादर् प्] **पुणिस**मय्यनुं बिट्टिगनुं
कोळनेन्तम्भोजमुणमल् नलिदु महिमेवेत्तिप्पुवन्तागळु श्री- ।
निळय विख्यातवृत्त **पुणि**सेगनवनिं बिट्टिगं पुट्टे मित्रर्ग्-
गळिगेल्ल सय्प्"""उद्भविसितखिळ-भव्य-व्रज नाडेयु निश्-
चळ-चेतोजातरादर्द्धरेयोळेसेदुदन्ता-महामात्य-गोत्रम् ॥
चावङ्ग सत्प्रियदिं । भावकियेनिपरसिकव्वेग सुतनोगेद ।
केवळमे नेगर्द्द पोय्सल- । भू-वनितेश्वरन सन्धिविग्रहि **पुणिसं** ॥
तोदवनदिर्प्पि **कोङ्ग**रनडङ्गिसि **पोलुवरं** पोरळ्चि मा- ।
णदे **मलेयाळ**रम्मडिपि **काळ**-नृपालन तोळ विक्रमम् ।
बेदरिसि पोक्कु नील-सिळेयं जयलक्ष्मिगे कीर्त्ति[···] मा-

डिद विभु **विट्टि-देवन** महा-सचिव **पुणिसं** वळाधिकम् ॥
अदटिं पोय्सळ-भूपनोर्म्मे वेस ···नीळाद्रियं कोण्डु तन्न- ।
ओदविन्दं मलेयाळरं कदनदोळ् वेङ्कोण्डु तत्साहसा- ।
भ्युदयं कैकोळे **केरळा**धिपतियागिर्द्दम् वयल्-नाडन ।
पदपिं काणिसि कोण्डनिन्तु **पुणिस**-श्री-दण्डनायाधिप ॥
केट्ट नियोगि बिट्टु मोदलिल्लदे वन्द कृषीवल मोदल् ।
गेट्ट किरातनोलगिसलारदे सेवकनागे गेट्टुदम् ।
कोट्टु निरन्तरं जगमनिन्तभिरक्षिसुतिर्प्प पेम्पोडम्-
वट्टिरे दण्डनाथ-**पुणिसं** नेगळ्दं भुवनान्तराळदोळ् ॥
दरमिर····लीयदे ग- । गर परियिं गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सा-
सिरद वसदिगळनाळङ्करिसिदपं **पुणिस**-राज-दण्डाधीशम् ॥

स्वस्ति श्रीमतु **सक-वरुष १०३९ नेय दुर्म्मुखी-संवत्सरद जेष्ठबहुळ १ व** मूलार्क्कवारदन्दु तुलारासिय बृहस्पति-लग्नदल्लु एण्णे-नाड अरकोत्तारदल्लु श्री-सन्धि-विग्रहि दण्डनायक**पुणिस**मय्य माडिसिद त्रिकूटद-वसदियोळगागि वसदिगळ्गे बिट्ट गद्दे आ-ऊर हडुवल्लु अण्ण-मारेय-गेरेय केळगे········खण्डुग हट्टके गुळि १००० आ-ऊर तेङ्कण हेग्गेरेय कीळेरियल्लु गद्दे खण्डुग ऐदके गुळि ५०० बेद्दले ··· ··· हरदरि खण्डुग एरडक्के ९ गुळि ४००० आ-ऊर हळ्ळि सहित जक्कि-कोळग धर्म्म-गोळ दान-गोळग कळ्दु········गुळि ओन्दु होरें गाण-दलोम्मान एण्णे तोण्टद गुळि १०० आ-ऊर बडगण कोडेयनहळ्ळि सहित·······**पुणिस**-जिनालयके धारा-पूर्व्वक माडि बिट्ट दत्ति (रीतिके अनुसार अन्तिम श्लोक)

वसदिगे विट्टी-धर्म्मम- । न् ओसेदु करं सल्सिदिर्द्दं····।
····· ············।····ब्राह्मणन कोन्द गति समनिसुगुं ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा या स्तुति । इस समय अनेक पदोंसे अलङ्कृत वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन विट्टिग-होय्सलदेव कोङ्गु तककी गङ्गवाडि ९६००० की जमीनके ऊपर तलकाड और कोळाल-पुरमें सुखसङ्कथा-विनोदसे राज्य कर रहे थे ।

समन्तभद्र, देवाकलङ्क, पूज्यपाद, वादिराज, द्रविडान्वयके मल्लिषेण, श्रीपाल, और अनन्तवीर्य (इनका वर्णन किया गया है)। पुणस राज-दण्डाधीशके देव जिन थे, गुरु अजित मुनिपति थे, और पोय्सळ राजा उनका शासक था। उन्होंने एक जिनमन्दिर वनवाया। पुणिसम्मकी पत्नी पोचले थी। उनके पुत्र चावण, कोरप, और नागदेव थे। उनको क्रमसे चामराज, नाकण, और कुमरय्य भी कहते थे। वे रत्नत्रयमूर्तिके समान थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र चावण तथा उनकी पत्नियों अरसिकब्बे और चौण्डलेसे पुणिसमय्य और विट्टिग उत्पन्न हुए। चावन और अरसिकब्बेका पुत्र पोय्सळ राजाका सान्धि-विग्रहिक मन्त्री पुणिस हुआ। विट्टिदेवका महा-सचिव पुणिस था। विट्टिदेवने तोद लोगोंको डरा रक्खा, कोङ्ग लोगोंको भूगर्भमें भगा दिया, पोलुव लोगोंको कत्ल कर डाला, मलेपाळ लोगोंको मार डाला, काल नृपतिको भयभीत कर दिया और नील-पर्वतपर जाकर उसकी चोटीको जयलक्ष्मीके स्वायत्त कर दिया। पुणिस-दण्डनाथाधिपने एक-वार पोय्सल राजाकी आज्ञा मिलनेपर नीलाद्रिपर कब्जा कर लिया और मलेयाल लोगोंका पीछाकर उनकी सेनाको कैदी बना लिया और इस तरह वह केरलाधिपति बन गया और इसके बाद फिर खुले मैदानमें आ गया। जो व्यापारी बिगड गये थे, जिन किसानोंके पास वोनेके लिए बीज नहीं था, जिन हारे गये किरात-सरदारोंके पास कुछ भी अधिकार नहीं रह गया था और जो उसके नौकर हो गये थे, तथा सबको जिसका जो-जो नष्ट हो गया था वह सब उसने दिया और उनके पालन-पोषणमें मदद की। विना किसी भय-सञ्चारके, गङ्गोंकी ही तरह, उसने गङ्गवाडि ९६००० की वसदियोंको शोभासे सज्जित किया।

पुण्णे-नाड्के अरकोट्टारमें अपने द्वारा बनवाई गई त्रिकूट बसदिकी बसदियोंके लिये उसने भू-दान किया।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl, n° 83.]

२६५

मुगुलूर—कन्नड़

[वर्ष हेमलम्बी [१११७ ई० ? (लू० राइस)]

(इस लेखकी पहली १४ पंक्तियाँ इसी नामके तालुकेके ३८० वें लेखकी पंक्तियोंसे मिलती हैं)

..........पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवरु अवर शिष्यरु **वासुपूज्य-देवरु हेमलम्बि**-संवत्सरद वैशाख-बहुल त्रयोदशी-बुधवारदन्दु सल्लेखन-समाधि-मरणदिं मुडिपि स्वर्गक्के सन्दरु मगलमहा श्री श्री श्री

[द्रमिल संघान्तर्गत नन्दिसंघके अरुङ्गलान्वयकी प्रशंसा। पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके शिष्य वासुपूज्य-देवने (उक्त मितिको), सल्लेखना धारण करके, देहत्याग किया और स्वर्गको पहुँचे।]

[EC, V, Hasan tl, n° 131.]

२६६

हळेवीड—संस्कृत कन्नड-भग्न

[काल लुप्त, लगभग १११७ ई०]

[इसका लेख नहीं है, मात्र 'Mysore ins Translated' में नं० ११७ के शिलाशासनमें लुई राइसके द्वारा अनुवाद[1] दिया हुआ है]

[लेखमे सर्वप्रथम जिनेश्वर पार्श्वनाथको लक्ष्य करके मङ्गलाचरण है। पश्चात् राजा विष्णुवर्द्धन और उसके मन्त्री गङ्गराजकी प्रशंसा है।]

[Mysore ins translated, n° 117, tr']

---

१ अनुवाद लम्बा होनेसे मूल लेख भी लम्बा मालूम पड़ता है।

२६७

निदिगि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ४२ वि. चा०=१११७ ई०]

[निदिगि (विदरे परगना)में, दोड्डमने नविलप्प-गौडके खेतमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चाळुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रिभुवन-मल्लदेवर** विजय-राज्यमु····त्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि ।

उत्तममप्प·······················तोम्- ।
भत्तरु-सासिरं विषयमाप्तननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रन् ।
गात्त-जय जयं जिनमत मतमागिरे सन्ततं निजो- ।
दात्ततेयिन्दमा-**दडिग-माधव**-भूभुजराळ्दरुर्व्वियम् ॥
उत्तर-दिक् तटावधिगे तागे म····मूड तोण्डे-ना- ।
डत्तपराशेगम्बुनिधि चेर्वोळेयिप्प····कोङ्गु म- ।
त्तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत **गङ्गवाडि**-तोम् ।
बत्तरु-सासिरं-दले माडिदरिन्तुटु गङ्गरुञ्जुगम् ॥

····गंगानिं भय- । मिल्लद **हरिवर्म्म विष्णु**-नृपानिं निजदिं ।
बल्ले **तडङ्गाल्-माधव**- । नल्लिं बळि **चुर्च्चुवाय्द-गङ्ग**-नृपाळं ॥
श्रीपुरुषं शिवमारं । भूपाळकृतान्त भूपना-**सयिगोट्टम्** ।
द्वीपाधिपरोळरि-नृप- । कोपानल-शिखेयेनिप्प **विजयादित्यम्** ॥

म-येरिद **मारसिङ्ग**ना- । **कुरुळ-राजिगं** पेसर्वेत्ता- ।
मरुळं तन्नृप-तिळ्कन । पिरियमग **सत्यवाक्य**नचळितसौर्य्यम् ॥
गर्व्वद-गं....वसुधेयो- । ळोर्व्वने कलि चागि शौचि **गुत्तियगङ्ग**म
दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि **राचमल-भू**-नृप-तिलकम् ॥
तेङ्गं मु....हसिय कौ- । वुङ्ग पिडिदडसि कीळ्वना-मद-करिय
पिङ्गद निलिसुव साहस- । तुंग केवळमे नेगळ्द **रक्कस-गङ्गम्** ॥
इन्तेनिसि नेगळ्द गङ्ग-वशोद्भवरोळा-दडिगन मग **चुच्चुवाय्द-गङ्ग**नातन सुतं **दुर्व्विनीत**नातन तनेय **श्रीविक्रम**नातन पुत्र **भूविक्रमं** । तत्सूनु **श्रीपुरुष-महाराजम्** । तत्-तनेयं **सिवमार-देवम्** । तत्-तनूभव**नेरेय**....तत्पुत्रं **बूतुगवेम्मडि** । तदात्मजं **मरुळ-देवं** । तदनुज **गुत्तिय-गङ्ग**नातन मर्म्म **मारसिंग-देव**नातन...ग क....ग-**देव**नातनमग **वम्र्म-देव**निन्तु गंग-वशोद्भवरु राज्य गेय्ये ।

दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुल-सधरणः ।
श्री-मूलसघ-नाथो नाम्ना श्री **सिंहनन्दि**-मुनिः ॥

श्री-मूलसघ-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर-कोण्डकुन्दान्वय-ल- ।
क्ष्मी-महितं जिन-धर्म्म-ल- । लाम **क्राणूरग्गणं** जनानन्द-करम् ॥

आ-गणदन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ मालिकेवामराद्रौ
तिळकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृताशौ ।
इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी-निकायः
समजनि जिनधर्म्मो निर्म्मलो वाळचन्द्रः ॥

अवर शिष्यरु ।

विमल-श्री-जैनधर्म्माम्वर-हिमकरनुयत्-त्तपो-राज्य-लक्ष्मी- ।

रमण भूमण्डलाधीशनुमुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं ज- ।
गम-तीर्थं भव्य-वक्त्राम्बुज-खरकिरणं श्री-**प्रभाचन्द्र-सिद्धा-** ।
न्त-मुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर विशद-यशो-वेष्टिताशा-विभागम् ॥

अवर शिष्यरु ।

गुणियेने जिनमत-रक्षा- । मणियेने कवि-गमक-वादि-वाग्मि-प्रवरा- ।
ग्रणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने **गुणनन्दि-देव**रेसेदर्द्धरेयोळ् ॥

तत्-सधर्म्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियल्के' ' 'विरुदं माण् माणेले **सांख्य** वा- ।
ग्वळम नच्चदे नीनडङ्गेडरदिर् **चार्वाकनैय्यायिका** ।
मलेयल् वेडिरु मट्टमेके चलदिन्दी-वन्दप केम्मनण्- ।
डलेयल् श्री-**गुणचन्द्र-देव**नमळ वादीभ-कण्ठीरवम् ॥

तत्सधर्म्मरु ।

गङ्गा-वारि-सु-शैवळ सुर-करी दानार्द्र-गण्ड-स्थळः ।
शम्भुः कण्ठ-विलग्न-घोर-गरळश्चन्द्रः कळङ्काङ्कितः ।
कैलासो वन-वल्लरी-परिवृतस्साम्य कथं वच्म्यहम् ।
कीर्त्या. सह **माघनन्दि**-यमिनश्चन्द्रातपोद्यच्छ्रिया ॥

आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजन शिष्यरु ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-कल्याणाष्ट-महा-प्रातिहार्य-चतुस्त्रिंशदतिशय-विराजमान-भगवदर्हत्परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गत-सदसदादि-वस्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवण-सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वार्द्धौत-विशुद्धेद्ध-बुद्धि-समृद्धरु सकळ-भुवन-प्रसिद्धरु शम-दम-यम-नियम-नियमितान्तःकरणरु वाक्सुन्दरी-स्तन-मण्डन-रत्नाभरणरुमप्प श्रीमत्**प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव**रेन्तेन्दडे ।

आशीदाशान्तराळ-प्रथित-पृथु-यशो-व्योम-गंगा-तरंगः ।
चञ्चच्चारित्र-धात्री-भवदति-ललितोदार-गम्भीर-मूर्त्तिः ।
वाक्-कान्तोत्तुंग-पीन-स्तन-कळश-लसन्नूत-चूत-प्रवालः ॥
सिद्धान्त-क्षीर-नीराकर-हिमकिरणश्श्री-**प्रभाचन्द्रदेवः** ॥

अभिनव-गणधर-रूपं । त्रिभुवन-जन-विनुत-चरण-सरसिरुह-भृङ्ग ।
शुभ-मति-त्रैविद्यास्पद-। नुभय-कवीन्द्रोत्तम **प्रभाचन्द्र**-बुधम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

शशि-विशद-कीर्त्ति निर्म्मद-।नसदृश-गुण-रत्न-वार्धि **काणूर्ग्गण**सद्-।
विसरुह-वनार्कनेम्बुदु । वसुमतियोळ**नन्तवीर्य्य**सिद्धान्तिगरम् ॥

तत्सधर्म्मरु ।

मन-वचन-काय-गुप्तिय-। ननुनयदिं तळेदु पञ्च-समितिय वशदिन्-।
दनुवशनाद तपोनिधि । **मुनिचन्द्र**-व्रतिपनखिळ-राद्धान्तेशम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्त्तेय तळेद श्रीमत्-**प्रभाचन्द्र**-सिद्धान्त-देवर गुड्डं भुज-बळ-गंग-पेम्माडि-**वर्म्म-देव** ।

वळवद्-वैरिगळ पडल्पडिसि गेल्दुश्राजियोळ् माण्दने ।
चलदिन्द परियिट्टु वैरि-पुरमं तत्-कोटेयं तद्-मही-।
तळमं कोण्डु वरित्रि वण्णिसुविन श्री **वर्म्म-देवं** मही-।
तळम तोळ्-वलदिं निमिर्च्चिदनिदेम् पेम्माडि शौर्य्यात्मनो ॥
भरदिन्दान्तदटङ्क । शरणेन्द नृपङ्गेरदु वन्द नरङ्गम् ।
सुरगिरि वज्रागार सुर-भूज **वर्म्म-देव**नदटरदेवम् ॥

इन्तेनिसिद **वर्म्म-देव**न पट्ट-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादाम्बुज-मत्त-भृङ्गी गुणावली-भूषण-भूषिताङ्गी ।
नितम्बिनीना कळशायमाना विराजते **गङ्गमहाधिदेवी** ॥

निजवेनिपी-नेगर्त्तेय महागतिगुत्सवमं निमिर्च्चुवा-।
तमजरेनिसिर्द्द तम्मुतोडहुट्टिदरोप्पुव मार········।
स-जयदे **सत्य-गङ्गनृप**नु **कलि-रकस-गङ्ग-देव**नुं ।
भुजबळ-गङ्ग-भूभुजनुमार्ज्जिसिदर्ज्जसमं निरन्तरम् ॥
स्थिरने मेरु-गिरी-द्रनोळ् सेणसुव गम्भीरने वार्धियोळ् ।
पुरुडिर्प्पं कलिये सुरेन्द्र-सुतनं मेच्चं महा-चागिये ।
सुर-भूजक्कोरे-गट्टुव चदुरने पाञ्चाळन गेल्दनन्-।
दिरदी-धारणि वण्णिकु रण-जय-प्रोत्तुगन गङ्गनम् ॥
नुडिदुदे नन्नि माडिदुदे शासनमित्तुदे राम-रेसु मार्-।
प्पिडिदुदे वज्र-लेपसुरदिर्द्दुदे मृत्यु परोपकारदोळ् ।
नडेदुदे बट्टे सद्गुणमे मेय्येने निन्नवोलिन्तु नीतियोळ् ।
नडेव नृपेन्द्रनावनिळेयोळ् **कलि-गंग**-भूपती ॥

आतन तम्मम् ।

गज-रिपु-विष्टरादि-विभवोदय पार्श्व-जिनेन्द्र-पाद-पं- ।
कज-मद-भृङ्ग-गङ्ग-कुळ-मण्डन-दण्डित-वैरि-वर्ग भा- ।
वजनिभ-मूर्त्ति दिग्वलय-वर्त्तित-कीर्त्ति समस्त-धात्रियोळ् ।
भुजबळ-गङ्ग-भूप निनगार् दोरे मण्डळिकैक-भैरव ॥

आतन-पट्ट-महादेवि ॥

पट्टद····रननुजं । पट्ट····भूपङ्गे गङ्गनाडिगे तळेदळ् ।
पट्टमनेन्दडे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु ············· ॥
गङ्ग-महादेवियग्गं **भुजबळ-गङ्ग-देव**नग्र-तनूजनेन्तेन्दडे ।
कलियनदिर्द्द····एन्दु निमृदेत्तिद बाहुवे········ ।
····छळद्········मरे·····‥·सले······· ।

····नासे· गेयन्····अळवि·········नन्निय-गङ्गनिन्तु मण्डळिक ।
····प्रद····वेसरं देसेयन्तु वरं निमिर्च्चिद ॥
····दाङ्गा-ल्ते पर्व्वि-देण्-देसेयोळं विग्रुजय-स्तम्भविन्त् ।
इवेनल् दिग्गर्जवर्त्यि············कट्टल् केट्टिदुत्तग-हस्- ॥
तवनान्तन्य-वळक्के दोर्प्प-नेवर्दि कोदण्डदत्तङ्ग नी- ।
ळुव नीन. ये गङ्गनात्मकर ·· सग्राम-रङ्गाग्रदोळ् ॥
जस·······················अखिळाशा-देवतापाङ्ग-रश्- ।
मि-सहस्र चमर करीन्द्र-रिपु····विक्रम·········आ- ।
गे सु-साम्राज्य····तामिवृद्धि विभव मेच्चुत्तिरल्···· ।
·········इरे सत्य-गङ्गनेसेदं विश्वावनी-भागदोळ् ॥

स्वस्ति सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वर कुवळाळपुरवराधीश्वर नन्दगिरि-नाथ·········मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-विरिञ्चनं पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद विचकिळामोद नन्निय ··· त्तरंगं गग-कुळ-कुवळय····वेन्द्र दर्प्पोद्धताराति-वनज-वन-वेदण्डं कुसुम-कोदण्ड गण्डरगण्डं दुड्डरगण्ड नामादि-समस्त ·······श्रीमन्नन्निय-गङ्गं नेलेवीडिनल्लु सुख-संकथा-विनोददिं राज्य गेय्युत्तिरे श्रीमतु कळंबूरु-नगराधिपति पट्टणस्थ ··· ··· माडिसिद वसदियेन्तेन्दडे ।

इदु भू-देवते होत्त होङ्गळशमो श्रेयस्सुधा-भार-पू- ।
रदिना ················त्रय-मण्डना- ।
स्पदमो तानेन्दु ······ · · ······लोक मनो- ।
मुददिं वण्णिसे वर्म्मि-सेट्टि जिन-चैत्यावासमं माडिदम् ॥

भुवन······················महत्त्वर्दि·········चातुर्व्वर्ण-सयक्क-भीष्टम-नित्तेत्तिसि जैन-गेहमनुत्साह-सन्दोह·········

....।

....दनुजनिष्ट-शिष्ट-जन-कल्प-कुजं सदनोपशोभिता-।

भ्युदय-विभूतिगास्पदनुदात्त-कळाविपनीततनेम्त्र....।

.......उदितोदितं नेगळ्दनी-वसुधा-तळदोळ् निरन्तरम् ॥

वर्म्मि-सेट्टिय वनिते ।

तनगनुवरेयेनिसि जग-। जन-सस्तुत-शील-गुण-गणाळ....।

....।..................राजिसुतिर्द्दळ् ॥

अवरिर्व्वर्गमगण्य-पुण्य-जनित-श्रीरायुरारोग्य-वै-।

भव-सम्पन्-महिमौघ...............................।

....माडुतिर्-।

प्प विळासं वेरसोळ्पुवेत्तनवनी-चक्र मन-गोळ्विनम् ॥

अन्तवर् म्माडिसिद वसदिय पूजा-विधान.......................षियर्ग्गाहार-दानकं **श्रीमच्चालुक्य-विक्रम-कालद ४२ नाल्वत्तेरडनेय मनुमथ-संवत्सरदुत्तरायण-संक्र** ....पुण्यतिथियन्दु श्रीमन्-**नन्निय-गङ्ग-पेर्म्माडि-देव**निन्द कुडलु पडेदु **वर्म्मिसेट्टियर् म्मेषपाषाण-गच्छाम्बर-शरच्चन्द्र**...**शुभकीर्त्ति-देव-भट्टारकर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं सर्व्व-नमस्य सर्व्व-बाधापरिहारवागि वसदिगे कोट्ट वृत्ति

(आगेकी ५ पंक्तियोंमें दान और सीमाकी चर्चा है तथा अन्तिम वाक्य-पद्धति)

वहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें नं० २७७ शि० ले० के अनुसार ही गङ्ग राजाओंकी वंशावली तथा क्राणूर-गच्छके सिंहनन्दी आदि आचार्योंकी परम्परा दी हुई है। अन्तमें जिस बातके लिये यह लेख लिखवाया गया है वह यह है—

गङ्ग महादेवी और भुजबल गङ्ग-देवका (प्रशंसासहित) ज्येष्ठ पुत्र नन्नियं गङ्ग था, (जिसका छोटा भाई) सत्य गंग था।

जिस समय सत्यवाक्य कोङ्गुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराज परमेश्वर नन्निय गङ्ग सुख-शान्तिसे राज्य कर रहे थे कलम्बूरु-नगराधिपति वर्म्मि-सेट्टिने एक जिनमन्दिर खड़ा किया (इसकी प्रशंसा)। अपनी बनवाई हुई बसदिकी पूजा तथा ऋषियोंके आहारदानके लिये (उक्त मितिको) नन्निय-गाग-पेर्म्माडि-देवने (उक्त) भूमि दी और वर्म्मि सेट्टिने उसे लेकर मेष-पाषाण-गच्छके शुभकीर्त्ति-देव-भट्टारकको पाद-प्रक्षालनपूर्वक अर्पित कर दिया]

[EC, VII Shimoga tl n° 57]

२६८

श्रवणबेलगोल—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०३९=१११७ ई०]

[जै. शि. सं., प्र० भा०]

२६९

कम्बदहळ्ळि—संस्कृत और कन्नड

[शक १०४६, वर्ष विलम्बि (१०४० शक=१११८ ई० [लु. राइस])

[कम्बदहळ्ळि (विण्डिगनवले प्रदेश)के, कम्बदराय स्तम्भपर]

(दक्षिणमुख) भद्रमस्तु जिन-शासनस्य ॥

श्री-मूरस्थ-गणे जातश्चारु-चारित्र-भूधरः ।
भूपालानत-पादाब्जो राद्धान्तार्णव-पारगः ॥
आदावनन्तवीर्यस्तच्छिष्यो बाळचन्द्र-मुनि-मुख्यस्
तत्सूनुर्जितमदनस्सिद्धान्ताम्भोनिधिर्प्रभाचन्द्रः ॥
शिष्यं कलनेले(?)देवस्तस्याभूत्तन्मनीषिणस्सूनु-
र्विध्वस्तमदनदर्प्पो गुणमणिरष्टोपवासिमुनिमुख्यः ॥

तन्मौखो(?)विबुधाधीशो **हेमनन्दि**मुनीश्वरः ।
राद्धान्त-पारगो जातस्सूरस्थ-गण-भास्करः ॥
तदन्तेवासिनामाद्यो माद्यतामिन्द्रिय-द्विपाम् ।
यति**र्विनयनन्दी**ति विनेताभूत्तपोनिधिः ॥

नाडोळगिदेसेद गोसने । वाडङ्गळोरेगिदन्देमुनिवनितेयरोळ्
कुडिदनेम्बी-नुडियद- । नेडिपुदेले **विनयनन्दि**-देवरचरितं ॥
ओन्दने केळि बुध-जन- । मेन्दिङ्गं साक्षि नीमे वसुधा-तळदोळ्
सन्दिळ्द वधू-निवहं । तन्देय वधुवेन्दपोम् प्रियम्वद-दानि ॥
व्रत-समिति-गुप्ति-गुप्तो । जितमोह-परीषहो बुध-स्तुत्यो ।
हतमदमायाद्वेषो यतिपति तत्सूनु**रेकवीरो**ऽभूत् ॥

(पूर्वमुख) दानद पेम्पु दीन-जनकोटिगे कल्प-कुजाळि नोडे सन्-
मानद पेम्पु भव्य-जन-सङ्कुळमन्तणिपित्तु दान-सन्-
मान-तपोपवास-गुण-सन्ततियं सले ताळ्दिदर्ज्जगन्-
मानिगळे**कवीर**-मुनि-नाथरे जङ्गम-तीर्थवल्लरे ॥

तस्यानुजस्सकळ-शास्त्र-महार्ण्णवोऽभूद्
भव्याब्ज-षण्ड-दिनकृन्मुनि-पुण्डरीको ।
विध्वस्त-मन्मथ-मदोऽमळ-गीत-कीर्त्तिश्-
श्री-**पल्ल-पण्डित**-यतिर्ज्जितपापशत्रुः ॥

पल्लकीर्त्तिर्य्यथा रूढः पुरा व्याकरणे कृती ।
तथाभिमान-दानेषु प्रसिद्धः **पल्ल-पण्डितः** ॥
पल्ल-पण्डित-नागेन ददता दानमद्भुतम् ।
भूषित कलि-कालेऽस्मिन् गङ्ग-मण्डल-काननं ॥

सूरस्थ-गण-गीर्व्वाणि-मार्ग्गमालम्बतेऽधुना ।
दान-प्रभा-प्रकाशोऽयं **पल्ल-पण्डित**-चन्द्रमाः ॥
दान-वारि-परिपूरित-सिन्धुर्नष्टमोहतिमिरो गुण-बन्धुः ।
भव्यलोककुमुदाकरचन्द्रः **पल्लपण्डित**मुनिर्हततन्द्रः ॥
नानादेशसमागतेन गुणिना लोकेन संसेवितो
जीर्ण्णेनाभिनवेन नूतन-तनु-श्री-लक्षणैर्ल्लक्षितः ।
शुम्भद्भूरिगुणाल्यो मतिमता अग्रेसरो राजते
देशेऽस्मि**न्नभिमानदानि**कमुनिस्सर्व्वार्थ-चिन्तामणिः ॥
विद्वज्जनानन्दनकारणेन दानेन भक्त्या मुनि-पुङ्गवेषु ।
दिगन्तविश्रान्तयशोनिधानं विराजते पण्डित-पुण्डरीकः ॥

(उत्तरमुख) नानाभिमानिजन-दान-विधान-धीतो
धीमानशेषजनता-मनसोऽभिरामः ।
जातोऽभिमानि-पद-पूर्व्वक-दानि-नाम्ना
ख्यातः खलीकृत-महा-कलि-काळ-दोषः ॥
साभिमाने जनेऽभीष्टमभिमानमखण्डयन्
जातोऽ**भिमानदानी**ह यथार्थः **पल्लपण्डितः** ॥

अतिसयमागे दानदोळे वेर्व्वीरिदोळ्पुनयोक्तियेम्ब सन्-
मतियोळे पुट्टि शास्त्रदोळे दाड्डिवोगि विगेपमप्प सन्
नुत-गुणदोळियिन्दे मडलागि दिगन्तमनेय्दे **पल्ल-पण्-
डितर** विलास-कीर्त्ति-लते पर्व्विदुदुर्व्विगे चोद्यमप्पिनम् ॥
सुर-करिय काम-धेनुव । सरदभ्रद कान्तिय पुदुङ्गोळिसुत्तु ।
शरदमळचन्द्रविम्बद । दोरेगे मिगिल् **पालयकीर्त्ति देवरकीर्त्ति** ॥
दानमपरिमितमोळ्पभि- । मानं सत्कविते शास्त्रनिपुणते कीर्त्ति-

स्थानमेने सन्दरीगळ् । दानिगळभिमानदानिगळ् वसुमतियोळ् ॥
वननिधि-वेष्टित धात्रियो-। ळनवरतं नेरेद दीन-जनारिङ्गेल्लम् ।
धन-कनक माळपरस्सन्-। मनदिन्दं **पाल्यकीर्त्ति**-पण्डित-देवर् ॥
ए-त्रोगळ्वुदण्ण विबुध-ज-। नावळिगं वेडिदर्थि-जनकन्निच्चन् ।
देवतरु कुडुव तेर्रदन्-। तीवर्स्सले **पल्ल-पण्डितर्** व्वसुमतियोळ् ॥
(पश्चिममुख) पुडवियोळग्गळनेगळ्द दानिगळिन्निवरन्नरारो पेळ् ।
नुडियदिरारुम मरुळे कल्प-महीजद कोडिनन्ते कोड् ।
उडुगदे नग्न-भग्न-नट-गायक-दीन-जनक्के सन्तोसं-
बडे कुडुतिर्प्पे पेम्पिनळवच्चरिपार्प्तभिमानदानियोळ् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तलेकाडु-गोण्ड भुजबळ **वीर-गङ्ग होय्सळ-देवरु** सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पाद पद्मोपिजीवि महासमन्ताधिपति श्रीन्महाप्रधानि द्रोह-घरट्ट पिरिय-दण्ड-नायक **गङ्ग-राज तलेकाडं** कोळुवल्लि मुङ्गोळ बेडि-कोण्डु गेल्दडे मेच्चिदेम् बेडिकोळ्केने श्री-**विण्डिगनविलेय**तीर्त्थद्द्के तळ-वित्तियम्बेडे श्री**विष्णुवर्धन-होय्सळ-देवरु** कारुण्य गेय्दु कोडे कोण्डु **शक-वरिस *१०४६ विलम्बि सम्वत्**-सरद श्री**मूलसंघद देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** काल कर्च्चि धारापूर्व्वकम्माडि बिट्ट दत्ति पिरिय-केरेय तूबिन बडगण हळदिं तेङ्कक् कौङ्गिन तोण्ट ओळगागि बिट्ट गद्दे सलिगे मूवत्तु हळियमुन्दण लक्क-समु·············म्म गद्दमुं अन्दूर-कि [रि] यकेरेयुं पक्षोपवासि····· ··· बसदिय हडवण-देसे-वर । ई-धर्म्ममनळिदव गङ्गेय तडिय हदिनेण्टु-सासिर कविले कोन्द दोसदल्लि होद ॥

१ लेकिन शक १०४६=क्रोधि, विलम्बि=१०४०।

[जिनशासनकी समृद्धि-कामना। अनन्तवीर्य सूरस्थगणमें उत्पन्न हुए। उनके शिष्य बालचन्द्र मुनि उनके पुत्र प्रभाचन्द्र, उनके शिष्य कल्नेलेदेव, उनके पुत्र अष्टोपवासी मुनि उनके शिष्य हेमनन्दि मुनि। इनके शिष्योंमे एक विनयनन्दि नामक यति थे जिनके विषयमें नाड्-देशमे यह प्रवाद फैला कि वे शहरोंमें श्राविकाओंके पास जाते है; लेकिन यह प्रवाद सही नहीं था। विद्वानो, इस बातको सुनो कि इस विषयमें स्वयं तुम्हीं लोग साक्षो हो कि वे अपने पिताकी पत्नी (अर्थात् अपनी माँ) से जैसा वर्त्तन करते थे वैसा ही वर्त्ताव स्त्री-समुदायसे करते थे। उन अनन्तवीर्यका पुत्र एकवीर था जो अपने गुणोंसे 'जङ्गम तीर्थ' कहलाता था। उसका छोटा भाई पल्ल-पण्डित था। जैसे पूर्वकालमे पाल्यकीर्ति व्याकरणमें प्रसिद्ध था वैसे ही दान देनेमे यह प्रसिद्ध था। आगे उसके दानोंकी प्रशंसा की गई है, उसको नाम भी 'अभिमानदानी' और 'पाल्यकीर्त्तिदेव' दिये गये है।

जिस समय वीर गङ्ग-होयसल-देव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपना राज्य चला रहे थे; तत्पादपद्मोपजीवी गङ्गराज महाप्रधानको, तळेकाडुपर कब्जा करनेसे पहिले, उन्होंने कोई एक वर माँगनेको कहा। उत्तरमें गङ्गराजने विण्डिगन जिलेके लिये भूमि-दान माँगा और विष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवने उसको वह दिया। गङ्गराजने भी उक्त भूमि पाकर शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवके पादप्रक्षालन कर उन्हें सौंप दी। शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव मूलसघ, देसिग-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कोन्द-कुन्दान्वयके थे। शाप।

[EC, IV, Nagamangala tl, n° 19]

२७०,२७१

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड

[क्रमश. शक १०४१=१११९ ई० और
शक १०४२=११२० ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२७२

वङ्कापुर—कन्नड़

[वि० चा० का ४५ वाँ वर्ष (=शक १०४२=११२० ई० [फ्लीट]।

[बायें हाथकी ओरके शिलालेखमें करीब १७-१७ अक्षरोंवाली ३७ पंक्तियाँ हैं। इसमें एक दानका उल्लेख है जो मादिगवुण्ड और दूसरे गाँव-प्रमुखोंके द्वारा शुभकृत् संवत्सरमें, चालुक्य विक्रमके ४५ वें वर्षमें, किरिय वङ्कापुरके जिनमन्दिरको किया गया था।]

[IA, IV, 205, n° 7, a.]

२७३

मत्तावार—कन्नड

[बिना कालनिर्देशका पर संभवतः लगभग ११२० ई०]

[मत्तावारमें, पार्श्वनाथ-बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

मरुळहळ्ळि-जकवे हट्टिदेडे गे ···गन्ति मत्तवूरद् वसदि तपसु माडि सिद्धियादळु अव्वेय माजकन मग मारे[य] कल्ल निळिसिद

[मरुळहळ्ळिके जकव्वेके द्वारा प्रेषित गे······गन्तिने मत्तवूरकी बसदिमें तपश्चरण करके सिद्धि प्राप्त की। अव्वेय माजकके पुत्र मारेयने यह पाषाण स्थापित किया।]

[EC, VI, Chikmagalūr tl. n° 52]

२७४

सुकदरे—संस्कृत तथा कन्नड भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ११२० ई०]

[सुकदरे (होणकेरी परगना), लक्कम्म मन्दिरके सामने पड़े हुए पाषाणपर]

···· ··

·· ।

···········कल्पवृक्ष-सदृश कीर्त्यङ्गनावल्लभम्

श्री···························पुण्याकरम् ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

नमोऽस्तु ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारा-वतीपुर**वराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोळु गण्ड श्रीमत्रिभुवनमल्ल तलकाडु गोण्ड भुजबल·······**वर्द्धन पोय्सळ-देवरु** सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ···········व ।

जिननिष्टदेव्य**मजितं** । **मुनिपति गुरु पोय्सळेश**···········
एचले तायेनेल्केनेसे-। दनो ता **जक्कि-सेट्टि** यात्रेय-गोत्रपवित्र ।
·······नेगळ्द जक्कि-सेट्टिय गुरु-कुलमदेन्तेन्दडे ।
श्रीम**द्द्राविडसंघ**···············बळि-लीलेयिम् ।
श्रीम**त्स्वामि-समन्तभद्र**रवरिं **भट्टाकलङ्का**ख्य···· ।
··········· ····**हेमसेन**रवरिं श्री**वादिराजा**ङ्करन्त्
आमाहात्म्यविशिष्टरिन्द**जितसेन**············ ॥
····परम-मुनिय शिष्यर् । प्पापहर**र्म्मल्लिषेण-मलधारि**···।
····················र् । व्भूपालस्तुत्यरेसेदरवनीतळ्दोळ् ।

धनदोळ् धनद वि···· ।
साहसदिं चारुदत्त चागदोळे जीमूत **जक्कि-सेट्टि**···· ··· ।
······दानि विद्वज्-। जनविनुतं धर्म्मजलधिवर्द्धितचन्द्रम् ।
मनु-नीति-मार्ग्ग···· । ···········**जक्कि-सेट्टि** गोत्र-पवित्रम् ॥

अन्तप्प **जक्कि-सेट्टि** तम्मूर **सुकु**···········माडिसियदक्के बिट्ट दत्ति आवूर यीसान्यद केरेय कट्टिसि······केरेयु वसदियिं बडगल्लु वेद्दले वेदे खण्डुग एरडु मत्त · ····वायाव्यद किरुकेरे सहितवागियुं आ-ऊर देव-गोळग धर्म्म होरे-तिप्पे-सुङ्क गाणदलरवानेण्णे इन्तिवुम **शक-वर्ष**··········**संवत्सरद** ज्येष्ठ शु० १२ बड्डवार स्वातिनक्षत्रदन्दु

वसदि······कारणकवाहारदानक दयापाल-देवगें धारापूर्व्वकं········
(सदाका अन्तिम श्लोक) मङ्गलमहा श्री श्री नमोऽर्हत्पा··········।

··तन्नार्प्पिनि।

मनमं तन्न वसके तन्दु वळियं सत्-क्षान्तियं····न्।

अनेक-पुण्प-वरिष-प्रभावदिं भावदिं·············।

···॥

····सुर-दुन्दुभिगळ्सेये सुर-गणिकेय··········पोगळ्विनेगं॥

जक्कि-सेट्टिय तम्मं········

[जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय (अपनी हमेशाकी उपाधियों सहित), विष्णुवर्द्धन पोय्सळदेव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपने राज्यका शासन कर रहे थे:—

आत्रेय-गोत्रको पवित्र करनेवाले जक्कि-सेट्टिके 'जिन' इष्टदेव थे, अजित-मुनिपति गुरु थे, पोय्सल राजा थे और एचल माता थी।

उस प्रसिद्ध जक्कि-सेट्टिकी गुर्वावली निम्न भाँति है:—द्राविळ (ड़) में············स्वामी समन्तभद्र हुए,-उनके बाद भट्टाकलङ्क,···हेमसेन; उनके बाद वादिराज;····· अजितसेन; परममुनिके शिष्य, पापहर मल्लिषेण मलधारी।

जक्कि-सेट्टिकी और भी प्रशंसा। इस जक्कि-सेट्टिने अपने गाँव सुकदरेमें एक 'वसदि' और उसके दक्षिण-पूर्वमें एक तालाब बनवाया। 'वसदि' और सरोवरके खर्चके लिये (लेखमें वर्णित) भूमिका दान दिया। साथमें दक्षिण-पश्चिममें स्थित एक छोटासा तालाब, देवका 'कोलग' बोझोंका खर्च और खादके गड्ढे, और तेलके कोल्हुओंसे आधा मन तेल, ये सब चीजें उत्सवों और आहारदानके लिये दीं। ये सब चीजें दयापाल-देवको सौंप दीं।

जक्कि-सेट्टि और उसके छोटे भाईकी प्रशंसा।]

[EC, IV, Nagamangal tl., n° 103]

२७५

मुत्तत्ति—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका; बहुत करके लगभग ११२० ई०

[माधवराय मन्दिरके नवरंग मण्डपके चार स्तम्भोंपर]

(दक्षिण-पश्चिमी खम्भा) स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महामण्डलेश्वर **द्वारावतीपुरवराधीश्वरं** यादवकुलाम्बरद्युम (उत्तर-पश्चिमी) णि सम्यक्त्वचूडामणि तळेकाडु-गोण्ड भुजबळ वीरगङ्ग **विष्णुवर्द्धन**-पोय्सळ-देवरु **विनयादित्य**-दण्ड-(दक्षिण-पूर्व खम्भा)नायक माडिसिद होय्सळ-जिनालयक्के बिट्ट दत्ति श्री-मूलसंघ देशिय-गणद पो(पु)स्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद **श्रीमन्मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवर** शिष्यरु (उत्तर-पूर्वी खम्भा) श्री-**प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव**र्गे सङ्क्रान्तिव्यतीपातदन्दु काल कर्चि धारा-पूर्व्वक माडि बिट्ट दत्ति हिरिय-केरेय केळगे मोदलेरिय गद्दे हत्तु-सलिगेयदु ओन्दु सलगे तोण्टेयदु बसदिय मुन्तन इम्मडल्लु वेदलेयुम बळ्ळिगद्दमुम बसदिय बडगण...............
(दक्षिण-पूर्वी खम्भा) विनयादित्यालय

[(अपने उन्हीं पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-पोय्सळ-देवने (उक्त) भूमिका दान श्री-मूलसंघ, देशीय-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कुन्दकुन्दान्वयके मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवके शिष्य प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवको विनयादित्य-दण्ड-नायकके द्वारा बनवाये गये होय्सल-जिनालयके लिये किया ।]

[EC, V, Hassan tl., n° 112]

२७६

कोनूर (जि० बेलगाँव)—कन्नड़-भग्न

[विक्रमादित्य चालुक्यका ४६ वाँ वर्ष=११२१ ई०]

परिचय

[इस लेखमें रायणय्य नायक, मारय्य नायक, तथा कोण्डनूरुके दूसरे नायकोंके द्वारा किये गये दानका उल्लेख है। ये दान महातीर्थ तटेश्वरदेवके मन्दिरकी तरफसे किये गये थे। उस समय कुण्डी ३००० में महासामन्त राजा कार्त्तवीर्य राज्य कर रहे थे। इनकी उपाधियोंमें रट्ट-वंश बतलाया गया है। पूर्ववर्ती रट्ट शिलालेखोंकी अपेक्षा इनकी उपाधियाँ कलहोळी शिलालेखकी उपाधियोंसे ज्यादा मिलती हैं। इस लेखकी ४३ वीं पंक्तिमें उनका नाम 'कत्तमदेव' दिया हुआ है, और ये संभवत. कार्त्तवीर्य तृतीय है, जैसा कि आगेकी वंशावलीसे प्रकट होगा। कालकी पंक्ति घिस गई है।]

[JB, X p 181-182, p. *p* 287-292, t, p 293-298, tr, ins n° 8, *II part.*]

२७७

कल्लूरगुड्ड—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४३=११२१ ई०]

[कल्लूरगुड्ड (शिमोगा परगना)में, सिद्धेश्वर मन्दिरकी पूर्वदिशामें पड़े हुए पाषाणपर]

---

१ इस शिलालेखका लेख वही है जो शिलालेख नं २२७ का अन्तिम भाग है। केवल अंश-भेद है। २२७ नं का अंश पहिला है और इस लेखका अंश दूसरा है। पर यह अंश-भेद सूक्ष्मरीतिसे अवलोकन करने पर भी, सिवाय तिथि (काल)-भेदके, ठीक-ठीक नहीं मालूम पड़ता। अत लेख (जो २२७ वे शिलालेखका द्वितीयांश है) यहाँ नहीं दिया जा रहा है। पाठक अपनी बुद्धिसे ही उसे निश्चित करें, क्योंकि हमको उक्त (२२७) लेखमें 'रायणय्य नायक' तथा 'मारय्य नायक' ये दो नाम (जिनके दानका उल्लेख इस लेखमें है) कतई नहीं मिले हैं। 'कोण्डनूरु' का नाम अवश्य पाया जाता है, पर उसके अन्य 'नायकों'का कुछ भी पता नहीं। अत हमें सन्देह है कि २२७ वे नं० के शिलालेखसे भिन्न कोई दूसरा लेख इस २७६ वे नं० का होना चाहिये। सम्भव है वह गल्तीसे लिखे जानेसे रह गया हो, या मूल 'JBX' पत्रिकामें ही छूट गया हो। सम्पादक

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-देवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्त-मिरे । गङ्गान्वयावतारमेन्तेन्दोडे ।

सले **वृषभ-तीर्थ**-काल । सुललितमेने सकळ-भव्य-चित्तानन्दम् ।
कलि-काल-निर्जित श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धनं क्रमदिन्दम् ॥
सोगयिसुव-कालदोळ् की- । र्त्तिगे मूल-स्तंभमेनि**पयोध्या-पुर**दोळ् ।
जगदधिनाथं पुट्टिद- । नगण्य**निक्ष्वाकु-वंश**-चूडारत्नम् ॥
धरेगे **हरिश्चन्द्र**-नृपे- । श्वरनोर्व्वने कान्तनागि दोर्व्वलदिन्दम् ।
विरुदरनदिर्प्पि विद्या- । परिणतियिं नेरेदु सुखदिनिरे पलकालम् ॥

वृ० ॥ आतन पुत्रनिन्दु-हर-हास-निभोज्वल-कीर्ति सद्गुणो- ।
पेतनुदात्त वैरि-कुल-भेदनकारि कला-प्रवीणनुद्- ।
धूत-मळं सुरेन्द्र-सदृश **भरतं** कवि-राज-पूजितम् ।
ख्यातनतर्क्यपुण्यनिलयं सु-जनाग्रणि विश्रुतान्वयम् ॥

ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । **विजय-महादेवी** तनगे सतियेने विबुध-व्रज-पूज्यं भरत भा- । वज-सदृशं ताने सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥
आ-**विजय-महादेवि**गे गर्भ्भ-दोहळं नेगळे ।

तरल-तरंग-भंगुर-समन्वितेयं झष-चक्रवाक-भा- ।
सुर-कळहंस-पूरितेयनुद्‌घ-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
हर-नव-शैत्य-मान्य-शुभ-गन्ध-समीर-निवासेयं तळो- ।
दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीवभिवाञ्छेयनेय्दे ताळ्दिदळ् ॥

कळहस-याने पल्ह । केळदियरोड वोगि पूर्ण-गङ्गा-नदियम् ।
विळसितमं पोक्कु निरा कुलदिन्दोलाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
अन्तु मनदल्म्पु पोगे गङ्गा-नदियोळ् ओलाडि निज-गृहक्के वन्दु नवमासं नेरेदु पुत्रनं पडेदातङ्गे ।

गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मग बडेदळप कारणदिन्दम् ।
माङ्गल्य-नामवोन्दुदि- । ळाङ्गनेगधिपतिगे **गङ्गदत्ता**ख्यानम् ॥

आ-गङ्गदत्तङ्गे **भरत**नेम्ब मग पुट्टिदनातङ्गे **गङ्गदत्त**नेम्ब पुट्टि ।

गुण निधिगे गङ्गदत्तं- । गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुट्टि दया- ।
म्रणियागि **हरिश्चन्द्रं** । प्रणुत-नृपेन्द्र धरित्रियोळ् शोभिसिदम् ॥

मत्तमा-नृपोत्तमङ्गे **भरत**नेम्ब सुत पुट्टिदनातङ्गे **गङ्गदत्त**नेम्ब मगनागि-इन्तु गङ्गान्वय सलुत्तमिरे ।

हरि-वग-केतु **नेमी**- । **श्वर-तीर्थं** वर्त्तिसुत्तमिरे गङ्ग-कुळा- ।
वर-भानु पुट्टिद भा- । सुर-तेजं **विष्णुगुप्त**नेम्ब नृपाळम् ॥

आ-धराधिनाथ साम्राज्य-पदविय कैकोण्ड**हिच्छत्र-पुर**दोळु सुख-मिर्द्दु नेमितीर्थंकर परम-देव- निर्वाण-काळदोळ् ऐन्द्रध्वजवेम्ब पूजेयं माडे देवेन्द्रनोसेदु ।

अनुपमदैरावतमं । मनोनुरागदोळे **विष्णुगुप्त**ङ्गित्तम् ।
जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिदे ॥

आ-विष्णुगुप्त-महाराजङ्गे **पृथ्वीमति-महादेवि**ग, **भगदत्तनुं श्रीदत्त**नुमेम्ब तनयरागे भगदत्तङ्गे **कलिङ्ग**-देशम कुडलातनु **कलिङ्ग**-देशम-नाळ्दु **कालिंग**-गङ्गनागि सुखदिन्दिरे ।

इत्तलुदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपमं समस्त-राज्यमुमं श्री- ।
दत्त-नृपङ्गित्तं भू- । पोत्तमने निसिर्द्द **विष्णुगुप्त**-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु श्रीदत्तनिन्दितल्लानेयुण्डिगे सलुत्तमिरे ।

प्रियबन्धु-चर्म्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकल-धात्रियं पाळिसिद

भय-लोभ-दुर्ल्लभं ल- । क्ष्मी युवति-मुखाब्ज-षण्ड-मण्डित-हासम् ॥

व ॥ अन्ता-प्रियबन्धु सुख-राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्समयदोळु **पार्श्व-भट्टारकर्गे केवळ-ज्ञानोत्पत्तियागे** सौधर्म्मेन्द्र बन्दु केवळि-पूजेयं माडे प्रियबन्धु तानु भक्तियिं बन्दु पूजेय माडलातन भक्तिगिन्द्र मेच्चि दिव्यवप्पय्दु-तोडगेगळं कोट्टु निम्मन्वयदोळु मिथ्यादृष्टिगळागलोड अदृश्यङ्गळक्कुमेन्दु पेळ्दु **विजयपुरक्काहिच्छत्रमेम्ब** पेसरनिट्टु दिविजेन्द्र पोपुदुमित्तल गङ्गान्वय सम्पूर्ण्ण-चन्द्रनन्ते पेर्च्चि वर्त्तिसुत्तमिरे तदन्वयदोळु **कम्प**-महीपतिगे **पद्मनाभ**नेम्ब मगं पुट्टि ।

तनगे तनूभवरिल्लदे । मनदोळु चिन्तिसुतमिर्द्दु पद्मप्रभनाइ-।
प्पिन-काणि शासन-देवते-। यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साधिसिदं ॥

अन्तु साधिसि साधित-विद्यनागि पुत्ररिर्वरं पडेदु **राम-लक्ष्मणरेम्ब** पेसर-निट्टु ।

परमस्नेहदोळिर्व्वर नडपे लीला-मात्रदिं चन्द्रनन्त् ।
इरे संपूर्ण्ण-कळागरागि बेळेयल् विद्या-बलोद्योगमुर्-।
व्वरेयोळ् चोद्यमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।
परेदाशा-गजमं पळञ्चलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोप्पिदर् ॥

अन्तु सुखदिन्दिर्प्पुदुमत्तलु**उज्जयिनी-पुराधिपति-महीपाल**-तोडवुगळं

बेडियट्टि दोडे पद्मनाभं कृतान्तनन्ते रौद्र-वेगम कैकोण्डु ।
एमगदनट्टल्कागदु । तमगे तुडल् योग्यमल्ल सन्तसिरल् वेळ् ।
समरके बन्दनप्पडे । निमिषदोळान्तिरिदु वीर-रसमं मेरेवेम् ॥

अन्तु मुडिदडे मन्त्रि-वर्गमोळालोचिसि तम्म तन्त्र्य कन्नेयुं नाल्वत्ते-
ण्टराप्रप्प विप्र-सन्तानमु वेरसु कळपिदोडवर्द्दक्षिणाभिमुखरागि बरुत्तं
राम-लक्ष्मणर्गे **दडिग-माधवरेन्दु** पेसरनिट्टु निच्च-पयणदिम् ।

वन्दवर्गेळुचित-पदमन-। गुन्दलेयिं कण्डरमल-लक्ष्मी-चित्ता-।
नन्दनम **पेरूरं** । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु **गङ्ग-पेरूरं** कण्डल्लिय तटाक-तीरदोळु बीड बिट्टु चैत्या-
लयमं कण्डु निर्भर भक्तियिं त्रि-प्रदक्षिण गेय्दु स्तुतियिसि समस्त-विद्या-
पारावार-पारगरम् । जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्ण्ण-चन्द्ररम् । उत्तम-
क्षमादि-दश-कुशळ-धर्म-रतरम् । चारित्र-भद्र-धनरम् । विनेय-जनान-
न्दरम् । चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशः-प्रकाशरम् । सकळ-सावद्य-दूररम् ।
क्राणूर्ग्गणाम्बर-सहस्रकिरणरम् । द्वादश-विधतपोनुष्ठान-निष्ठितरम् ।
गङ्ग-राज्य-समुद्धरणरम् । **श्री-सिंहनन्द्याचार्य्यरं** कण्डु गुरु-भक्ति-
पूर्व्वकं वन्दिसि तम्म वन्दभिप्रायमेल्लम तिळिय-पेळे कैकोण्डवर्गे
समस्त-विद्याभिमुखर्म्माडि केलवानु देवसदिं **पद्मावती**-देविय भक्ति-पूर्व्व-
कमाह्वान गेय्दु वर वडेदु खड्गमु समस्त-राज्यमनवर्गे माडि ।

मुनि-पति नोडल् विद्वज्-। जन-पूज्य **माधवं** शिला-स्तम्भमनाद्-
ईतुगेय्दु पोय्यलदु पुण्-। मेने मुरिदुदु वीर-पुरुषरेन माडद् ॥
आ-साहसमं कण्डु ।

मुनि-पति कर्ण्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि सज्-।
जन-जन-बन्धवरं परिसि सेसेयनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।
मनमोसेदित्तु कुञ्चमनगुर्व्विन केतनमागि माडि वर्-।
प्पिनितु परिग्रहं गज-तुरङ्गमुमं निजमार्गे माडिदर् ॥

अन्तु समस्त-राज्यमं माडि बुद्धियनवर्गिगन्तेन्दु पेळ्दरु ।
नुडिदुदनारोळं नुडिदु तप्पिदोडं जिन-शासनक्कोडम्-।
बडद्डमन्य-नारिगेरेदट्टिदडं मधु-मास-सेवे गेय्-।
दडमकुलीनरप्पवर कोळ्कोडेयादोडमर्थिगर्थमम् ।
कुडदोडमाहवाङ्गणदोळोडिदड किडुगु कुल-क्रमम् ॥

एन्दु पेळ्दु ।

उत्तममप्प **नन्दगिरि** कोटे पोळल् **कुवळालमागे** तोम्-।
बत्तरु-सासिरं विषयमाप्तननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रं-।
गात्त-राज्यं जयं जिनमत मतमागिरे सन्ततं निजो-।
दात्ततेयिन्दमा-**दडिग-माधव**-भूभुजराळ्दरुर्व्वियम् ॥

मत्तमा-नाडिङ्गे सीमे ।

उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे मदर्कले मूड तोण्ड-ना-।
डत्तपरासेगम्बुनिधि चेरमेनिप्पेडे तेङ्क कोङ्गु मत्-।
तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-**गङ्गवाडि-तोम्**-।
बत्तरु-सासिरं दळेने माडिदरिन्तुट्टु गङ्गरुज्जुगम् ॥

अन्तु धरित्रिगधिपतियागि **दडिग-माधव**रिर्व्वरु **कोङ्कण**-विषय-साधन-निमित्तं बरुत्त **मण्डलियं** कण्डरदर प्रभाव मेन्तेने ।

नुत-**महेन्द्र-पुरं** धरा-तळदोळोप्पुत्तिर्द्दविख्यातियिम् ।
कृत-काल **मदना-पुरं** नेगळे मिक्का-त्रेतेयोळ् सज्जन-।
स्तुत **मण्डाल-पुरं** तृतीय-पेसरिं द्वापारदोळ् सन्ततोन्-।
नतियिं **मण्डलि**येम्बरिन्तु कलि-कालं सन्दुदिन्ती-पुरम् ॥

अन्ता-नाल्कु-युगक्क नाल्कु-पेसरिन्दोप्पुव मण्डलिय बहि-र्भागदोळु सौगन्धम कूडे पसरिसुव सहस्र-पत्रवप्पलर्द तावरेगळिं नाना-जलचरि-

युलिपदिन्दोप्पुव हेग्गेरेयं कण्डु बीडं बिट्टु तद्-गिरिय रम्यम कण्डुमिल्लि चैत्यालयम माडिमेन्दु **क्राणूर्ग्गण**-तिळक**र् सिंहनन्द्याचार्य्यर्** प्पेळे महा-प्रसादमेन्दु चैत्यालयम माडिसि केलवानु दिवसदिं **कोळालक्के** पोगि सुखदिं राज्य गेय्युत्तमिरे गङ्गान्वयं पेर्च्चि वर्त्तिसुत्तिरे **दडिगंगे माधव-**नेम्ब सुतनागि राज्यं गेय्यलातन मग **हरि-वर्म्म**नातन पुत्रं **विष्णु-गोप**नेम्बनागि मिथ्यात्वक्के सल्वुदुवन्तात्तोडवदश्यङ्गळागि पोगे आतन मग **पृथ्वी-गंगं** सम्यग्दष्टियातन मगं विरुदरं तडङ्गालु बोन्दडि-गिडि-सुव **तडङ्गाल-माधव**नातनमगम्

> **अविनीत-गङ्ग**नेम्बं । भुवनक्कधिनाथनागि पुट्टि बुधर्ग्गुत्-।
> सवम पुट्टिसिद **माध-।व**-रायन मर्म्मनव्धियन्ते गभीरम् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्बादेशमं केळ्दु ।

> भरदिन्द चुर्च्चुं-वाय्द पोगळे बुध-जन बन्द **कावेरियोळ्** मी-।
> करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रमं निन्दु नोडल् ।
> परिवारं तन्न कीर्त्ति-प्रभे बळसे दिशा-भागम चोद्यमागल् ।
> परम-श्री-जैन-पादं नेलसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥

अन्तु चुर्च्चु-वाय्दु बर्द्दुङ्किदनातनन्वयदोळु **दुर्विनीत-गङ्ग**नातङ्गे **मु-ष्कर**-नेम्बनादनातङ्गे **श्रीविक्रम**नातन मग **भूविक्रम**नातन मगन्दिर् **नवकाम-श्रीएरगर**वरोळु एरेयन मग**नेरेयङ्ग**नातनिन्दुदयिसिदं **श्रीव-ल्लभ**नातङ्गे **श्री-पुरुष**नादनातङ्गे **शिवमार**नेम्बनातङ्गे **मारसिंह**नुदयं गेय्दम् ।

> अवयवदिन्दे साधिसिद माळववेळुवनेय्दे **गङ्ग-मा-**।
> **ळव**वेनलक्करं बरेदु कल् निरिसुत्ते कळल्चि **चित्रकू-**।
> **ट**वनुरे **कृष्णभुजेय-**नृपानुजन **जयकेसियं** महा-।
> हवदोळे **मारसिंह**-नृपनिक्कि निमिर्च्चिदनात्म-शौर्य्यमम् ॥

तनयं श्री-मारसिंहंगनुपमित-**जगत्तुंग**नाद जगत्-पा-।
वन-लक्ष्मी-वल्लभङ्गिन्तुदियिसि नेगळ्दं **राचमल्ला**वनीशम् ।
मनु-मार्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनिताधीश-भूवल्लभेशम् ।
जिनधर्म्माम्बोधि-चन्द्र गुण-गण-निळयं राज-विद्याधरेन्द्रम् ॥

अन्तातन मर्म्मन्दिर् **मरुळय्यं बूतुग-पेर्म्मांडि** तदपत्यने**रेयपं** तत्सुत-**वीरवेडङ्ग**नेम्बङ्गे ।

उदय गेय्दं विद्या-। सुदतीशं मार-रूपनुचित-विळासम् ।
विदित-सकलार्त्थ-शास्त्रं । मृदु-वाक्यं **राचमल्ल**नहितर-मल्लम् ॥

अन्ता-**राचमल्ल**निन्दे**रेय**ङ्गनातन मग **बूतुग**नातन मगं **मरुळ-देव**-नातनात्मज **गुत्तिय-गङ्ग**नातनिन्द मरेयेरिद **मारसिंग**नातन सुत **गोविन्दर**नातन पुत्र **सैगोट्ट-विजयादित्य**नातनिन्द **राचमल्ल**नातनिं **मारसिंग**नातन सुतं **कुरुळ-राजिग**नातनिन्दं **गर्व्वद-गङ्गं** गोविन्दरन तम्मन मगनप्प **मम्म-गोविन्दरम्** ।

तेङ्गनुडिदडर्दु किळत । कौङ्ग मिडुकदिरलेडद-कय्योळ् मद-मा-।
तङ्गमने पिडिद्दु निलिसिद । गङ्गं सामान्य-नृपने **रक्कस-गङ्ग** ॥

तदनुजं **कलियङ्ग**नातनिन्दुत्तरोत्तर गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे क्राणूर्-गणदाचार्य्यावतारवेन्तेन्दोडे ।

दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-समुद्धरणः ।
श्री-मूल-संघ-नाथो नाम्ना श्री-**सिंहनन्दि**-मुनिः ॥

अवर तदनन्तरं **अर्हद्बल्याचार्यरुं वेट्टद-दामनन्दि-भट्टारकरुं बाळचन्द्र-भट्टारकरुं मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवरु। गुणचन्द्र-पण्डित-दे**-वरवरिन्द ।

एळेगे गुण-रुचियिनोळपगु-। गळिसिरे गुण-रुचि-विकाश-वाग्-रश्मि-यिनुच्-।

चळिसे वदनेन्दु पेम्पम्। तळेदं गुणनन्दि-देव-शब्द-ब्रह्म ॥

अवरिं वळिकमकलंक-सिंहासनमनलङ्करिसि नेगर्द तार्किक-चक्रेश्वररु। वादीभ-सिंहरुं। पर-वादि-कुल-कमल-वन-मद-मातंगरुम्। बौद्ध-वादि-तिमिर-पतङ्गरुम्। साख्य-वादि-कुळाद्रि-वज्रधररुम्। नैयायिकाचार्य्य-भूजात-कुठाररुम्। मीमासक-मत-घनाघन-प्रचण्ड-पवनरुम्। सिद्धान्त-वार्धि-वर्द्धन-सुधाकररुम्। सकळ-साहित्य-प्रवीणरुम्। मनोभव-भय-रहितरुं। जिन-समयाम्बर-दिवाकररुम्। अप्प श्री-मूल-संघद कोण्डकुन्दान्वयद क्राणूर्-गण मेषपाषाण-गच्छद श्रीमत्प्रभाचन्द्र-सिद्धान्तदेववर शिष्यरु।

अनवद्याचाररु म्मा-। घनन्दि-सिद्धान्त-देवरधिकृत-जिन-शा-।
सन-संरक्षकरेसेदर्। जिनमतसद्धर्म्म-सम्पद नेगळ्-विनेगम् ॥

अवर शिष्यरु।

चतुरास्य चतुरोक्तियिं प्रभुतेयिन्दीशं गुण-व्यापक-।
स्थितियिं विष्णु सु-बुद्धि-विस्तरणेयिं बौद्धं दली-जैन-पद-।
धतियिन्दिर्द्दुमिदेम् विचित्रतरमो चातुर्य्यमादी-समुन्-।
नत-सिद्धान्त-विभूषणङ्गेनिसिद श्रीमत्प्रभाचन्द्रमम् ॥

अवर सधर्म्मरु।

नुत-सिद्धान्तमनन्तवीर्य्य-मुनिग शुद्धाक्षराकारदिम्।
सतत श्री-मुनिचन्द्र-दिव्य-मुनिगं संवर्त्तिसुत्तिर्क्कुम-।
प्रतिम तानेने पेम्पु-वेत्तरु दितोदान्तर् जगद्-वन्द्यरूर-।
जितरुद्योतित-विश्वरप्रतिहत-प्रज्ञर् म्महो-भागदोळ् ॥

अवर शिष्यरु ।

वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-विशाळ-हर-निटिलाक्षं
वादि-मद-रदनि-विद्रुवं । मेदिप मृगराज जयतु **श्रुतकीर्त्ति**-बुधम् ॥
कवि गमकि-वादि-वाग्मिगळ् अवन्दिरं गेल्दु **कनकनन्दि** त्रैवि-
द्य-विलासं त्रि-भुवन-मल्ल-वादिराज दलेनिसिद नृप-समेयोळ् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

चारित्र-चक्रि संयम-। धारि क्राणूरुगणाग्रगण्य सदयम् ।
श्री-रमण सिद्धान्त-वि-। शारदनति-विशद-कीर्त्ति **माधवचन्द्रम्**॥

अवर शिष्यरु ।

वर-शास्त्राम्बुधि-वर्द्धन-। हरिणाङ्क विरुद-वादि-मद-विस्फाळम् ।
निरुतं तानेनलेसेद । धरेयोळ् **त्रैविद्य-बालचन्द्र-यतीन्द्रम्** ॥

श्री-**प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** शिष्यरु ।

वसुमतिगोळ्पु-वेत्त धवलातपवारणवागि कीर्त्ति नर्-।
त्तिसुवुदु पेम्पु-वेत्त महिमोन्नति मेरुगे मण्डपन् दला-।
गेसेवुदु सद्-गुण-प्रतति मौक्तिक-मालेय लीलेय समर्-।
र्थिसुवुदु सज्जनक्के सहजातमेनल् **बुधचन्द्र देवर** ॥
करव वारुणिगेन्दु नीडि पिरिदु निस्तेजमेय्दिर्द्द तन्-।
निरव नोडदे सत्पद-प्रभुतेय ताळ्दिर्प्प दोषाकरम् ।
दोरेये पेळेनुत कळङ्क-रहित सद्-वृत्तदिन्द तिरस्-।
करिप चन्द्रननोळ्पु-वेत्त बुधचन्द्र सन्ततोत्साहदिम् ॥
नुडिगळ् सत्य-सुवर्ण्ण-भूषण-गण चित्त सु-रत्नङ्कळम् ।
मडगिट्टिर्प्प करण्डक तनु तपश्श्री-भामिनी-भासियेन्-।

दडे दुष्कीर्त्तियनान्त मत्तिन शठर् दुर्व्वोधरस्पृश्यरेम् ।
पडियै सद्-बुध-सेव्यनप्प बुधचन्द्र-ख्यात-योगीन्द्रनोळ् ॥
सुर-धेनु व्रति-रूपमं तळेदुदो गीर्व्वाण-भूजातवी-।
धरेयोळ् तापस-रूपदिं नेलसितो पेळेम्बिनम् वर्प्पुदम् ।
करेदर्त्थि-प्रकरक्के कोट्टु विपुळ-श्री-कीर्त्तिय ताळ्दिदम् ।
निरुतं श्री-**बुधचन्द्र-देव**-मुनिप वात्सल्य-रत्नाकरम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्दाचार्य्य-परमेष्ठिगळन्वय-तिळकरु जिनसद्म-निर्म्मापणरुमप्प **बुधचन्द्र-पण्डित-देवरु** प्रवर्त्तिसुत्तिरे । **प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** गुड्ड ।

जय-जया-वल्लभनन्-। वय-वार्धि सीतरोचि भुवन-स्तुत्यम् ।
प्रिय-मूर्त्ति जिन-पदाब्ज-। द्वय-भृङ्ग **वर्म्मदेव भुज-वळ-गङ्गम्** ॥

अन्तेनिसि नेगर्द्द वर्म्मदेव भुज-वळ-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवं मण्डलिय बेट्टद मेले मुन्नं **दडिग-माधवर्** म्माडिसिद वसदियं तम्म गंगान्वयदवर् प्पडिसलिसुत्तुं बरल्लु तदनन्तरं मर-वेसनागि माडिसि **मण्डलि-सासिरवेड-दोरे-एप्पत्तर** वसदिगळिन्नप्पुव मुन्नादुवक्कुं **पट्टद-वसदिय** प्रतिबद्धवागि समादेयर् म्मुख्यवागि विट्ट दत्ति तद्दकरे सर्व्व-बाधापरिहार मत्तं वसदियिं तेङ्कण केरेय केळगे तळ-वृत्ति गद्दे गळेय मत्तल्लु मूरु वेद्दले गळेय मत्तलारुमिन्तु पट्टद-तीर्त्थद वसदिगे सलुत्तमिरे आतन तनूभवरु ।

जय-लक्ष्मी-पति **मारसिंग**ननुज सत्य-प्रियं सन्द **नन्**-।
निय-गङ्ग-क्षितिपाळकं तदनुज तेजस्वि विक्रान्त-च-।
क्र-युतं **रक्कस-गंग**नातननुजं वीराग्रगण्य तद-।
न्वय-लक्ष्मी-गृह-दीपकं **भुजवळ-श्री-गङ्ग**-भूपाळकम् ॥

आ-**मारसिंग-देवं** आद्र्ंचळ्ळियेम्बूरुमं वसदियाग्नेय-कोणरेयिम्मूडलु गद्दे गळेय मत्तलोन्दु वेद्दले मत्तलेरडुमं विट्टम् । **माघनन्दिसिद्धान्त-देवर** गुड्ड **मारसिंग-देवं** मत्तवातन तम्म **प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर** गुड्ड **नन्निय-गङ्ग-देवम् सिरियुरगे** येम्बूरुममागद्देयिं तेङ्कण कोळद केळगे गळेय मत्तलोन्दु वेद्दले मत्तलेरडुम विट्टम् । बर्म्म-देव सक मारसिंग नन्निय-गङ्ग ९७६ विज [य] ९८७ [विश्वाव] सु ९९२ सौम्य । **अनन्तवीर्य्य-सिद्धान्त-देवर गुड्डं रक्कस-गंगं** नन्निय-गङ्ग विट्ट गद्देयिं तेङ्कलु हरकेरिय सीमे-वरं विट्ट गद्दे गळेय मत्तलोन्दु वेद्दले गळेय मत्त-लेरडु इन्ती-वृत्ति मण्डलिय होलद भूमियिन्ती-हन्नेरडु मत्तलु वेद्दलेय सीमे मूडण देसे तळवृत्तिय गद्दे । तेङ्क हरकेरिय सीमेय नट्ट कल्लुगळु हडु-वलु पिरिवळ्ळ वडग मोरसर-कोळ' मत्त कटकद गोव रक्कस-गङ्ग हूलि-यकेरेय गद्देयुमदर सुत्तण वेद्दलेयुमं विट्टनदर सीमे मूडलु चिक्कवण-जिगनकेरे तेङ्कलु तट्टकेरेय गुड्डेय वडगद····नीर्व्वरि हडुवलु नट्ट कल्लिं वरलु गुड्डेय मूडण नीर्व्वरि वडगलु वडगण दिम्बिन नीर्व्वरि चिक्क-वञ्जिगनकेरेय वडगण कोडि ॥

मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डम् ।

भुज-वळदिं शत्रु-मही- । भुज-कुजमं कित्तु मुत्ति कोण्डेगळं कोण्- ।
डजित-वळनेनिसि नेगर्द । **भुजबळ-गङ्ग**-क्षितीशनवनिप-तिलकं ॥

- इन्तेनिसि नेगर्द भुजबळ-गंग-पेर्म्माडि-देव **सक-वर्ष १०२७ नेय सर्व्वजितु-फाल्गुण-मासद १ शुक्रवारदन्दु** मण्डलिय पट्टद-तीर्त्थद वसदिय नित्य-निवेद्य-पूजेग ऋषियर्गाहार-दानक्क विट्ट दत्ति **हेग्गण-गिले** येम्बूरं सर्व्व-बाधा-परिहारं माडि विट्टन् (आगेकी ३ पंक्तियोंमें

सीमाकी चर्चा है) **प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड नन्नियगंग-पेर्म्मांडि-देव** ।

आ-भुजवळगङ्ग-····। ··········वन-भ्राजित मग-बुट्टिद····।
·········दिक्-तट रा-। ज्याभिपवाधिपतियेनिप **नन्निय-गङ्गम्** ॥

देसेगळनेय्दे पर्व्विद नेलक्किदे ता नेलगट्टेनिप्प वल्-।
पेसेवुदु तोळोळेण्-देसेय गण्डर मीसेय मेले-मेले वर्-।
त्तिसुवुदु गण्ड-गर्वद जसं बडवाग्नियं वायनेय्दे बत्-।
तिसुवुदु तेजमेनधिकनादनो **नन्निय-गङ्ग**-भूभुजम् ॥
पद-नखदोळ् दशाननते नम्र-नृपालि-मुखाङ्कदिं जया-।
स्पद-भुजदळि षण्मुखते दुर्ज्जय-शक्ति-धरत्वदिं चतुर्-।
व्वेदनते वक्त्रदोळ् चतुर-वाणियिनोप्पिरलेन्तु नोर्प्पडा-।
भ्युदयमनेय्दिदत्तु पलवुं मुखदिं तवे कीर्त्ति गङ्गनोळ् ॥
दिगिभमनोत्ति कीलिडिपनग्गद केसरिवोले वाय्दडम्।
सुगिये तळ-प्रहारदोळे मग्गिपनुङ्कुटदिन्दे मीण्टुवम्।
नगमनिव कवुङ्कुडिव तेङ्कुडिवन्तने सम्बुशैलमम्।
नेगपिद पन्ति-दोळवननेळिपनेम्बुदु **मारसिङ्गन**[1] ॥

स्वस्ति **सत्यवाक्य-कोङ्गुणि-वर्म्म** धर्म्म-महाराजाधिराजम् परमेश्वरम्। **कोळालपुर**-वरेश्वरम्। **नन्दगिरि**-नाथं मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-**विरिञ्चनं पद्मावती**-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् विचकिळामोद **नन्नियगङ्ग**। जयदुरत्तङ्गम्। गङ्ग-कुल-कुवळय-शरच्चन्द्रम्। मण्डलिक-देवेन्द्रम्। दर्प्पोद्धताराति-वनज-वन-वेदण्डम्। कुसुमकोदण्डम्। गण्डर-गण्डम्। दुट्टरगण्डम्। नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम्। श्रीमन्न-

१ यहा 'मारसिंग' नन्निय-गंगका ही दूसरा नाम मालूम पडता है।

न्निय-गङ्ग-पेम्र्माडि-देवम् तम्मज्ज वर्म्म-देव माडिसिद मण्डलिय पट्टद-तीर्थद वसदियं कल्लु-वेसनागि माडिसिद पट्टद-वसदिगे सक-वर्ष १०४३ नेय शुभकृत्-संवत्सरद भाद्रपद-मासद शुद्ध ५ बृहस्पति-वारदन्दु कुरुळिय-वसदियादियागि पञ्चविंशति-चैत्यालयमं धर्म्मप्रभावनेयिन्द माडिसिद प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यर् मुख्य-वागि बिट्ट वृत्ति वसदिय मुन्दे गद्देगळेय मत्तरोन्दु बेद्दलेगळेय मत्तरेरडु वसदियहळ्ळिय सुङ्कसुमं बिट्टरु मत्त नन्निय-गङ्ग-देवनु पट्ट-महा-देवि कञ्चल-देवियरु पद्मावती-देविगे हरसि हेम्र्माडि-देवनं हडेदु काणि-केय तन्नाळ्व नाडुर्गळोळु शर-मित-पणव कोट्टरा-चन्द्रार्क्क-तारं-बरं। बुधचन्द्र-पण्डित-देवर गुड्डम्।

मुनिसिं दिग्दन्ति-दन्तङ्गळनवयवदिन्दोत्ति वेग छळ्ळेम्- ।
बिनेग कित्तेत्तने तारगेगळनदटिन्दालिकछन्ददिं सू- ।
सने वार्द्धि-व्रातमं सुर्रेने तवुविनेग पीरने कोपदिं पोय्- ।
यने चेट्ट पिट्टु-पिट्टागिरे समरदोळी-वीर-पेम्र्माडि-देवम् ॥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[इस समय त्रैलोक्यमल्ल-देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान है। गङ्गान्वय (वंश) का अवतार इस प्रकार हुआ —

वृषभ-तीर्थ-कालमें जब कि अयोध्यामें इक्ष्वाकु-वंशमें राजा हरिश्चन्द्रको राज्य करते हुए बहुत समय हो गया था, उसका पुत्र भरत हुआ। उसकी पत्नी विजय-महादेवी थी। जब उसको गर्भ-दोहद हुआ तो उसे जोरसे नृत्य करनेवाली लहरोंसे ओतप्रोत, मत्स्य, चक्रवाक पक्षी तथा चमकीले हंसोंसे पूरित गङ्गामें नहानेकी इच्छा हुई। अपनी इस इच्छाको पूरा करनेके बाद, नौ महीने पूरे होनेपर उसे एक लडका हुआ। उस लडकेका नाम, चूँकि गङ्गासे नहानेके बाद वह उत्पन्न हुआ था अतः गङ्गदत्त रक्खा गया। गङ्गदत्तका पुत्र भरत हुआ और उसका पुत्र गङ्गदत्त हुआ। इस गङ्गदत्तकी

लडकीका लड़का हरिश्चन्द्र हुआ, उसका लडका भरत हुआ और उसका फिर गङ्गदत्त।

गंग वशकी परम्परा इस प्रकार जारी थी,—जब कि नेमीश्वरका तीर्थ चल रहा था,—उस समय, राजा विष्णुगुप्तका जन्म हुआ। यह राजा अहिच्छत्र-पुरमें शान्तिसे निवास कर रहा था, उसी समय नेमि तीर्थंकरका निर्वाण हुआ और उसने ऐन्द्रध्वज पूजा की, जिससे प्रसन्न होकर देवेन्द्रने उसे ऐरावत हाथी दिया।

विष्णुगुप्त महाराज और पृथ्वीमति-महादेवीसे भगदत्त और श्रीदत्त नामके दो पुत्र हुए। पिताने भगदत्तको राज्य करनेके लिये कलिंग-देश दे दिया और वह उसपर 'कलिंग गग' नामसे राज्य करने लगा। दूसरी तरफ, उसने वह मत्त हाथी तथा शेष संपूर्ण राज्य राजा श्रीदत्तको दे दिया। इस प्रकार जब श्रीदत्तके समयसे हाथीको मुकुटमें धारण किया गया था,—प्रियबन्धुवर्म्मने उत्पन्न होकर अपनी नीतिसे सारी पृथ्वीकी रक्षा की।

जिस समय वह प्रियबन्धु शान्तिसे राज्य कर रहा था, उस समय पार्श्व-भट्टारक (तीर्थंकर)को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, जिसकी पूजाके लिये सौधर्म्मेन्द्रने आकर केवली-पूजा की। इसी अवसरपर स्वय प्रियबन्धुने भी आकर केवलज्ञानकी पूजा की। उसकी श्रद्धासे प्रसन्न होकर इन्द्रने पाँच आभरण (अलङ्कार) उसे दिये और कहा,—"अगर तुम्हारे वंशमें आगे कोई मिथ्यामतका माननेवाला उत्पन्न होगा, तो ये (आभरण) लुप्त हो जायेंगे।" ऐसा कहकर, और अहिच्छत्रका 'विजयपुर' नाम रखकर इन्द्र चला गया।

दूसरी ओर, पूर्ण चन्द्रमाके समान, गंग-वश बढ़ता ही चला गया और इस वंशमे राजा कम्पके पद्मनाभ नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ। पद्मनाभके, शासन-देवताकी कृपासे, दो पुत्र उत्पन्न हुए, जिनका नाम उसने राम और लक्ष्मण रखा।

जब ये दोनों कुमार शान्तिसे रह रहे थे, उज्जयिनी-शासक महीपालने उनको जा घेरा और उनसे इन आभूषणोंको माँगा। पद्मनाभने देनेसे इन्कार कर दिया।

इसके बाद अपने मन्त्रियोंकी सम्मतिसे, उसने अपने पुत्रोंको, अपनी कुमारी छोटी बहिन तथा ४० चुने हुए ब्राह्मणोंके साथ बाहर भेज दिया, और चूंकि वे दक्षिणको जा रहे थे, उनका नाम बदलकर क्रमसे दडिग और माधव रख दिया।

चलते-चलते वे एक अत्यन्त मनोरम स्थानपर आये, जहाँ उन्हें विशाल पेरुर् (शायद कोई तालाब-विशेष) और एक पहाडी मिली जो पुष्पाच्छादित मन्दार, नमेरु तथा चन्दनके वृक्षोंसे आवृत थी। उस गङ्ग-हेरूरको देखकर वहीं उन्होंने एक तालाबके किनारे अपने तम्बू तान दिये, वहाँ एक चैत्यालय भी उन्हें दिखाई दिया, जिसकी तीन प्रदक्षिणा करनेके बाद, स्तुति करते समय, क्राणूर-गण-आकाशके सूर्य, गङ्ग राज्यके प्रवर्धक श्री-सिंहनन्द्याचार्य दिखाई दिये। गुरुमें श्रद्धा होनेके कारण उन्होंने उनकी विनय की और अपने आनेका उद्देश्य कहा। इसपर वे उनको हाथ पकडकर ले गये और उन्हें विद्याकीं कलामें प्रवीण किया, और कुछ दिनोंके बाद अपने श्रद्धा-बलसे पद्मावती देवीको प्रकट कर वर प्राप्त किया, और उन्हें एक तलवार तथा सपूर्ण राज्य दिया।

जिस समय मुनिपति ऊपरकी ओर देख रहे थे, माधवने अपनी तमाम शक्तिसे एक पाषाण-स्तम्भपर[1] प्रहार किया, और वह स्तम्भ कडकड करते हुए नीचे गिर पडा। मुनिपतिने इस शक्तिको देखकर उनको कर्णिकारके परागोंसे तैयार किया गया एक मुकुट पहिनाया, उनके ऊपर अनाजकी वृष्टि की और बहुत खुशीसे तमाम पृथ्वीका राज्य देते हुए, झण्डेके लिये अपनी पीछीको चिह्न बनाया, तथा बहुतसे सेवक, हाथी और घोडे दिये।

तमाम राज्यका अधिकार देते हुए उन्होंने उन्हें इस उपदेशसे सावधान किया:—अपनी प्रतिज्ञात बातको यदि वे नही करेंगे, अगर वे जिनशासनको स्वीकार नही करेंगे, अगर वे दूसरोंकी स्त्रियोंको ग्रहण करेंगे, अगर वे मांस और मधुका सेवन करेंगे, अगर वे नीचोंसे सम्बन्ध जोडेंगे, अगर वे आवश्यकतावालोंको अपना धन नही देंगे, अगर युद्धभूमिसे भाग जायेंगेः—तो उनका वंश नष्ट हो जायगा।

---

१ शिलालेख इस बातमें एक राय है कि यह प्रहार तलवारसे किया गया था।

ऐसा कहनेके वाद,—उच्च नन्दगिरि उनका किला हो गया, कुवलाल उनका नगर बन गया, ९६००० उनका देश हो गया, निर्दोष जिन उनके देव हो गये, विजय उनकी युद्धभूमिकी साथिन हो गई, जिनमत उनका धर्म हो गया।

आगे गङ्गवाडि ९६००० की चतुर्दिक्-सीमा दी है।

राज्य प्राप्त करनेके वाद, दडिग और माधव दोनो, जब कोंकण देशको अधीन करनेके लिये आ रहे थे, उन्होने मण्डलि देखी, जिसके बाहरी प्रदेशमें एक विशाल तालावको सफेद जल-कमलिनी और हजारपत्तेवाले विकसित कमल तथा बहुत-सी मछलियोंके शब्दोंसे आकर्षक जानकर वहीं उन्होंने अपने तम्बू गाड दिये। पहाडीकी सुन्दरता देखकर सिंहनन्द्याचार्यने उन्हें वहाँ एक चैत्यालय निर्माण करनेकी प्रेरणा की, जिसे उन्होने मान्य किया।

और कुछ दिनोंके वाद वे कोलाल चले गये और शान्तिसे राज्य करने लगे। जैसे जैसे गङ्ग-वश बढता गया, दडिगके माधव नामका एक पुत्र हुआ, जिसने राज्य किया। उसका पुत्र हरिवर्मा, उसका पुत्र विष्णुगोप, जिसके मिथ्यामतके माननेके कारण, वे आभूषण विलीन हो गये थे। उसका पुत्र पृथ्वी गङ्ग हुआ, जिसने सत्यमत अङ्गीकार किया। उसका पुत्र तडङ्गाळ माधव था।

इसका पुत्र अविनीत गङ्ग था। यह अपनी शत-जीवी वातको सुनकर, परीक्षाके लिये, अत्यन्त भयानक वाढवाली कावेरीमें कूद गया और फिर तैर कर निकल आया। यह पक्का जिनभक्त था।

उसके वाद दुर्विनीत गङ्ग हुआ, जिसका पुत्र मुष्कर था। मुष्करके वाद क्रमसे एकके वाद एक श्रीविक्रम और भूविक्रम हुए। भूविक्रमके नव-का्म और एरग पुत्र हुए। इनमेंसे एरगके एरेयङ्ग पुत्र हुआ; उससे श्रीवल्लभ, उससे श्रीपुरुप, उससे शिवमार और उससे मारसिंह।

मालव सबको स्वाधीनकर और एक पाषाणपर 'गङ्ग-मालव' खुदवाकर मारसिंहने कच्चमुञ्जेके राजाके छोटे भाई जयक्सीको युद्धमें मारा।

मारसिंहका पुत्र जगत्तुंग हुआ; उसके राचमल्ल हुआ जो जिनधर्म-समुद्रके लिये चन्द्रमा था।

उसके नाती मरुळय्य और बूतुगपेर्म्माडि हुए; बूतुगकी सन्तान एरेयप, उसका पुत्र वीरवेडंग, और उसके राचमल्ल उत्पन्न हुआ।

राचमल्लसे एरेयङ्ग उत्पन्न हुआ; जिसका बूतुग, जिसका मरुळ-देव, जिसका गुत्तिय-गंग, जिससे मारसिंग, उसका पुत्र गोविन्दर, उसका सैगोट्ट विजयादित्य, उससे राचमल्ल उत्पन्न हुआ; उससे मारसिंग, उससे कुरुळ-राजिग, उससे गव्वेंदगङ्ग, गोविन्दरके छोटे भाईका पुत्र मम्म-गोविन्दर था। (उसकी प्रशसा) उसका छोटा भाई कलियङ्ग था। उसके बाद जिस समय गंगवंश चल रहा था'—

काणूरगणके आचार्योंकी वंशावली निम्न भांति थी —

दक्षिण-देशवासी, गङ्ग राजाओंके कुलके समुद्धारक, श्रीमूलसंघके नाथ सिंहनन्दि नामके मुनि थे। तदनन्तर अर्हद्बल्याचार्य, वेट्टद दामनन्दि भट्टारक, बालचन्द्र भट्टारक, मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव, गुणचन्द्र पण्डितदेव। इनके बाद शब्द-ब्रह्म गुणनन्दिदेव हुए। इनके बाद महान तार्किक एवं वादी प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव हुए। वे मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, क्रानूर-गण तथा मेषपाषाण गच्छके थे। उनके शिष्य माघनन्दिसिद्धान्तदेव हुए। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र हुए।

इनके सधर्मा अनन्तवीर्य मुनि थे; मुनिचन्द्र मुनि भी। उनके शिष्य श्रुतकीर्ति। उनके बाद कनकनन्दि त्रैविद्य हुए, जिन्हें राजाओंके दरबारसे 'त्रिभुवन-मल्ल वादिराज' कहा जाता था। इनके सधर्मा माधवचन्द्र थे। उनके शिष्य त्रैविद्य बालचन्द्र यतीन्द्र थे।

प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य बुधचन्द्रदेव थे (उनकी प्रशसा)। जिस समय आचार्य्य-परमेष्ठि-अन्वयके तिलकस्वरूप बुधचन्द्र-पण्डितदेव विराजमान थे :—

प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य भुजवल-गंग वर्म्मदेव थे।

इन प्रसिद्ध वर्म्मदेव, भुजवल-गग पेर्म्माडि-देवने 'वसदि' बनवाई। यह वही वसदि है जिसे पूर्वमे दडिग और माधवने मण्डलिकी पहाडीपर बनवाई थी, और जिसके लिये उसके गगवशके राजाओने पूजाका प्रबन्ध जारी रखा था, और जिसे बादमे उन्होने लकडीकी बनवा दी थी,—यह

आजतककी बनी हुई तथा भविष्यमें जो मण्डलि-हजारकी एडदोरे-सत्तरमें बनेंगी उन सभी बसदियोंमें मुख्य थी। इसका नाम पट्टद-बसदि (शाही बसदि) रक्खा था, और इसे (उक्त) भूमिदान दिया।

बर्म्मदेवके ४ लडके थे—मारसिंग, उसका छोटा भाई नन्नियगंग; उसका छोटा भाई रक्कस-गंग; उसका छोटा भाई भुजबल-गंग।

उक्त मारसिंग-देवने आर्द्रबल्लिमे (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। इसके अतिरिक्त, माघनन्दि सिद्धान्तदेवका गृहस्थ शिष्य मारसिंह-देव (शक ९८७ विश्वावसु) और उसका छोटा भाई, प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-का शिष्य, नन्नियगङ्गदेव था। इन दोनोंने सिरियूरमें (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। (शक ९९२ सौम्य)

बर्म्मदेवका दानका समय—शक ९७६ विजय।

अनन्तवीर्य-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य रक्कस-गङ्गने (उक्त सीमा-सहित) भूमिका दान दिया। मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य भुजबल-गंगने शक १०२७ में, सर्वजितु वर्षमें, (उक्त) भूमिका दान किया। नन्निय-गंग-पेर्मांडि देवका 'नन्निय-गग' नामका लड़का हुआ। (इसकी प्रशंसा), इसने शक वर्ष १०४३ शुभकृत् वर्षमें मण्डलिकी पट्टद-तीर्थ बसदिके लिये, २५ चैत्यालय और बनवानेके साथ-साथ, कुछ जमीनका दान दिया। इसकी पट्टमहादेवी कञ्चल-देवी थी।]

२७८

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४३=११२१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२७९

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४४=११२२ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८०

तेर्दाळ—कन्नड

[शक १०४५=११२३ ई०]

[तेर्दाळ दक्षिण महाराष्ट्रके सांगली जिलेका एक बडा गाँव है। इस स्थानकी जैन 'वस्ति' में एक पाषाण पीठ (stone tablet) है जिसपर ३ विभिन्न भागोंमें विभक्त एक अभिलेख है। यह लेख उसका प्रथम भाग है, यह इस समूचे लेखकी ५६ वीं पंक्तिपर जाकर समाप्त होता है।]

[IA, XIV, P 14-26 (Lines 1-56)]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥
श्रीमन्नम्रसुरासुरोरगलसन्माणिक्यमौळिप्रभा-
स्तोमालङ्कृतपादपद्मयुगल कैवल्यकान्तामनः-
प्रेमं सन्मति-नेमिनाथ-जिननाथ तेरिदाळातिशय-
श्रीमत् (द्) भव्यजनक्के माळ्कनुदिनं दीर्ग्घायुमं श्रीयुमम् ॥
क्षितिभृत्त्राणप्रभावोत्करकरिमकरोद्यत्प्रयुक्ताब्धिवेला-
वृतजम्बूद्वीपमध्योद्भवकनकनगक्कीक्षिसल् दक्षिणाशा-
क्षिति कण्गोप्पिप्पुदेत्त भरतविषयमा देशदोळ् कुन्तळोद्यत्-
क्षिति तोर्कुं चेल्विनिं तद्धरणियोळेसेगुं कूण्डिनामोद्द्यदेशम् ॥
तद्विषयमध्योद्देशदोळ् ॥

निरुपमगन्धशाळिवनदिं वनदिं कोळदिं तटाकदिं गिरिवन-तोय-दुर्ग्ग-कुळ दिन्दगळिं बुध-माधवार्क्क-शंकर-जिन-सद्मदिं विपणि-मार्ग्गदिनोप्पुव तेरिदाळ पन्नेरडर चेल्वनेय ॥

---

१ यहाँपर यह लेख सुस्पष्ट और सरलतासे पढ़नेके लिये पंक्तिवार न देकर नियमानुसार पठनीय साधारण शैलीसे दिया जाता है।

आ वीर-मल्लिदेव-महीवल्लभनर्धनारि गुणमणिगणदिं भू-वधुगेणेयेने **वाचलदेवि** महीन्द्रजेगे सीतेगोरे दोरेयल्ते ॥ त्रि (वृ) ॥

अवरिवर्गनुरागदिं सिरिगवा कञ्जोदरंगं मनोभवनद्रिप्रियपुत्रिगं शशिधरंग षण्मुखं वन्दु पुट्टुववोल् पुट्टि विरोधि-मन्नेयघरट्ट **तेरिदाळ**-क्षितीश-विळासं परिरञ्जिपं भुवनदोळ् निश्शंकेर्यि गोङ्कर्मन् ॥

त्रि (वृ) ॥ कन्तु-विळास-लक्ष्मियेनिपग्गद **वाचळदेवि** माते विक्रान्त-विभासि-मल्ल-महीप जनक मुनि **माघणन्दिसैद्धान्तिक**चक्रवर्त्ति गुरु नेमिजिन मनदिष्ट-देय्ववोरतेने तेरिदाळद नृपाग्रणि गोङ्कनिदें कृतार्थनो ॥ अडसुव कुत्तवोत्तरिप मृत्यु कडगुव मारि कोय्विर्नि तोडर्व विरोधि पाय्व पुलि पोय्व सिडिल् पिडिवुग्र पन्नग सुडुव दवाग्निबाधे कडेगंचुवुदेन्ददे तेरिदाळ्दी कडुगलि गोङ्क-भूपतिय भव्यते केवळत्वे निरीक्षिसल् ॥ पसिद सिताहि सोङ्किदोडे सकिसि मन्त्रद तंत्रदासेयिन्द-सुवरेयागि विट्टिरदे पञ्च-पदङ्गळनोदि तद्विपप्रसरमनेय्दे पिङ्गिसि जिन-व्रतदोळु दढनाद तन्न पेम्पेसेदिरे **तेरिदाळ**दरसं नेगळ्दं कलि **गोङ्क**-भूभुजन् ॥ येत्तिसि **तेरिदाळ**दोळगोप्पे जिनेश्वरसद्मम समन्तेत्तिसिद जयध्वजमनुर्व्विगे दिग्-मुख-दन्ति-दन्तदोळ् तेत्तिसिद निजाङ्क-महिमा-क्षरमालिकेयं गडुन्दडेनुत्तमभव्यनो जिनमताग्रणि सद्गुणि **गोङ्क**-भूभुजन् ॥ सतत कीर्त्तिसदिर्प्[1]पेर्[2]पराप्र्भुवनदोळ् भव्यजगत्सेव्यनं

जित-काळेय-कळङ्क-पङ्क-पटह-ध्वान्ताङ्कन **गोङ्कनम्**
प्रतिपक्ष-क्षितिनाथ-हृत्-सरसिजोद्घातङ्कनं **गोङ्कनम्**
क्षितियोळ् रञ्जिप **तेरिदाळ**देसवी निश्शकन **गोङ्कनम्** ॥

---

१ 'म' अक्षर छन्दपूर्तिके लिये है, वैसे इसकी कोई जरूरत नहीं है।
२ यह दूसरा 'प' गलत है।

अन्तेनिसिद **गोङ्क**महीकान्त श्री-**माघणन्दि-सिद्धान्तिकरं**
भ्रान्तेन्तो कोल्लगिरदिं [दं] तरिसि समस्त-भव्यरभिवर्ण्णिपिनम् ॥
तदाचार्य्यप्रभाववेन्तेन्दडे ॥ धरे दुग्धाब्धियिनब्धि चन्द्रनिनिनं
तेजोग्नियिन्देन्त [म]न्तिरली पोस्तक-गच्छ-देसिग-गण
श्री-कोण्डकुन्दान्वयम्

निरुतं श्री-कुळचन्द्रदेव-यतिपोग्रच्छिष्यरिं सद्गुणा-
कर-राद्धान्तिक-माघणन्दि-मुनियिं कण्गोपुगु धात्रियोळ् ॥

क ॥ अगणित-गुण-जळधिगळेने नगधैर्य्य**माघणन्दि**-सैद्धान्तिकराव-गमेसेवरर्स्सन्-मतियिं जगदोळ् सामन्त-निम्बदेवन गुरुगळ् ॥

वृ ॥ सन्ततवन्य-चिन्तेगळनोक्कु जिनास्यविनिर्गतागमात्र्थान्तरच्चिन्ते-योळ् नेरेदु निल्लदे सिद्धर सद्गुणगळ चिन्तिसुतिर्प्प कोल्लगिरदग्गद सन्मुनि **माघणन्दि**सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जित-मन्मथ-चक्रियेनिप्पनुर्व्वियोळ् ॥

वृ ॥ अन्तरिसिर्द्द जैन-समयक्कोगेदं जिननीगळोर्व्वनेम्बन्ते जिनव्रतङ्ग-ळनशेषजनक्कुपदेशमित्तु सामन्तनेनिप्प निम्बनेरगल् नेगळ्दोप्पुव **माघ-णन्दि** सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-धर्म-सुधाब्धि-सुधांशुवागने ॥ अवर-ग्रशिष्यरु ॥

क ॥ वादि-विषोरग-तार्क्ष्य-कर्व्वादि-महा-गहन-दावदहनर्व्वे (र्व्वे) ल्वद्-वादीभसिंहरेसेदर्म्मेदिनीयोळ् **कनकणंदिपण्डित-देवर्** ॥ तत्पर-वादीभ-पञ्चाननर स-धर्म्मर् ॥ **श्रुतकीर्त्ति-त्रैविद्य**-व्र (व्र)तिपर्षट्-तर्क्क-कर्क्कशर्

पर-वादि-प्रतिभा-प्रदीप-प्रवन र्ज्जितदोषर् नगळ्दरखिळभुवनान्तर-दोळ् ॥ तत्परवादि-शिखरि-शिखर-निर्ब्भेदनोच्चण्डपवि-दण्डर सधर्म्मर् ॥

वृ ॥ जित-कुसुमायुधास्त्ररनिन्दितजैनमतप्रसिद्धसाधितहितशास्त्ररं विदळितोन्मद-मान-विमोह-लोभ-भूभृत्-कुलिशास्त्ररं पदपिनिं पोगळ्गुं धरे **चंद्रकीर्त्ति**-पण्डितरनतर्क्य-तार्क्किक-चतुर्म्मुखरं परवादिशूळरन् ॥ तत्परवादिमस्तकशूळर सधर्म्मर् ॥

वृ ॥ धृति भूभृत्पतिय गभीरवमृताम्भोराशियं साले सन्मति वाचस्पतिय पळचलेविनम्मेय्वेत्त सन्मार्ग-सन्ततियिन्दं नेगळ्दं देशिग-गणाधीश-**प्रभाचन्द्रपण्डितदेवो**ज्वळकीर्त्तिमूर्त्ति वडेदाद वर्त्तिकुं धात्रियोळ् ॥ तन्मुनीश्वरर सधर्म्मर् ॥

परवादिप्रकर-प्रताप-महिभृत्-प्रांशोग्र-वज्रर्गुणा-
भरणर् श्रीवसुधैकबान्धवजिनेन्द्राधीश्वरोत्तुङ्गम-
दिरदाचार्य्य नगेन्द्र-रुंद्र-निभ-धैर्य्यवर्द्धमान-व्रती-
श्वररिन्ती धरेयोळ् नेगळ्ते-वडेद त्रैविद्य-विद्याधरर् ॥

यिन्तु नेगळ्तेग पोगळ्तेगमधीश्वरराद वर्धमान-त्रैविद्यदेवरज्ज-गुरुगळप्प श्री-**माघणन्दि**-सैद्धान्तिक-देवरदिव्यश्रीपादपद्मगळम् ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरं परमभट्टारक सत्याश्रयकुळतिळकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-विक्रम-चक्रवर्त्ति-**त्रिभुवनमल्लदेवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरम् कल्याणपुरद नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्य गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं **लत्तनूरपुर**वराधीश्वरं त्रिवलि-परेघोषण रट्टकुलभूषण सुवर्ण्ण-गरुड-ध्वज सिन्धूर-लाञ्छनं विवेक-विरिञ्चनं गण्डमण्डलिक-गण्डस्थळ-प्रहारि देसकारर-देव मूरु-रायरा-स्थान कलि-विरुदर-गण्ड नुडिदन्ते-गण्ड साहसोत्तुग सेननसिंह नामादिसमस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महामण्डलेश्वरं

कार्त्तवीर्य्य-देवरसरु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरल् तदाज्ञे-यिंम् ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्मण्डलिकं परबळसाधक जीमूतवाहनान्वयप्रसूत शौर्य्य-रघुजात समर-जयोत्तु(त्तु)ङ्ग रणरङ्गसिङ्ग मयूर-पिच्छ-चञ्चद्-ध्वज रूप-मकरध्वज पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसाद जिनधर्म्म-केलि-विनोद भावनं-ककार मण्डलिक-केदार नामादिसमस्तप्रशस्तिसहित श्रीमत् **गोङ्कि-देवरसर्** निज-राजधानियप्प **तेरिदाळद** मध्य-प्रदेशदोळ् **गोङ्क**-जिनालयम निर्म्मिसि श्री-नेमि-जिननाथ-प्रतिष्ठेय राष्ट्रकूटान्वय-शिरः-शिखामणि **कार्त्तवीर्य्य**-महामण्डलेश्वरं मुख्यवागि सद्भक्तियिं शुभदिनमुहूर्त्तदोळ् माडि तज्जिनमुनि-प्रधानरप्प देसिग-गण-पोस्तक-गच्छद श्रीकोण्डकुन्दाचार्यान्वयद कोल्लापुरद श्री-रूपनारायणन वसदि-याचार्य्यरु मण्डलाचार्य्यरु मेनिप्प श्रीमाघणन्दि-सैद्धान्तिक-देवर वरिसि **शक-वर्ष १०४५ नेय** शुभकृत्-संवत्सरद वैशाखद पुण्णमि बृहस्पति-वारदल् **गोङ्क**-जिनालयके पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळुम समस्तपरीवार-प्रजेगळुम आ स्थळद सेट्टि-गुत्त-मुख्य-समस्त-नकरङ्गळुम वरिसि **नेमि**-तीर्त्थेश्वरन वसदिय ऋषियराहारदानक देवरष्टविधार्च्चनेग खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारक्कं पेसर्-गोण्डु तन्मुनीश्वर दिव्य-श्री-पाद-पद्म-गळं दिव्य-तीर्थ-जळङ्गळिं तोळेदु शातकुम्भ-कुम्भ-सम्भृत-जळङ्गळिं धारा-पूर्व्वकं माडि **तेरिदाळद** पश्चिम-भागदोळ् हारुनगेरिय बट्टेयिं वडगल् यिप्पत्तनाल्गेण-कोलल् कोट्ट मत्तरेप्पत्तेरडु देवियण-बावियिं तेङ्कला कोलल् कोट्ट तोण्ट मत्तरोन्दु अन्तु मत्तर् ७२ तोण्ट मत्तर् १ अल्लिय पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळुमरुवत्तोक्कलु हन्नि-धान्यक्क रासिगोळगे व विट्टर् अल्लिय सेट्टिगुत्त-मुख्य-नगरङ्गळ् तावु मार-कोण्ड भण्ड माणिक-पट्ट-सूत्रवाडड होगे वीस लाभायद अडके होगे हन्नोन्दु तावु तेगेद

शि० २८

येलेय हेरिंगं अग(?)द (?)न्तरु बत्तिगरु नेगेद हेरिङ्गं नूरेलेयिन्ति-नितुव बिट्टर तेल्लिगरु मान्य-सान्यवेन्नदे देवर संजे-सोडरिंगं घूपारितेगं गाणके सोल्लगे होरगणिं बन्द एण्णेय कोडके सोल्लगे यिन्तव बिट्टरु गण-कुम्भाररु देवर अष्टविधार्च्चने आहारदान नडवन्तागि दानशालेगे आवगेगळन बिट्टरु हलसिगे-हन्निर्च्छासिरद हेब्बट्टेयल् नडेव गात्रिगरु देवरिगे अष्टविधार्च्चने नडवन्तागि हेरिङ्गे नूरु चोल्लेलेयं बिट्टरु ॥

[IA, XIV, p 14-26 (lines 1-56), t & tr]

२८१-८२-८३

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२८४

होसहोळलु—संस्कृत और कन्नड

[विना कालनिर्देशका, पर संभवत. लगभग ११२५ ई० का]

[होसहोळलु (कृष्णराजपेट परगना)में, पार्श्वनाथ बस्तिके दक्षिणकी ओरके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय । स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वर-द्वारावतीपुरवराधीश्वर-यादवकुलाम्बरद्युमणिसम्यक्त्वचूडामणि मलेपरोळु गण्डाद्यनेकनामालङ्कृत········त्रिभुवनमल्ल तळकाडुगोण्ड भुजबळ वीरगङ्ग होय्सळ-देव पृथिवि-यराज्यं उत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सल्लुत्तमिरे गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिरमनेकच्छत्रच्छायेदि पृथ्वी-राज्यं गेयुत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समस्त-

भुवनविख्यात पञ्चस(श)तवीरशासनलब्धानेकगुणगणालङ्कृत सत्य-सौ(शौ)चाचा [र] चारुचारित्र वीर-वळजधर्म्म-प्रतिपालन विसु(शु)द्ध-गुड्ड-ध्वज-विराजिताम्बरं साहसोत्तुङ्ग चलदङ्कराम साहसभीमं दीनानाथ-बुधजन-कल्पवृक्षनुमप्प चवुण्डादि-द्वितीय-नामधेय-**दोरसमुद्र**पट्टण-स्वामि **पोय्सळ-सेट्टियराद नो [ळ] बि-सेट्टि** श्री **शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** गुड्डन् आप्रभुविन मनो-नयन-वल्लभे जिन-गन्धोदक-पवित्री-कृतोत्तमाङ्गेयु आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान विनोदेयरुमप्प **देमिकब्बे-सेट्टियु** मेदिनीदेवरु ।

वृत्त ॥ मरु निरतमरेंगे वदन-तेजमनोत्ति············।
स्तरमनु ······················ ············।
························ ·· ···· ···।
··················· ·············**नोळबि-सेट्टिय** ॥

कन्द ॥·········देमाम्बिकेय । उत्तमनेने सकळ-जनम् ।
········ ····· · ······· |···· · ·············न ॥

आप्त-चऊण्डादि-नामधेय······**देमिकब्बेयु त्रिकूटजिनालयमं** माडिसि श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद पोस्तक-गच्छद श्रीकोण्डकुन्दान्वयद श्री-**कुक्कुटासन-मलधारिदेवर** शिष्यरप्प तम्म गुरुगळु श्री-**शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवर्गे** कोट्ट वसदिगे **अर्हनहळ्ळियुमं** वसदिय वडगलु तेङ्कलुं नट्ट कल्लु मेरेयागि मूड केरें-वरं परिदे केरियुमं मरे नडुवण-दान-साल्येय मनेयुमं एरडु-गाणमु एरडु तोण्टमुं···**बेट्ट-नायक[न]** मग **गण्ड-नारायण-सेट्टि** कत्तरि घट्टद भूमियोळगे कणिय-समीपद कडवद कोळ्द केरे एरडुमं आ-केरेंय्-मूडण-कोडियिं परिद पळ्ळदिं तेङ्कल-पडुवलाद गर्दे बेद्दलेयुमं बिट्टनन्तिनितुम···**शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर्गे** धारा-

पूर्वकं माडि सर्व्वनमस्यवागि नोळवि-सेट्टियरु कोट्ट'''श्री-मूलसंघद पुस्तक-गच्छद्वर्गेळुरु साम्यमिल्ल इन्त् ई-धर्म्मव (हमेशाकी तरह अन्तिम शब्दावली और श्लोक)

[जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय वीरगङ्ग-होय्सल-देव इस पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे उस समय उनके पादपद्मोपजीवी, शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य नोळवि-सेट्टि नामके पोय्सल-सेट्टि थे। देमिकव्वे सेट्टिने त्रिकूट-जिनालय बनवाकर इसके सर्वेके लिये दानमें अर्हनहल्लि गाँव दिया; इसीके साथ एक उत्तम तालाब, जिसके बीचमें दानशाला थी ऐसी एक गली या सड़क, दो तेलकी चक्कियाँ और दो बगीचे भी दिये। यह जिनालय उन्होंने मूलसंघ, देसिग-गण, पोस्तकगच्छ और कोण्ड-कुन्दान्वय कुक्कुटासन मलधारिदेवके शिष्य और अपने गुरु शुभचन्द्रसिद्धान्त देवको समर्पित कर दिया। बेट्ट नायकके पुत्र गण्ड-नारायण-सेट्टिने निर्दिष्ट दूसरी जमीन दी। यह सब दान नोळवि-सेट्टिने शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव के स्वाधीन कर दिया। और मूलसंघके पोस्तक-गच्छका जो कुछ था, उस सभीको चुंगी और करसे मुक्त कर दिया।]

[EC, IV, Krishnarajapet tl, n° 3]

२८५

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८६

हिरे-आवलि—कन्नड

[विक्रमचालुक्यका ४९ वाँ वर्ष ?=११२४ ई०]

[हिरे-आवलिमें, रामलिङ्ग मन्दिरके सामने पड़े हुए पत्थरपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-वर्षद ४ [ ] नेय साधा [रण]-सं-वत्सरद माघ-शुद्ध ५ बृ०-वारदन्दु श्रीमन्मूल-संघद सेन-गणद

पोगरि-गच्छद चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देव-शिष्यरप्प माधवसेनभट्टा-रक-देवरु

मनर्दि जिनन पदङ्गळोळ् ।
अनुनयर्दि निरिसि पञ्च-पदमं नेनेयुत्त
अनुपम-समाधि-विधियिम् ।
मुनि माघ............पडेदम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूल-संघ, सेन गण और पोगरिगच्छके चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देवके शिष्य माधवसेन-भट्टारक-देव जिन-चरणोंका मनन करके, पञ्च-परमेष्ठिका स्मरण करके, समाधि-मरण धारण करके स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl, n° 127]

२८७

चल्ल(ल्य)—कन्नड़
[शक १०४९=११२५ ई०]
(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८८

सावनूर—कन्नड
[वर्ष-लुप्त ११२८ ई० (लू. राइस) ।]

[सावनूरमें, मारि-कट्टेके दक्षिणमें पड़े हुए एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कु-तीर्थ-ध्वान्त-संघात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥
श्रीमत्-परम गम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज-परमेश्वर-परमभट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडि-देवर** विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-ता-रम्बरं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ वनधि-व्याप्तावनी-चक्रदोळति-सुभट विक्रमायत्त-चित्तम् ।
मुनिर्मि माराम्पनाव त्रिपुर-विजयिगं शूद्रकङ्ग सुपर्ण्णी- ।
तनयङ्ग फल्गुणङ्ग दशरथ-तनुजङ्ग सहस्रार्जुनङ्गम् ।
दनुजप्रध्वंसिग कौरव-नृप-रिपुग **पाण्ड्य-भूपाळकङ्गम्** ॥
भरदिन्दङ्ग-कलिङ्ग-वङ्ग-मगधं नेपाळ-पाञ्चाळ-गुर्- ।
ज्जर-गौळ-द्रविळान्ध्र-माळव-तुरुष्का⋯⋯**सौराष्ट्र-बर्**- ।
ब्बर-काश्मीर⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯मरोत्- ।
करम वेङ्कोळुव भयङ्क⋯⋯⋯ण **पाण्ड्य-भूपाळकम्** ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **काञ्ची-पुर-वरा-धीश्वरं** यदुवशाम्बर-द्युमणि सु-भट-चूडामणि निज-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डं परिच्छेदि-गण्ड राजिग-चोळ-मनो-भङ्ग श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देव-पादाब्ज-**भृङ्गं** नामादि-प्रशस्ति-सहित⋯⋯⋯भुवन⋯⋯⋯दक्षिण-भुजा-दण्डने-निसि ॥

वृत्त ॥ सततं धर्म्मिये धर्म्मजं ⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯ळा- ।
न्वितने हुं कमळोद्भव पर-हित-व्यापार⋯⋯⋯भू-तळ- ।
स्तुत-विद्याधर⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯सत्य-सङ्- ।
गतने भास्कर-सूनु विक्र⋯⋯नं **श्री-सूर्य्य-दण्डाधिपम्** ॥
प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-भरितं मान-सन्मान-दान- ।
⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯नाराधकं नित्य-लक्ष्मी- ।

प्रभु-शौचाचार-सार·······वळ-विळसत्-**पाण्ड्य**······· ।
·························**सूर्य्य**-दण्डाधिनाथम् ॥

····अनवरत-विनुत-सुर-नर ···घटित-पद-कमल-युगल श्रीमदीश्वर-····पादाराधक विरोधि-निकुरुम्ब·······गण्ड **पाण्ड्य**-मण्डलिकसभा-मण्डन प्रचण्ड-दण्डनाथ·······विराजमान सतत-स····नाभिमान········मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गण····त नियोगयौगन्धर निखिल-धर्म्म-धारण······पाळ-मस्तक-खण्डन-प्रचण्ड-दोर्-दण्ड **पाण्ड्य**-मण्डळिक-दक्षिण·······र्गर्व्वपर्व्वतारूढनि ऊढ-प्रौढ-नितम्बिनी-निकुरुम्ब-दिव्य····श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल परिच्छेदि-गण्ड **पाण्ड्य**-मण्डलिक·······शरणागतवज्र-पञ्जर । मृदु-मधुर······· ···दार-हित ' सतत ·······दण्डनाथ-कुळ-कमळिनी-विकासन-सहस्रकिरण '। वन्दि-जन-भरण········तन्नि **सूर्य-दण्डाधिनाथम्** ॥

कं ॥ आळापदिन्दे **पाड्य-नृ**- ।
पाळङ्करगद विरोधि-नृप ······ ।
····सि पद-नतरं प्रति- ।
पाळिसिद सु-भट······-दण्डाधीशम् ॥

···········जिन-स्तवन····सम्पू ···पवित्रोत्तमाङ्ग····दरदिं मुक्त ···य्निरुतर-वज्र····करतळ-रुचियिन्दोप्पुत···नर्थदिं भास्वर-कान्ता-रत्नमे ······ ॥

कं ॥ मण्डळिय····दडे ······केयेयेळु·······डगलेनरे
············· ॥

वृ ॥ दोरे **मरु देवी**·············· ···ताम् ।
सरि नुत-लक्ष्मि तत्-सद्दशमा-प्रियकारिणि देवियेन्दोडी-

धरेय································काळियकनोळ् ।
वर-गुण-वार्द्धियोळ् मुनि-जन-प्रिय दान-विनोद-चित्तेयोळ् ॥
पडेदर्त्थं कळ्ळरिं दायिगरिमळिपरिं भूपरिं किच्चिनिन्दम् ।
किडुगं तानन्तदेम् शाश्वतमेनि····शाश्वतं मर्प्पेनेन्दा- ।
गडे पूण्डि पूर्ण्ण-चन्द्राननने जिनपति-सद्-गेहमं सेम्बनूरोळ् ।
कडु-रम्य तानेनल् माडिसिदळधिक-सद्-भक्तियिं काळियकम् ॥

स्वस्ति समस्तवस्तुविस्तार-गोचर ·······जगान-जिनेश्वर-चरण-सरसिरुहमधुकरोपमान-कुटिल-कुन्तळ-कळापे मृदु-मिधुर-सतत-सत्य-वचनालापे । शृङ्गार विरचित········जन्मभूत········मान-सूर्य्य-दण्डाधिनाय-विशाल-वक्षस्-स्थळस्थित-लक्ष्मी····ने सम्मान-दाने तार-हार-हर-हासा····शशि-विशद-कीर्त्तिविराजित-प्रवर्द्धमान-गुणवति पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादे जिन-पूजा-विनोदे धवळ-विशाळ-कुमुद-नेत्रे गोत्र-पवित्रे निश्शंकादि-गुण-मणि-गण-विराजिते सम्यक्त्व-रत्नाकरे पञ्चाणुव्रत-गुणाकरे सकळ-विनेय-जन-चिन्तामणि वनिता-निकर-चूडामणि नामादि-प्रशस्ति-सहितेयप्प श्री-सूर्य्य-दण्डनायकन पिरिय-दण्डनायकित्ति काळियकम् ॥

वृ ॥ जिन-धर्म्म प्राणि····र्म्मं तनगदु कुल-धर्म्मं जिन-स्वामि देय्वम् ।
जनकं मिकाय्तवर्म्मं जननि तनगे जक्कव्वे भव्यकैळेन्दुम् ।
तनगाप्तर् तन्न त····गुणि कलि-देव लसत्- शौर्य्य-धैर्य्यं ।
तनगीगं सूर्य्य-दण्डाधिपनेने तळेदळ् कीर्त्तियं काळियकम् ॥

सूर्य्य-चमूपन तम्मम् ।
धैर्य्य-महा-मेरु वैरि-जन-लय ··वत्-।
चौर्य्यं स्वामि-प्रिय-कर-।
कार्य्य दण्डाधिनाथनादित्याख्यम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्ड-दण्डनायक **चालुक्य-विक्रमादित्य-देव**-सभानर्घ्य-वस्तुनायक प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-गुण-मणि-गणालङ्कृत-शरीर। भय-लोभ········**त्रिभुवन-मल्ल-पेर्म्माडि-देव**दक्षिण-भुजा-दण्ड रिपु-काळ-दण्ड। प्रसिद्ध-**सेनवर-दण्डनाथ**-प्रिय-पुत्र चारु-चरित्र। सतत-धार्म्मिक-धर्म्मनन्दन। स्वामि-प्रिय-मरुन्नन्दन। हर-चरण-कमल····सळ-सततानत-मधुकर। सकळ-गुणाकर। समग्र-वैरि-कुळ-कुधर-कुळिश-दण्ड। समर-प्रचण्ड। दुर्द्धर-**दुर्विनीत-दण्डनाथ**-वश-वन-कुठार। सङ्ग्राम-धीर····आयदा-चार्य्य मन्दर-धैर्य्य **आन्ध्री**-नीरन्ध्र-कुच-कळश-दर्प्पण वन्दि-सन्तर्प्पण **कुन्तळी**-कुन्तळ-सुवर्ण्ण-कुसुमाभरण अनिन्दिताचरण पुरुषार्थ-स्वार्त्थीकृत-जीमूत-वाहन मान-विक्रसद्धन सतत-दान-सन्तर्प्पित-दीनानाथ-यूथ नामादि-प्रशस्ति-सहितं श्रीम**दादित्य-दण्डाधिनाथम्** ॥

प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गणदोळ् सन्ततैश्वर्य्यदोळ् सू-।
क्त-भवोद्यद्-भक्तियोळ् सद्-विनय-नय-सदाचारदोळ् चित्तभूसन्-।
निभ-भद्राकारदोळ् तद्-वितरण-गुणदोळ् धार्म्मिक-स्वान्तदोळ् सत्-
प्रभवर्प्पेळिन्नरारेम्बिनमेसेदप**नादित्य-दण्डाधिनाथम्**॥

श्रीमद्-**द्रविळ-संघे**ऽस्मिन् **नन्दि-संघे**ऽस्त्यरुङ्गळः।
अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वारासि-पारगैः॥
अवटु-तटमटति झटिति स्फुट-पटु-वाचाट-धूर्ज्जटेरपि जिह्वा।
वादिनि **समन्तभद्रे** स्थितवति तव सदसि भूप कास्थान्येपाम्॥

इन्तेनिसिद **समन्तभद्रस्वामि**गळ सन्तानदोळु॥

एकत्र गुणिनस्सर्व्वे **वादिराज** त्वमेकतः।
तस्यैव गौरवं तस्य तुळायामुन्नतिः कथम्॥

अवर शिष्यरु ॥

इन्दोश्च कान्तमति-विस्तृतमम्बराच्च
भूमेश्च भूरि जळधेश्च गभीरमास्ते ।
मेरोश्च तुङ्गमजितेश यशस्तवोर्व्याम्
मत्तेभ-विम्बमिव मानव-तारकेऽद्य ॥

इन्तेनिसिद **जितसेन-भट्टारक**रग्र-शिष्यरु ॥

घन-बद्ध-क्रोध-धात्रीधर-कुळ-कुळिशं मान-मायद-गजास्फा-
ळन-भद्रेभारि माया-गहन दहन-दावानळं संस्फुरल्लो- ।
भ-नितान्त-ध्वान्त-विध्वसन-खर-किरण श्राव्य-काव्य-प्रियं भ-
व्य-निकायाम्भोधि-संवर्द्धन-हिमकरणं **मल्लिषेण-व्रतीन्द्रम्** ॥

एने नेगळ्द **मल्लिषेण-मलधारि-देव**र शिष्यरु ॥

आळापं वेड नैय्यायिक निज-मतम नच्चदिर् स्साख्य माण् वा- ।
चाळत्वं सल्ल मीमासक तोडरदेले वौद्ध पो पोगु वादि- ।
व्याळेभोत्तुग-कुम्भ-स्थळ विदळन-कण्ठीरव वन्दपं **श्री-** ।
पाळ-त्रैविद्य-देवं जिन-समय-सुधाम्भोधि-सम्पूर्णचन्द्रम् ॥

स्वस्ति श्रीम**च्चाळुक्य-विक्रम-कालद ५३ य कीलक-संवत्सर-दुत्तरायण-संक्रमणदन्दु** श्रीमत्-**सेम्बनूर** स्तानाचार्य्य **शान्तिशयन-**पण्डितर कय्यल्लु श्रीमत्-**पिरिय-दण्डनाय**किति काळिकब्बेगळु धारा-पूर्व्वक माडिसि कोण्डु पार्श्व-देवर कूटक्के देवर वि····पूजारिय वियक्क हलकट्टद केळगे बिट्ट गद्दे कम्म ४५० आ-केरेय हडुवण-कोडियोळगे बेळ्दले मत्त १ इन्ती-धर्म्ममना रोर्व्वरल्लिय स्थानाचार्य्यरु देवगुत्तरुं···· निर्व्वरु वेस-वक्कळुं तप्पदे प्रतिपालिसुवरु मत्तं स्थानि···केरेय केळगण

गद्देयु अदर वळसि वेद्लेयुम्‌············मं प्रतिपा (शेष पदे जानेके योग्य नहीं है)।

[EC, XI, Davangere tl, n° 90]

[जिनशासनकी प्रशंसा। स्वस्ति। जब, (उन्हीं चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडि-देवका विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था तब तत्पादपद्मोपजीवी राजा पाण्ड्य था। पृथ्वीपर उसका सामना करनेवाला कोई भी न था। उसने शिव (त्रिपुर), शूद्रक, गरुड, अर्जुन (फाल्गुन), राम, सहस्रार्जुन, कृष्ण, भीम, इन सबको जीता था।

उसका दण्डाधिप सूर्य्य यादव-वंशका सूर्य और राजिग-चोळके प्रयत्नोंका विफल करनेवाला था। उसकी पत्नी कालियक्के थी। जो धन चोरों, सगे-सम्बन्धियो, लोभियो, राजाओं, या अग्निसे नष्ट किया जा सकता है, उसकी प्राप्तिमें क्या स्थिरता है, इसलिए उसने उसकी स्थिरताके लिये सेम्बनूरमे जिनपतिका एक उत्तम मन्दिर बनवाया। उसकी प्रशंसा। कालियक्केके पिता आसवर्म्मा, माँ जक्कब्बे,······;कलि-देव थे।

सूर्य्य-चमूपका छोटा भाई आदित्य-दण्डाधिनाथ था। उसकी प्रशंसा।

द्रविण-संघके नन्दि-संघसे अरुङ्गळान्वय चमकता है। उसमें समन्तभद्र, वादिराज, उनके शिष्य अजितेश (अजितसेन-भट्टारक) उनके ज्येष्ठ शिष्य मल्लिषेण-मलधारी, उनके शिष्य श्रीपाल-त्रैविद्य-देव हुए। प्रत्येकका एक-एक श्लोकमें गुणवर्णन।

(उक्त मितिको), सेम्बनूरके मन्दिर-पुरोहित शान्तीशयन-पण्डितके हाथोंसे, ज्येष्ठ दण्डनायकिति कालियक्कब्बेने जलधारापूर्व्वक पार्श्वदेव और उनकी पूजा तथा पुजारीकी आजीविकाके लिये (उक्त) भूमिदान किया। कल्याणकामना और शाप]

२८९-९०

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०५०=११२९ ई० (कीलहॉर्न)]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०

२९१

ऊद्रि—कन्नड

[विक्रम वर्ष कीलक ११२९ ई० (लु. राइस) ।]

[ऊद्रिमें चौथे पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमद्-विक्रम वर्षद कीलक-संवत्सरद माग (घ)-शुद्ध १३ श्रीमन्महामण्डलेश्वरं एक्कलरस-देवरुद्धरेयोळ् सुख-सकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे ॥

परम-जिनेश्वर तनगधीश्वरनुद्धलसच्चरित्र''' ।
गुरु हरिण[न्दि]देव-मुनिपोत्तमनग्गद दण्डनायकम् ।
वर-गुणि-बोप्पणं जनकनुन्नत-शीलद नागियक्क मा-।
तरेयेनलेम् कृतार्थनो धरित्रिगे सिंगण-दण्डनायकम् ॥

गुणद कणि जैन-चूडा-।
मणि वैरि-बलके समर-मुखदोळ् सुभटा-।
ग्रणि जिन-पदङ्गळ सिङ्-।
गण-दण्डाधिपति नेनेदु सद्-गति-वेत्तम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), जिस समय महा-मण्डलेश्वर एक्कलरस-देव, शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज्य करते हुए उद्धरेमें विराजमान थे उस समय सिंगण दण्डनायक था । वह बडा भाग्यशाली था, क्योंकि उसके परम-जिनेश्वर अधीश्वर (इष्ट देव) थे, हरिनन्दि-देव-मुनि उसके गुरु, महान् दण्डनायक बोप्पण उसके पिता, और नागियक्क उसकी माता थी । यह दण्डनायक अपने समयका जैन-चूडामणि था, समरमें सामना करनेवाले सुभटोंमें अग्रणी था,—जिनपदोंका ध्यान करते हुए उसको सद्गति मिली थी ।]

[EC, VIII, Sorab tl, n° 149]

२९२

हूनशीकट्टि (जिला बेलगॉव)—कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई० (फ्लीट)]

[१] स्वस्ति श्रीमद्-भूलोकमल्लदेवर[1] वर्ष ६ नेय सावा (धा)रण संव-

[२] त्सरद फाल्गुन शु ५ आदिवारदन्दु श्रीमन्महामं-

[३] डलेश्वरं मारसिंहदेवरसरु अग्रहारं कोडन-पूर्व्व-

[४] दवल्लिय माणिक्यदेवर वसदिय सम्बन्धियेकसा-

[५] लेय-पार्श्वनाथदेवर विविधपूजाविधानक्के विट्ट

[६] गदेय सीमेय गुड्डे [॥] मङ्गलश्री [॥]

[मंगल हो । रविवार, साधारण 'संवत्सर' जो कि श्रीमान् भूलोकमल्ल-देवका छठा साल था, फाल्गुन शुक्ला पञ्चमीको,—महामण्डलेश्वर मारसिंहदेवरसने कोडनपूर्व्वदवल्लि (गाँव) के माणिक्यदेव (देवता) की वसदि (मन्दिर) के एकसालेय-पार्श्वनाथदेव (भगवन्त) की अनेकविध रीतियोंकी पूर्तिके लिये धान्य (चावल) के वहुतसे क्षेत्र दिये ।]

[इ० ए०, १०, पृ० १३१–१३२, न० ९८]

२९३

इन्तूरु—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई०]

[इन्तूरु (गोणी वीडु परगना) में, ध्वस्त जैन-वस्तिके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

---

१ भूलोकमल्लका दूसरा नाम सोमेश्वर तृतीय भी है । यह राजा पश्चिमी चालुक्य वंशका है ।

जयति सकळविद्यादेवतारत्नपीठम्
हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः ।
जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सत्व-मिथ्या- ।
समय-तिमिर-घाति ज्योतिरेकं नराणाम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**-वराधीश्वरं **यदु-कुळ**-कळश-कळिन-नृप-धर्म्म-हर्म्यमूळ-स्तम्भन् । अप्रतिहत-प्रताप-विदित-विजयारम्भ । **शशकपुर**-निवास-वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद । श्रीमन्मुकुन्द-पादारविन्द-वन्दन-विनोदनित्यादि-नामावळीसमन्वितरप्प श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-गोण्ड भुजबळ वीर-गङ्ग-**विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवरु** मूडलु नंगलियघट्ट तेङ्कलु कोङ्गु चेरमनमले हडुवलु बारकनूर घट्ट बडगलु साविमलेयिनोळगाद भूमिय भुज-बळावष्टम्भदिं परिपाळिसुत्तुं **दोरसमुद्रद** नेलेवीडिनोळु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

वृत्तं ॥ प्रकटाटोपद **चक्रगोट्ट**दोडेयं **सोमेश्वरं** वल्के त- ।
न्न कराळासिय-कूर्प्पनेम्मेरदनो **गौडा**न्धकार-प्रचरण्- ।
डकरं **माळव**-मेघ-जाळ-पवनं **चोळो**ग्रकालानळम् ।
त्रि-कळिङ्ग-त्रिपुर-त्रिणेत्रनदटं श्री-**विष्णु**-भूपालकम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्द श्री-**विष्णुवर्द्धन**-अग्र-तनूज निज-वशाम्बर-द्यमणि । वन्दि-जन-चिन्तामणि । सत्य-शौचाचार-सम्पन्न । बुध-जन-मनःप्रसन्नन् । आळिम्मुन्निरिव सौर्यम मेरेव । श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल **कुमार-बल्लाळ-देव**ननवरत-मनोरथावाप्तियिं राज्य गेय्युत्तमिरे ।

क ॥ कळ्के बयलुगेक तुळक्क् । एळेयोळ् माराम्परिछदा-दिगधि-परम् ।
शेळदु नेलक्किकलु कौ- । वळिपुदु रिपु-नृप-कुमार-भैरवन मन ॥-

आवङ्गमात्र-धनमुम- । नीव महा-दानि युद्ध-विजयमना-मा- ।
देवङ्गमीयददटर । देवं वल्लाळ-देवनप्रतिम-वल ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमत्कुमार-वल्लाळ-देवनग्रानुजे हरियब्बरसिये-न्तप्पळेन्दडे सरस्वतियेन्ते सत्-कळान्विते । सीतेयन्ते विनीते । सुसीमा-देवियन्ते सुशीले रुग्मिणियन्ते गुणाग्रणि । अनल्प-कल्प-शाखानीकद-न्तनून-दान-जनित-जन-मनःपुळकेयुं । भगवदर्हत्-परमेश्वर-चरण-नख-मयूख-लेखा-विळसित-ललाट-पळकेयुम् । चातुर्व्वर्ण्णे-वर्णितागण्य-पुण्य-जन-शिखा-मणियुम् । सम्यक्त्व-चूडामणियुमेनिसि ।

वृत्त ॥ धरेयोळनन्त-दिव्य-यति-सन्ततिगन्नमनाद-मीतियिम् ।
वरे पलरङ्गलेम्बभय-वाक्यमनातुररागि वेर्प्पवर्ग्ग् ।
इरदे शरीर-रक्षणमनोदल्लु शास्त्रमनीव पेम्पिनिम् ।
हरियवे ताळ्दिदळ् पर-हितोक्त-चतुर्व्विध-दान-शक्तियम् ॥
पर-वळ-दानव-संहा- । रारुण जळ-लिप्त-खर्ग्गेनुन्नततेजम् ।
वर-विवुध-विभव-विभवं । हरि- कान्ता- कान्तनेसदपं विमुसिंग ॥
हरि-कान्तेयुमी-कान्तेय । दोरेगे वरल् कोरळेम्ब निम्मदद गुणोत्-करमनोळ्कोण्डु हरियवे । पर-हितर्दि धरेयोळैदे जसम तळेदळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमतु-हरियल-देवियर गुरुगळेन्तप्परेन्दडे श्रीमूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद श्री माघ-णन्दि-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वृ ॥ मोहान्धकार-रिपु-शाक्य-नवोत्पळारिग् ।
चार्वाक-चन्द्र-किरण-प्रतिनाश-हेतुस् ।
सद्-भव्य-वारिज-महोत्सव तेज-राजिर् ।
उज्जृम्भितो जगति गण्डविमुक्त-भानुः ॥

अन्तु जगद्विख्यातरप्प श्रीमत्-गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर गुड्डि हरियब्बरसियरु कोडङ्गि-नाड मलेवडिय हन्तियूरलनेक-रत्न-खचित-रुचिर-मणि-कळश-कळित कूट-कोटि-घटितमप्प उत्तुंगचैत्यालयमं माडिसि खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धरणक्क नित्य-पूजेग ऋषियरज्जियर्क्काहार-दानकं सित-परिहारक्क श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-होय्सळ-देवर कय्यळु -सर्व्व-बाधा परिहारवागि गुत्तिय चिण्णन दीवर बम्मनन्तिर्व्वेरय्दु हणविन मण्णुम बिडिसिकोण्डु शक-वर्षद १०५२ नेय सौम्य-संवत्सर दुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु तम्म गुरुगळप्प गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर काल कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

श्रीमन्-मल्लिनाथं विरुद लेखक-मदन-म्महेश्वरं बरेदम् । नागरादि-नागरिक-द्रविळ-समुद्धरणनप्प माणिभोजन मग विरुदरूवारि-वेश्या-भुजङ्ग बलकोजं कण्डरिसिदं मङ्गलम् ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । (अपने पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देव अपने निवासस्थान दोरसमुद्रमे विराजमान थे । राजा विष्णुने चक्रगोट्टके स्वामी सोमेश्वरको अपनी तलवारकी धारसे डराया । वह गौड, मालव, चोळ, त्रिपुट, त्रि-कलिंग सबके लिये भयावह था । जब विष्णुवर्द्धनका ज्येष्ठ पुत्र श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल कुमार वल्लालदेव राज्य कर रहा था:- (उसकी शूरवीरता और औदार्यकी प्रशंसा करते हुए उसकी स्तुति)। कुमार वल्लाल-देवकी वहिनोंमें सबसे बड़ी हरियब्बरसि थी । उसका वर्णन.—(जैन रूपमें उसकी भक्तिका प्रदर्शन, उसकी प्रशंसा)। उसका पति सिंग था, (उसकी प्रशंसा)।

उस हरियब्ब-देवीके गुरु श्री-मूलसंघ, कुन्दकुन्दान्वय, देसिग-गण तथा पुस्तक-गच्छके माघनन्दि-सिद्धान्तदेवके शिष्य गण्डविमुक्त-सिद्धान्तदेव थे; (उनकी प्रशंसा)

जगद्विख्यात गण्डविमुक्त-सिद्धान्त देवकी गृहस्थ-शिष्या हरियब्बरसिने, कोडङ्गि-नाडके मलेवडिके हन्तियूरमे, गोपुरों या शिखरोंसे—जिनमें रत्नोंसे

जड़ित चोटियाँ थीं—समन्वित एक विशाल चैत्यालय, तथा मन्दिरकी मरम्मत करने, पूजाका प्रबन्ध करने, ऋषि और वृद्ध स्त्रियोंको आहारदान देने, तथा शीतसे रक्षा करनेके लिये—त्रिभुवनमल्ल होय्सल-देवके हाथोंसे तमाम चुङ्गियों व करोंसे मुक्त भूमि गुत्तिके चिन्न और बम्म मल्लुएसे ५ हणके किरायेसे लेकर (उक्त मितिको), अपने गुरु गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवके पैरोंका प्रक्षालन करके उन्हें दी। (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

मल्लिनाथने इसे लिखा और माणिभोजके पुत्र वलकोजने उत्कीर्ण किया।]

[EC, VI, Mudgere tl, n° 22]

२९४

कम्बदहल्लि—कन्नड़-भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवत लगभग ११३० ई०]

[कम्बदहल्लिमें, जैन बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्री-मूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद श्री-प्रभाचन्द्रसैद्धान्तिकर शिष्यितियरप्प ··· ·········कय रुक्मव्वे जकवे कन्तियरगें तव ···निसिधिय माडिसि ······························स्वर्गस्थर्················ ···

[(सर्वसाधुगुणसम्पन्न) प्रभाचन्द्र-सैद्धान्तिककी शिष्याएँ रुक्मव्वे और जकव्वे-कान्तियरकी स्मृतिमें ·स्मारक बनवाया।]

[EC, IV, Nagamangala tl, n° 21]

२९५

तगडुरा—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९६

श्रवणबेलगोला—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९७

आवल्वाडी—कन्नड-भग्न

[शक सं० १०५३ (?)=११३१ ई०]

[आवल्वाडी (कोप्प तालुका)में, सीमाकी दीवालके पास]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**-वराधीश्वरं **दसकाष्ठ**निवास **वासन्तिका**-देवि-लब्ध-वर-प्रसाद दशदिश···· तिलक कि········कुन्दपादा ···तमन्द म····करन्द नन्द·········रपालमाथि····क्यं अरि-भीमज रिपु···श्वर·············ळु गण्डं विश्व-विद्या-विचार····दला···············मदि समस्त·····················**गवाडि नोणम्बवाडि** गोण्ड····वीरगङ्ग···वित्र·········यिसळ **विष्णुवर्द्धन** ················दुष्टनिग्रहशिष्ट-प्र····सु···········दोळे····के जवर···· ·········· विष्णु····तारम्बरदोळु···रण····ळु **मल्लिनाथ** ॥ आतन समस्तभुवनख्याति····················गोत्र····ळर सूत्र············· मारसमन्वित····निरु····गोत्र ··············चूडा···· ॥ तत्पा········ ·······परम-ज·······धर्म्म···भीमं ॥ ···रङ्ग···········माचिकेय धर्म्म·············य वं··················· पाद············· ···न्द्र-जन····नरुळ········गरगं ॥ ········· ······यना····जात ····गेने पुण्य····लिगळु श्री तरव·······प्रासरु सि····सायरागि तद्

स····न····श्री **मूलसंघ देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद** सि····द्धान्त-चक्रवर्ति दर्म्मण····तार-देवर सधर्म्मरप्प श्री····**द्र-सिद्धान्त-देवर** शिष्यरु ॥ रामं···जदि-पुर-गत धूर्त-कषायर् अतुल-रत्नत्रय-स··········
तदोळु श्रीम**न्नयकीर्त्ति-भानुकीर्त्ति**-मुनीन्द्रर् ॥ सतिय ···कधोक्षन्वा ····हतिय् अदनोन्दु हृदयदळिप् सिगळ····त्सेम्बुदे **नयकीर्ति**-व्रतिनाथनोळ् अतनु····दावानळनोळु ॥ विनुत····रुडकादान्वित विमल-वियत्-तिग्म-रुग्-मण्डलं व्रज·······मेनित् अनित् आतलरु····नकरं प्रस्फुरद्दर्प्प····डप्पन कोट्यज् ज····प्रहरणन् उपमानित-पुण्य····चा ····णिक्र····ति पतिने विश्वविद्यानिदानम् ॥ अरित-व्रातमुमतिशान्ततेयु ······· र-करनुव व्रात-किरणनुमूर्जि ···दोळेसेवन्तिरेसगु श्रुत-सरसिज-भानु-भा ···कीर्त्ति-व्रतियोळु ॥ आ-मुनि-मुख्यस्य यम ···ड तन स गरुगळे····रेया····हियाद····ळ गुण-शीळ-व्रत-निधि **मल्लिनाथ**नोळु मनुज····सि पोगर्त्ते नेगर्त्ते····**पेर्ग्गडे मल्लिनाथ** ···सदियं माडिसि **शक-वर्ष १ ···३ नेय साधारण-संवत्सरद फाल्गुण वहुळ ३ सोमवारदन्दु कीर्त्तिभट्टार** काल कर्च्चि····पूजेगं खण्ड-स्फुटित-जीर्ण्णोद्धारक देवर केरेय केळगण ·······यलु हन्नेरडु सलिगे गद्देयु वसदि ····मह····रणज··························छघट्टमु विडिसिद नाम-हरन प····क्षदोळु तदनुजम् ॥ वस····वागू-वि···················
·································ष्णु-भूपनें वसु-ममनिरुतमा-केयन् अहरयन·······लिया·······श सिम········ ·······दिन पेम्पु ····सि श्री-पुळिन वसदि····गनिद व्रहि············गन् उद्व·········
························सत्-सर····तरसु······ समस्त-गुण·········
·····························श्री चळुन विमळ··········सन्नाहिर-

व..चक्रवर्त्तिगळ् एनिसि....................

..........हा....सर्व्व.......हेग्गड........ ....पूजेयगळु

....तिर्रे यदा रा.......................

....सादी....देन्दु.......................................द् माचण

[जब कि (अपनी विशाल पदवियोंके साथ) विष्णुवर्द्धन इस जगत्-पर राज्य कर रहे थेः—मूलसंघ, देशियगण और पुस्तकगच्छके......द्र-सिद्धान्तदेवके शिष्य मुनि नयकीर्त्ति और भानुकीर्त्तिके भक्त पेर्ग्गडे मल्लि-नाथने जैन-बसदिका निर्माण किया और इसे धनसे पुष्ट किया।]

[EC, III, Mandya tl, n° 50]

२९८

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५३=११३१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९९

पुरले—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०५४, वर्ष नन्दन=११३२ (ठीक १११२) ई०]

[पुरले (बिदरे परगना)में, गाँवके दक्षिण-पश्चिम वीर-सोमेश्वर मन्दिरके सामने पडे हुए एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरणं श्री-**त्रिभुवन-मल्लदेवर** विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सलु-त्तमिरे ।

एनगेन्दा-विक्रमार्कं गड निगळमनिक्किट्टनो वोगे कीना- ।
शनवोळेम्तन्दु कार्य्यि किळदे तलेयना-वीरनेम् माणूवने-गेय्- ।
वेनेनुत्त मीतिय-पट्टदने कनसु-गण्डुम्मळं-गोण्डु चोद्यम् ।
ननसेन्देच्चट्टिरुत्···तन्नेय तलेयनति-भ्रान्तनन्दिन्दु नोळ्कुम् ॥

तत्पादपद्मोपजीवि ॥ श्रीमदेरेयङ्ग-होय्सळनळियं **हेम्माडियरसन** कीर्त्ति-विशारदमेन्तेन्दडे ।

इवनिन्द कण्डेनेळुं-कडल कडेयनेळुं-कुभृत्-कूटम दिग्- ।
धव-दन्ति-व्रातमं लोकद पवणनेनुत्तुं यशो-लक्ष्मि··· ।
·········त तन्नोन्दरिविनळवु तन्नार्प्पु तन्नेळ्गे तन्न··· ।
···विळासं तन्न पेम्पट्टळगमेनिसिदं **हेम्मं मान्धात-भूपम्** ॥
स्वस्ति श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानळोद्दाम-तेजम् ।
विस्तारोपात्त-भू-मण्डलममळ-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामम् ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरम् ।
प्रस्तुत्य नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगु **होय्सळो**र्व्वीश-वंशम् ॥
अदरोळ् कौस्तुभदोन्दनर्घ-गुणमं देवेभदुद्दाम-स- ।
त्वदगुर्व्वं हिमरश्मियुज्वळ-कळा-सम्पत्तियं पारिजा- ।
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्त ताळ्दि तानल्ते पुट्- ।
टिदनुद्वेजित-वीर-वैरि **विनयादित्या**वनीपालकम् ॥
मदवद्भूप-वळान्धकार-हरण तेजोधिकं सन्तता- ।
भ्युदयं संहृत-विद्विषत्-कुवळय-(य) श्रीकं सुहृच्चक्र-सं- ।
मद-सम्पादन-हेतु सत्पथगतं पद्मोद्भवोद्भावकम् ।
विदितार्त्थानुग-नाममल्ते **विनयादित्या**वनीपालकम् ॥
विनयादित्य-नृपं सज्जनगं दुर्जनागमात्म-विनयं तेजम् ।

जनियिसे नयम भयमं । विनूतनाळ्दोम् विशाल-भूमण्डलमम् ।
आ-**विनयादित्य**न वधु । भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे सद्- ।
भाव-गुण-भवनमखिल-क- । ळा-विळसिते **केळयब्बरसि**येम्बळ् पेसरिं ।
आ-दम्पतिगे तनूभव- । नादोम् सचिगं सुराधिपतिगं मुन्नेन्त् ।
आद जयन्तनन्ते वि- । पाद-विदूरान्तरंग**नेरेयङ्ग**-नृपम् ॥

वृ ॥ आतं **चालुक्य**-भूपालकन वलद-भुज-दण्डमुद्दण्ड-भूप- ।
व्रात-प्रोत्तुंग-भूभृद्-विदळन-कुळिश वन्दि-सस्यौघ-मेघम् ।
श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात- ।
द्योत-प्रोद्यद्यशश्श्री-धवळित-भुवन धीरनेकाङ्ग-वीरम् ॥

मालव-सेनेयं तुळिदु **धारे**यनोवदे सुट्टु तूळ्दि तच्- ।
चोळननोळ्दु तत्-कटकम कडुपिन्नेरे सूरे-गोण्ड दोश्- ।
शालि **कलिङ्ग**नं मुरिदु भङ्गिसिदात्म-भुज-प्रतापमम् ।
केळे दिशाधिपं नेगळ्दनी-तेरदिन् [द्] **एरेयङ्ग** भूभुजम् ॥

एरेयनखिळोर्व्विगेनिसिर्द- । **रेयङ्ग**-नृपाळकनङ्गने चेल्विग- ।
एरेवट्टु शील-गुणदिं । **नेरेडेचल-देवि**यन्तु नोन्तरुमोळरे ॥

एने नेगळ्दवरिर्व्वर्गं तनूभवर्न्नेगळ्दरल्ते **बल्लाळं वि**- ।
ष्णु-नृपाळकनु**दयादि**- । **त्य**नेम्ब पेसरिन्दमखिळ-वसुधा-तळदोळ् ॥

वृ ॥ अवरोळ् मध्यमनागियुं धरणियं पूर्व्वापराम्भोधियेयू- ।
दुविन कूडे निमिर्च्चुवोन्दु-निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयुद्- ।
भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-व्रातैक-धामं धरा- ।
धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्री-**विष्णु**-भूपाळकम् ॥

एळेगेसेव **कोयतूर** तत्- । **अळवनपुर**मन्ते **रायरायपुरं** वळ्- ।
पळ वलद **विष्णु**-तेजो- । ज्वळनदे वेन्दवु वलिष्ट-रिपु-दुर्गङ्गम् ॥

कमलाक्षं पुरुषोत्तम 'काह्लादनं द्विष्ट-दं- ।
त्य-मद-व्यसननन्त-भोग-युतनुर्व्वी-भार-धौरेयनुत्- ।
तम-सत्त्वान्वितनुदय-यादव-कुळाळ्कारनेन्दिन्तु वि- ।
ष्णु-महीशं सले ताने विष्णुवेनिय लक्ष्मी-वधू-वल्लभम् ॥
क ॥ लक्ष्मी-देवि-खगाधिप- । लक्ष्माङ्केसेदिर्द्द विष्णुग् यन्तन्ते वलम् ।
लक्ष्मा-देवि लसन्मृग- । लक्ष्मानने विष्णुगग्र-सतियेने नेगर्दळ् ॥
अवर्गे मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनिळ्कोळ्ळ्के साल्व- ।
अवयव-शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना- ।
निवहमन्…………वीररनेच्चि युद्धदोळ् ।
तविद्रुवनादनात्मभवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजम् ॥
रिपु-सर्प्पद्-दर्प्प-दावानळ-बहळ-शिखा-जाळ-काळाम्बुवाहम् ।
रिपु-भूपोद्दीप्र-दीप-प्रकर-पटु [तर]-स्फार-ज(झ)ञ्झा-समीरम् ।
रिपु-नागानीक-तार्क्ष्यं रिपु-नृप-नळिनी-पण्ड-वेतण्ड-रूपम् ।
रिपु-भूभृद्-भूरि-वज्र रिपु-नृप-मद-मातग-सिंहं नृसिंहम् ॥
स्वस्ति श्री-यदु-वंश-मण्डन-मणिः क्षोणीश-चूडामणिस् ।
तेजःपुञ्ज-विनिर्जिताम्बर-मणिस्सद्वन्द्य-चूडामणिः ।
यस्योद्यत्-सु-यशस्सुपर्व्व-सरिता लोकत्रयं शोभते ।
जीयात् पाद-युगानमन्-नृप-कुळश्री-नारसिंहो नृपः ॥
श्री-मूलसंघ-विख्याते मेषपाषाण-गच्छके ।
क्राणूर्-गण-जिनावासो निर्म्मितं हेम्मभूभृत. ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महा-मण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवरा-धीश्वरं………दावानळ पाण्ड्य-कुळ-कमळ-वन-वेदण्ड गण्ड-भेरुण्ड मण्डलिक-वेण्टेकार परमण्डल-सूरेकार सग्राम-भीम कलि-काल-काम

सकल-वन्दि-वृन्द सन्तर्प्पण-समर्त्थ-वितरण-विनोद **वासन्तिका**-देवि-लव्ध-वर-प्रसाद मृगमदामोद **यादव** कुलाम्वर-द्युमणि मण्डलिक-मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड मलेपरोळ् गण्ड नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत् त्रिभुवन-मल्ल **तळेकाडु कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-वनवसे-हानुङ्गल्ल-हुलिगेरे-वेंळुवलं**-गोण्ड भुज-वळ वीर-गङ्ग **प्रताप-ळ-नारसिंहदेवरु** सकळ-मही-मण्डळमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळनदिं सुख-संकथा-विनोददिं **दोरसमुद्रद** नेळेवीडिनोळु राज्यं गेय्युत्तमिरे। तत्पादपद्मोपजीवि।

तद्राज्ये बुध-कोटि-सम्पदवन-प्राज्ये प्रधानाग्रणीर् ॥
उन्मीळत्-सुकृताम्बुराशि····सम्पत्ति-चन्द्रोदयः, ।
श्रीमत्-**तिप्पण-भूपति**स्समुदगादुद्दान-धारा-जलैर् ।
द्धात्री सम्प्रतिपद्यते प्रतिदिन···मा···सस्याश्रया ॥
तस्य श्लाघ्य-गुणोदयस्य धरणी-वन्द्योनुजातस्स्वयम् ।
श्रीम**न्नाग-चमूपति**················यत्त यः ।
यत्तेजः—प्रकरैरजायत परं पद्मानुराग-प्रदैर्- ।
दृप्यद्-वैरि-तमो-घटा-विघटनैर्द्देवोऽग्र····ग्रामणीः ॥
श्रीम**च्चामल-देवि** भाति भवतीत्येव बुधैर्य्या स्तुता ।
तद्वंशे गुण-संगमे नर-मणि ···············णिः ।
सा जाता भुवनाभिराम-विभवैर्ल्लावण्य-पुण्योदयैर् ।
देवि (सम्प्रति) यन्मुखपङ्कजे विजयते वाणी जगत्पावनी ॥
गङ्गरधात्रियोळवनी- । मगळमेनिसिर्दे···आ-स्त्री-रत्नम् ।
तुङ्ग-जन··············· । ················आगिरे कोड्ळ् ॥
वचन ॥ (य्) **इक्षुवाक**-(क्ष्वाकु)वंशावतारमदेन्तेंन्दडे ।···
सले **वृषभ**-तीर्त्थ-काल सु-ललितमेने सकळ-भव्य-चित्तानन्दं ।

कलिकालनिर्जितं श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धन-क्रमदिन्देम् ॥
सोगेयिसुव-काळदोळ् की- । र्त्तिगे मूल-स्तम्भमयेनिपयोध्या-पुर-दोळ् ।
जगदधिनाथ पुट्टिद- । नगण्यनिक्ष्वाकु-वंश-चूडारत्नम् ॥
धरेगे हरिश्चन्द्र-नृपे- । श्वर नोर्व्वने कान्तनागि दोर्व्वळदिन्दम् ।
विरुदरनदिर्प्पि विद्या- । परिणतियिं नेरेदु सुखदिनिरे पल-कालम् ॥
वृ ॥ आतन पुत्रनिन्दु-दर-हास-निभोज्ज्वळ-कीर्त्ति सद्-गुणो- ।
पेतनुदात्त-वैरि-कुळ-भेदन-कारि कला-प्रवीणनुद्- ।
धूत-माळं सुरेन्द्र-सदृश भरतं कवि-राज-पूजितम् ।
ख्यातनतर्क्य-पुण्य-निळयं सु-जनाग्रणि विश्रुतान्वयम् ॥
ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । विजय-महादेवि तनगे सतियेने विबुध-
व्रज-पूज्यं भरतं भा- । वज-सदृश नेगळे सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥
वचन ॥ आ-विजय-महादेविगे गर्भ-दोहळ नेगळे ।
वृ ॥ तरळ-तरंग-भङ्गुर-समन्वितेयं ऋ(झ)ष-चक्रवाक-भा- ।
सुर-कळ-हंस-पूरितेयनुद्ध-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
हर-नव-शैल्य-मान्य-शुभ-गन्ध-समीर-निभास्येयं तळो- ।
दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीव्रभि-गाञ्छेयनेय्दे ताळ्दिदळ् ॥
कल-हस-याने पलरु । केळदियरोड वागि पूर्ण्ण-गङ्गा-नदियम् ।
विळसितमं पोक्कु निरा- । कुळदिन्दोलाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
अन्तु मनदलम्पु पोम्पुळि-वोगे गङ्गा-नदियोळोलाडि निज-गृहके वन्दु नव-मासं नेरेदु पुत्रन पडेदातङ्गे ।
गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मगं वडेदळप्प कारणदिन्दम् ।
माङ्गल्य-नाममादुदि- । ळाङ्गनेगधिपतिगे गङ्गदत्ताख्यानम् ॥
व ॥ आ-गङ्गदत्ताङ्गे भरतेनम्ब मगं पुट्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्बं मगं पुट्टिदम् ।

कं ॥ गुण-निधिगे **गङ्गदत्तं**-। गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुट्टि दया-।
प्रणियागि **हरिश्चन्द्र**- । प्रणुत-नृपेन्द्र धरित्रियोळ् शोभिसिदम् ॥

मत्तमा-नृपोत्तमाङ्ग **भरत**नेम्ब सुतं पुट्टिदनातङ्गे **गङ्गदत्त**नेम्ब मगनागिन्तु गङ्गान्वय सलुत्तमिरे ।

कं ॥ **हरि**-वंश-केतु **नेमी**- । **श्वर**-तीर्त्थं वर्त्तिसुत्तमिरे **गङ्ग**-कुळ-
वर-भानु पुट्टिदं भा-। सुर-तेजं **विष्णुगुप्त**नेम्ब नरेन्द्रम् ॥

व ॥ आ-धराधिनाथ साम्राज्य-पदविय कय्कोण्डु **अहिच्छत्र-पुर**-दोळु सुखमिर्द्दु ।

व ॥ **नेमि**-तीर्थंकर परम-देवर निर्व्वाण-कालदोळैन्द्र-ध्वजमेम्ब पूजेयं माडे देवेन्द्रनोसेदु ।

कं ॥ अनुपमदैरावतमं । मानोनुरागदोळे **विष्णुगुप्ता**ङ्कित्तम् ।
जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिडे ॥

व ॥ आ-**विष्णुगुप्त**-महाराजङ्गं **पृथ्वीमति-महादेवि**गं **भगदत्तं श्रीदत्त**नेम्ब तनयरागे ।

व ॥ **भगदत्ता**ङ्गे **कलिङ्ग**-देशम कुडलातनु **कलिङ्ग**-देशमनाळ्डु **कलिङ्ग-गङ्ग**नागि सुखदिनिरे ।

(वृ) इत्तलुदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपम समस्त-राज्यमुम ।
श्रीदत्त-नृपाङ्कित्तं भू- । पोत्तमनेनिसिर्द्द **विष्णुगुप्त**-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु **श्रीदत्त**निन्दित्तलानेयुण्डिगे सलुत्तमिरे ।

प्रियबन्धु-वर्म्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकळ-धात्रिय पालिसिदम् ।
भय-लोभ-दुर्ल्लभं ल- । क्ष्मी-युवति-मुखाब्ज-षण्ड-मण्डित-हासम् ॥

अन्ता-प्रियबन्धु सुखदिं राज्य गेय्युत्तमिरे तत्-समयदोळु **पार्श्व**-भट्टारकर्गे केवळ्ज्ञानोत्पत्तियागे **सौधर्म्मेन्द्रं** बन्दु केवळि-पूजेय माडे प्रिय-

बन्धुवुं तानुं भक्तियिं वन्दु पूजेयं माडलातन भक्तिगिन्द्र मेच्चि दिव्यमप्यर्दुं तुडुगे-गळं कोट्टु निम्मन्वयदोळु मिथ्यादृष्टिगळागलोड अदृश्यङ्गळक्कुमेन्दु पेळ्दु **विजयपुरकहिच्छत्रमे**न्दु पेसरनिट्टु दिविजेन्द्रं पोपुदित्तलु **गङ्गा**न्वयं संपूर्ण्ण-चन्द्रनन्ते पेर्च्चि वर्त्तिसुत्तमिरे तदन्वयदोळु कम्प-महीपतिगे पद्मनाभनेम्त्र मगं पुट्टि ।

कं ॥ तनगे तनूभवरिल्लदे । मनदोळ् चिन्तिसुतमिर्द्दु पद्मप्रभना- ।
र्प्पिन कणि सासन-देवते- । यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साधिसिद

व ॥ अन्तु साधिसि (दि) शाधित-विघनागि पुत्ररिर्व्वरं पडेदु **राम-लक्ष्मणरेन्दु** पेसरनिट्टु ।

वृ ॥ परम-स्नेहदोळिर्व्वरं नडपि लीला-मन्त्रदिं चन्द्रनन्- ।
तिरे सपूर्ण्ण-कळाङ्गरागि वेळेयल् विद्या-त्रलोद्योगमुर-
र्व्वरेयोळ् चोद्यमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।
पेरेदाशा-गजमं पळक्वलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोप्पिदर् ॥

व ॥ अन्तु सुखदिमिर्प्पुदु मत्तलु**उज्जेनिय-पुरा**धिपति-**महीपाळ**नातुडुगेगळ वेडियट्टिपडे पद्मनाभ कृतान्तनन्ते रौद्र-वेशमं कैकोण्डु ।

क ॥ येमगदनद्धल्किागदु । तमगे तुडल् योग्यमल्तु सन्तमिरल् वेळ् ।
समर्क्के वन्दनप्पडे । निमिषदोळान्तिरिदु वीर-रसम मेरेवेम् ॥

व ॥ अन्तु नुडिदट्टि मन्त्रि-वर्ग्ग डोळाळोचिसि तन्न तङ्गेयाळव्वेयु नाल्वतेणवराप्तरप्प विप्र-सन्तानमं वेरसि कळिपिदडवर्दक्षिणाभिमुखरागि वरुत्तं **राम-लक्ष्मणर्ग्गे दडिग-माधवरेन्दु** पेसरनिट्टु निच्च-त्रयणर्दिं वरुत्तमिरे ।

क ॥ वन्दवर्गेळुचित-पदमन- । गुण्डेलेयिं कण्डरमळ-लक्ष्मी-चित्ता- ।
नन्दनमं पेरूरं । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु **गङ्ग-हेरूरं** कण्डल्लिय तटाक-तीरदोळु वीडं विट्टु चैत्या-लयमं कण्डु निर्भर-भक्तियिं त्रि-प्रदक्षिणं गेय्दु स्तुतियिसि समस्त-विद्या-पारावार-पारगरु जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्ण्ण-चन्द्ररुमुत्तम-क्षमादि-दश-कुशळ-धर्म्म-निरतरुं चारित्र-चक्र-धररं विनेय-जनानन्दरं चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशः-प्रकाशरं सकळ-सावद्य-दूररं **क्राणूर-गणाम्बर-**सहस्र-किरणरं द्वादश-विधतपोनुष्ठा[न]-निष्ठितरं **गङ्ग**राज्य-समुद्धरणरं **श्री-सिंहनन्द्याचार्यरं** कण्डु गुरु-भक्ति-पूर्व्वकम् वन्दिसि तम्म वन्दभिप्राय-मेल्लम तिळिय पेळे कय्कोण्डवर्ग्गे समस्त-विद्याभिमुखर्म्माडि केलवानु दिवसदिं **पद्मावती-**देविय विधि-पूर्व्वकमाह्वानं गेय्दु वर वडेदु खळगसुमं समस्त-राज्यमनवर्ग्गे माडे ।

क ॥ मुनि-पति नोडल्तु विद्द- । जन-पूज्यं **माधवं** शिलास्तम्भमना-।
ईनुगेय्दु पोय्यलदु पु- । ण्मेने मुरिदुदु वीर-पुरुषरेनं माडर् ॥

व ॥ आ-साहसम कण्डु ।

वृ ॥ मुनि-पति कर्ण्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि स- ।
ज्जन-जन-वन्धरं परसि सेसेपनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।
मनमोसेदित्तु कुञ्चमनगुर्व्विन केतनमागि माडि वे- ।
र्प्पिनितु परिग्रह गज-तुरङ्गसुमं निजमागे माडिदर् ॥

व ॥ अन्तु समस्त-राज्यम माडि बुद्धियनिवर्ग्गिन्तेन्दु बेससिदरु

वृ ॥ नुडिदुदनारोळ नुडिदु तप्पिदडं जिन-शासनक्कोडम्- ।
वडदडमन्य-नारिगेरेदट्टिदडम्मधु-मास-सेवे गे- ।
य्दडमकुळीनर्प्पवर कोळ्कोडेयादडमर्त्थिगर्त्थमम् ।
कुडदडमाहवङ्गणदोळोडिदडं किडुगुं कुल-क्रमम् ॥

॥ उत्तममप्प नन्दगिरि कोटे पोळल् कुवळालमाळ्के तोम्- ।
भत्तरु-सासिरं विपयमाप्तननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रं- ।
गात्त-जय जयं जिन-मत मतमागिरे सन्ततं निजो- ।
दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूभुजराळ्दरुर्व्वियम् ॥
उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे मोद [कि] ले मूड तोण्डे-ना- ।
डुत्तपरागेगम्बुनिधि चेरोडेयिर्प्प तेङ्क कोङ्गु म- ।
त्तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-गङ्गवाडि-तोम्- ।
भत्तरु-सासिर दळ्ळेले माडिदनिन्तुटु गङ्गनुज्जुगम् ॥
अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-शब्दम केळ्दु ।
भरदिन्दं चुर्च्चुवाय्दं होगळे बुध-जन वन्दु कावेरियोळ् भी- ।
करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रम निन्दु नोडल् ।
परिवारं तन्न कीर्त्ति-प्रभे वळ्से दिशा-आगमं चोद्यमागल् ।
परम-श्री-जैन-पाद नेलसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥
क ॥ कर्···अरिद गङ्गनिं भय- । मिल्लद हरिवर्म्म विष्णु-भूपनिं निजदिं ।
वल्ले तडङ्गाल्-माधव- । नल्लि वलि चुर्च्चुवाय्द-गङ्ग-नृपाळम् ।
श्रीपुरुषं शिवमारं ।···ळ कृतान्त-भूपना-सयिगोट्टम् ।
द्वीपाधिपरोळरि-नृप- । कोपानळ-शिखेयेनिप्प विजयादित्यम् ॥
···रे येरिद मारसिंगना- । कुरुळ-राजिग पेसर्-व्वेत्ता- ॥
मरुळ तन्नृप-तिळकन । पिरिय मगं सत्य-वाक्यनचळित-शौर्य्य
गर्व्वद-गङ्ग वसुधेयो- । ळोर्व्वने कलि चागि शौचि गुत्तिय-गंग ।
दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि राचमल्ल-भूभृ·· ··· ॥
तेङ्ग मुरिवं हसिय क- । अङ्ग पिडिदडसि कील्वना-मद-कारियम् ।

पिङ्गदे निलिसुव साहस- । तुङ्ग केवळमे नेगळ्द **रकस-गङ्गम्** ॥
अवयवदिन्दे साधिसिद माळवमेळुमनेय्दे गङ्ग-मा- ।
ळवमेनलक्करं वरेदु कल् निरिसुत्त कळल्चि **चित्रकूट-** ।
मनुरे **कन्न**मजेय-नृपानुजन **जयकेसिय** महा- ।
हवदोळे **मारसिंग**-नृपनिक्कि निमिर्च्चिदनात्म-शौर्य्यमम् ॥
तनयं श्री-**मारसिंहङ्**ननुपम-जगदुत्तुगनाद जगत्-पा- ।
वन लक्ष्मी-वल्लभङ्गिन्तुदयिसि नेगळ्द **राचमल्ला**वनीशम् ।
मनु-मार्ग्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनिताधीश-भूवल्लभेशम् ।
जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळय राज-विद्या-धरेन्द्रम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्द गङ्ग-वंशोद्भवरा-**दडिग**न मगं **चुर्व्वुवाय्द**-**गङ्ग**नातन सुतं **दुर्व्विनीत**नातन तनय श्री····नु **श्रीपुरुष**महाराज तत्-तनयं देव तत्-तनूभव**नेरेयङ्ग-हेम्माडि** तत्पुत्र **बूतुग-हेम्माडि** तदात्मजरु···· **देव** तदनुज **गुत्तिय-गंग**नातन मोम्म **मारसिंग-देव**नातन मगं **कलियङ्गदेव**नातन मग **वर्म्म-देव**निना-गङ्ग-वंशोद्भवरु राज्यं गेय्ये ।

दक्षिणदेशनिवासी । गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-संधरणः ।
श्री-**मूल-संघ**-नाथो । नाम्ना श्री-**सिंहनन्दि**-मुनिः ॥
श्री-**मूल-संघ**-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर····जय-ल- ।
क्ष्मी-महित जिन-धर्म्म-ल- । लामं **काणूर्-गण**-जना····करम् ॥

गणद अन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ मौळिकेवामराद्रौ
तिळकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृतांशौ ।
इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी निकामम्
समजनि जिनधर्म्मा निर्म्मळो **बालचन्द्रः** ॥

अवर शिष्यरु ।

विमळ-श्री-जैन-धर्म्माम्बर-हिमकरनुधवद्-त''''लक्ष्मी- ।
रमणं भूमण्डलाधीश-नुतनुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं जं- ।
गम-तीर्थं भव्य-वक्त्राम्बुज-खर-किरणं श्री-**प्रभाचन्द्र-सिद्धान्-**
त-मुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर-विशद-यशो-वेष्टिताशा-विभागं ॥
मनमं नियमिसलरिय- । त्तनुव'' 'तोर्प्प मुनियुं मुनिये ।
मनम तनुवं नियमिस- । ल्कनुदिनमी-नेमि-देवनोर्व्वने **वल्लं** ॥

अवर शिष्यरु ।

गुणियेने जिनमतरक्षा- । मणियेने कवि-गमक-वादि-वाग्मि-प्रवरा-
ग्रणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने **गुणनन्दि-देव**रेसेदरु धरेयोळ् ॥

तत्सधर्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियल्के निन्न विरुद माणु माणेले **सांख्य** वा- ।
ग्-बळम नच्चदे नीनडङ्गडरदिर्च्चार्व्वाके **नैय्यायिका** ।
मलेयल् वेडिरु मन्तमेके चलदिन्दी-भण्डप केम्मनणु- ।
डलेयल् श्री-**गुणचन्द्र-देव**नमळं वादीभ-कण्ठीरवम् ॥

तत्सधर्म्मरु ।

गङ्गा-वारि सु-शैवलं सुर-करी दानार्द्र-गण्ड-स्थलः ।
शम्भुःकण्ठ-विलग्न-घोर-गरलः चन्द्रः कळङ्काङ्कितः ।
कैलाशो वन-वल्लरी-परिवृतस्साम्य कथं वक्ष्म्यहम् ।
कीर्त्या तैस्सह **माघनन्दि**-यमिनश्चन्द्रातपोधच्छ्रिया (म्) ।

आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजन शिष्यरु स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-कल्याणाष्ट-महा-प्रातिहार्य्य चतुस्त्रिंशदतिशय-विराजमान-भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमळ-विनिर्गत-सदसदादि-वस्तु-

स्वरूप-निरूपण-प्रवण-राद्धान्तामृत-वार्द्धिवर्द्धन-रात्र्याभरणरुमप्प श्रीमतु-
प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवरेन्तेन्दडे ।

आसीदाशान्तराळ-प्रबळ-पृथु-यशो-व्योम-गङ्गा-तरङ्गः
चञ्चच्चारित्र-धात्रीभवदतिललितोदार-गंभीर-मूर्त्तिः ।
वाक्-कान्ता-तुग-पीन-स्तन-कळश-लसन्नूत-चूत-प्रवाळः
सिद्धान्त-क्षीर-नीराकर-हिमकिरणः श्री-**प्रभाचन्द्र-देवः** ॥

अभिनव-गणधर''' । त्रि-भुवन-जन-विनुत-चरण-सरसिरुहयुगं ।
शुभमति'''रुह-वनार्क्कनेम्बुदु । वसुमतियोळ**नन्तवीर्य्य-सिद्धान्तकरम्** ॥
वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-(वादि)-विशाळ हर-निटलाक्षम् ।
वादि-मद-रदनि-विद्रुव । भेदिप मृगराज जयतु **श्रि(श्रु)तकीर्त्ति-बुधं** ॥

तत्-सधर्म्मरु ।

कवि-गमक-वादि-वाग्मिग- । ळेवेम्बरं गेल्दु **कनकनन्दि-त्रैविद्य-**
विळासं त्रिभुवन-म- । ल्ल-वादिराज दलेनिसिद नृप-समेयोळ् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

मन-वचन-काय-गुप्तियो- । ळनुनयदि तळदु पञ्च-समितिय वशदिन्-
दनुवशनाद तपोनिधि । **मुनिचन्द्र-व्रतिप**नखिळ-राद्धान्तेशम् ॥

अवर शिष्यरु ।

पिरिदं पोगळ्वडेङ्गळ । पुरुळुण्टे-माडलेन्दु-मुनि-पतियेम्बी- ।
वर-चिन्तामणि'''' । कुरुळि सु-सन्मान-ध्यानदुरुळियेनिक्कुम् ॥

तपोनुष्ठा [न] निष्ठितरारेन्दडे ।

कनकचन्द्र-मुनीन्द्रन पादम । मेनेव भव्य-समूहद पाप-सम्- ।
हननमप्पुदु तप्पदु निश्चयम् । मन''''''''निचळुम् ॥

अवर सधर्म्मरु- ।

मुनिय.............अनवद्याचा(च)रणे जैन-शा- ।
सन-रक्षामणि शान्तने सकळ-राग-द्वेष-दोष-प्रभङ्- ।
जननुर्व्वी-नुतने गुण-प्रणयितं तानेम्बिन वीर मे- ।
दिनियो...धवचन्द्र-देवनेसेद चारित्र-चक्रेश्वरम् ॥

तत्-सधर्म्मरु ।

वर-शास्त्राम्बुधि-वर्द्धन- । हरिणाङ्कं-विरुद-वादि-मद-विस्फाळम् ।
निरुतं तानेनलेसेद । धरेयोळ् त्रैविद्य-बाळचन्द्र-मुनीन्द्रम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

वृ ॥........आळ्दु धर्म्ममनुपेक्षिसि तक्कडेगीयदागळुम् ।
पीन-नितम्बम घन-कुच-द्वयम मरेगोण्डु म-यो- ।
धानमनोल्दु पोक्कु नेरे नील-पटाश्रितरप्प योगिगळ् ।
दान-विनोदनोळ् दोरेगे-वप्परे माधवचन्द्र-देवनो...॥
.......सत्य-गङ्गं कुडे कुरुळियोळादन्न-दान-प्रभा-वि- ।
स्तारदिं श्री-बालचन्द्र-व्रति-पति पडेद दानदिं जीयनल्कुद-
न्नरेय सम्पूर्णमागल् तणिसिदमिदु वल्-चोद्यमक्षीण-रिद्धि- ।
स्फुरित कय्गणिम पोण्मुत्तिरे....... ......ज्यनादम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

चतुरास्य-कोटि-कूटदो- । ळतिशयमेनिसिर्द कोपण-तीर्थदोळीगळ् ।
नुतियिप वङ्काचार्य्य- । व्रतिपतिये नेमि-देवरिन्दमे पूज्य ॥
स्थावर-जगममनितुं । पावनमाद............ ।
...जीयेनिसि वाळ्वडिगळ । जीय श्री-नेमि-देवरुदयिसे शुभद ॥

अवर सधर्म्मरु ।

अधनग्गश्रितर्गिष्ट-सन्ततिगे चातुर्व्वर्ण्ण-संघक्के तान् ।

शि० ३०

अधिकोत्साहदिन्···वयकेयम्वेर्प्पत्थमं वाञ्छेयम् ।
ह्रुच-चिन्तामणि······ ····· · ···कूर्त्तित्तु मा- ।
धवचन्द्रं पडेद समस्त-भुवन-प्रस्तुत्यम स्तुत्यमम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

साधिसि गुरूपदेशदो- । ळाधिक्यतेयास्तु सकळ-पट्-कर्म्मगळु ।
वेदान्तर् म···दरिव- । र्ग्गोधूम-वरट्टनोडने तोडर्व्वेम··· ॥
शाकिनि-डाकि······।-किनि-चोरारि-मारि-डेव्येयरनितु ।
लोकमरियल्के··· । सकळमनरिये विरुद देवेन्द्रनुमम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्तेयं तळेद श्रीमत्-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड भुजवळ-गङ्ग-हेम्माडि-वर्म्म-देव ।

वलवद्वैरिगळं पडल्-वडिसि गेल्दुग्राजियोळ् माणदने ।
चलदिन्द परियिट्टु वैरि-पुरमं तत्-कोटेय तद्-मही- ।
तळमं कोण्डु धरित्रि वण्णिसुविन श्री-वर्म्म-देवं मही- ।
तळम तोळ्-वळदिं निमिर्च्चिदनिदम् हेम्माडि सौर्य्यात्मनो ॥

आतन पट्ट-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादाम्बुज-मत्त-भृङ्गी······भूषण-भूपिताङ्गी ।
नितम्बिनीना तिळकायमाना विराजते गङ्ग-महाधिदेवी ॥

वृ ॥ निजवेनिपी-नेगर्त्तेय महासतिगुत्सव [म] म् निमिर्च्चुवा- ।
त्मजरेनिसिर्द्द तम्मुतोडहुट्टिदरोप्पुव मारसिंगनुम् ।
स-जयदे सत्य-गङ्ग-नृपनुं कलि-रक्कस-गङ्ग-देवनुम् ।
भुजवळ-गङ्ग-भुजनुमार्ज्जिसि पेर्ज्जसम निरन्तरम् ॥
गजरिपु-विष्टराजि-विभवोदय-पार्श्व-जिनेन्द्र-पाद-पङ्- ।
कज-मद-भृङ्ग गङ्ग-कुळ-मण्डन दण्डित-वैरि-वर्ग्ग भा- ।

वज-निभ-मूर्त्ति दिग्-वळय-वर्त्तित-कीर्त्ति समस्त-धात्रियोळ् ।
भुजवळ-गङ्ग-भूप निनगादोरे मण्डलिकैक-भीरव ॥
आतन पट्ट-महादेवि ।
[·······]आळु-वरनतुज । दिट्टभूपङ्गे गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।
पट्टमनेन्दडे गङ्गन । पट्टमहादेवि यन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
वृ ॥ मारिद्राशान्तमं वळ्ळुदलळ्डुदधि-त्रातम दूगे सन्दा- ।
मेरु-ओणीन्द्रमं त्राशिनोळेणिसि तरङ्गोण्डु नक्षत्रमं पेळ् ।
आरानुं वल्लरे वल्लडे पोगळ्गो···विश्वम्भरा-भार-वीर- ।
श्री-रामालीढ-वक्ष-द्रढिम-घन-भुज-स्तम्भनं गङ्ग निन्नम् ॥
अन्नेयवागिदूटिसुव····मोले····प्रकास येळवो ।
रन्नवे हेण्डिरोळ् मनेगोर्व्वरुदारेयरण्ण हुट्टरे ।
हुन्नियवुळ्ळडेम् जगदोळोर्व्वळे भागिये ताने लेसे हुह्- ।
नन्नियोळिन्तु गर्व्वितेयरार्ग्गळ चन्दल-देवियन्ददिम् ॥
श्रीमद्-भुजवल-गं[ग]-देवङ्ग गङ्ग-महादेविगं पुट्टिद सत्य-गङ्गन प्रतापमेन्तेने ।
जसमुवद्भवलातपत्रमखिळाशा-देवतापाङ्ग-र- ।
शिम सह······ गजेन्द्र-रिपु-पीठं विक्रमं तानदा- ।
गे सु-साम्राज्य-लताभिवृद्धि-विभव मय्वेत्तिरल् वळ्दिदर् ।
व्वेसकेय्युत्तिरे सत्यगङ्गनेदं विश्वावनी-भागदोळ् ॥
आतन-अरसि ।
पति सत्य-गङ्ग-देवं । गति ···दार-लक्ष्मि तानेनिसि···· ।
········तळेदळेम्···।···आरो राणि कञ्चल-देवि ॥
भावभवङ्गे रूपु मद-सामज-वैरिगे विक्रम-क्रम सुरेन्- ।

द्रावनिजक्के दान-गुणमब्धिगे गुणपमराचळक्के सं- ।
भावित-धैर्यमगलिपुदेन्दडे **गङ्ग-कुभृत्-कुमार**.... ।
........पाळक्किगे दोरेयप्परे मिक्क कुभृत्-कुमारकर् ॥
........यिन्दं क्षीराब्धियु- । मसवसर्दि पेर्च्चुवन्ते **गङ्गान्वयमु** ।
पसरिसे पेर्च्चुगे निन्निन्दसदळमौदार्य-शौर्य्य **गङ्ग-कुमारा** ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वर**नेरेयङ्ग-होय्सण**-देवनळियं गण्डर दावणि हुसिवर शूल मावन गन्ध-वारण **हेम्माडि-देवनेडेदोरे** ...सायिरमुम **हरिगेय** नेलेवीडिनोळु सुखदिनाळुत्तिर्द्दु **कुन्तलापुर**दोळु चैत्यालयमं माडि देवर पूजा-विधानक्क चातुर्व्वर्ण्ण-सघ-समुदाय-चतुस्-समयदाहार-दानक्क खण्डस्फुटित-जीर्ण्णोद्धारक्क समुदाय-मुख्य-स्थानं माडि **येडदोरे-मण्डलिनाड**प्रभु-गावुण्डुगळकरेयलक्ष्टि धर्म्म आरय्के येन्दु **शक-वर्ष ९८९ नेय प्लवंग-संवत्सरद पुष्य-सु १३ दशि-गुरुवार-वुत्तरा-यण-संक्रमणदन्दु** तम्म गुरुगळु **श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** काळं कर्च्चि धारा-पूर्व्वक(क)माडि बिट्ट दत्तिया-ग्राम-दुभय...सर्व्व-नमस्य-वल्लि इट्टुवायदाय-सुङ्क-निधि-निक्षेप सर्व्व-बाधा-परिहार ॥

मत्ता-राज-सर्व्वन्य **सत्य-गङ्ग-देव नेडेहळ्ळिय** नेलेवीडिनोळु सुखदिं राज्यं गेय्युत्तिर्द्दल्लि **कुरुळिय-तीर्त्थदल्ल गङ्ग-जिनालय**म माडि **सक-वर्ष १०५४**[1] **नेय नन्दन-संवत्सरद चैत्र-सुपुण्णमियादिवार-सोम-ग्रहणदन्दु** तन्न गुरुगळु श्री **माधवचन्द्र-देवर** काल्क र्चि धारा-पूर्व्वक माडि बिट्ट दत्ति ...वण्ण ....

स्वस्ति श्रीमन्-महामण्डलेश्वर **गङ्ग-हेम्माडि-देवर** सन्निधियल्लि सर्व्वाधिकारि **वागिय-हेग्गडे लोक्किमय्यन** मग **हेग्गडे-चन्दिमय्यं**

---

१ लेकिन १०५४=परिधावि, नन्दन=१०३४

कुरुळिय तम्म गौडिकेयं कलियर-मल्लि-शेट्टि मारं कोण्डु अरसर सन्निधियल्लु बाळचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्टरु ॥

मत्त सिरियम-सेट्टियुमातन मक्कळु····आतन गौडिकेय नन्नि-यरस-देव हळ्ळबुरदल्लु बाळचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्व्वक माडि कोट्टरु ॥ अन्तुभय-ग्रामद········साम्य सुङ्क सहित सर्व्व-बाधा-परिहार ··········

(आगेकी ५ पंक्तियोंमे सीमाओंकी चर्चा तथा हमेशाके अन्तिम श्लोक हैं)

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय त्रिभुवन-मल्ल-देवका राज्य प्रवर्धमान था;—

आगेके श्लोकका प्रकरणसे कोई सम्बन्ध नहीं है, सिवाय इसके कि विक्रमांकने, जो कि त्रिभुवन-मल्ल है, बहुत भय उत्पन्न किया ।

तत्पादपद्मोपजीवी एरेयङ्ग होय्सळका दामाद हेम्माडि-अरस था । उसकी प्रशंसा ।

होय्सल राजाओंके वंशकी प्रशंसा । विनयादित्यसे लेकर नरसिंह तकके राजाओंकी परम्परा ।

मूलसंघके मेष-पाषाण-गच्छके क्राणूर्-गणका एक जैनमन्दिर राजा हेम्मने बनवाया ।

जिस समय प्रताप-होय्सल-नारसिंह-देव दोरसमुद्रमें राज्य कर रहा था —उसका प्रधान मंत्री (प्रशंसासहित) तिप्पण भूपति और उसका छोटा भाई नाग-चमूपति था, जिसकी पत्नी चामल-देवी थी । उसने ·· ·· का दान किया ।

पश्चात् इक्ष्वाकुवंशका अवतार दिया है । इस भागकी १७० पंक्तियोंमें पूर्वके शिलालेख नं० २७७ और २६७ के भाग ज्यों-के-त्यों मिलते हैं । नं० २७७ "सले वृषभतीर्त्थ-काल" से लेकर "परावृत-गङ्गवाडितोम्भत्तरु-सासिरं" तक १०१ पंक्तियाँ, और "अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-शब्दमं केल्दु" से लेकर "मेरु-शैलोपमानम्" तक ५ पंक्तियाँ । नं० २६७ "कर ··अरिद गङ्गर्नि भय-" से लेकर "रक्कस गङ्गम्" तक ११ पंक्तियाँ । नं० २७७ "अवयवदिन्दे' से लेकर राज विद्याधरेन्द्रम्" तक ८ पंक्तियाँ । नं० २६७ "इन्तेनिसि नेगल्द" से लेकर "अनन्तवीर्यसिद्धान्तकरम्" तक ४५ पंक्तियाँ ।

श्रुतकीर्तिकी प्रशंसा। पश्चात् क्रमसे सधर्मा कनकनन्दि, मुनिचन्द्र व्रती-की प्रशसा। मुनिचन्द्रके शिष्य कनकचन्द्र-मुनीन्द्र, उनके सधर्मा माधव-चन्द्र-देव; उनके सधर्मा त्रैविद्य बालचन्द्र-मुनीन्द्र और उनके सधर्मा माधव-चन्द्र-देव। सत्य गंगने कुरुळिमें बालचन्द्र व्रतिपतिको दान दिया। उनके सधर्मा वङ्काचार्य व्रतिपति थे। उनके सधर्मा माधवचन्द्र थे।

इसके बाद भुजबळ-गङ्ग हेम्मांडि-वर्म्म-देवकी प्रशंसा। उनकी पट्टमहिषी गंगमहादेवी तथा इन दोनोंके चार लडके मारसिंग, सत्य-गग, कलि-रक्कस-गंग और भुजबल-गंगका उल्लेख।

भुजबल-गगदेव और गग-महादेवीसे सत्य-गङ्गकी उत्पत्ति। उसकी प्रशसा। उसकी रानी कञ्चल-देवी। (उनके पुत्र गंग-कुमारकी प्रशसा)।

जिस समय एरेयङ्ग होयसळ-देवका दामाद हेम्मांडि-देव हरिगेके निवास-स्थानमें था और एडेदोरे-(मण्डलि) हजारका शासन कर रहा था, कुन्तलापुरमें उसने एक चैत्यालय बनवाया और, उसके लिये तमाम करो इत्यादिसे मुक्त, एक गाँवका दान दिया।

इसके अतिरिक्त, जब सत्य-गङ्ग-देव, अपने एडेहळ्ळिके निवासस्थानमें सुख और शान्तिसे राज्य कर रहा था, उसने कुरुली तीर्थमें गङ्ग जिनालय बन-वाया, और शक-वर्ष १०५४ में[1] अपने गुरु माधवचन्द्र-देवके पैरोंका प्रक्षा-लनपूर्वक,··· ·····का दान किया।

और गंग हेम्मांडि-देवकी उपस्थितिमें सर्वाधिकारी, वागिके हेग्गडे, हेग्गडे चन्दिमय्यने कुरुलीकी अपनी 'गौडिके' भूमि कलियर-मल्लि-सेट्टिको बेची और उसने वह भूमि बालचन्द्र देवको दान कर दी। और सिरियम-सेट्टि तथा उसके पुत्रोंने हल्लवुरकी अपनी 'गौडिके' भूमि, नन्नियरसदेवके सामने, बालचन्द्र-देवको भेट कर दी। (यहाँ सीमाएँ और हमेशाके श्लोक आते हैं।]

[EC, VII, Shimoga tl, n° 64]

१ ये अङ्क १०३४ होने चाहिये, क्योंकि शक वर्ष १०५४=विरोधिकृत् नन्दन=१०३४।

३००

चत्रदहल्लि—कन्नड

[विक्रम वर्ष ५८=११३३ ई०]

[चत्रदहल्लिसे, अमृतेश्वर मन्दिरके सामनेके वीरकलके ऊपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-संवत्सरद ५८ परिधावि-संवत्सरदाश्व-यिज-ब ५........श्रीमतु मूलसंघद देसिग-गणद श्री-माघणन्दि-भट्टारक-देवर गृहं गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डन मग बोप्पय समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्गस्थनादनु ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूलसंघ और देसिग-गणके माघनन्दि-भट्टारक-देवके एक गृहस्थ-शिष्य,-गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डके पुत्र बोप्पय, समाधि विधिसे मरण कर, स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl, n° 97]

३०१

हळेबीड—संस्कृत और कन्नड़

[वर्ष प्रमादिन्, ११३३ ई० (लू० राइस)]

[हळेबीडसे लगी हुई बस्तिहळ्ळिमें, पार्श्वनाथ बस्तिके बाहरकी दीवालमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
जयतु जगति नित्यं जैनसद्बोदयार्कः
प्रभवतु जिनयोगीव्रातपद्माकरश्रीः ।
समुदयतु च सम्यग्दर्शन-ज्ञान-वृत्त-
प्रकटित-गुण-भास्वद्-भव्य-चक्रानुरागः ॥
जगत्रितयवल्लभः श्रियमपथ्यवाग्दुर्लभः ।

सितातपनिवारणत्रितयचामरोद्भासनः ।
ददातु यदघान्तकः पदविनम्रजम्भान्तकः
स नस्सकल-धीश्वरो विजय-**पार्श्व**तीर्थेश्वरः ॥

सिद्धं नमः ॥

श्रीमन्नतेन्द्रमणिमौलिमरीचिमाळा-
माळार्च्चिताय भुवनत्रयधर्म्मनेत्रे ।
कामान्तकाय जितजन्मजरान्तकाय
भक्त्या नमो विजय-**पार्श्व**-जिनेश्वराय ॥
होय्सळोव्याश-वंशाय स्वस्ति वैरि-महीभृताम् ॥
खण्डने मण्डलाग्राय शतधाराग्रजन्मने ॥

तदन्वयावतारम् ॥

नेगळ्दा-ब्रह्मनिनत्रि सोमनेसेवा-श्री-**सोम**ज भूतल
पोगळुत्तिर्प्प-**पुरूरवो**र्व्वीपति सन्दायु-र्म्महीवल्लभं ।
सोगयिप्पा-**नहुषं ययाति यदु**वेम्बुर्व्वीश-सन्तानदोळ् ।
नेगळ्द श्री-सळनानतान्य-निकरं सम्यक्त्व-रत्नाकरम् ॥
आ-**सळ**-नृपतिय राज्यश्री-संवर्द्धनमनेय्दे माडुव बगेयिं ।
वासव-वन्दित-जिन-पूजा-सहित सकल-मत्र-विद्या-कुशलम् ॥
मुदर्दि जैन-व्रतीशं **शशकपुरद पद्मावती**-देविय म- ।
त्रदिनादं साधिसल् विक्रियेयोळे पुलि मेल् पाये योगीश्वर कुं-
चद-काविन्दान्तदं **पोय्सळ** एनलभय पोय्वुदु पोय्सळाङ्कम् ।
यदु-भूपर्गादुदन्दिन्देसेदुदु सेळेयिं लोळ-शार्दूळ-चिह्नम् ॥
आ-सन्द-यक्षी-वरदोळ् वसन्तं । लेसागे तात्कालिक-नामदिन्द ।
वासन्तिका-देवतेयेन्दु पूजा- । व्यासङ्ग व माडिदना-नृपाळम् ॥

कयू-सार्दिरे पुलि युण्डिगे ।
कयू-सार्दिरे वीर-लक्ष्मी रिपु-नृप-राज्यम् ।
कयू-सार्दिरे पल्लराढर् ।
प्पोय्सळ-नामदोळे यादवोर्व्वीपतिगळ् ॥
सत्कुलदोळगिन्दु माही- ।
भृत्-कुळदोळगचल-नायनेसेवन्तेसेदं ।
तत्कुलदोळ् विजितारि-कु- ।
भृत्कुळनादित्य-मूर्त्ति विनयादित्यम् ॥
तदपत्य रिपु-नृप-भुज- ।
मद-मर्द्दननखिळ-विबुध-जनता-सौख्य- ।
प्रदनुदितोदित-महिमा- ।
स्पदनेनिपेरेयङ्ग-भूपनङ्गज-रूपम् ॥
एरेयङ्गन कूरसि तले- ।
गेरगदे मुन्नरिदु बन्दु पदकेरगदवर् ।
प्परिये तले मुरिये निट्टेल्व् ।
ओरदुगे त्रिशु-नेत्तरेरगदिर्प्परे धुरदोळ् ॥
ई-वसुवे पोगळल्लेचल- ।
देविगवेरेयङ्ग-नृपतिग त्रै-पुरुषर् ।
तावेनलादर्व्वल्ला- ।
ळावनिपति विष्णु-नृपतियुदयादित्य ॥
अन्तवरोळ् विष्णु-मही- ।
कान्त निमिर्देसेये कूर्प्पुमार्प्पुं जसमा- ।

दन्तोळगि वेळगे पेर्म्मेय- ।
नान्त **नळ-नहुप-भरत**-चरित-प्रतिमम् ॥
स्थिरमागि **विष्णुवर्द्धन**- ।
धरणीपाळगे पट्टमागलोड सा- ।
गरदन्तनहित-धरणी- ।
श्वररोडनेय्दित्तु विशदकीर्तिप्रसरम् ॥
पोडरदे साध्यमायूतु मलेयेल्लमुना-**तुळु**-देशवेल्लमु ।
नडेये कुमार-नाडु-तळकाडुगळेम्बिवु कय्गे साहुव- ।
त्तडियिडे मुञ्चि कञ्चि वेसकेय्दुदु **विष्णु**-नृप कृपाणम ।
जडियदे मुन्ने कोङ्ग-नृपरित्तरि मङ्गळनेम् प्रतापियो ॥
चोळ-नृपाळ-**पाण्ड्य**-नृप-**केरळ**-भूप-भुजावलेप-वि- ।
स्फाळन**नन्ध्र**-गन्ध-गज-केसरी **लाट**-वराट-धारिणी- ।
पाळ-घनानिळ कदन-सूर-कदम्ब-वनाग्नि **विष्णु**-भू- ।
पाळनवार्य्य-शौर्य्य-निधियातन शौर्य्यमनारो कीर्तिपर् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वर । **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरं । यादवकुलाम्बरद्युमणि मण्डलिक-चूडामणि **शशकपुर**-वसन्तिका-देवी-लब्धवर-प्रसादम् । दर-दळन्-मल्लिकामोदम् । परिहसित-शरदुदित-तुहिनकर-कर-निकर-हर-हसन-सु-रुचिर-विशद-यशश्चन्द्रिका-श्री-विलासम् । निरतिशय-निखिल-विद्या-विलासम् । विनमदहित-महिप-चूडालीढ-नूत्न-रत्न-रस्मि-जाल-जटिलित-चरण नख-किरणम् । चतुस्समय-समुद्धरणम् । कर-कराळ-करवाल-प्रभा-प्रचलित-दिशा-मण्डलम् । वीर-लक्ष्मी-रत्नकुण्डलम् । हिर-ण्यगर्भ-तुळापुरुपाश्व-रथ-विश्वचक्र-कल्पवृक्ष-प्रमुख-मख-शतमखम् । राज-विद्या-विलासिनीसख । स्थिरीकृत-यादव-समुद्र-विष्णुसमुद्रोत्तुंग-रङ्गद्-

वहळतर-तरङ्गौघाच्छादित-दिशा-कुञ्जरम् । शरणागतवज्र-पञ्जरम् । आमळक-फळ-तुळित-मुक्ता-लता-लक्ष्मी-लक्षित-वक्षम् । विबुध-जन-कल्प-वृक्षम् । विजयगज-घटोत्तरळ-कदलिका-कदम्ब-चुम्बिताम्बुदम् । प्रति-दिन-प्रवर्द्धमान-सम्पदम् । रिपु-नृप-लय-समय-क्षुभित-वार्द्धि-वीचि-चयोच्चळित-जात्यश्व-हेषा-रवपूरित-दिशा-कुञ्जम् । शस्तोदात्त-पुण्य-पुञ्जम् । इन्दु-मन्दाकिनी-निश्चळोदात्त-गुण-यूथम् । गण्डगिरि-नाथम् । चण्ड-**पाण्ड्य**वे-दण्ड-कूट-पाकलम् । जगद्देव-बळ-कळकळं । चक्रकूटाधीश्वर-**सोमेश्वर**-मदमर्दनम् । **तुळु**-नृपासुर-जनार्दनम् । **कळपाळ**-तारक-मयूर-वाहनम् । **नरसिंह**-ब्रह्मसम्मोहनम् । **इरुङ्गोळ**-बळ-जळधि-कुम्भ-सम्भवम् । हत-महाराज-वैभवम् । दळितादियम-राज्य-प्रभावम् । कदम्बवन-दावम् । **चेङ्गिरि**-बळ-कालानळम् । जयकेशी-मेघानिळनेन्दिवु मोदलागे समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । **तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-मासवाडि-हुलिगेरे-हलसिगे-चनवसे-हानुङ्गल्लु-नाडु-गोण्ड** त्रिभुवनमल्ल भुजवळ वीर-गङ्ग-**होय्सळ**देवम् ॥

निरुपमिताङ्गिय रुचिर-कुन्तळेय नुत-मध्येय मनो- ।
हरतर-काञ्चिय धृतसरस्वतिय विलसद्विनीतेयम् ।
स्फुरदुरु-कीर्त्तिमन्मधुरेय स्थिरवागिरे तन्न तोळोळोल्द् ।
इरिसिदनुर्व्वराङ्गनेयनप्रतिम विभु-**विष्णु**-भूभुजम् ॥

तदीय-पाद-पद्मोपजीवि । निरन्तर-भोगानुभावि । जिनराज-राजत्-पूजा-पुरन्दरम् । स्थैर्य्य-मन्दिरम् । **कौण्डिन्य**गोत्र-पवित्रम् । **एचि**-राजप्रिय-पुत्रम् । **पोचाम्बिको**दारोदन्वत्-पारिजातम् । शुद्धोभयान्वय-सञ्जातम् । **कर्णाट**धरामरोत्तस । दानश्रेयासम् । कुन्देन्दु-मन्दाकिनी-विशद-यशःप्रकाश । मन्त्र-विद्या-विकाशम् । जिन-मुख-चन्द्र-वाक्-

चन्द्रिका-चकोरम् । चारित्र-लक्ष्मी-कर्ण्णपूरम् । धृतसत्य-वाक्यम् । मन्त्रि-माणिक्यम् । जिन-शासन-रक्षामणि । सम्यक्त्व-चूडामणि । **विष्णुवर्द्धन**-नृप-राज्य-वार्द्धि-संवर्द्धन-सुधाकरम् । विशुद्ध-रत्नत्रयाकरम् । चतुर्विधानूनदानविनोदम् । **पद्मावती-देवी**-लब्ध-वर-प्रसादम् । भय-लोभदुर्ल्लभम् । जयाङ्गना-वल्लभम् । वीर-भट-ललाट-पट्टम् । द्रोह-घरट्टम् । विबुध-जन-फळ-प्रदायकम् । हिरिय-दण्डनायकं । अप्रतिम-तेजम् । गङ्ग-राजम् ।

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्ण्ण-जिनालय-कोटियं क्रम- ।
वेत्तिरे मुन्निनन्ते पळ-मार्ग्गदोळ् नेरे माडिसुत्तवत्त्- ।
उत्तम-पात्र-दानदोदवं मेरवुत्तिरे **गङ्गवाडि-तोम्-** ।
बत्तर-सासिरं कोपणवाद्दुदु **गङ्गण-दण्डनायनिम्** ॥
नुडि तोदळादोडोन्दु पोणर्द्दळिदोडन्तेरडन्य-नारियोळ् ।
नुडिगेडेयागे मूरु मरे-वोक्करनोप्पिसे नाल्कु वेडिदम् ।
पडेयदोडय्दु कूडिदेडेगोगदोडारविपङ्ग तप्पि व- ।
ईडे गडिवेळुवेळु-नरकङ्गळिवेन्दपनल्ते **गङ्गणम्** ॥
आ-गङ्ग-चमूपतिग ।
नागल-देवीगमवीत-शास्त्र पुत्रम् ।
चागद वीरद निधियुम् ।
भोग-पुरन्दरनुमप्प **बोप्प-चमूपम्** ॥
परमार्त्थं विद्वदर्त्थं तनिसदनधन व्यर्थवेन्दर्त्थिसार्त्थम् ।
निरवद्य ज्ञातविद्यं दळिन रिपु-मनोद्य तिरस्कारितार्द्यं ।
धरे तन्नं कीर्त्तिपन्नं विबुध-ततिगे पोन्न विपश्चित्प्रसन्नं
करेदीव **बोप्प-देवं** समर-मुख दशग्रीवनुद्यत्प्रभावम् ॥

समरायाताहित-क्षोणिभृदतुळबळोद्यानदोळ् पावकानु- ।
क्रमदिन्दं क्रीडिसुत्तु रिपु-नृपति-शिरः-कन्दुक-क्रीडितं तत्-
समयोद्भूतारुणाम्भो-भरित-समर-धात्री-सरो-मध्यदोळ् वि- ।
क्रम-लक्ष्मी-लोलनोलाडुवनेरेद-बुधवर्गप्प दण्डेश-**बोप्पम्** ॥
लोभिगळं पोलिपुदे य- ।
शो-भाजननप्प **बोप्प**-दण्डेशनोळिन्न् ।
ई-भू-भुवनदोळाहा- ।
राभय-भैषज्य-शास्त्र-दानोन्नतियिम् ॥

तदीय-गुरु-कुलम् ॥

गौतम-गणधररिन्दा-यात-परम्परेय **कोण्डकुन्दा**न्वय-वि-ख्यात-**मलधारि-देवर्** । प्पूत-तपोनिधिगळा-मुनीश्वर-शिष्यर् ॥ श्री-राद्धान्त-सुधाम्बुधि-पारग-**शुभचन्द्र-देव**-मुनिपर्व्विमळा-चार-निधि-गङ्ग-राजन । धीरोदात्ततेयनाळ्द **बोप्पन** गुरुगळ् ॥ जिन-धर्म्म-वनधि-परिवर्द्धन-चन्द्रं गङ्ग-मण्डलाचार्य्यर्-प्पावन-चरितरेन्दु पोगळ्वु [दु] जनं **प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिकरम्** ॥

इवर्**बोप्प-देवन** देवतार्च्चन-गुरुगळ् ॥

जळजभवङ्गविन्तु बरेयल् कडेयल् करुविट्टु गेय्यल- ।
त्तळगवेनिप्पुद तोळप बेळ्ळिय-बेट्टने पोल्वुद जगत्- ।
तिलकमनी-जिनालयमनेत्तिसिद विभु-**बोप्प-देवन**- ।
गळिकेय राजधानिगळोळोप्पुव **दोरसमुद्र**-मध्यदोळ् ॥

गङ्ग-राजङ्गे परोक्षविनयवागि देवर्ग्गे ।

सासिर देवत्तैदेन्-ला-शकनब्द प्रमादि-माधव-बहुळ- ।
श्री-सोमज-पञ्चमियोळ्-ळैसेने **बोप्पं** प्रतिष्ठेयं माडिसिदम् ॥

प्रतिष्ठाचार्य्यर् श्री-**नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति**गळ् ॥
भ्रान्तिनोळेनो मुन्नेगळद चारण-शोभित-**कोण्डकुन्दे**योळ् ।
शान्त-रस-प्रवाहवेसेदिर्प्पिनविर्द्द मुनीन्द्र-कीर्त्तिया- ।
शान्तवनेय्दितन्तवर सन्ततियोळ् **नयकीर्त्ति-देव**-सै- ।
द्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-शासनम बेळगल्के पुट्टिदं ॥

श्री-मूलसंघद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद **कोंडकुन्दा**न्वयद हन-सोगेय वळिय **द्रोहघरट्ट-जिनालय[मु]**-प्रतिष्ठानन्तर देवर शेपेयनिन्द्रर् कोण्डु-पोगि **विष्णुवर्द्धन-देव**र्गे **बङ्कापुर**दोळ् कुडुववसरदोळ् ।

कवियेरिंगेन्दु वन्दा-मसणनसम-सैन्यङ्गळ **विष्णु**-भूप ।
तवे कोन्दा-प्राज्य-साम्राज्यमनतुळ-भुजं कोळ्वुदु पुट्टिद भू-
भुवनक्कुत्साहमागुत्तिरे बुध-निधि लक्ष्मी-महा-देविगागळ् ।
रवि-तेज पुण्य-पुञ्जं दशरथ-नहुपाचार-सार कुमारम् ॥
भूभृत्-पति-मद-करि-हरि-शोभास्पद नचळना-समुत्तुङ्ग श्री- ।
प्राभवनुदिताखण्डळ-वैभवनेम् गोत्र-तिळकनादनो पुत्रम् ॥

अन्तु विजयोत्सवमु कुमार-जन्मोत्सवमुमागे सतुष्ट-चित्तनागिर्द्द **विष्णु-देवं** पार्श्व-देवर प्रतिष्ठेय गन्धोदक-शेपगळं कोण्डु बन्दिर्द्दिन्दरं कण्डु बर-वेळ्दिदिरेद्दु पोडेवट्टु गन्धोदकमु शेपेयुम कोण्डेनगी-देवर प्रतिष्ठेय-फलदिं विजयोत्सवमु कुमार-जन्मोत्सवमुमादुवेन्दु सन्तोप-परम्परेयनेय्दि देवर्गे श्री-**विजय-पार्श्व-देव**रेम्ब पेसरुम कुमारंगे श्री-विजय-**नारसिंह-देव**नेम्ब पेसरुमनिट्टु कुमारगभ्युदय निमित्तमु सकळ-शान्त्यर्थमुमागि **विजयपार्श्व-देव**रचतुर्व्विंशति-तीर्थङ्कर त्रि-काल-पूजार्च्चनाभिषेकक्कमी-बसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्ण्णोद्धारणक्कं जितेन्द्रियरप्प तपोधनराहार-दानक्कं आसन्दि-

नाड जावगल्लुमं वसदियिं वडगण वेनकन-मण्ठेयदिं मूडल्ल राज-हस्त-दल् नूरेण्भत्तु-हस्त-प्रमाण-भूमियोळिर्द्देरडु केरियुमनलिन्दाग्नेयद गोण्टिनल्लि नट्ट कल्लिन्दिर्व्वडगलागिर्द्देरडुं केरियुं तेल्लिगरिप्पत्तोकल्लवनल्लिं पडुवल् माधवचन्द्र-देवर वसदिवरविद्द केरियुमनल्लिं पडुवण हिरिय-दण्ड-नायकर मनेयिं पडुवल् तेङ्क-देशेय राज-वीथिय मूडण वेल्लूर केरिय हित्तिल् मेरेयागिर्द्द भूमियुमनल्लिं वडगल् शिरियङ्गडिये गडि आसिरि-यङ्गडिय मूडण-कडे यरडङ्गडियु। जावगल्लु-सीमे (आगेकी ५ पंक्तियोंमें सीमाकी चर्चा है) इन्ती-स्थळविनितुमं श्री-विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवं श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गें धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टम् (वे ही अन्तिम श्लोक)

विदिताशेष-पदार्थ-नूत्न-विजय-श्री-पार्श्व-देवोल्लसत्- ।
पद-पूजा-निचयक्के दान-महित केय् गद्देय पुण्य-वी- ।
जद पेर्च्चिङ्गे निवासम सकळभव्याम्भोजिनीभास्करम् ।
मुददिं तेल्लिग-दास-गौण्ड-विभु कोट्टं सन्ततं सल्विनम् ॥
इदनूर्जितमेने नीम्मा- ।
ळ्पुदेन्दु तेल्लिगर-दास-गावुण्ड पु- ।
ण्य-देव-पूजाकर-शान्- ।
ति-देव-विभुगमळ-वारि-धारेयनित्तम् ॥

दासगौण्डनहळ्ळिय कुम्बार-गट्टद केळगण-मडुविन मोद्दमेडिवेयल्लु मूवत्तु-कोळग-गद्दे आ-यरडु-को''' नडुवण एरेय-केय्युळ्ळनितु मूडल्लु ताव-रेयकेरे हडुवल्लु होल सीमे गडियागिद्द भूमियुळ्ळनितुमं तेल्लिगर-दास-गावुण्डनुं राम-गावुण्डनु उत्तरायण-सक्रमणदल्लु श्री-विजय-पार्श्वदे-वरष्ट-विधार्च्चनेगे सर्व्व-बाधा-परिहारवागि पूजकर शान्तय्यङ्गे धारा-पूर्व्वक कोट्टरु ॥

आरं पोल्वरे युद्ध-दैत्य-विजय-श्री-पार्श्व-भट्टारको-
दार-श्री-पद-पङ्कज-भ्रमरन सौजन्य-वाक्-सारनम् ।
सारोदार-जिनेश्वरार्चन-नियोगोद्योग-विश्रान्त···· ।
····श्री-वधु-कान्तनं पृथुल-कीर्त्याशान्तन शान्तनं ॥

श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गे विट्ट जावगल्लु गङ्गऊरदलि खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्के जावगल्लु । रङ्ग-भोगद विद्यावन्तरिगे गङ्गऊरु । श्रीमन्न-यकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ शिष्यरु नेमिचन्द्र-पण्डित-देवर श्री-मूलसघद समुदायङ्गळु अवर शिष्य-सन्तानगळे ई-धर्म्मवना-चन्द्रार्क्क-तारंबरं सलेसुवरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पार्श्व-जिनेश्वरका माहात्म्य । होय्सल राजाओंके वशकी परम्परा —

ब्रह्म-अत्रि-सोम-पुरूरव-आयु नहुष-ययाति-यदु, जिसके वंशमें सल उत्पन्न हुआ । जिस समय, सलके राज्यकी समृद्धिके लिये, कोई जैन-व्रतीश मत्रों-द्वारा शशकपुरकी पद्मावती देवीको वशमे कर रहा था, एक चीतेने उछल कर आक्रमण किया, चीता इससे उसकी सिद्धि भंग करना चाहता था । उसी समय योगीश्वरने अपने चामर (या पंखे) की मूठको पकडकर कहा 'पोय् सल' (सल, मारो). इतना उनके कहते ही उसने निडर होकर उसे मार दिया; उस समयसे यदु राजाओंका नाम 'पोय्सळ' पड गया और उनके झण्डेपर चीतेका चिह्न फहराने लगा । उस 'यक्षी' के प्रसादसे ऋतु वसन्त हो गई और उसी ऋतुके नामसे राजाने उसका 'वासन्तिका' देवीके नामसे पूजन किया ।

उसी वशमें विनयादित्य उत्पन्न हुआ । उसका पुत्र एरेयंग था । उससे एचल-देवीके द्वारा, ब्रह्मा, विष्णु और शिवकी तरह, बल्लाल, विष्णु और उदयादित्य उत्पन्न हुए । इन सबमे विष्णुका नाम सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हुआ । (उसकी दिग्विजयका वर्णन, उसकी प्रशंसा)

(उसके पदों और उपाधियोंका वर्णन) उसने तलकाडु, कोङ्ग, नङ्गलि, गङ्गवाडि, नोळम्बवाडि, मासवाडि, हुलिगेरे, हलसिगे, बनवसे और हानुङ्गल्पर अधिकार कर लिया था। इतना ही नहीं, अङ्ग, कुन्तल, मध्यदेश, काञ्ची, विनीत और मधुरा (वर्तमानका मदुरा) ये सब उसीके अधीन थे।

तत्पादपद्मोपजीवी पुराना दण्डनायक गङ्गराज था। (उसकी बहुत-सी उपाधियोंका उल्लेख) उसने अगणित ध्वस्त जैन मन्दिरोंका पुनर्निर्म्माण कराया। अपने अनवधि दानोंसे उसने गङ्गवाडि ९६००० को कोपणके समान चमकाया। गंगकी रायमें सात नरक ये थेः—झूठ बोलना, युद्धमें भय दिखाना, परदारारत रहना, शरणार्थियोंको शरण न देना, अधीनस्थोंको अपरितृप्त रखना, जिनको पासमें रखना चाहिये उन्हें छोड देना, और स्वामीसे द्रोह करना।

गंग-चमूपति और नागल-देवीसे बप्प-चमूप उत्पन्न हुआ। (उसकी प्रशंसा)।

उसका गुरु-कुल—गौतम गणधरकी परम्परामें विख्यात मलधारिदेव हुए, जो कुन्दकुन्दान्वयी थे। उनके शिष्य शुभचन्द्रदेव बोप्पके गुरु थे। गंगमण्डलाचार्य प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिक उसके पूजनीय गुरु थे।

यह जिनमन्दिर—जिसकी शोभा रजतमय कैलाशके समान थी—बोप्पदेवने दोरसमुद्रके बीचमें बनवाया। गङ्गराज (अपने पिता) की मृत्युके स्मारकमें (उक्त तिथिको) बोप्पने मूर्तिकी स्थापना की, प्रतिष्ठापक नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती थे। (उनकी प्रशंसा)।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ, कोण्डकुण्डान्वय तथा हनसोगे-बलिके इस द्रोह-घरट्ट (पाप-नाशक) जिनालयकी स्थापनाके बाद, जिस समय पुरोहित (इन्द्रलोग) चढ़ाये हुए भोजन (शेष) को विष्णुवर्द्धनके पास बङ्कापुर ले गये,—उस समय राजा विष्णुने मसणको, जो अपार सेनाके साथ उसपर टूट पड़ा था, हराकर मार डाला, तथा उसका सारा साम्राज्य जब्त कर लिया, और उसी समय (रानी) लक्ष्मी-महादेवीके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो गुणोंमें दशरथ और नहुषके समान था, (अन्य प्रशंसाएँ), तब

राजाने उनका स्वागत कर प्रणाम किया तथा यह समझकर कि इन्हीं पार्श्वनाथ भगवानकी स्थापनासे उसकी युद्धमें विजय तथा पुत्रोत्पत्ति तथा सुख-समृद्धि हुई है, उसने देवताका नाम विजयपार्श्व तथा पुत्रका नाम विजय-नारसिंह-देव रक्खा।

अपने पुत्रकी समृद्धि तथा विश्व-शान्तिको बढ़ानेके लिये उसने आसन्दि-नाड्के जावगळ्का इस मन्दिरके लिये दान किया। और भी (उक्त) वहुत से दान दिये।

तेली दास-गौण्डने भगवानके लिये पुरोहित शान्ति-देवको भूमि-दान किया। पार्श्व-जिनकी अष्टविध पूजाके लिये दास-गौण्ड और राम-गौण्डने 'उत्तरायण संक्रमण' के समय (उक्त) दान दिये। शान्तिकी प्रशंसा। नेमिचन्द्र-पण्डित-देव इस कामकी व्यवस्थापर रक्खे गये। ये नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य थे।]

[EC, V, Belur tl., n° 124]

३०२

कोल्हापूर—संस्कृत

[११२५ ई० (फ्लीट)।]

मूल लेख अक्टूबर १९०० ई० तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ था, ऐसा मि० जे. एफ फ्लीटका कहना है। उन्होंने जो इस लेखका उल्लेख या संकेत किया है वह एक पाण्डुलिपि परसे किया है।

[यह लेख ११२५ ई० का है और कोल्हापुरमें पाया गया है। इसमें बताया गया है कि कवडेगोल्लके सन्तेय-मुद्गोडेमें 'महासामन्त' निम्ब-देवरसके द्वारा निर्मापित एक जैनमन्दिरके मूलनायक पार्श्वनाथ भगवानको कुछ स्थानीय महसूलोंका दान किया गया। लेखमें ७ व्यक्ति तथा उनके स्थानोंके नाम दिये हैं जिन्होंने दान किया था। यह दान कोल्हापुरकी रूपनारायण 'वसदि' के 'आचार्य' श्रुतकीर्त्ति त्रैविद्यदेवके लिये किया गया था। इस लेखमें 'कुण्डिपट्टन' नामके नगरका उल्लेख है। इस नगरके नामसे देशका नाम भी वही पड गया था।]

[IA, XXIX, p 280, a]

अनुक्रमणिका ।

[विशेष नाम-सूची]

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि, आर्यिका, कवि, संघ, गण, गच्छ, ग्रन्थ तथा राजा, रानी, गृहस्थों और सब प्रकारके स्थानोंके नाम समाविष्ट किये गये हैं। नामके पश्चात्के अंक लेख नम्बर समझने चाहिये।

क